ज्योतिष सु:ख समृद्धि

Name - sample

Date - 11/11/2011 Time - 11:11:00

POB - khatu (rajasthan) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Acko Astro

www.ackoastro.com, ackoastro@gmail.com

Contact = +91 8657171000

© Mindsutra's StarLight Premium 11

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	11 नवम्बर 2011
जन्म समय	11:11:00
जन्म दिन	शुक्रवार
जन्म स्थान	khatu
राज्य	rajasthan
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	11:17:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	14:37:47 hrs
इष्ट काल	12: 29: 52 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2068
शक संवत	1933
संवत्सर	खर
ऋतु	शरद
मास	अग्रहन
पक्ष	कृष्ण
वार	शुक्रवार
तिथि	प्रतिपदा
नक्षत्र (पद)	कृतिका (1)
योग	वारियन
करन	बल्लव

अवकहड़ा चक्र

पाया	लौह
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुश्पद
योनि	मेष (स्त्री)
गण	राक्षस
नाड़ी	अन्त
रज्जु	नाभि
तत्व	पृथ्वी
तत्वाधिपति	बुध
विहग	भारधंक
नाड़ी पद	अन्त
वेध	विशाखा
आद्याक्षर	अ
दशा बैलेंस	सूर्य – 5व00मा024दि0
वर्तमान दशा	चन्द्रमा–बुध–गुरू
भयात	10: 20: 16 Ghati
भभोग	66: 41: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	तुला
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	वृश्चिक
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	024:01:22
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	06:11:12AM
सूर्यास्त	05:03:49PM
जन्मदिन का ग्रह	शुक्र
जन्मसमय का ग्रह	मंगल

♑ लग्न मकर	♈ राशि मेष	नक्षत्र – पद कृतिका – 1
♄ लग्नाधिपति शनि	♂ राशिपति मंगल	☉ नक्षत्रपति सूर्य

नक्षत्र विवरण

नक्षत्र	कृतिका	चरण	1
अधिपति	सूर्य ☉	भाव में	दशम् शुभ
देवता	अग्नि	दिशा	पूर्व
तत्व	पृथ्वी	गोत्र	अंगिरा
प्रभाव	कार्यनाश	पशु	मेष (स्त्री)
पौधे	गूलर, औदुम्बर	पक्षी	मयूर _मोर
कार्य पद्धति	सक्रिय	गुण	रजस

लग्न और राशि विवरण

लग्न विवरण

लग्न	मकर ♑
अधिपति	शनि ♄
तत्व	पृथ्वी
स्वभाव	चर
भाव में	नवम् शुभ
लिंग	स्त्री
के साथ भावेश	

राशि विवरण

राशि	मेष ♈
अधिपति	मंगल ♂
तत्व	अग्नि
स्वभाव	चर
भाव में	अष्टम् अशुभ
लिंग	पुरुष
के साथ भावेश	

राशि देवता	हनुमान जी
मंत्र	**Om Hanumate Namah**
	ॐ हनुमते नमः

इन राशि देवता के मंत्रों का जाप प्रत्येक राशि के इष्टदेवों का आशीर्वाद प्राप्त करने, सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने एवं बाधाओं को दूर करने तथा अच्छे भाग्य को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है।

तत्व — अग्नि

आप आम तौर पर उत्साही, भावुक और आवेगी होते हैं। आप ऊर्जावान हैं, अपनी भावनाओं से प्रेरित हैं और पहल करना पसंद करते हैं। आप अक्सर मिलनसार होते हैं और ध्यान का केंद्र बने रहने का आनंद लेते हैं। आप साहसी भी हैं और अपने कार्यों में काफी प्रतिस्पर्धी हो सकते हैं।

स्वभाव — चर

आप आम तौर पर आरंभकर्ता, नेता और लक्ष्य-उन्मुख होते हैं। आप परिवर्तन और प्रगति की इच्छा से प्रेरित होते हैं, अक्सर नए अवसरों और अनुभवों की तलाश में रहते हैं। आप सक्रिय रहते हैं और अपने कार्यों में काफी मुखर हो सकते हैं। आप साहसी और दृढ़ निश्चयी हैं, आपको प्रतिस्पर्धी क्षेत्रों, खेलों या ऐसे व्यवसायों में सफलता मिल सकती है जिनमें शारीरिक गतिविधि और उच्च ऊर्जा शामिल है।

घात चक्र

कार्तिक अशुभ मास	रविवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मेष अशुभ राशि	मेष अशुभ लग्न	1, 6, 11 अशुभ तिथि
माघ अशुभ नक्षत्र	विषकुम्भ अशुभ योग	बावा अशुभ करन

शुभ बिन्दु

2 मूलांक	8 भाग्यांक	1, 4 मित्रांक
3, 6 शत्रु अंक	17, 19, 22, 26, 28, 31, 35, 37 शुभ वर्ष	शुक्रवार, शनिवार, बुधवार शुभ दिन
शुक्र, शनि, बुध शुभ ग्रह	गुरू, सूर्य अशुभ ग्रह	कर्क, तुला, धनु, कुम्भ मित्र राशि
मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक मित्र लग्न	नीलम शुभ रत्न	नीली, जमुनिया, लाजवर्त शुभ उपरत्न
पन्ना भाग्य रत्न	नरसिंह अनुकूल देवता	लोहा शुभ धातु
श्याम शुभ रंग	पश्चिम दिशा	संध्या शुभ समय
कुलथी, कस्तुरी, कृष्ण गाय, जता शुभ पदार्थ	उड़द शुभ अन्न	तेल शुभ द्रव्य

आपकी कुण्डली में लग्नाधारित प्रमुख बिन्दु

कठिन परिश्रम और .ढ़ता के माध्यम से सफलता और पहचान प्राप्त करने के लिए।

परम अकांक्षा

जीवन के सभी पहलुओं में संरचना और व्यवस्था की आवश्यकता।

उत्साहवर्धक प्रेरणा

भौतिक और सामाजिक स्थिति प्राप्त करने के लिए, और एक विरासत छोड़ दें।

जीवन का परम लक्ष्य

महत्वाकांक्षा, .ढ़ संकल्प और व्यावहारिकता।

अनोखा उपहार/योग्यता

निराशावाद और कुटिलता की प्रवृत्ति।

सुधार के क्षेत्र

मैं हासिल करता हूं, मैं निर्माण करता हूं मैं एक विरासत छोड़ता हूं।

मूल विचार

अपने लक्ष्यों के प्रति कठिन परिश्रम जारी रखने के लिए, साथ ही अपने भावनात्मक और आध्यात्मिक कल्याण को प्राथमिकता देने का मार्ग खोजने के लिए।

आगे का लक्ष्य

सफलता, पहचान और भौतिक संपदा से भरा जीवन, जहां उन्होंने दुनिया पर भी एक सकारात्मक प्रभाव डाला है और एक स्थायी विरासत छोड़ी है।

ब्यक्तित्व का मूल तत्व

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य

तुला
24:26:58
विशाखा (2)
सम राशि

चन्द्रमा

मेष
28:44:27
कृतिका (1)
नीच राशि

मंगल

सिहं
06:00:11
मघा (2)
सम राशि

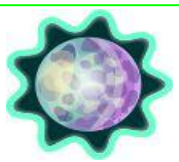

बुध

वृश्चिक
16:48:17
ज्येष्ठा (1)
मित्र राशि

गुरू (व.)

मेष
09:30:47
अश्विनी (3)
स्व नक्षत्र

शुक्र

वृश्चिक
16:59:33
ज्येष्ठा (1)
मित्र राशि

शनि

कन्या
29:33:02
चित्रा (2)
सम राशि

राहु

वृश्चिक
21:38:24
ज्येष्ठा (2)
मित्र राशि

केतु

वृष
21:38:24
रोहिणी (4)
नीच राशि

हर्षल (व.)

मीन
06:57:48
उत्तरभाद्र (2)
नीच राशि

नेपच्यून

कुम्भ
04:06:38
धनिष्ठा (4)
सम राशि

प्लूटो

धनु
11:38:00
मूला (4)
सम राशि

लग्न

मकर
02:50:12
उत्तराषाढ़ (2)
---

1 0वां कस्प

तुला
17:51:40
स्वाति (4)

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह		व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♑ मकर	02:50:12	उत्तराषाढ़ (21)	2		
☉	सूर्य		♎ तुला	24:26:58	विशाखा (16)	2	भ्रात्रि	नीच राशि
☽	चन्द्रमा		♈ मेष	28:44:27	कृतिका (3)	1	अमात्य	सम राशि
♂	मंगल		♌ सिहं	06:00:11	मघा (10)	2	दारा	मित्र राशि
☿	बुध		♏ वृश्चिक	16:48:17	ज्येष्ठा (18)	1	अपत्या	स्व नक्षत्र
♃	गुरू	व.	♈ मेष	09:30:47	अश्विनी (1)	3	ज्ञाति	मित्र राशि
♀	शुक्र		♏ वृश्चिक	16:59:33	ज्येष्ठा (18)	1	मात्रि	सम राशि
♄	शनि		♍ कन्या	29:33:02	चित्रा (14)	2	आत्म	मित्र राशि
☊	राहु		♏ वृश्चिक	21:38:24	ज्येष्ठा (18)	2		नीच राशि
☋	केतु		♉ वृष	21:38:24	रोहिणी (4)	4		नीच राशि
⚷	हर्षल	व.	♓ मीन	06:57:48	उत्तरभाद्र (26)	2		सम राशि
♆	नेपच्यून		♒ कुम्भ	04:06:38	धनिष्ठा (23)	4		सम राशि
♇	प्लूटो		♐ धनु	11:38:00	मूला (19)	4		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

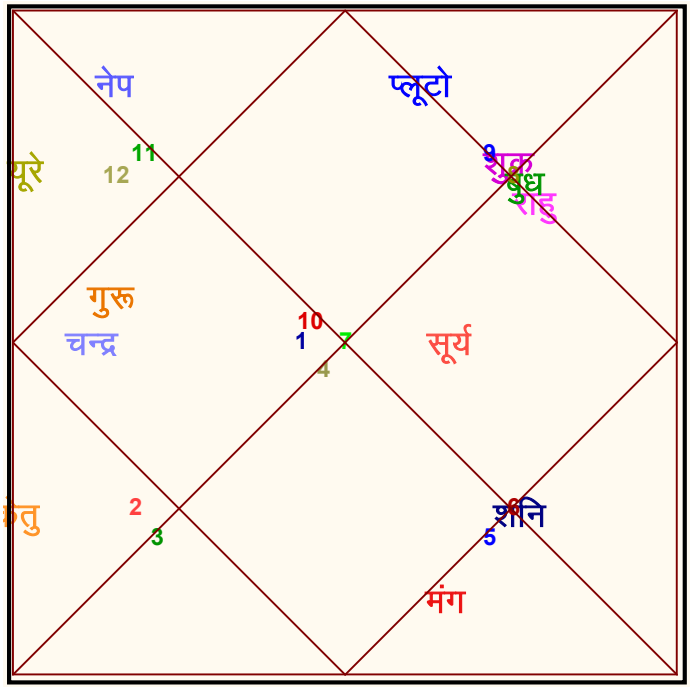

नवांश कुण्डली

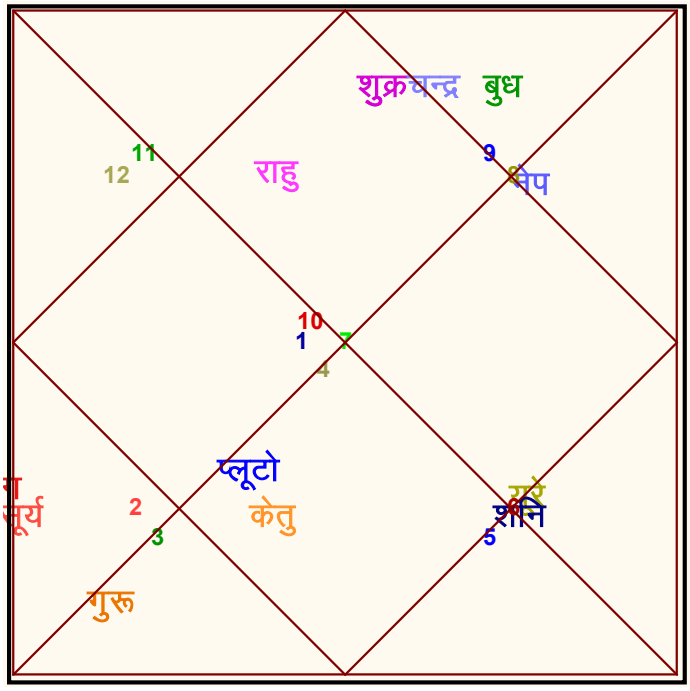

षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

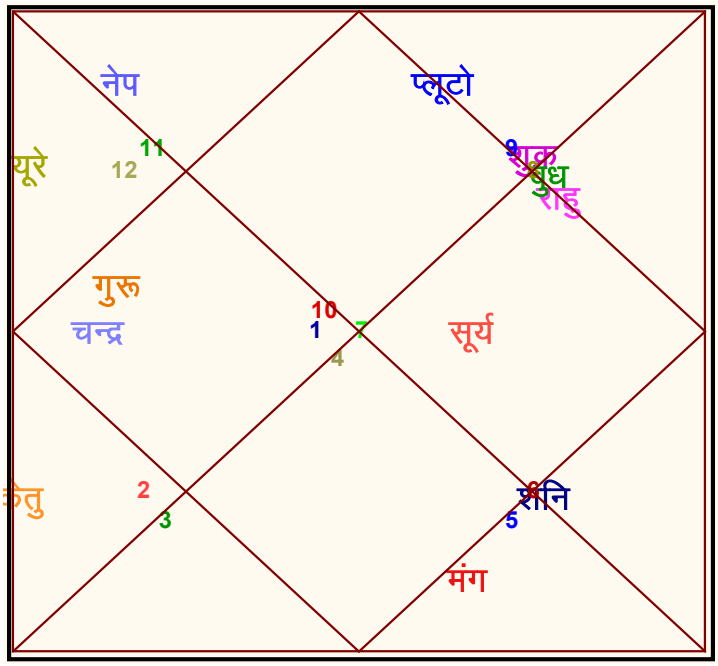

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

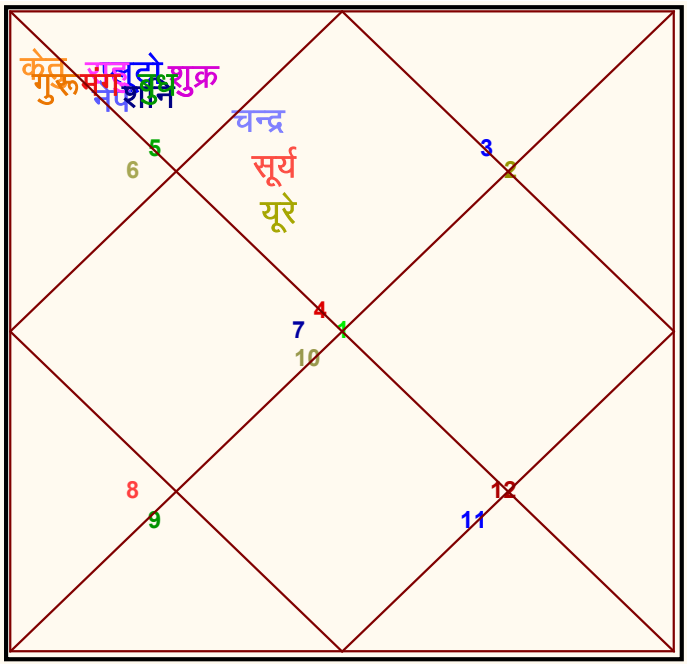

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

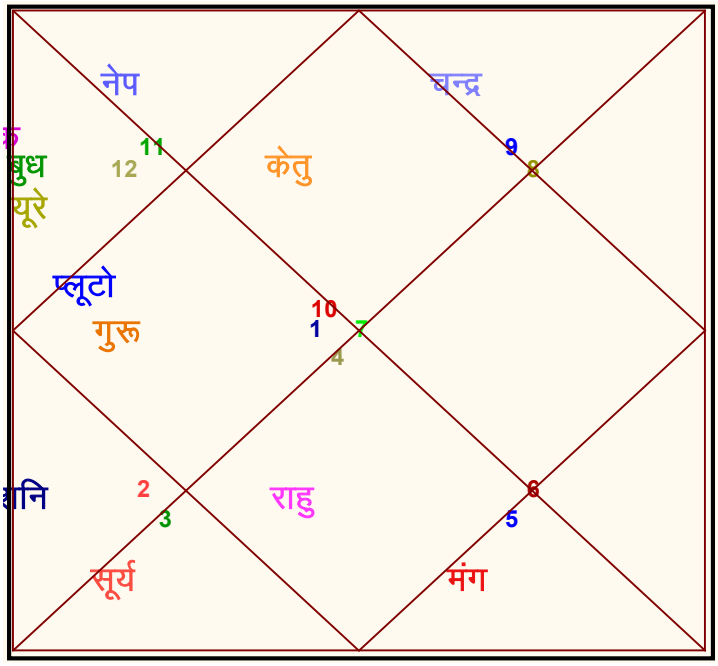

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई–बहनों, चचेरे भाई–बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

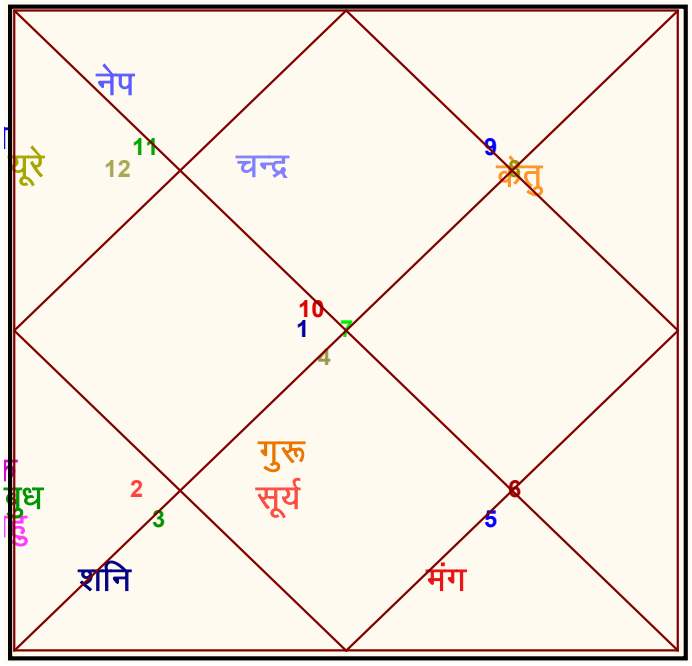

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

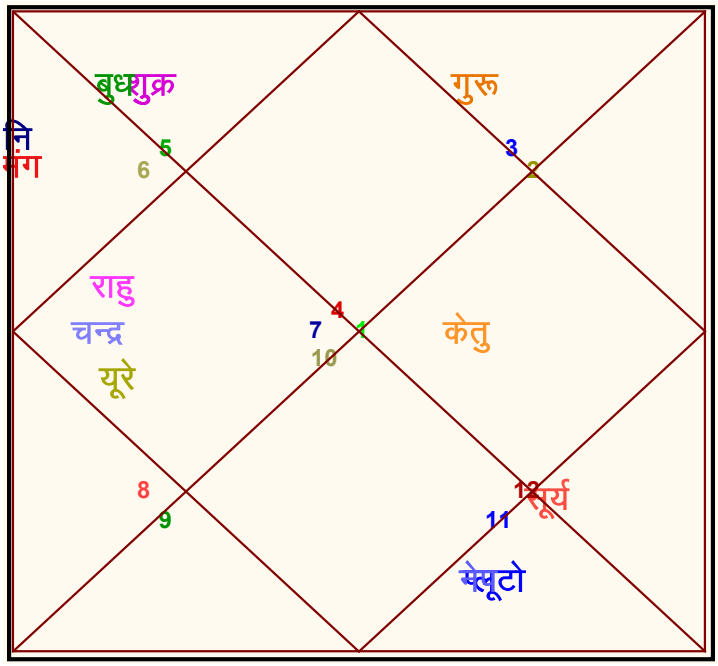

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

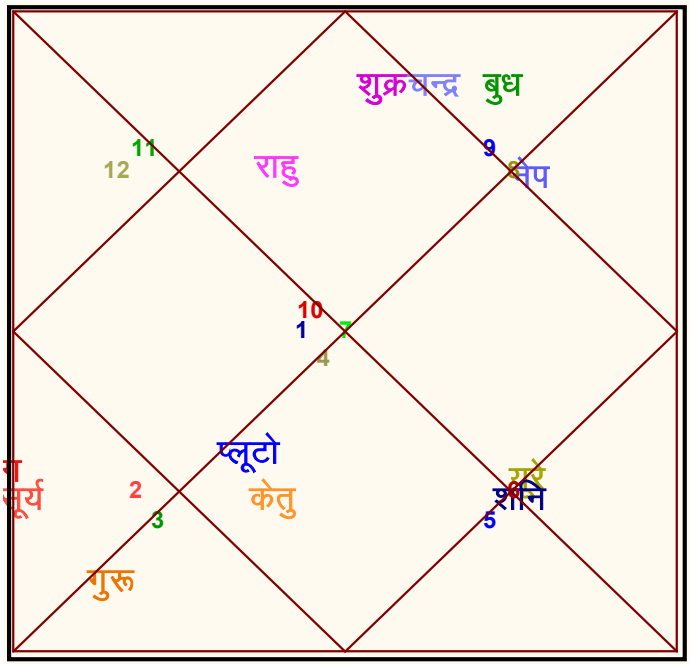

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

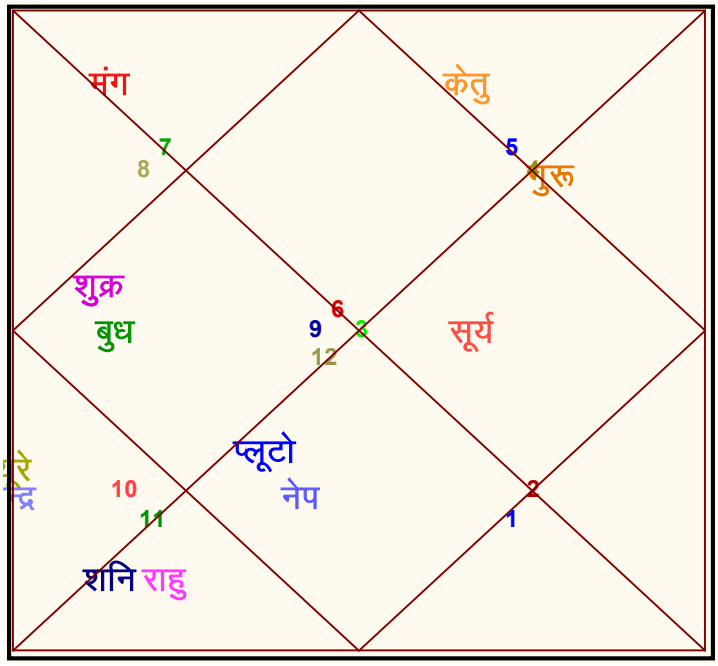

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

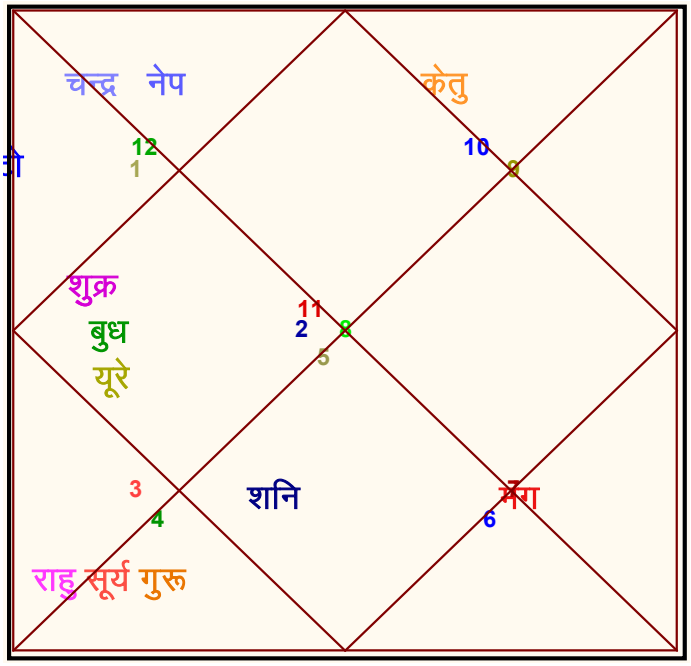

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता–पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता–पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

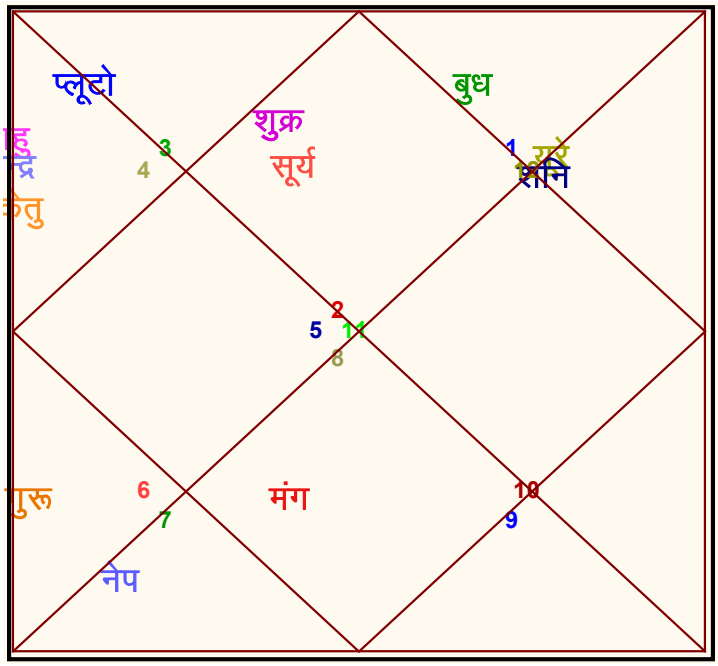

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के ऑटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

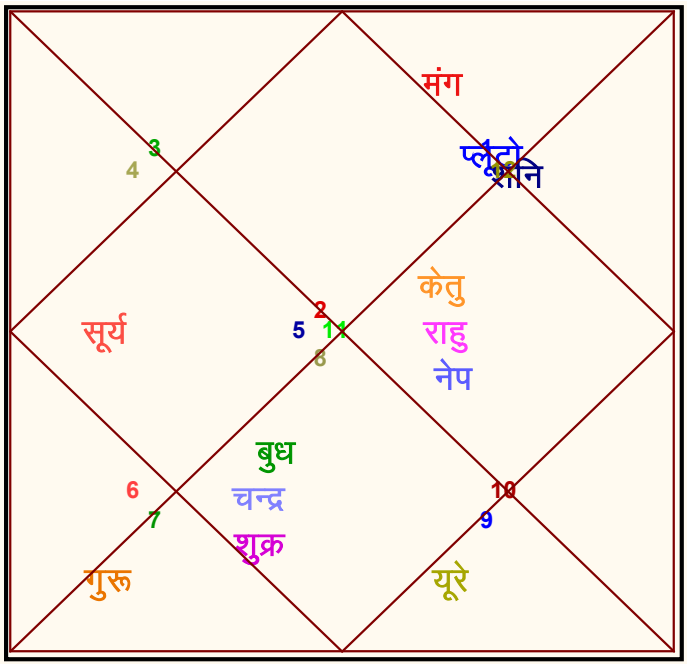

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

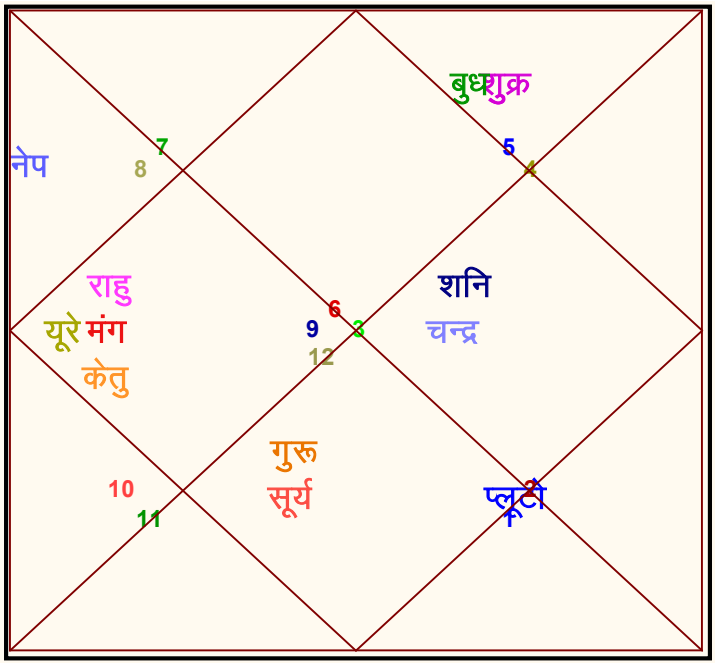

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

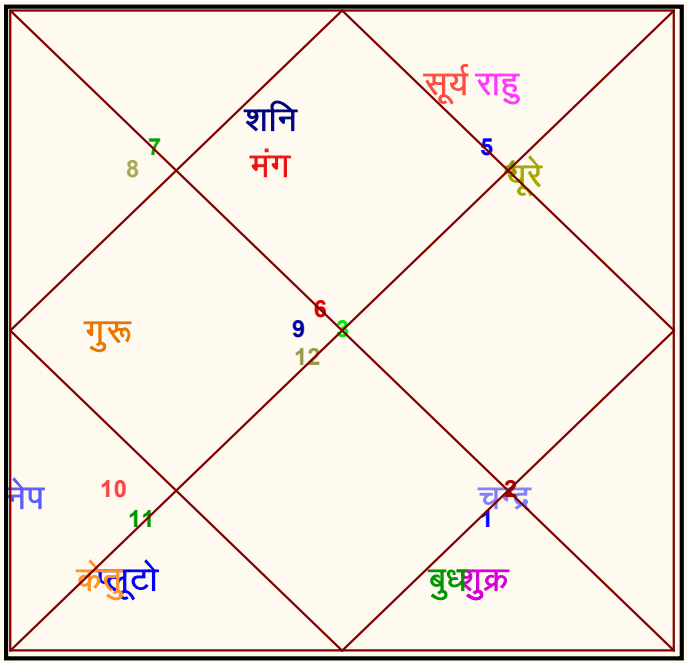

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

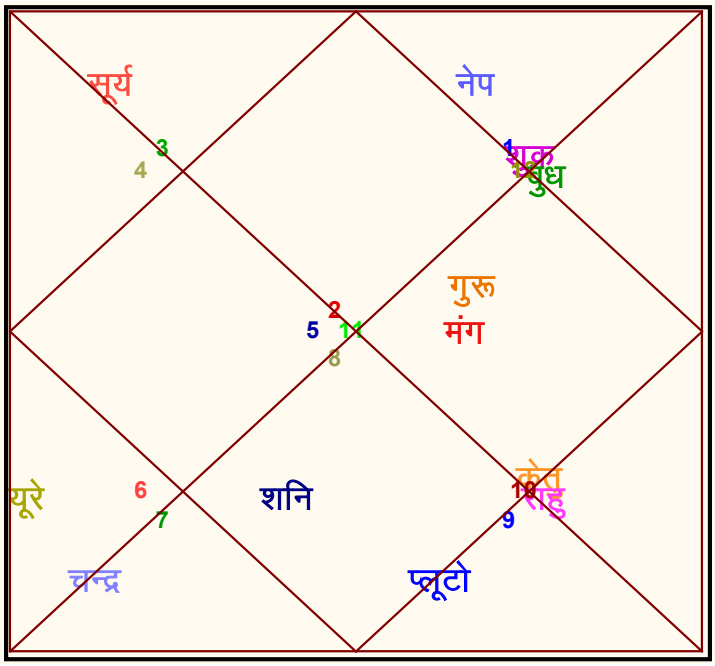

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

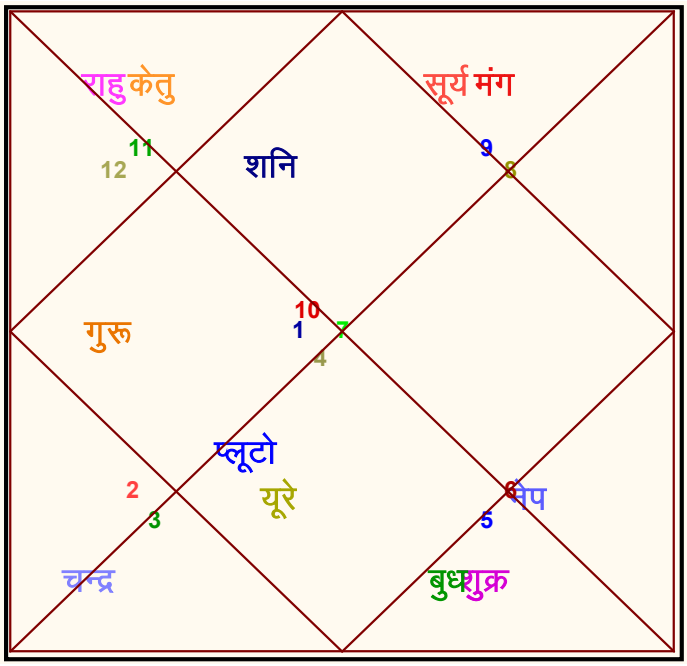

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

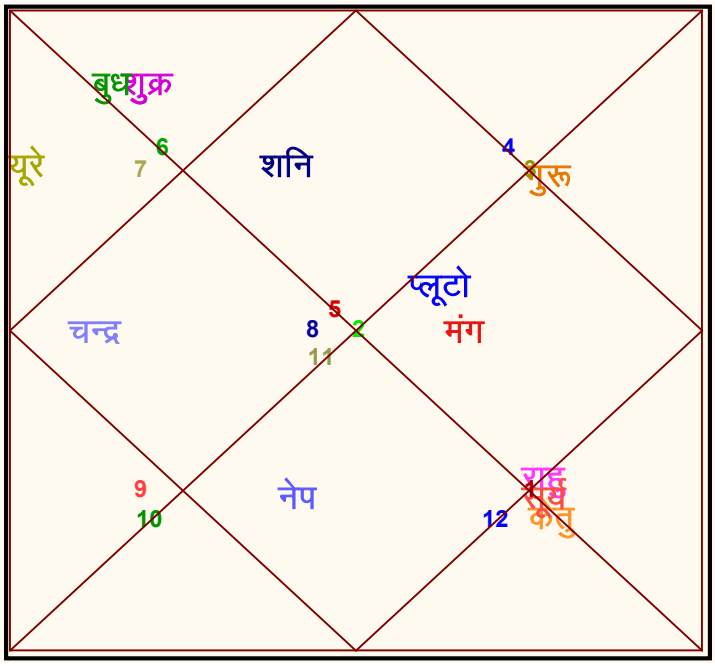

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

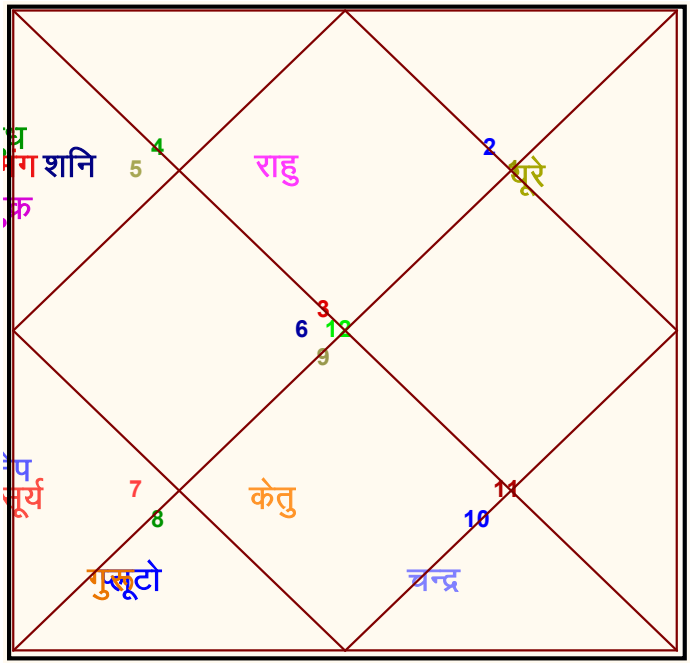

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षोडश वर्ग कुण्डली

पंचमांश कुण्डली (डी 5)

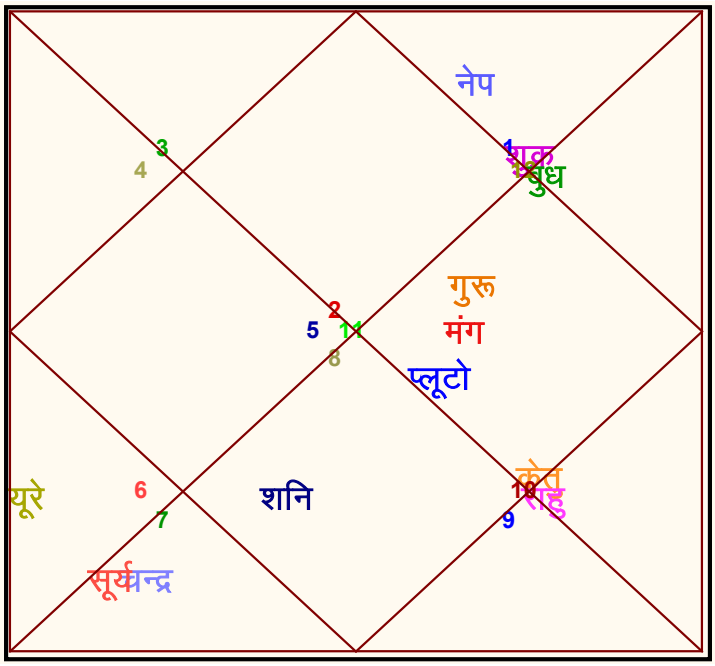

पंचांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 5 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 6 डिग्री में मापता है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। यह मुख्य रूप से जीवन के विभिन्न पहलुओं में किसी व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा और क्षमता में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह उन ज्योतिषियों के लिए उपयोगी जानकारी हो सकती है जो लोगों को उनके विशेष कौशल और गुणों की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने में मार्गदर्शन करते हैं।

षष्टमांश कुण्डली (डी 6)

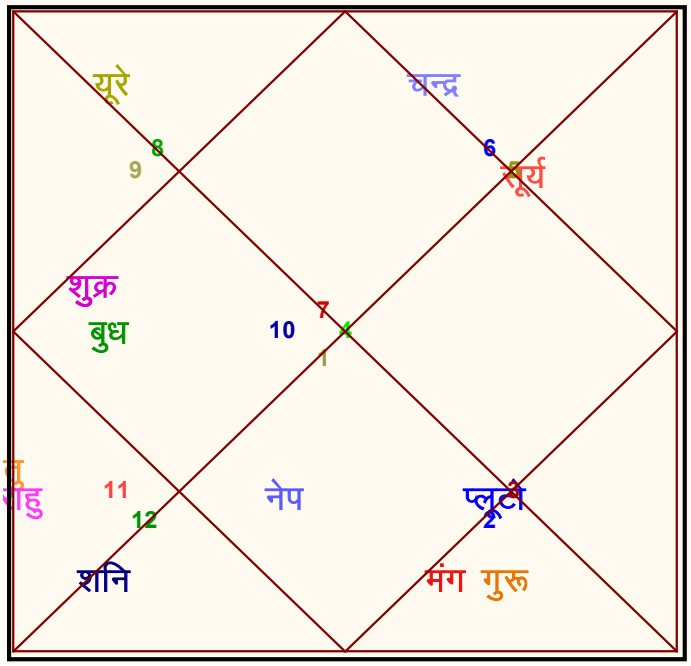

षष्टांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 6 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 5 डिग्री है। इस कुण्डली का पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति की छिपी हुई शक्तियों और जीवन के कई हिस्सों में खामियों को प्रकट करना है। षष्ठांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनकी क्षमता की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने के साथ–साथ समस्याओं पर काबू पाने में मार्गदर्शन करने में सहायता कर सकता है।

अष्टमांश कुण्डली (डी 8)

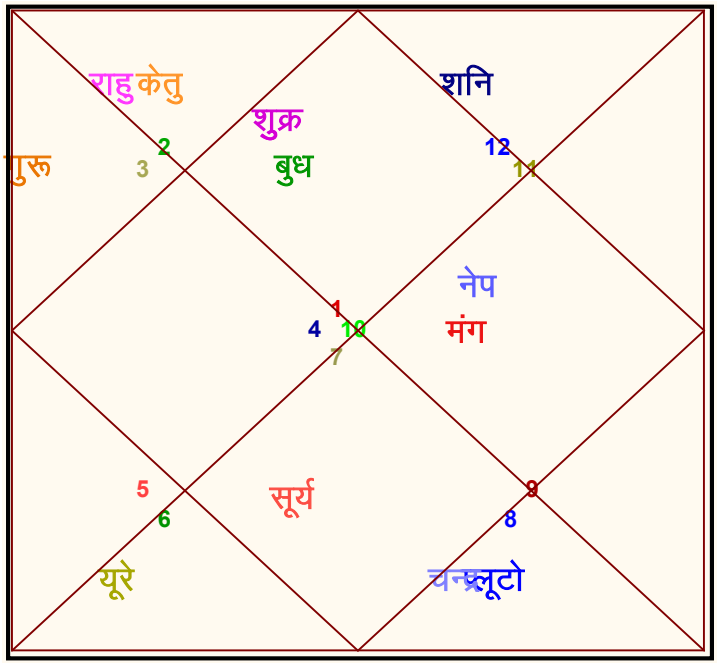

अष्टांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 8 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.75 डिग्री है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में शायद ही कभी उपयोग किया जाता है और वर्तमान अभ्यास में इसका बहुत कम उपयोग होता है। यह आमतौर पर किसी व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं और उनके जीवन पथ से जुड़ी विशेषताओं का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। अष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को लोगों को उनके जीवन के कई पहलुओं को समझने और सुधारने में मदद करने के लिए अधिक जानकारी दे सकता है।

एकादशांश कुण्डली (डी 11)

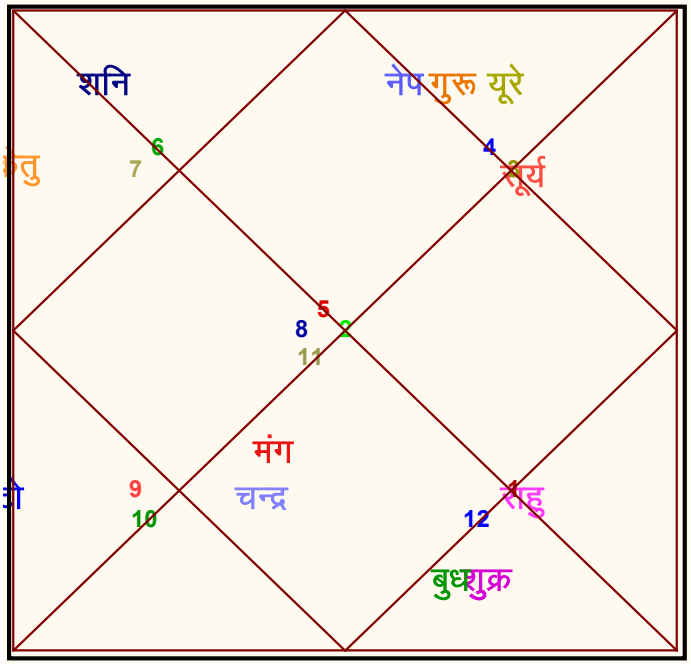

एकादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 11 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 2.73 डिग्री के आसपास फैला हुआ है। हांलाकि यह प्रायः पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में नियोजित नहीं होता है, यह वर्तमान अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सामान्यतः इसका उपयोग किसी व्यक्ति की उपलब्धियों और जीवन के कई पहलुओं में सफलता, विशेष रूप से उनकी नौकरी और करियर में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। एकादशांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनके चुने हुए क्षेत्र में उनकी अधिकतम क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है।

सर्वाष्टकवर्ग (337)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄ शनि	4	2	4	4	3	4	5	3	1	4	3	2	39
♃ गुरू	5	5	4	5	6	4	4	6	4	4	6	3	56
♂ मंगल	3	2	5	2	2	6	2	2	2	3	4	6	39
☉ सूर्य	6	4	5	3	4	5	5	3	3	3	3	4	48
♀ शुक्र	5	4	4	5	5	4	1	5	5	6	4	4	52
☿ बुध	4	3	5	4	4	7	3	6	2	4	6	6	54
☽ चन्द्रमा	4	4	4	4	3	4	4	4	2	6	5	5	49
योग	31	24	31	27	27	34	24	29	19	30	31	30	337

ग्रहों के बल का मूल्यांकन

- ग्रहों के बल का मूल्यांकन
- घटनाओं की भविष्यवाणी
- अनुकूल समय की पहचान
- उपाचारीय ज्योतिष

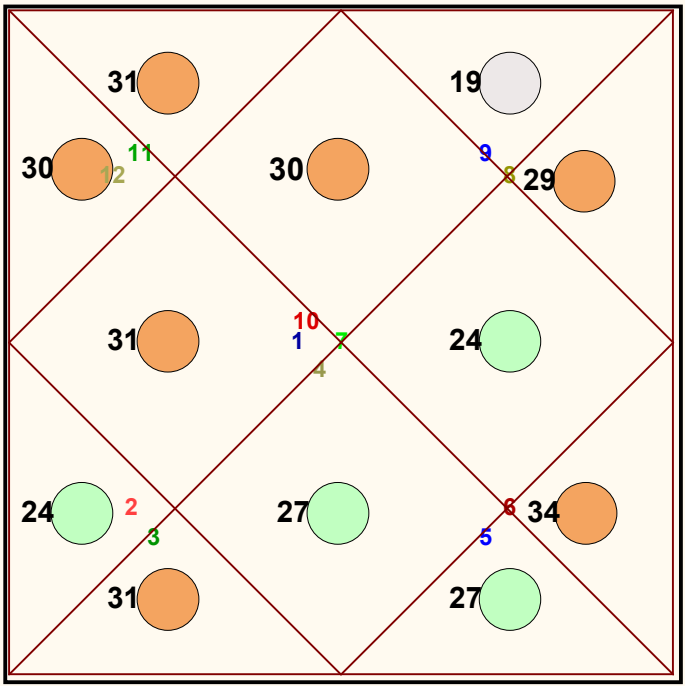

Legends :

शुभ　　मिश्रित　　अशुभ

सर्वाष्टकवर्ग योग

काहल योग : आपकी जन्म कुण्डली के सार्वष्टक वर्ग के तीसरे भाग (नौवें से बारहवें भाव राशि तक) में बहुत अधिक शुभ बिन्दु हैं। इस कारण आपकी कुण्ड़ली में काहल योग है। आप अपने जीवन के पहले चरण (लगभग 24वर्ष तक) में कम, दूसरे चरण (24से 48 वर्ष तक) अधिक और तीसरे चरण (लगभग 48 से 72वर्ष) में सबसे अधिक सुख प्राप्त करेंगे।

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄ शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
♃ गुरू	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	0	4
♂ मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
☉ सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
♀ शुक्र	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	3
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
☽ चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
AC लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	6
योग	6	4	5	3	4	5	5	3	3	3	3	4	48

सूर्य का कारकत्व

- आत्मा एवं स्व
- अधिकार और नेतृत्व
- स्वास्थ्य और जीवन शक्ति
- पिता और पितातुल्य व्यक्ति
- कैरियर और सफलता

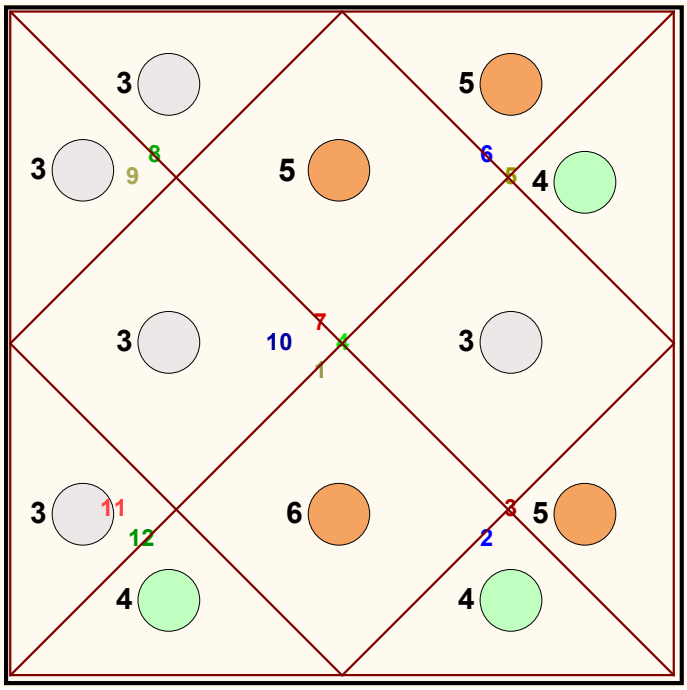

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

चन्द्रमा भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
♃	गुरू	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	7
♂	मंगल	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	0	7
☉	सूर्य	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	6
♀	शुक्र	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
☿	बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☽	चन्द्रमा	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	6
AC	लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
योग		4	4	4	4	3	4	4	4	2	6	5	5	49

चन्द्रमा का कारकत्व

- मन और भावनाएँ
- माँ और मातातुल्य स्त्री
- घर और पारिवारिक जीवन
- कल्पना और रचनात्मकता
- विकास और पोषण

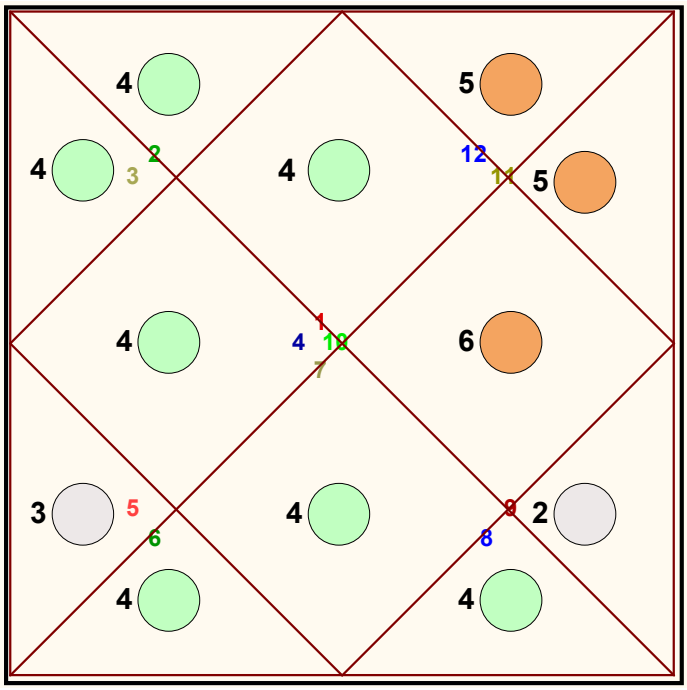

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	7
♃	गुरू	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	4
♂	मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
☉	सूर्य	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	1	5
♀	शुक्र	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
☿	बुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
☽	चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
AC	लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
योग		3	2	5	2	2	6	2	2	2	3	4	6	39

मंगल का कारकत्व

- ऊर्जा और क्रिया
- जुनून और संचालन
- आक्रामकता और संघर्ष
- नेतृत्व और उद्यमशीलता
- अभियांत्रिकी और तकनीकी कौशल

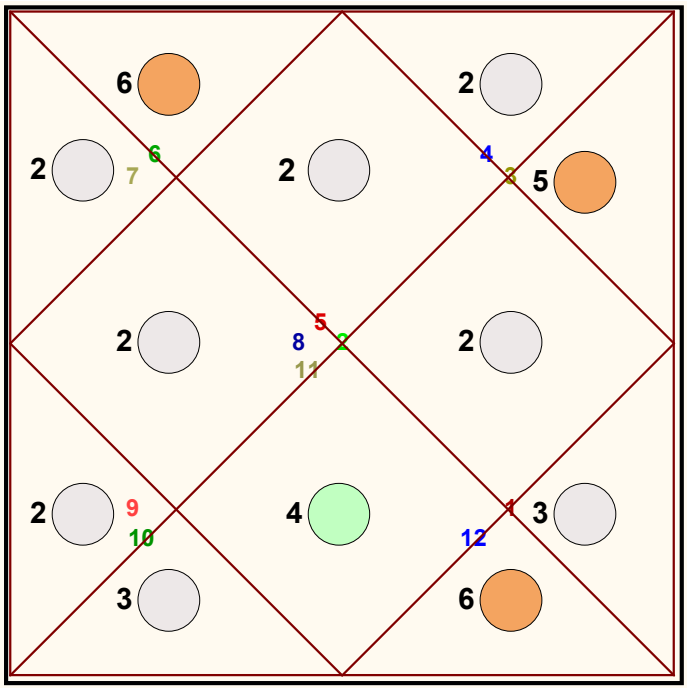

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄ शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
♃ गुरू	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
♂ मंगल	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	8
☉ सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	1	5
♀ शुक्र	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	8
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
☽ चन्द्रमा	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	6
AC लग्न	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	7
योग	4	3	5	4	4	7	3	6	2	4	6	6	54

बुध का कारकत्व

- बुद्धि और संचार
- वाणिज्य और व्यवसाय
- अधिगम और शिक्षा
- यात्रा और संचालन
- रचनात्मकता और कला

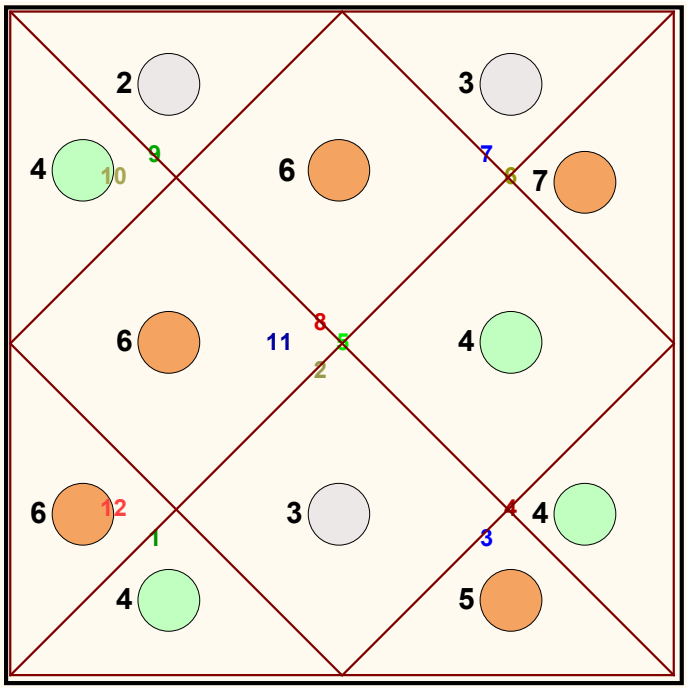

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

गुरू भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
♃	गुरू	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
♂	मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	7
☉	सूर्य	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	9
♀	शुक्र	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	6
☿	बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
☽	चन्द्रमा	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	5
AC	लग्न	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
योग		5	5	4	5	6	4	4	6	4	4	6	3	56

गुरू का कारकत्व

- बुद्धि और ज्ञान
- विकास और विस्तार
- नेतृत्व और अधिकार
- संतान और परिवार
- आध्यात्मिकता और धर्म

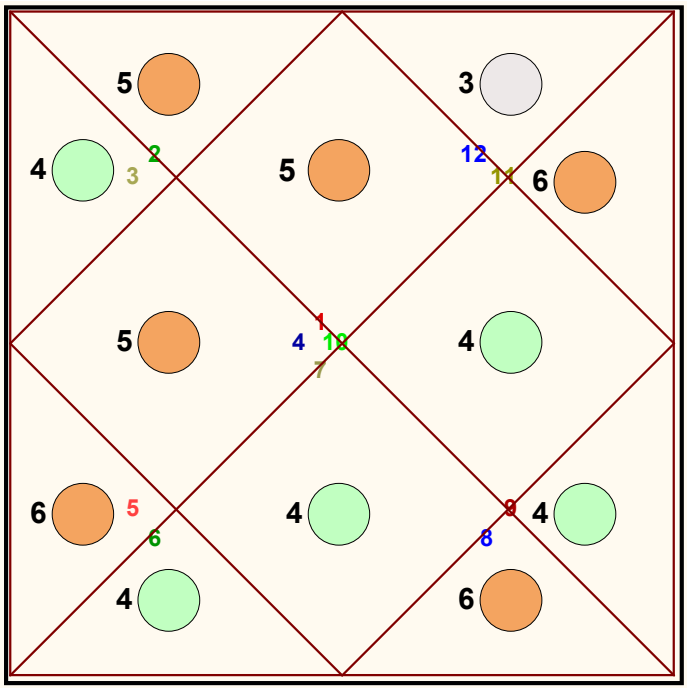

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
♃	गुरू	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	5
♂	मंगल	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
☉	सूर्य	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	3
♀	शुक्र	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	1	1	9
☿	बुध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	5
☽	चन्द्रमा	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	9
AC	लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
योग		5	4	4	5	5	4	1	5	5	6	4	4	52

शुक्र का कारकत्व

- प्रेम और रोमांच
- विवाह और साझेदारी
- कला और सौंदर्यशास्त्र
- विलासिता और सुखसुविधा
- वित्त और धन

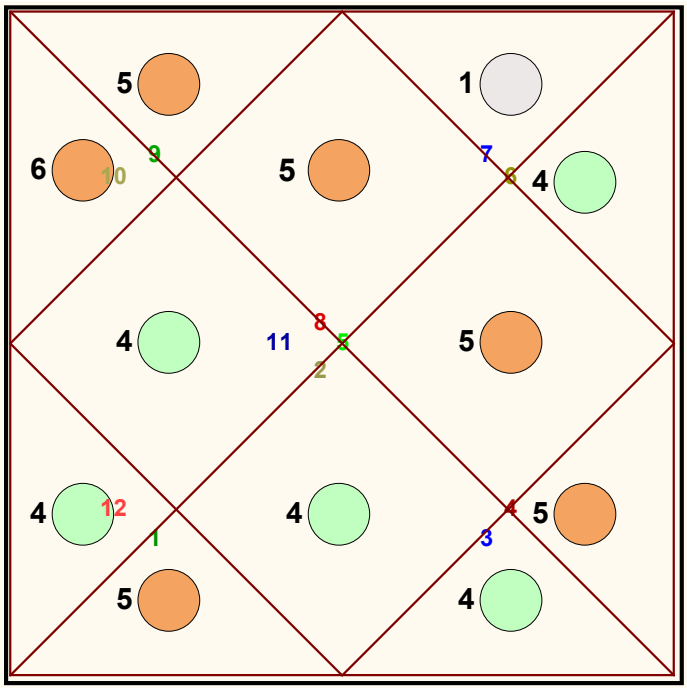

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
♃	गुरू	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
♂	मंगल	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	6
☉	सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
♀	शुक्र	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	3
☿	बुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
☽	चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
AC	लग्न	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	6
योग		4	2	4	4	3	4	5	3	1	4	3	2	39

शनि का कारकत्व

- कठिन परिश्रम और अनुशासन
- बाधाएं और चुनौतियां
- समय और कर्म
- अधिकार और नेतृत्व
- आध्यात्मिकता और वैराग्य

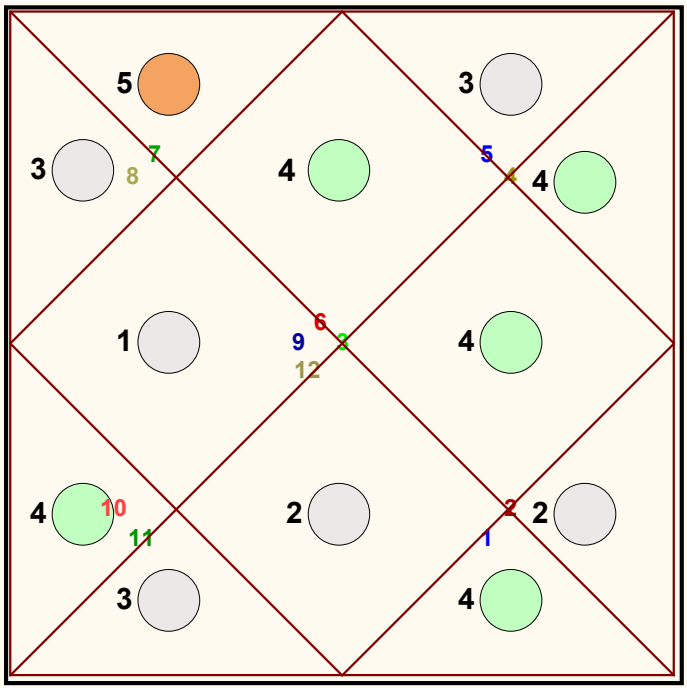

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

राहु भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	
♄	शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
♃	गुरू	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
♂	मंगल	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	5
☉	सूर्य	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
♀	शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	1	1	7
☿	बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
☽	चन्द्रमा	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	5
AC	लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	4
योग		2	2	6	4	4	5	3	4	5	5	5	4	49

राहु का कारकत्व

- आकांक्षा और सनक
- महत्वाकांक्षा और सफलता
- भ्रम और धोखा
- विदेश भूमि और यात्रा
- आध्यात्मिकता और प्रबोधन

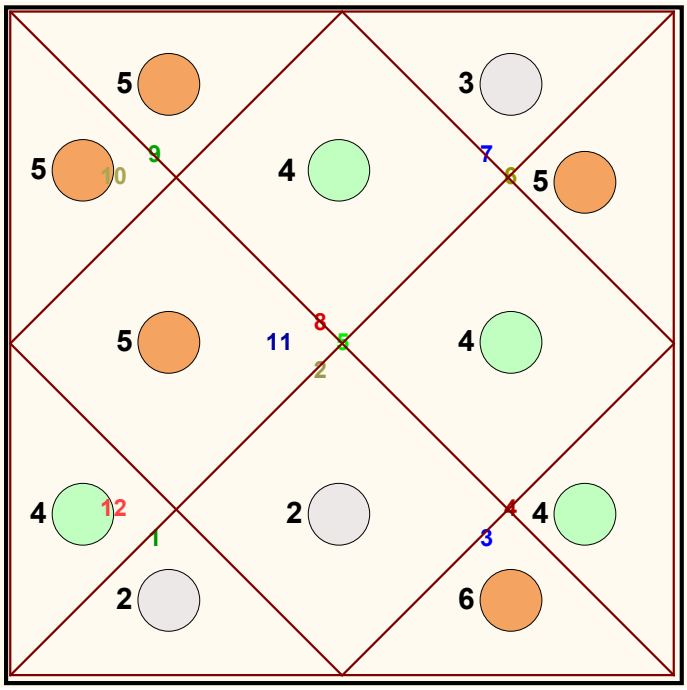

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

सर्वाष्टक वर्ग के महत्वपूर्ण बिन्दु

लग्न कुण्डली

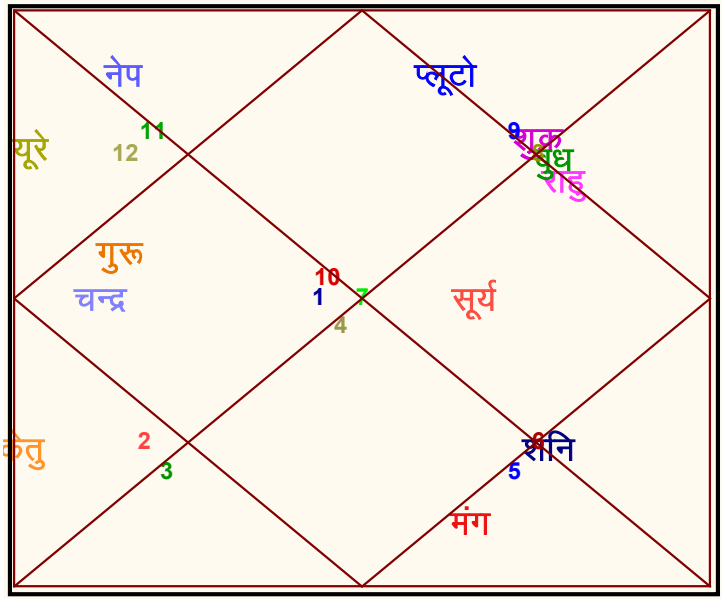

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

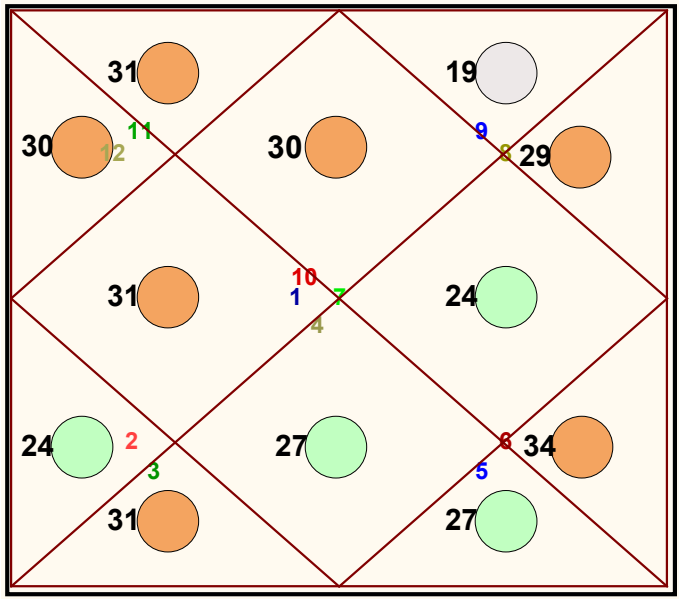

तत्व चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	77	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	88	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	86	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	86	उत्तर

(विशेष– सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर)। अगर दोनो भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उपू0, दपू0, उप0 और दप0) होगी।)

भुवन चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव–राशि	112.33	112	मेहनत और लगन
पनफरा भाव–राशि	112.33	111	आर्थिक स्थिति
अपोक्लिम् भाव–राशि	112.33	114	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	सर्वाष्टक बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	88	बन्धु –बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	86	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	86	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	77	दुर्भाग्य और हानि

लग्न कुण्डली

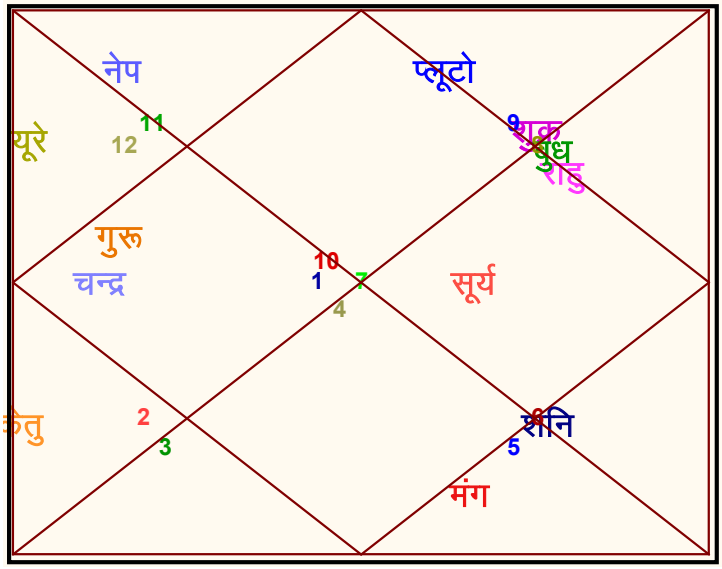

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

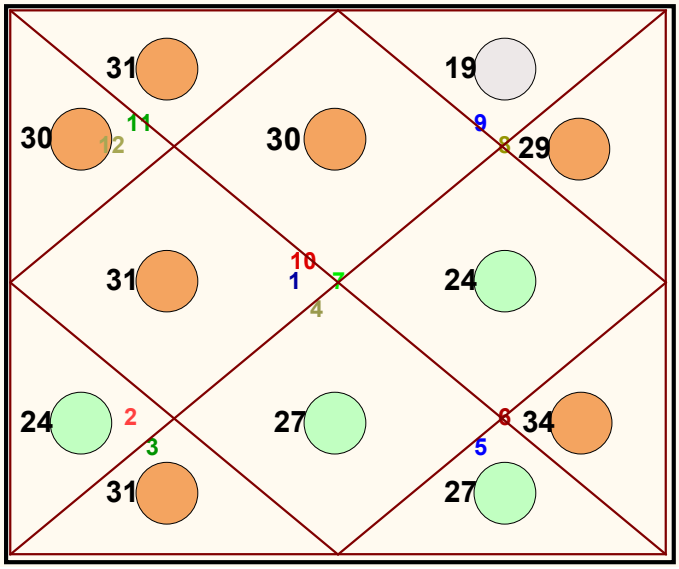

जीवन के महत्वपूर्ण कालखण्डो का अवलोकन

भाग	समयावधि	राशि		स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
1st	0 - 24 Years	♑	मकर	30	122	असाधारण
		♒	कुम्भ	31		
		♓	मीन	30		
		♈	मेष	31		
2nd	25-48 Years	♉	वृष	24	109	अच्छा
		♊	मिथुन	31		
		♋	कर्क	27		
		♌	सिहं	27		
3rd	> 48 Years	♍	कन्या	34	106	अच्छा
		♎	तुला	24		
		♏	वृश्चिक	29		
		♐	धनु	19		

1 - 105	106 - 118	> 118
खराब	अच्छा	असाधारण

कष्ट तुल्य भाव

भाव	राशि		स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
6	♊	मिथुन	31	77	< 84 Good
8	♌	सिहं	27		
12	♐	धनु	19		> 84 Not Good

सुदर्शन चक्र

वैदिक ज्योतिष्ष में सुदर्शन चक्र एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो किसी व्यक्ति के जीवन के तीन प्राथमिक पहलुओं, सूर्य (आत्मा), चंद्रमा (मन), और लग्न (शरीर) का प्रतिनिधित्व करने वाला एक व्यापक .ष्टिकोण प्रदान करता है। यह जन्म कुंडली के एकी.त विश्लेष्षण की अनुमति देता है, सटीक भविष्य्यवाणियों और व्यापक समझ में सहायता प्रदान करता है। यह तीन अलगअलग .ष्टिकोणों से गोचर का विश्लेष्षण करके घटनाओं के समय निर्धारण में भी मदद करता है। अंत में, यह समय अवधि की समग्र गुणवत्ता और किसी व्यक्ति के जीवन पर उनके प्रभावों को प्रकट करता है।

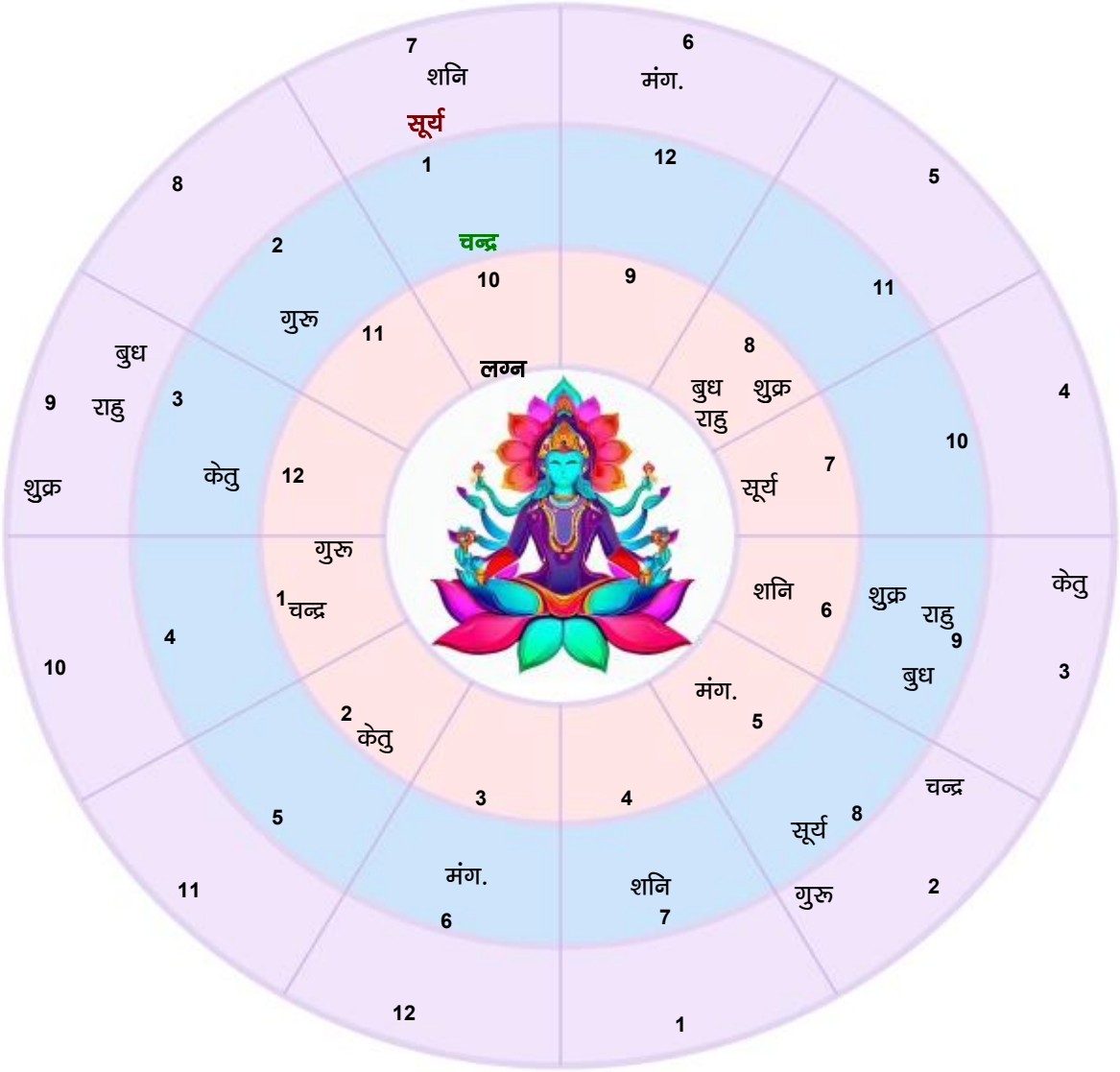

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़गें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	04.82	58.58	02.67	39.40	31.50	16.66	53.18
सप्त वर्ग बल	67.50	52.50	120.00	78.75	37.50	71.25	112.50
युग्म अयुग्म बल	15.00	00.00	15.00	15.00	30.00	15.00	00.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	30.00	60.00	30.00	15.00
द्रेक्कन बल	00.00	15.00	15.00	15.00	15.00	00.00	00.00
स्थान बल	**147.32**	**186.08**	**182.67**	**178.15**	**174.00**	**132.91**	**180.68**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	89.28	139.91	190.28	107.97	105.46	99.94	188.21
दिग बल	**57.80**	**56.37**	**36.05**	**44.66**	**27.77**	**09.71**	**31.10**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	165.15	112.75	120.16	127.59	79.36	19.42	103.65
नतोन्नत बल	57.75	02.25	02.25	57.75	00.00	57.75	02.25
पक्ष बल	01.43	58.57	01.43	01.43	58.57	58.57	01.43
त्रिभाग बल	60.00	00.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00	00.00	00.00
मास बल	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	45.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	07.86	06.48	43.92	57.12	45.38	01.88	40.94
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**187.04**	**97.29**	**47.60**	**116.30**	**178.95**	**163.20**	**44.62**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	167.00	97.29	71.05	103.84	159.77	163.20	66.59
चेष्टा बल	**07.86**	**58.57**	**30.00**	**45.00**	**60.00**	**45.00**	**30.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	15.72	195.23	75.00	90.00	120.00	150.00	75.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-08.08**	**-18.63**	**05.51**	**-18.21**	**-24.66**	**-18.21**	**06.67**
कुल षड्बल	**451.94**	**431.12**	**318.97**	**391.61**	**450.36**	**375.47**	**301.64**
षड्बल (रूप में)	**7.53**	**7.19**	**5.32**	**6.53**	**7.51**	**6.26**	**5.03**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	115.88	119.75	106.32	93.24	115.48	113.78	100.55
तुलनात्मक स्थिति	**1**	**3**	**6**	**4**	**2**	**5**	**7**
इष्ट फल	**08.17**	**58.57**	**08.95**	**42.11**	**43.48**	**27.38**	**39.94**
कष्ट फल	**51.83**	**01.43**	**51.05**	**17.89**	**16.52**	**32.62**	**20.06**
दिप्ति बल	**100.00**	**58.57**	**26.15**	**47.90**	**55.02**	**28.78**	**08.30**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
भावाधिपति बल	301.64	301.64	450.36	318.97	375.47	391.61	431.12	451.94	391.61	375.47	318.97	450.36
भाव दिग्बल	30.00	50.00	50.00	00.00	10.00	10.00	30.00	40.00	20.00	30.00	20.00	50.00
भाव दृष्टिबल	03.91	12.64	05.60	-22.01	06.55	-06.32	-15.17	04.91	33.33	-15.23	-13.40	-15.88
भावबल योग	**335.55**	**364.28**	**505.96**	**296.96**	**392.03**	**395.29**	**445.95**	**496.85**	**444.94**	**390.24**	**325.57**	**484.47**
भावबल (रूप में)	**5.59**	**6.07**	**8.43**	**4.95**	**6.53**	**6.59**	**7.43**	**8.28**	**7.42**	**6.50**	**5.43**	**8.07**
तुलनात्मक स्थिति	**10**	**9**	**1**	**12**	**7**	**6**	**4**	**2**	**5**	**8**	**11**	**3**

विंशोत्तरी दशा (1)

Sun (5 y.0 m.24 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (024:01:22)

अयनांश

सूर्य (6 वर्ष)

11/11/2011 To 05/12/2016

10th भाव नीच विशेष	तुला राशि विशा. (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 8 भावपति
सूर्य	-------	-------
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	29-01-2012	00.00
राहु	24-12-2012	00.22
गुरू	12-10-2013	01.12
शनि	23-09-2014	01.92
बुध	31-07-2015	02.87
केतु	05-12-2015	03.72
शुक्र	05-12-2016	04.07

चन्द्रमा (10 वर्ष)

05/12/2016 To 05/12/2026

4th भाव विशेष	मेष राशि कृति. (1) नक्षत्र	शत्रु संबंध 7 भावपति
चन्द्रमा	05-10-2017	05.07
मंगल	06-05-2018	05.90
राहु	05-11-2019	06.48
गुरू	07-03-2021	07.98
शनि	05-10-2022	09.32
बुध	06-03-2024	10.90
केतु	05-10-2024	12.32
शुक्र	06-06-2026	12.90
सूर्य	05-12-2026	14.57

मंगल (7 वर्ष)

05/12/2026 To 05/12/2033

8th भाव विशेष	सिहं राशि मघा (2) नक्षत्र	सम संबंध 4 , 11 भावपति
मंगल	03-05-2027	15.07
राहु	21-05-2028	15.48
गुरू	27-04-2029	16.53
शनि	06-06-2030	17.46
बुध	03-06-2031	18.57
केतु	30-10-2031	19.56
शुक्र	30-12-2032	19.97
सूर्य	06-05-2033	21.13
चन्द्रमा	05-12-2033	21.48

राहु (18 वर्ष)

05/12/2033 To 05/12/2051

11th भाव नीच विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (2) नक्षत्र	शत्रु संबंध भावपति
राहु	17-08-2036	22.07
गुरू	11-01-2039	24.77
शनि	17-11-2041	27.17
बुध	05-06-2044	30.02
केतु	24-06-2045	32.57
शुक्र	24-06-2048	33.62
सूर्य	19-05-2049	36.62
चन्द्रमा	17-11-2050	37.52
मंगल	05-12-2051	39.02

गुरू (16 वर्ष)

05/12/2051 To 05/12/2067

4th भाव वक्री विशेष	मेष राशि अशि. (3) नक्षत्र	मित्र संबंध 12 , 3 भावपति
गुरू	23-01-2054	40.07
शनि	05-08-2056	42.20
बुध	11-11-2058	44.73
केतु	18-10-2059	47.00
शुक्र	18-06-2062	47.93
सूर्य	06-04-2063	50.60
चन्द्रमा	05-08-2064	51.40
मंगल	12-07-2065	52.73
राहु	05-12-2067	53.67

शनि (19 वर्ष)

05/12/2067 To 05/12/2086

9th भाव विशेष	कन्या राशि चित्रा (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 1 , 2 भावपति
शनि	08-12-2070	56.07
बुध	18-08-2073	59.08
केतु	26-09-2074	61.77
शुक्र	26-11-2077	62.88
सूर्य	08-11-2078	66.04
चन्द्रमा	08-06-2080	66.99
मंगल	18-07-2081	68.58
राहु	24-05-2084	69.68
गुरू	05-12-2086	72.53

विंशोत्तरी दशा (2)

बुध (17 वर्ष)

05/12/2086 To 05/12/2103

11th भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 6 , 9 भावपति
बुध	03-05-2089	75.07
केतु	30-04-2090	77.48
शुक्र	28-02-2093	78.47
सूर्य	05-01-2094	81.30
चन्द्रमा	06-06-2095	82.15
मंगल	02-06-2096	83.57
राहु	21-12-2098	84.56
गुरू	28-03-2101	87.11
शनि	05-12-2103	89.38

केतु (7 वर्ष)

05/12/2103 To 05/12/2110

5th भाव नीच विशेष	वृष राशि रोहि. (4) नक्षत्र	सम संबंन्ध भावपति
केतु	03-05-2104	92.07
शुक्र	03-07-2105	92.48
सूर्य	08-11-2105	93.64
चन्द्रमा	09-06-2106	93.99
मंगल	05-11-2106	94.58
राहु	23-11-2107	94.98
गुरू	30-10-2108	96.03
शनि	08-12-2109	96.97
बुध	05-12-2110	98.08

शुक्र (20 वर्ष)

05/12/2110 To 05/12/2130

11th भाव विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	शत्रु संबंन्ध 5 , 10 भावपति
शुक्र	06-04-2114	99.07
सूर्य	06-04-2115	102.40
चन्द्रमा	05-12-2116	103.40
मंगल	04-02-2118	105.07
राहु	04-02-2121	106.23
गुरू	05-10-2123	109.23
शनि	05-12-2126	111.90
बुध	05-10-2129	115.07
केतु	05-12-2130	117.90

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	05:12:2016 (17:39:34)	05:12:2026 (19:18:58)
अन्तर्रदशा	बुध	05:10:2022 (23:18:58)	06:03:2024 (05:39:34)
प्रत्यन्तर्रदशा	गुरू	07:10:2023 (05:43:58)	15:12:2023 (04:23:58)
सूक्ष्मदशा	शुक्र	10:11:2023 (03:16:38)	21:11:2023 (15:03:18)
प्राणदशा	सूर्य	12:11:2023 (01:14:25)	12:11:2023 (15:01:45)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

सूर्य दशा

(11:11:2011 To 05:12:2016)

सूर्य अन्तर

सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

(11:11:2011 To 29:01:2012)

मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	26-11-2011	00.00
बुध	14-12-2011	00.04
केतु	22-12-2011	00.09
शुक्र	12-01-2012	00.11
सूर्य	18-01-2012	00.17
चन्द्रमा	29-01-2012	00.19

राहु अन्तर

(29:01:2012 To 24:12:2012)

राहु	19-03-2012	00.22
गुरू	01-05-2012	00.35
शनि	23-06-2012	00.47
बुध	08-08-2012	00.61
केतु	28-08-2012	00.74
शुक्र	21-10-2012	00.79
सूर्य	07-11-2012	00.94
चन्द्रमा	04-12-2012	00.99
मंगल	24-12-2012	01.06

गुरू अन्तर

(24:12:2012 To 12:10:2013)

गुरू	31-01-2013	01.12
शनि	19-03-2013	01.22
बुध	29-04-2013	01.35
केतु	16-05-2013	01.46
शुक्र	04-07-2013	01.51
सूर्य	18-07-2013	01.64
चन्द्रमा	12-08-2013	01.68
मंगल	29-08-2013	01.75
राहु	12-10-2013	01.80

शनि अन्तर

(12:10:2013 To 23:09:2014)

शनि	05-12-2013	01.92
बुध	24-01-2014	02.07
केतु	13-02-2014	02.20
शुक्र	12-04-2014	02.26
सूर्य	29-04-2014	02.42
चन्द्रमा	28-05-2014	02.46
मंगल	17-06-2014	02.54
राहु	08-08-2014	02.60
गुरू	23-09-2014	02.74

बुध अन्तर

(23:09:2014 To 31:07:2015)

बुध	06-11-2014	02.87
केतु	24-11-2014	02.99
शुक्र	15-01-2015	03.04
सूर्य	31-01-2015	03.18
चन्द्रमा	25-02-2015	03.22
मंगल	16-03-2015	03.29
राहु	01-05-2015	03.34
गुरू	11-06-2015	03.47
शनि	31-07-2015	03.58

केतु अन्तर

(31:07:2015 To 05:12:2015)

केतु	07-08-2015	03.72
शुक्र	28-08-2015	03.74
सूर्य	04-09-2015	03.80
चन्द्रमा	14-09-2015	03.81
मंगल	22-09-2015	03.84
राहु	11-10-2015	03.86
गुरू	28-10-2015	03.92
शनि	17-11-2015	03.96
बुध	05-12-2015	04.02

शुक्र अन्तर

(05:12:2015 To 05:12:2016)

शुक्र	04-02-2016	04.07
सूर्य	23-02-2016	04.23
चन्द्रमा	24-03-2016	04.28
मंगल	14-04-2016	04.37
राहु	08-06-2016	04.43
गुरू	27-07-2016	04.58
शनि	23-09-2016	04.71
बुध	14-11-2016	04.87
केतु	05-12-2016	05.01

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(05:12:2016 To 05:12:2026)

चन्द्रमा अन्तर

(05:12:2016 To 05:10:2017)		
चन्द्रमा	31-12-2016	05.07
मंगल	17-01-2017	05.14
राहु	04-03-2017	05.18
गुरू	14-04-2017	05.31
शनि	01-06-2017	05.42
बुध	14-07-2017	05.55
केतु	01-08-2017	05.67
शुक्र	20-09-2017	05.72
सूर्य	05-10-2017	05.86

मंगल अन्तर

(05:10:2017 To 06:05:2018)		
मंगल	18-10-2017	05.90
राहु	19-11-2017	05.93
गुरू	17-12-2017	06.02
शनि	20-01-2018	06.10
बुध	19-02-2018	06.19
केतु	04-03-2018	06.27
शुक्र	08-04-2018	06.31
सूर्य	19-04-2018	06.41
चन्द्रमा	06-05-2018	06.43

राहु अन्तर

(06:05:2018 To 05:11:2019)		
राहु	28-07-2018	06.48
गुरू	09-10-2018	06.71
शनि	03-01-2019	06.91
बुध	22-03-2019	07.15
केतु	23-04-2019	07.36
शुक्र	23-07-2019	07.45
सूर्य	19-08-2019	07.70
चन्द्रमा	04-10-2019	07.77
मंगल	05-11-2019	07.90

गुरू अन्तर

(05:11:2019 To 07:03:2021)		
गुरू	09-01-2020	07.98
शनि	26-03-2020	08.16
बुध	03-06-2020	08.37
केतु	02-07-2020	08.56
शुक्र	21-09-2020	08.64
सूर्य	15-10-2020	08.86
चन्द्रमा	25-11-2020	08.93
मंगल	24-12-2020	09.04
राहु	07-03-2021	09.12

शनि अन्तर

(07:03:2021 To 05:10:2022)		
शनि	06-06-2021	09.32
बुध	27-08-2021	09.57
केतु	30-09-2021	09.79
शुक्र	04-01-2022	09.88
सूर्य	02-02-2022	10.15
चन्द्रमा	22-03-2022	10.23
मंगल	25-04-2022	10.36
राहु	20-07-2022	10.45
गुरू	05-10-2022	10.69

बुध अन्तर

(05:10:2022 To 06:03:2024)		
बुध	18-12-2022	10.90
केतु	17-01-2023	11.10
शुक्र	13-04-2023	11.18
सूर्य	09-05-2023	11.42
चन्द्रमा	21-06-2023	11.49
मंगल	21-07-2023	11.61
राहु	07-10-2023	11.69
गुरू	15-12-2023	11.90
शनि	06-03-2024	12.09

केतु अन्तर

(06:03:2024 To 05:10:2024)		
केतु	18-03-2024	12.32
शुक्र	23-04-2024	12.35
सूर्य	03-05-2024	12.45
चन्द्रमा	21-05-2024	12.48
मंगल	03-06-2024	12.53
राहु	05-07-2024	12.56
गुरू	02-08-2024	12.65
शनि	05-09-2024	12.73
बुध	05-10-2024	12.82

शुक्र अन्तर

(05:10:2024 To 06:06:2026)		
शुक्र	15-01-2025	12.90
सूर्य	14-02-2025	13.18
चन्द्रमा	06-04-2025	13.26
मंगल	11-05-2025	13.40
राहु	11-08-2025	13.50
गुरू	31-10-2025	13.75
शनि	04-02-2026	13.97
बुध	01-05-2026	14.23
केतु	06-06-2026	14.47

सूर्य अन्तर

(06:06:2026 To 05:12:2026)		
सूर्य	15-06-2026	14.57
चन्द्रमा	30-06-2026	14.59
मंगल	11-07-2026	14.63
राहु	07-08-2026	14.66
गुरू	31-08-2026	14.74
शनि	29-09-2026	14.80
बुध	25-10-2026	14.88
केतु	05-11-2026	14.95
शुक्र	05-12-2026	14.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(05:12:2026 To 05:12:2033)

मंगल अन्तर

(05:12:2026 To 03:05:2027)

मंगल	14-12-2026	15.07
राहु	05-01-2027	15.09
गुरू	25-01-2027	15.15
शनि	18-02-2027	15.21
बुध	11-03-2027	15.27
केतु	20-03-2027	15.33
शुक्र	13-04-2027	15.35
सूर्य	21-04-2027	15.42
चन्द्रमा	03-05-2027	15.44

राहु अन्तर

(03:05:2027 To 21:05:2028)

राहु	30-06-2027	15.48
गुरू	20-08-2027	15.63
शनि	20-10-2027	15.77
बुध	13-12-2027	15.94
केतु	04-01-2028	16.09
शुक्र	08-03-2028	16.15
सूर्य	28-03-2028	16.32
चन्द्रमा	29-04-2028	16.38
मंगल	21-05-2028	16.46

गुरू अन्तर

(21:05:2028 To 27:04:2029)

गुरू	06-07-2028	16.53
शनि	29-08-2028	16.65
बुध	16-10-2028	16.80
केतु	05-11-2028	16.93
शुक्र	01-01-2029	16.98
सूर्य	18-01-2029	17.14
चन्द्रमा	15-02-2029	17.19
मंगल	07-03-2029	17.26
राहु	27-04-2029	17.32

शनि अन्तर

(27:04:2029 To 06:06:2030)

शनि	30-06-2029	17.46
बुध	27-08-2029	17.63
केतु	19-09-2029	17.79
शुक्र	26-11-2029	17.86
सूर्य	16-12-2029	18.04
चन्द्रमा	19-01-2030	18.10
मंगल	11-02-2030	18.19
राहु	13-04-2030	18.25
गुरू	06-06-2030	18.42

बुध अन्तर

(06:06:2030 To 03:06:2031)

बुध	27-07-2030	18.57
केतु	17-08-2030	18.71
शुक्र	17-10-2030	18.77
सूर्य	04-11-2030	18.93
चन्द्रमा	04-12-2030	18.98
मंगल	25-12-2030	19.06
राहु	17-02-2031	19.12
गुरू	06-04-2031	19.27
शनि	03-06-2031	19.40

केतु अन्तर

(03:06:2031 To 30:10:2031)

केतु	11-06-2031	19.56
शुक्र	06-07-2031	19.58
सूर्य	14-07-2031	19.65
चन्द्रमा	26-07-2031	19.67
मंगल	04-08-2031	19.70
राहु	26-08-2031	19.73
गुरू	15-09-2031	19.79
शनि	09-10-2031	19.84
बुध	30-10-2031	19.91

शुक्र अन्तर

(30:10:2031 To 30:12:2032)

शुक्र	09-01-2032	19.97
सूर्य	30-01-2032	20.16
चन्द्रमा	06-03-2032	20.22
मंगल	31-03-2032	20.32
राहु	03-06-2032	20.38
गुरू	30-07-2032	20.56
शनि	05-10-2032	20.72
बुध	05-12-2032	20.90
केतु	30-12-2032	21.07

सूर्य अन्तर

(30:12:2032 To 06:05:2033)

सूर्य	05-01-2033	21.13
चन्द्रमा	16-01-2033	21.15
मंगल	23-01-2033	21.18
राहु	11-02-2033	21.20
गुरू	28-02-2033	21.25
शनि	21-03-2033	21.30
बुध	08-04-2033	21.36
केतु	15-04-2033	21.40
शुक्र	06-05-2033	21.43

चन्द्रमा अन्तर

(06:05:2033 To 05:12:2033)

चन्द्रमा	24-05-2033	21.48
मंगल	06-06-2033	21.53
राहु	07-07-2033	21.57
गुरू	05-08-2033	21.65
शनि	08-09-2033	21.73
बुध	08-10-2033	21.82
केतु	20-10-2033	21.91
शुक्र	25-11-2033	21.94
सूर्य	05-12-2033	22.04

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(05:12:2033 To 05:12:2051)

राहु अन्तर

(05:12:2033 To 17:08:2036)

राहु	02-05-2034	22.07
गुरू	11-09-2034	22.47
शनि	14-02-2035	22.83
बुध	03-07-2035	23.26
केतु	30-08-2035	23.64
शुक्र	10-02-2036	23.80
सूर्य	30-03-2036	24.25
चन्द्रमा	21-06-2036	24.38
मंगल	17-08-2036	24.61

गुरू अन्तर

(17:08:2036 To 11:01:2039)

गुरू	13-12-2036	24.77
शनि	30-04-2037	25.09
बुध	01-09-2037	25.47
केतु	23-10-2037	25.81
शुक्र	18-03-2038	25.95
सूर्य	30-04-2038	26.35
चन्द्रमा	12-07-2038	26.47
मंगल	01-09-2038	26.67
राहु	11-01-2039	26.81

शनि अन्तर

(11:01:2039 To 17:11:2041)

शनि	25-06-2039	27.17
बुध	19-11-2039	27.62
केतु	19-01-2040	28.02
शुक्र	10-07-2040	28.19
सूर्य	01-09-2040	28.66
चन्द्रमा	27-11-2040	28.81
मंगल	26-01-2041	29.04
राहु	01-07-2041	29.21
गुरू	17-11-2041	29.64

बुध अन्तर

(17:11:2041 To 05:06:2044)

बुध	29-03-2042	30.02
केतु	22-05-2042	30.38
शुक्र	24-10-2042	30.53
सूर्य	10-12-2042	30.95
चन्द्रमा	25-02-2043	31.08
मंगल	21-04-2043	31.29
राहु	07-09-2043	31.44
गुरू	09-01-2044	31.82
शनि	05-06-2044	32.16

केतु अन्तर

(05:06:2044 To 24:06:2045)

केतु	28-06-2044	32.57
शुक्र	31-08-2044	32.63
सूर्य	19-09-2044	32.80
चन्द्रमा	21-10-2044	32.86
मंगल	12-11-2044	32.94
राहु	09-01-2045	33.00
गुरू	01-03-2045	33.16
शनि	01-05-2045	33.30
बुध	24-06-2045	33.47

शुक्र अन्तर

(24:06:2045 To 24:06:2048)

शुक्र	24-12-2045	33.62
सूर्य	16-02-2046	34.12
चन्द्रमा	19-05-2046	34.27
मंगल	21-07-2046	34.52
राहु	02-01-2047	34.69
गुरू	28-05-2047	35.14
शनि	17-11-2047	35.54
बुध	20-04-2048	36.02
केतु	24-06-2048	36.44

सूर्य अन्तर

(24:06:2048 To 19:05:2049)

सूर्य	10-07-2048	36.62
चन्द्रमा	06-08-2048	36.66
मंगल	26-08-2048	36.74
राहु	14-10-2048	36.79
गुरू	27-11-2048	36.92
शनि	18-01-2049	37.04
बुध	06-03-2049	37.19
केतु	25-03-2049	37.31
शुक्र	19-05-2049	37.37

चन्द्रमा अन्तर

(19:05:2049 To 17:11:2050)

चन्द्रमा	03-07-2049	37.52
मंगल	04-08-2049	37.64
राहु	25-10-2049	37.73
गुरू	06-01-2050	37.95
शनि	03-04-2050	38.15
बुध	19-06-2050	38.39
केतु	21-07-2050	38.60
शुक्र	21-10-2050	38.69
सूर्य	17-11-2050	38.94

मंगल अन्तर

(17:11:2050 To 05:12:2051)

मंगल	09-12-2050	39.02
राहु	05-02-2051	39.08
गुरू	28-03-2051	39.24
शनि	28-05-2051	39.38
बुध	21-07-2051	39.54
केतु	12-08-2051	39.69
शुक्र	15-10-2051	39.75
सूर्य	03-11-2051	39.93
चन्द्रमा	05-12-2051	39.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(05:12:2051 To 05:12:2067)

गुरू अन्तर

(05:12:2051 To 23:01:2054)

गुरू	18-03-2052	40.07
शनि	20-07-2052	40.35
बुध	08-11-2052	40.69
केतु	23-12-2052	40.99
शुक्र	02-05-2053	41.12
सूर्य	10-06-2053	41.47
चन्द्रमा	14-08-2053	41.58
मंगल	28-09-2053	41.76
राहु	23-01-2054	41.88

शनि अन्तर

(23:01:2054 To 05:08:2056)

शनि	18-06-2054	42.20
बुध	27-10-2054	42.60
केतु	20-12-2054	42.96
शुक्र	23-05-2055	43.11
सूर्य	09-07-2055	43.53
चन्द्रमा	24-09-2055	43.66
मंगल	17-11-2055	43.87
राहु	04-04-2056	44.02
गुरू	05-08-2056	44.40

बुध अन्तर

(05:08:2056 To 11:11:2058)

बुध	01-12-2056	44.73
केतु	18-01-2057	45.05
शुक्र	05-06-2057	45.19
सूर्य	16-07-2057	45.56
चन्द्रमा	23-09-2057	45.68
मंगल	11-11-2057	45.87
राहु	15-03-2058	46.00
गुरू	03-07-2058	46.34
शनि	11-11-2058	46.64

केतु अन्तर

(11:11:2058 To 18:10:2059)

केतु	01-12-2058	47.00
शुक्र	27-01-2059	47.05
सूर्य	13-02-2059	47.21
चन्द्रमा	13-03-2059	47.26
मंगल	02-04-2059	47.33
राहु	23-05-2059	47.39
गुरू	07-07-2059	47.53
शनि	30-08-2059	47.65
बुध	18-10-2059	47.80

शुक्र अन्तर

(18:10:2059 To 18:06:2062)

शुक्र	28-03-2060	47.93
सूर्य	16-05-2060	48.38
चन्द्रमा	05-08-2060	48.51
मंगल	01-10-2060	48.73
राहु	24-02-2061	48.89
गुरू	04-07-2061	49.29
शनि	05-12-2061	49.64
बुध	22-04-2062	50.07
केतु	18-06-2062	50.44

सूर्य अन्तर

(18:06:2062 To 06:04:2063)

सूर्य	03-07-2062	50.60
चन्द्रमा	27-07-2062	50.64
मंगल	13-08-2062	50.71
राहु	26-09-2062	50.75
गुरू	04-11-2062	50.87
शनि	20-12-2062	50.98
बुध	30-01-2063	51.11
केतु	16-02-2063	51.22
शुक्र	06-04-2063	51.27

चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2063 To 05:08:2064)

चन्द्रमा	17-05-2063	51.40
मंगल	14-06-2063	51.51
राहु	26-08-2063	51.59
गुरू	30-10-2063	51.79
शनि	15-01-2064	51.97
बुध	24-03-2064	52.18
केतु	22-04-2064	52.37
शुक्र	12-07-2064	52.44
सूर्य	05-08-2064	52.67

मंगल अन्तर

(05:08:2064 To 12:07:2065)

मंगल	25-08-2064	52.73
राहु	15-10-2064	52.79
गुरू	30-11-2064	52.93
शनि	23-01-2065	53.05
बुध	12-03-2065	53.20
केतु	01-04-2065	53.33
शुक्र	28-05-2065	53.39
सूर्य	14-06-2065	53.54
चन्द्रमा	12-07-2065	53.59

राहु अन्तर

(12:07:2065 To 05:12:2067)

राहु	21-11-2065	53.67
गुरू	18-03-2066	54.03
शनि	03-08-2066	54.35
बुध	05-12-2066	54.73
केतु	25-01-2067	55.07
शुक्र	20-06-2067	55.21
सूर्य	03-08-2067	55.61
चन्द्रमा	15-10-2067	55.73
मंगल	05-12-2067	55.93

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(05:12:2067 To 05:12:2086)

शनि अन्तर

(05:12:2067 To 08:12:2070)		
शनि	28-05-2068	56.07
बुध	31-10-2068	56.54
केतु	03-01-2069	56.97
शुक्र	05-07-2069	57.14
सूर्य	29-08-2069	57.65
चन्द्रमा	28-11-2069	57.80
मंगल	31-01-2070	58.05
राहु	15-07-2070	58.22
गुरू	08-12-2070	58.67

बुध अन्तर

(08:12:2070 To 18:08:2073)		
बुध	27-04-2071	59.08
केतु	23-06-2071	59.46
शुक्र	04-12-2071	59.61
सूर्य	22-01-2072	60.06
चन्द्रमा	13-04-2072	60.20
मंगल	09-06-2072	60.42
राहु	04-11-2072	60.58
गुरू	15-03-2073	60.98
शनि	18-08-2073	61.34

केतु अन्तर

(18:08:2073 To 26:09:2074)		
केतु	10-09-2073	61.77
शुक्र	17-11-2073	61.83
सूर्य	07-12-2073	62.02
चन्द्रमा	10-01-2074	62.07
मंगल	02-02-2074	62.16
राहु	04-04-2074	62.23
गुरू	28-05-2074	62.39
शनि	31-07-2074	62.54
बुध	26-09-2074	62.72

शुक्र अन्तर

(26:09:2074 To 26:11:2077)		
शुक्र	07-04-2075	62.88
सूर्य	04-06-2075	63.40
चन्द्रमा	08-09-2075	63.56
मंगल	15-11-2075	63.83
राहु	06-05-2076	64.01
गुरू	08-10-2076	64.48
शनि	09-04-2077	64.91
बुध	20-09-2077	65.41
केतु	26-11-2077	65.86

सूर्य अन्तर

(26:11:2077 To 08:11:2078)		
सूर्य	14-12-2077	66.04
चन्द्रमा	11-01-2078	66.09
मंगल	01-02-2078	66.17
राहु	25-03-2078	66.22
गुरू	10-05-2078	66.37
शनि	04-07-2078	66.49
बुध	22-08-2078	66.64
केतु	11-09-2078	66.78
शुक्र	08-11-2078	66.83

चन्द्रमा अन्तर

(08:11:2078 To 08:06:2080)		
चन्द्रमा	26-12-2078	66.99
मंगल	29-01-2079	67.12
राहु	25-04-2079	67.22
गुरू	12-07-2079	67.45
शनि	11-10-2079	67.66
बुध	01-01-2080	67.92
केतु	04-02-2080	68.14
शुक्र	10-05-2080	68.23
सूर्य	08-06-2080	68.50

मंगल अन्तर

(08:06:2080 To 18:07:2081)		
मंगल	02-07-2080	68.58
राहु	01-09-2080	68.64
गुरू	25-10-2080	68.81
शनि	28-12-2080	68.95
बुध	23-02-2081	69.13
केतु	19-03-2081	69.29
शुक्र	25-05-2081	69.35
सूर्य	15-06-2081	69.54
चन्द्रमा	18-07-2081	69.59

राहु अन्तर

(18:07:2081 To 24:05:2084)		
राहु	21-12-2081	69.68
गुरू	09-05-2082	70.11
शनि	21-10-2082	70.49
बुध	17-03-2083	70.94
केतु	17-05-2083	71.35
शुक्र	06-11-2083	71.51
सूर्य	28-12-2083	71.99
चन्द्रमा	24-03-2084	72.13
मंगल	24-05-2084	72.37

गुरू अन्तर

(24:05:2084 To 05:12:2086)		
गुरू	25-09-2084	72.53
शनि	18-02-2085	72.87
बुध	29-06-2085	73.27
केतु	22-08-2085	73.63
शुक्र	23-01-2086	73.78
सूर्य	11-03-2086	74.20
चन्द्रमा	27-05-2086	74.33
मंगल	20-07-2086	74.54
राहु	05-12-2086	74.69

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(05:12:2086 To 05:12:2103)

बुध अन्तर

(05:12:2086 To 03:05:2089)

बुध	09-04-2087	75.07
केतु	30-05-2087	75.41
शुक्र	24-10-2087	75.55
सूर्य	07-12-2087	75.95
चन्द्रमा	18-02-2088	76.07
मंगल	09-04-2088	76.27
राहु	20-08-2088	76.41
गुरू	15-12-2088	76.77
शनि	03-05-2089	77.09

केतु अन्तर

(03:05:2089 To 30:04:2090)

केतु	24-05-2089	77.48
शुक्र	24-07-2089	77.53
सूर्य	11-08-2089	77.70
चन्द्रमा	10-09-2089	77.75
मंगल	01-10-2089	77.83
राहु	24-11-2089	77.89
गुरू	12-01-2090	78.04
शनि	10-03-2090	78.17
बुध	30-04-2090	78.33

शुक्र अन्तर

(30:04:2090 To 28:02:2093)

शुक्र	20-10-2090	78.47
सूर्य	10-12-2090	78.94
चन्द्रमा	07-03-2091	79.08
मंगल	06-05-2091	79.32
राहु	08-10-2091	79.48
गुरू	23-02-2092	79.91
शनि	05-08-2092	80.28
बुध	30-12-2092	80.73
केतु	28-02-2093	81.13

सूर्य अन्तर

(28:02:2093 To 05:01:2094)

सूर्य	16-03-2093	81.30
चन्द्रमा	11-04-2093	81.34
मंगल	29-04-2093	81.41
राहु	14-06-2093	81.46
गुरू	26-07-2093	81.59
शनि	13-09-2093	81.70
बुध	27-10-2093	81.84
केतु	14-11-2093	81.96
शुक्र	05-01-2094	82.01

चन्द्रमा अन्तर

(05:01:2094 To 06:06:2095)

चन्द्रमा	17-02-2094	82.15
मंगल	19-03-2094	82.27
राहु	05-06-2094	82.35
गुरू	12-08-2094	82.56
शनि	02-11-2094	82.75
बुध	15-01-2095	82.98
केतु	14-02-2095	83.18
शुक्र	11-05-2095	83.26
सूर्य	06-06-2095	83.50

मंगल अन्तर

(06:06:2095 To 02:06:2096)

मंगल	27-06-2095	83.57
राहु	20-08-2095	83.62
गुरू	07-10-2095	83.77
शनि	04-12-2095	83.91
बुध	24-01-2096	84.06
केतु	14-02-2096	84.20
शुक्र	15-04-2096	84.26
सूर्य	03-05-2096	84.43
चन्द्रमा	02-06-2096	84.48

राहु अन्तर

(02:06:2096 To 21:12:2098)

राहु	20-10-2096	84.56
गुरू	21-02-2097	84.94
शनि	19-07-2097	85.28
बुध	28-11-2097	85.68
केतु	21-01-2098	86.05
शुक्र	25-06-2098	86.19
सूर्य	11-08-2098	86.62
चन्द्रमा	27-10-2098	86.75
मंगल	21-12-2098	86.96

गुरू अन्तर

(21:12:2098 To 28:03:2101)

गुरू	10-04-2099	87.11
शनि	19-08-2099	87.41
बुध	14-12-2099	87.77
केतु	31-01-2100	88.09
शुक्र	18-06-2100	88.22
सूर्य	30-07-2100	88.60
चन्द्रमा	06-10-2100	88.71
मंगल	24-11-2100	88.90
राहु	28-03-2101	89.04

शनि अन्तर

(28:03:2101 To 05:12:2103)

शनि	30-08-2101	89.38
बुध	17-01-2102	89.80
केतु	15-03-2102	90.18
शुक्र	26-08-2102	90.34
सूर्य	14-10-2102	90.79
चन्द्रमा	04-01-2103	90.92
मंगल	02-03-2103	91.15
राहु	27-07-2103	91.30
गुरू	05-12-2103	91.71

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(05:12:2103 To 05:12:2110)

केतु अन्तर

(05:12:2103 To 03:05:2104)

केतु	14-12-2103	92.07
शुक्र	08-01-2104	92.09
सूर्य	15-01-2104	92.16
चन्द्रमा	28-01-2104	92.18
मंगल	06-02-2104	92.21
राहु	28-02-2104	92.24
गुरू	19-03-2104	92.30
शनि	12-04-2104	92.35
बुध	03-05-2104	92.42

शुक्र अन्तर

(03:05:2104 To 03:07:2105)

शुक्र	13-07-2104	92.48
सूर्य	03-08-2104	92.67
चन्द्रमा	08-09-2104	92.73
मंगल	03-10-2104	92.83
राहु	06-12-2104	92.89
गुरू	01-02-2105	93.07
शनि	09-04-2105	93.22
बुध	08-06-2105	93.41
केतु	03-07-2105	93.57

सूर्य अन्तर

(03:07:2105 To 08:11:2105)

सूर्य	10-07-2105	93.64
चन्द्रमा	20-07-2105	93.66
मंगल	28-07-2105	93.69
राहु	16-08-2105	93.71
गुरू	02-09-2105	93.76
शनि	22-09-2105	93.81
बुध	10-10-2105	93.86
केतु	18-10-2105	93.91
शुक्र	08-11-2105	93.93

चन्द्रमा अन्तर

(08:11:2105 To 09:06:2106)

चन्द्रमा	26-11-2105	93.99
मंगल	08-12-2105	94.04
राहु	09-01-2106	94.07
गुरू	06-02-2106	94.16
शनि	12-03-2106	94.24
बुध	11-04-2106	94.33
केतु	24-04-2106	94.41
शुक्र	29-05-2106	94.45
सूर्य	09-06-2106	94.55

मंगल अन्तर

(09:06:2106 To 05:11:2106)

मंगल	18-06-2106	94.58
राहु	10-07-2106	94.60
गुरू	30-07-2106	94.66
शनि	22-08-2106	94.71
बुध	12-09-2106	94.78
केतु	21-09-2106	94.84
शुक्र	16-10-2106	94.86
सूर्य	23-10-2106	94.93
चन्द्रमा	05-11-2106	94.95

राहु अन्तर

(05:11:2106 To 23:11:2107)

राहु	01-01-2107	94.98
गुरू	21-02-2107	95.14
शनि	23-04-2107	95.28
बुध	16-06-2107	95.45
केतु	09-07-2107	95.60
शुक्र	11-09-2107	95.66
सूर्य	30-09-2107	95.83
चन्द्रमा	01-11-2107	95.88
मंगल	23-11-2107	95.97

गुरू अन्तर

(23:11:2107 To 30:10:2108)

गुरू	08-01-2108	96.03
शनि	02-03-2108	96.16
बुध	19-04-2108	96.31
केतु	09-05-2108	96.44
शुक्र	05-07-2108	96.49
सूर्य	22-07-2108	96.65
चन्द्रमा	19-08-2108	96.69
मंगल	08-09-2108	96.77
राहु	30-10-2108	96.83

शनि अन्तर

(30:10:2108 To 08:12:2109)

शनि	02-01-2109	96.97
बुध	28-02-2109	97.14
केतु	24-03-2109	97.30
शुक्र	30-05-2109	97.36
सूर्य	19-06-2109	97.55
चन्द्रमा	23-07-2109	97.60
मंगल	16-08-2109	97.70
राहु	15-10-2109	97.76
गुरू	08-12-2109	97.93

बुध अन्तर

(08:12:2109 To 05:12:2110)

बुध	29-01-2110	98.08
केतु	19-02-2110	98.22
शुक्र	20-04-2110	98.27
सूर्य	08-05-2110	98.44
चन्द्रमा	07-06-2110	98.49
मंगल	28-06-2110	98.57
राहु	22-08-2110	98.63
गुरू	09-10-2110	98.78
शनि	05-12-2110	98.91

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(05:12:2110 To 05:12:2130)

शुक्र अन्तर

(05:12:2110 To 06:04:2114)

शुक्र	26-06-2111	99.07
सूर्य	26-08-2111	99.62
चन्द्रमा	05-12-2111	99.79
मंगल	14-02-2112	100.07
राहु	15-08-2112	100.26
गुरू	25-01-2113	100.76
शनि	06-08-2113	101.21
बुध	25-01-2114	101.73
केतु	06-04-2114	102.21

सूर्य अन्तर

(06:04:2114 To 06:04:2115)

सूर्य	24-04-2114	102.40
चन्द्रमा	25-05-2114	102.45
मंगल	15-06-2114	102.53
राहु	09-08-2114	102.59
गुरू	26-09-2114	102.74
शनि	23-11-2114	102.88
बुध	14-01-2115	103.03
केतु	04-02-2115	103.18
शुक्र	06-04-2115	103.23

चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2115 To 05:12:2116)

चन्द्रमा	27-05-2115	103.40
मंगल	01-07-2115	103.54
राहु	30-09-2115	103.64
गुरू	21-12-2115	103.89
शनि	26-03-2116	104.11
बुध	20-06-2116	104.37
केतु	26-07-2116	104.61
शुक्र	05-11-2116	104.71
सूर्य	05-12-2116	104.98

मंगल अन्तर

(05:12:2116 To 04:02:2118)

मंगल	30-12-2116	105.07
राहु	04-03-2117	105.13
गुरू	30-04-2117	105.31
शनि	06-07-2117	105.47
बुध	05-09-2117	105.65
केतु	29-09-2117	105.82
शुक्र	09-12-2117	105.88
सूर्य	31-12-2117	106.08
चन्द्रमा	04-02-2118	106.14

राहु अन्तर

(04:02:2118 To 04:02:2121)

राहु	18-07-2118	106.23
गुरू	11-12-2118	106.68
शनि	03-06-2119	107.08
बुध	05-11-2119	107.56
केतु	08-01-2120	107.98
शुक्र	09-07-2120	108.16
सूर्य	02-09-2120	108.66
चन्द्रमा	02-12-2120	108.81
मंगल	04-02-2121	109.06

गुरू अन्तर

(04:02:2121 To 05:10:2123)

गुरू	14-06-2121	109.23
शनि	15-11-2121	109.59
बुध	02-04-2122	110.01
केतु	29-05-2122	110.39
शुक्र	07-11-2122	110.54
सूर्य	26-12-2122	110.99
चन्द्रमा	17-03-2123	111.12
मंगल	12-05-2123	111.34
राहु	05-10-2123	111.50

शनि अन्तर

(05:10:2123 To 05:12:2126)

शनि	06-04-2124	111.90
बुध	17-09-2124	112.40
केतु	24-11-2124	112.85
शुक्र	04-06-2125	113.03
सूर्य	01-08-2125	113.56
चन्द्रमा	05-11-2125	113.72
मंगल	12-01-2126	113.98
राहु	04-07-2126	114.17
गुरू	05-12-2126	114.64

बुध अन्तर

(05:12:2126 To 05:10:2129)

बुध	01-05-2127	115.07
केतु	30-06-2127	115.47
शुक्र	19-12-2127	115.63
सूर्य	09-02-2128	116.11
चन्द्रमा	06-05-2128	116.25
मंगल	05-07-2128	116.48
राहु	08-12-2128	116.65
गुरू	25-04-2129	117.07
शनि	05-10-2129	117.45

केतु अन्तर

(05:10:2129 To 05:12:2130)

केतु	30-10-2129	117.90
शुक्र	09-01-2130	117.97
सूर्य	31-01-2130	118.16
चन्द्रमा	07-03-2130	118.22
मंगल	01-04-2130	118.32
राहु	04-06-2130	118.39
गुरू	31-07-2130	118.56
शनि	06-10-2130	118.72
बुध	05-12-2130	118.90

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विस्तृत पंचागं विवरण

पंचागं ज्योतिष के पांच प्रमुख घटकों का सम्मिश्रण होता है– वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण, जो ज्योतिषियों को जातक के पंचाग फल की गणना करने में सहायता करता है। जातक के जन्म के समय इन पांच कारकों को ध्यान में रखते हुए ज्योतिषी जीवन के उतार–चढ़ाव को दर्शाते हुए एक स्पष्ट चित्र बना सकता है।

खर

संवत्सर

दक्षिण

अयन

हेमन्त

ऋतु

अग्रहन

चन्द्र मास

कृष्ण

पक्ष

शुक्रवार

वार

प्रतिपदा

तिथि

कृतिका

नक्षत्र

बल्लव

करण

वारियन

सूर्य सिद्धान्त योग

दिवा जन्म

दिवा / रात्रि जन्म

मकर

द्रेष्काण

ब्राह्स्पत्य/संवत्सर में जन्म

आपका जन्म खर संवत्सर में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो परिणाम बिल्कुल भी अनुकूल नहीं हो सकते हैं। यद्यपि आपका कद लम्बा, शारीरिक संरचना मजबूत व बलिष्ठ हो सकती है– फिर भी आप दिखने में बहुत आकर्षक नहीं हो सकते हैं। आपमें कटु शब्दों को तेज आवाज में बोलने की आदत हो सकती है– बिना किसी उद्देश्य के भी, जिससे लोग आपको नापसंद कर सकते हैं। आपमें शर्म का अभाव हो सकत है और आप तुनकमिजाज एवं झगड़ालू हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप कामुक और मलिन हो सकते हैं। आप केवल अपने जैसी सोच वाले लोगों के साथ क्षणिक संबंध बनाएंगे।

अयन में जन्म

आपका जन्म सूर्य के दक्षिणायन (यमयायन) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आप कुछ हद तक दम्भी और हठी प्रकृति या असहिष्णु स्वभाव वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप कठोर हृदय वाले या कपटी हो सकते हैं। आप कृषि कार्यों और/या मवेशियों के पालन से अपनी जीविकोपार्जन कर सकते हैं। साथ ही, आप कुछ ऐसे कार्यों को करने में संलग्न हो सकते हैं, जहां आपके द्वारा किए गए कार्यों की अपेक्षा आपको प्राप्त होने वाला पारिश्रमिक बिल्कुल भी सामंजस्यपूर्ण नहीं हो सकता है।

ऋतु में जन्म

आपका जन्म शरद ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आपकी शारीरिक संरचना वातमय प्रकृति की हो सकती है– जिसके कारण आप अस्थिर मन और शीघ्र क्रोधित होने वाली प्रवृत्ति के हो सकते हैं। आप साहस और शक्ति की प्रतिमूर्ति होंगे और युद्ध आदि में जीत प्राप्त करने की आपमें एक प्रबल चाह विद्यमान होगी। आप अपने स्वयं के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए स्वयं के कार्य पर ध्यान देंगे, उत्तम मात्रा में धन संग्रह करेंगे और कई मूल्यवान वस्तुएं प्राप्त करेंगे। आप एक शुद्ध हृदय वाले व्यवि होंगे और सामान्य लोग आपके साथ आदर व सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

चन्द्र मास में जन्म

आपका जन्म मार्गशीर्ष/अग्रहायन मास (नवम्बर/दिसम्बर) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली मे कुछ प्रतिकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो संकेत बहुत अनुकूल हैं। आप आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर स्वरूप वाले होंगे। यद्यपि आप कुछ–कुछ कामुक और मौजमस्ती प्रिय हो सकते हैं, फिर भी आप शालीन बर्ताव और उत्तम नैतिक चरित्र वाले होंगे। आप बहुत बुद्धिमान होंगे एवं ललित कालाओं की किसी विधा में निपुणता हासिल कर सकते हैं। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्तम कार्य करेंगे एवं निरन्तर बढ़ती हुई समृद्धि के बीच जीवन–यापन करेंगे। आपका धार्मिक रूझान बहुत उत्कृष्ट होगा तथा आप कई तीर्थ केन्द्रों का भ्रमण करेंगे। अपने कुछ प्रशंसनीय परोपकारी कार्यों के लिए आप जीवन भर अकलंकित प्रतिष्ठा और सम्मान का आनन्द लेंगे।

पक्ष में जन्म

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल नहीं हैं। आपकी शारीरिक संरचना कुछ–कुछ कमजोर हो सकती है और आप आसानी से रोगादि से ग्रसित हो सकते हैं। आप चंचल प्रकृति और अस्थिर स्वभाव वाले हो सकते हैं। आप पर शरारती और/या झगड़ालु होने क छाप लग सकती है। आप बहुत भावुक प्रकृति के हो सकते हैं, चीजों को उनके उचित परिपेक्ष्य में देखे बिना ही आप राई को पहाड़ बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, आप कामुक हो सकते हैं और अपने जीवनसाथी की खुशामद कर सकते हैं।

वार में जन्म

आपका जन्म शुक्रवार को हुआ है। दिवसपति शुक्र की स्थिति आपकी कुण्डली में काफी महत्वपूर्ण है। इसका फल– भाव में इसकी स्थिति के अनुसार– और भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। सामान्यतः अन्य सारे संकेत अनुकूल हैं। आप अत्यंत बुद्धिमान और विद्वान व्यक्ति होंगे एवं हमेशा न्यायसंगत मार्ग का अनुसरण करेंगे। आप आकर्षक व्यक्तित्व, हंसमुख चेहरा और दिलकश बर्ताव से सम्पन्न होंगे एवं अपने इन गुणों से आप अपने से मिलने वाले व्यक्ति के मन पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ने में सक्षम होंगे। आप सुन्दर और विलासितापूर्ण वस्तुओं– जिससे जीवन सजीव हो, के असाधारण रूप से शौकीन होंगे। आपको सफेद, क्रीम और चांदी जैसे चमकते रंग सर्वाधिक पसन्द होंगे।

दिवा / रात्रि में जन्म

आपका जन्म दिन के समय में हुआ है। ये संकेत अनुकूल हैं। आप सक्रिय, उर्जावान, बुद्धिमान और प्रतिभाशाली होंगे आपको अपने पिता से सद्‌गुण विरासत में प्राप्त होंगे, सुन्दर प्रभावशाली आँखे होंगी और आशावादी दृष्टिकोण होगा। आप अपने सराहनीय कार्यों के लिए जाने जाएंगे। आपकी आय उत्तम होगी और उच्च स्तरीय जीवन वाले लोगों से आपकी मित्रता होगी। आपके सद्‌गुणों और गुणों के लिए, सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

सूर्य सिद्धान्त योग में जन्म

सूर्य–सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म आर्यन योग में हुआ है। यह योग अनुकूल श्रेणी से संबंध रखता है। इस योग में जन्म होने के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। जैसाकि नाम से प्रदर्शित होता है, कि आप मानवता, सद्‌गुणों, सहनशीलता और धैर्य की प्रतिमूर्ति होंगे। धन और उत्कृष्ट गुणात्मक योग्यताओं से सम्पन्न होने के अलावा, आप सभ्य और विनम्र स्वभाव के व्यक्ति होंगे। आपकी निष्पक्ष प्रकृति और उदार स्वभाव के कारण लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

तिथि में जन्म

आपका जन्म प्रतिपदा या पहली तिथि को हुआ है। विद्वान होने व निर्णय की शक्ति से सम्पन्न होने के अतिरिक्त, अ सुन्दर व्यक्तित्व और उत्तम नैतिक चरित्र वाले भी होंगे। आप धनवान होंगे एवं ऊँचे तबके के लोगों से आपको सम्मा मिलेगा। आपका परिवार बड़ा हो सकता है और आपकी आय पर्याप्त नहीं हो सकती है– जैसाकि आपके वांछित गुण का नाश हो सकता है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान दांव पर लग सकते हैं एवं आपकी लोकप्रियता कम हो सकती है।

करन में जन्म

आपका जन्म बलव करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का दूसरा करन है। आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप स्वस्थ्य शारीरिक संरचना, आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर स्वरूप वाले होंगे। इसके अतिरिक्त, आप बुद्धिमान, ज्ञानी अं विभिन्न विषयों में निपुण होंगे। आप ललित कलाओं की किसी शाखा में कुछ प्रवीणता हासिल कर सकते हैं। धन व सम्पदा के मामलें में आप भाग्यवान होंगे और सदैव अपने रिश्तेदारों, मित्रों व शुभचिन्तकों से घिरे रहेंगे। आप कामुक प्रकृति के हो सकते हैं और आपके किसी अन्तरंग संबंध का खुलासा हो जाने के कारण आपके प्रतिष्ठित व्यक्तित्व प धब्बे लग सकते हैं।

नक्षत्र में जन्म

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा कृतिका नक्षत्र में स्थित है। इस नक्षत्र में जन्म लेने के कारण, उज्ज्वल व आकर्षक व्यक्तित्व वाले होंगे। किन्तु आपको भूख अत्यधिक लग सकती है और पेटू अर्थात अत्यधिक भोजन करने वाले हो सकते हैं। आप उर्जा व जोश से परिपूर्ण होंगे तथा फौजी मिजाज, नेतृत्व के गुणों और तार्किक विचारधारा वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप बहुत भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। आप ना तो सत्यनिष्ठ हो सकते हैं और ना ही आपमें कृतज्ञता का भाव हो सकता है। आप कुछ हद तक हठी और कठोर वाणी वाले हो सकते हैं। आप निरर्थक ढंग से बात कर सकते हैं, बिना किसी उद्देश्य के भटक सकते हैं और अधम कार्य कर सकते हैं। आपके रिश्तेदार और मित्र आपका परित्याग कर सकते हैं।

द्रेष्काण में जन्म

आपकी कुण्डली में लग्न मकर राशि के प्रथम द्रेष्काण में स्थित है– जो स्वयं मकर द्रेष्काण के समकक्ष है। इस योग के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपकी रंगत कुछ गहरी, चेहरा मनमोहक, चुम्बकीय स्वरूप और आकर्षक व्यक्तित्व होगा। आप अपने उदास मिजाज एवं विचारशील स्वभाव के साथ एक गंभीर प्रकार के व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे, जैसाकि आप पूर्ण रूप से अपने हितों के बारे में चिन्तन करेंगे, आप सोच–समझकर बोलने वाले एवं सभी प्रकार के ओछे कार्यों से घृणा करने वाले होंगे। जैसाकि आपकी चाह अपने आधार को बहुत मजबूती प्रदान करने की होगी, अतः आपका दृष्टिकोण बहुत व्यावहारिक होगा। आप अपने प्रयासों को वांछित दिशा में निर्देशित कर निश्चित रूप से अपने समकालीनों से आगे निकल जाएंगे। हालांकि, आवश्यकता पड़ने पर आप कुछ कलात्मक भी हो सकते हैं। एक पुरानी धारणा को नवीन संकल्पना का रूप देकर आप इसे सफलतापूर्वक प्रयोग कर सकते हैं।

आपका लग्न मकर

वैदिक ज्योतिष में लग्न भाव को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। एक व्यक्ति के जन्म के समय जो राशि आसमान में उदित होती है, उसे व्यक्ति का लग्न कहा जाता है तथा उस भाव में जो राशि होती है उसे लग्न राशि कहा जाता है। लग्न भाव ज्योतिष के माध्यम से एक व्यक्ति के जीवन के सूक्ष्मतम क्षणों की गणना करने में सहायता करता है। जबकि वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक एवं दैनिक भविष्यवाणी सूर्य राशि व चंद्र राशि के आधार पर किया जाता है।

सामान्य विशेषताएँ

आपकी लग्न राशि मकर है। इस राशि को भौतिक, प्रधान (चलायमान या तीव्र), उष्णकटिबंधीय राशि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। कई अन्य नैसर्गिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें विद्यमान हैं। यह स्त्रीलिंग, पाशविक, उदासीन और हिंसक प्रकृति की राशि है।

इस लग्न में जन्म लेने के कारण आप परिष्कृत मस्तिष्क, परिवर्तनशील मिजाज, विनोदपूर्ण प्रकृति और निराश प्रवृत्ति के हो सकते हैं, किन्तु आप कुछ–कुछ स्वार्थी, पर्याप्त स्वेच्छाचारी और बहुत हठी हो सकते हैं तथा अपने उद्देश्यों के प्रति सजग और अपने कार्यों के प्रति वास्तव में सक्रिय होंगे। आप अत्यंत महात्वाकांक्षी और दूसरों पर शासन करने के जन्मजात इच्छुक होंगे। आप समायोजनीय होंगे और स्वयं को प्रत्येक स्थिति के अनुकूल बनाने में सक्षम होंगे। आप ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में निपुण होंगे।

आपको व्यवसाय की उत्तम समझ होगी और किसी भी व्यापार को प्रारम्भ करने से पहले उसके सभी पहलुओं को भली–भांति जांचने–परखने में सक्षम होंगे। आप गैरमिलनसार और एकांत प्रकृति के होंगे, किन्तु साथ ही आप बहुत युक्तिपूर्ण और अस्थिर होंगे। आपमें अपने विरोधी का कमजोर पक्ष खोजने की विचित्र क्षमता होगी और आप अपनी इस निपुणता का प्रयोग करके किसी भी आने वाले अवसर का उचित लाभ उठाने के लिए तत्पर रहेंगे। इन गुणों के कारण आप अपने सभी समकालीनों से आगे निकलने में सक्षम होंगे– भले ही उनमें से कुछ बाहर से अपेक्षाकृत अधिक योग्य प्रतीत हों। आपको साहित्य, दर्शन और विज्ञान में गहन रूचि होगी। यद्यपि आप सदगुणों व नैतिकता की प्रतिमूर्ति नहीं हो सकते हैं, फिर भी आपको अपने अनेकों मित्रों व शुभचिन्तकों से प्रशंसा व आभार प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके अनेक समर्पित अनुयायी होंगे।

शारीरिक रूप और व्यक्तित्व

आप अपेक्षाकृत छोटे कद के, कुछ–कुछ झुके हुए और रूखी संरचना वाले हो सकते हैं– किन्तु कुछ अंग विशिष्ट हो सकते हैं, जैसे भीतर को झुकी नाक, दृढ़ होंठ, छोटी ठोढ़ी, पतली गर्दन, छोटी लोलकी और कमजोर घुटने।

आपकी विशेषताएँ

आप लोकोपकारी और सहानुभूतिपूर्ण स्वभाव वाले व्यक्ति होंगे। आप एक अच्छे श्रोता होंगे और उत्तम सुझावों का अनुसरण करने में कभी नहीं हिचकिचाएंगे। आप शांत, स्थिर और चिरस्थायी होंगे। आप बहुत व्यावहारिक, अनुशासित और विश्वसनीय होंगे। आप रचनात्मक होंगे और आपकी सोच उत्पादक होंगी।

नौकरी / व्यवसाय

आप व्यापार और उद्योग में कार्यकारी / प्रबंधक, शिल्पकार(आक्रिटेक्ट), इंजीनियर, बिल्डर, नियोजक, निरीक्षक, बाजार विश्लेषक बन सकते हैं। आप जलीय या नौसैनिक उत्पादों और कृषि या बागवानी संबंधी वस्तुओं के व्यापार में उत्कृ हो सकते हैं।

नकारात्मक लक्षण

आपमें आत्म विश्वास की कमी हो सकती है और आप निराशावादी होंगे। आप स्वयं को अलग तरीके का दिखाने का प्रयास करेंगे। आप धूर्त, प्रतिशोधपूर्ण और कर्कश हो सकते हैं।

विशेष गुण

1– आप व्यावहारिक, तार्किक और दृढ़ होंगे।
2– आपकी स्मृति बहुत तीक्ष्ण होगी और आप ज्ञान के विभिन्न भागों को सीखने में रूचि रखेंगे।

कुण्डली के लिए शुभ/अशुभ ग्रह

1– पंचमेश और दशमेश शुक्र सर्वाधिक शुभ ग्रह है।
2– नवमेश बुध और लग्नेश शनि शुभ ग्रह हैं।
3– चंद्रमा, मंगल और बृहस्पति अशुभ ग्रह हैं।
4– सूर्य और चंद्रमा मारकेश हैं।
5– सूर्य तटस्थ है।

मकर लग्न में जन्मे विशिष्ट व्यक्ति

राजनेता– रामविलास पासवान, क्रिकेटर– सुनील गावस्कर, फिल्म अभिनेता– अशोक कुमार, वकील– राम जेठ मलार्न रूस के पूर्ण प्रधानमंत्री– मार्शल बुगानिन, संत– स्वामी विवेकानन्द, ज्योतिषाचार्य– जे. कृष्णामुर्ति व बी. एम. सैनी, ची का माओत्से तुंग।

चन्द्र राशि दर्शन

आपकी राशि

मेष

वैदिक ज्योतिष में कुण्डली परीक्षण के लिए सूर्य राशि की अपेक्षा चंद्र राशि को अधिक महत्व दिया जाता है। वैदिक ज्योतिष कहता है कि जन्मकुण्डली में यदि चंद्रमा लग्न की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली है, तो लग्न या लग्न राशि के स्थान पर चंद्र राशि को केन्द्र मानकर अध्ययन करना चाहिए। चंद्र कुण्डली व्यक्ति के अनेक गुप्त रहस्यों को उजागर करती है, जिसे सूर्य कुण्डली के माध्यम से उजागर नहीं किया जा सकता है।

मानसिक अवस्था

आपकी कुण्डली में चंद्रमा मेष राशि में स्थित है, जो मंगल द्वारा संचालित होता है। यह चलायमान और आग्नेय राशि है। आप संवेगी, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर तथा आशावादी हो सकते हैं। आप उग्र तथा कुछ–कुछ आक्रामक स्वभाव के हो सकते हैं। आप विनम्र या आज्ञाकारी बिल्कुल भी नहीं हो सकते हैं, तथा परम्परा और रीति–रिवाजों को अधिक महत्व नहीं देंगे। आप परिर्वतशील एवं चंचल हो सकते हैं तथा आप धैर्यवान नहीं होंगे। आपका स्वभाव चिड़चिड़ा होगा, एव आप जल्द गुस्सा हो जाएंगे। आप दूसरों के द्वारा दी गई सलाह नहीं मानेंगे और सदा अपने विचारों को मान्यता देंगे आपमें एक विशेष आकर्षण होगा, जो दूसरों को प्रभावित करने में आपकी मदद करेगा। आप अपने दायरे में लोकप्रियता अर्जित करेंगे और आपके अनेक प्रशंसक व मित्र होंगे।

आपमें दूसरों में जागरूकता लानें की क्षमता होगी, जिससे आप बड़ी संख्या में लोंगों को अपने नियंत्रण में रखने में सक्षम होंगे। अपने विशिष्ट गुणों के कारण आप जल्दी ही अपनी पहचान बनायेंगे तथा आप किसी विभाग, कार्यालय या किसी संगठन के अध्यक्ष बन सकते हैं। यदि आपको अपने कार्यस्थल पर कोई विशेषाधिकार प्राप्त नहीं होता है, आप शीघ्र ही अपने लिए नए रास्तों की तलाश कर लेंगे। छोटी आयु में ही आप निश्चित रूप से उत्तम स्थिति हासि कर लेंगे। यद्यपि आपको किसी भी प्रकार की गोपनियता या गुट पसन्द नहीं होगी, फिर भी आपके व्यवसाय में किस प्रकार की गोपनीयता बनाए रखने की जरूरत हो सकती है। रहस्यमय चीजें आपको पूरी तरह आकर्षित करेंगी एवं तंत्र–मंत्र व गूढ़ विषयों में आपकी गहरी रूचि विकसित हो सकती है।

आप में अद्भुत जीवन शक्ति होगी। लेकिन आपको समय–समय पर कुछ छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। बचपन में किसी दुर्घटना के फलस्वरूप आपके सिर या चेहरे पर निशान हो सकता है। आपको कुछ अधि गर्मी महसूस हो सकती है या आप बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। आप महिला समुदाय के प्रति आकर्षित होंगे और छोटी उम्र में ही आपकी इच्छानुसार आपके द्वारा पसन्द किए गये व्यक्ति से आपका विवाह हो सकता है। आपको शिशुओं से भी बहुत लगाव होगा और आपकी पहली संतान आपको अत्यंत प्रिय होगी। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी ग्रह उपस्थित नहीं है, तो माता–पिता में से किसी एक के साथ आपके गहरे मतभेद हो सकते हैं या किशोरावस्था में ही परिस्थितिवश उनसे अलग होना पड़ सकता है।

आपका विशिष्ट व्यक्तित्व

यह अंतर्दृष्टिपूर्ण रिपोर्ट आपके अद्वितीय चारित्रिक गुणों की गहरी समझ प्रदान करती है, जिससे व्यक्तिगत विकास और आत्म-जागरूकता संभव होती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को जानें –

(1) आपकी अनुपम शक्तियों, कमजोरियों, और व्यवहारिक प्रवृत्तियों की गहरी समझ बढ़ाने में।
(2) व्यक्तिगत विकास और आत्म-सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने में, जो आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान में वृद्धि करता है।
(3) अपनी पारस्परिक शैली और भावनात्मक आवश्यकताओं को समझकर संबंधों और संवाद को बेहतर बनाने में।
(4) आपकी वास्तविक प्रेरणाओं और जीवन के उद्देश्य का पता लगाने में, जो आपको संतोषजनक और असली जीवन पथ की ओर मार्गदर्शन करता है।
(5) अपने व्यक्तिगत और पेशेवर लक्ष्यों को अपनी प्राकृतिक प्रतिभाओं और क्षमताओं के साथ समन्वित करने में, जो सफलता और संतुष्टि सुनिश्चित करता है।
(6) आपको अपने अद्वितीय गुणों को गले लगाने और सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाने में, जो अंततः आत्म-स्वीकृति और खुशी की ओर ले जाता है।

आपके आंतरिक संसार की एक झलक : आपका अद्वितिय व्यक्तित्व

आप अत्यंत प्रेरित होते हैं और अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता की जोरदार इच्छा रखते हैं। आप कठिनाई से नहीं डरते और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रयास करने के लिए तत्पर होते हैं।

आप अपने अनुशासन और आत्म-नियंत्रण के लिए प्रसिद्ध हैं। आप प्रलोभन का विरोध कर सकते हैं और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कठोर अनुशासन का पालन कर सकते हैं।

आप अपनी जिम्मेदारियों को गंभीरता से लेते हैं तथा विश्वसनीय और भरोसेमंद होते हैं। आपको प्रायः अपने परिवार या सामाजिक दायरे में चट्टान के रूप में देखा जाता है।

आपका जीवन के प्रति दृष्टिकोण व्यावहारिक और यथार्थवादी होता है। आप अत्यधिक कल्पनाशीलता या अत्यधिक रोमांटिक आदर्शों की ओर प्रवृत्त नहीं होते हैं।

आप प्रायः एकाकी या दूरस्थ प्रतीत हो सकते हैं, लेकिन आप सिर्फ अपनी भावनाओं से घिरे हुए और सतर्क होते हैं। आप गोपनीयता की कदर करते हैं तथा अपनी अंतर्निहित भावनाओं एवं विचारों को खुद तक ही रखना पसंद करते हैं।

मकर लग्न के पुरुष उन लोगों के प्रति अत्यंत निष्ठावान और प्रतिबद्ध होते हैं, जिनकी परवाह करते हैं। आप दीर्घकालिक संबंधों की कदर करते हैं और उन्हें बनाए रखने में समय

और प्रयास लगाने के लिए तत्पर होते हैं।

आपका परंपरा के प्रति मजबूत संबंध होता है तथा आप स्थिरता व सुरक्षा की कदर करते हैं। नवीनतम धाराओं या शौक से आपके प्रभावित होने की संभावना नहीं है।

आप आत्म-निर्भरता और स्वतंत्रता को महत्व देते हैं। आप उन लोगों में से नहीं हैं जो अपनी सफलता के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं तथा आप अपने भाग्य को खुद ही नियंत्रित करना पसन्द करते हैं।

स्वास्थ्य सुख

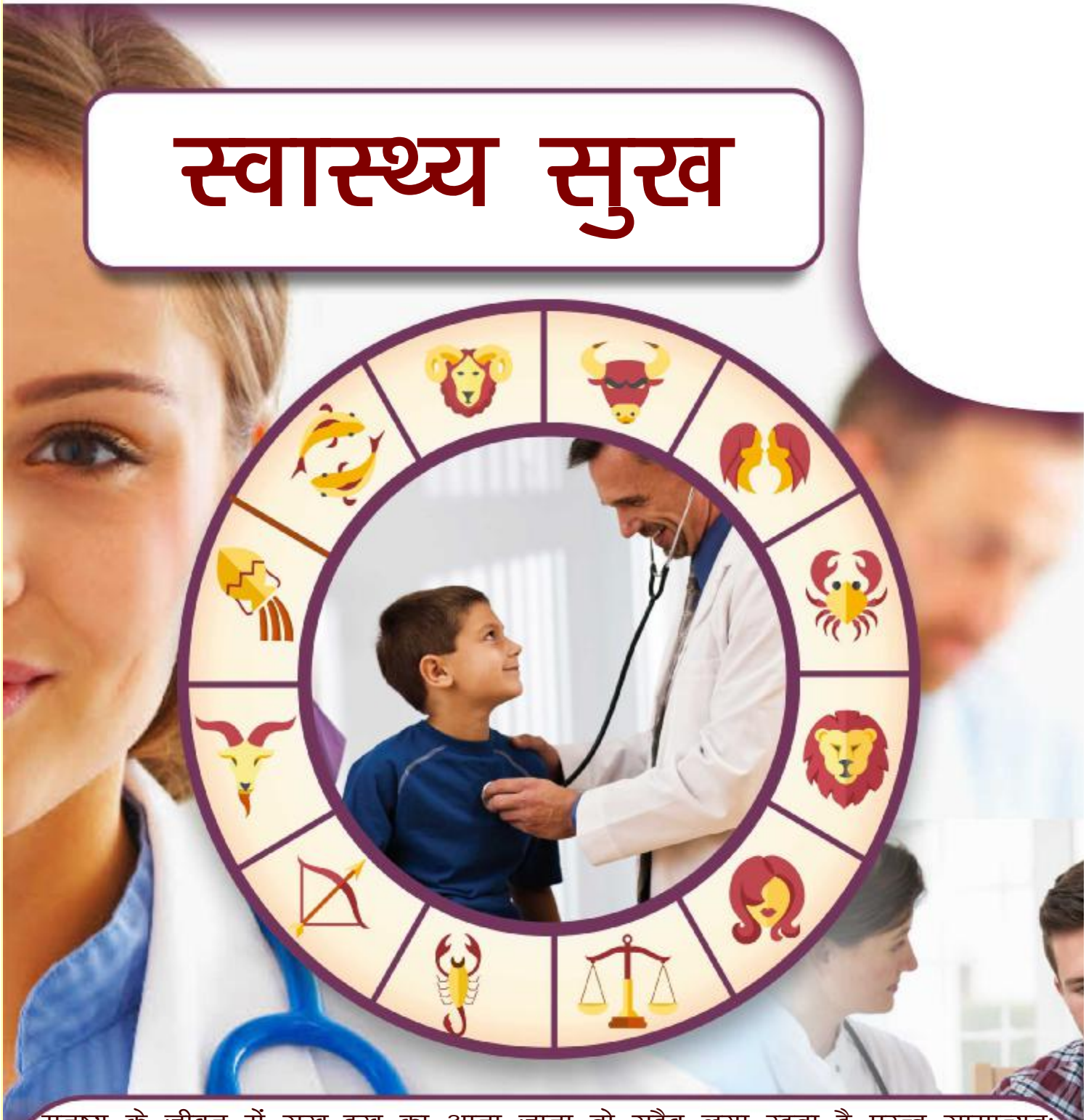

मनुष्य के जीवन में सुख–दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस–पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में यदि ग्रहों की दशा को देखकर उपचार के साथ–साथ ज्योतिषिय उपाय भी किया जाय तो संभवतः रोग से निजात शीघ्रता से पाया जा सके।

आपका स्वास्थ्य और आरोग्य

यह आपके स्वास्थ्य और आरोग्य के लिए भविष्यवाणी है, जो आपके विशिष्ट नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, जो आपके उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने और संतुलित जीवन जीने में मदद करती है। इस भविष्यवाणी का महत्व समझें –

(1) आपकी संभावित स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान करके, जो आपके स्वास्थ्य के सकारात्मक प्रबंधन और समय रहते हस्तक्षेप की अनुमति देती है।
(2) आपकी अंतर्निहित शक्तियाँ और कमजोरियाँ प्रकट करना, जो आपको शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य का समर्थन करने वाले जीवनशैली की दिशा में मार्गदर्शन करती है।
(3) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुरूप, व्यक्तिगत आहार और व्यायाम की सिफारिशें देना।
(4) आपके तनाव प्रबंधन और क्षमता को बढ़ावा देना, जिससे आपका जीवन संतुलित और सार्थक बने।
(5) लाभप्रद आदतों और दिनचर्याओं पर मार्गदर्शन प्रदान करना, जिससे आप ऊर्जा और दीर्घायु को बनाए रख सकें।
(6) आपको आपके स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाना, जो अंततः आपको एक खुश, स्वस्थ जीवन की ओर ले जाता है।

शारीरिक स्वास्थ्य और ऊर्जा का स्तर

आपके पास एक मजबूत शारीरिक संरचना और पुष्ट स्वास्थ्य होता है। आपके पास उत्तम शारीरिक शक्ति और जीवन शक्ति है। आप आमतौर पर शारीरिक रूप से सक्रिय और फुर्तीले भी होते हैं, तथा खेल व व्यायाम जैसी उच्च ऊर्जा वाली गतिविधियों की ओर आपका रुझान होता है। हालाँकि, आपको आँखों से संबंधित समस्याएँ हो सकती हैं और आँखों के उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक स्थिरता

.तिका नक्षत्र मानसिक स्पष्टता और भावनात्मक स्थिरता से जुड़ा है। आपके पास तेज दिमाग और स्पष्ट सोच है। आप आमतौर पर भावनात्मक रूप से स्थिर होते हैं और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। हालाँकि, आप क्रोध और अधीरता के शिकार हो सकते हैं, जो आपके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अपने मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आपको योग और ध्यान जैसी तनाव प्रबंधन तकनीकों का अभ्यास करना चाहिए।

आहार और पोषण की आवश्यकताएं

आपके पास एक मजबूत पाचन तंत्र है और आप विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों को पचा सकते हैं। हालांकि, आपको मसालेदार और तैलीय खाद्य पदार्थों से बचना चाहिए जो अपच और एसिडिटी का कारण बन सकते हैं। अपनी ऊर्जा के स्तर को बनाए रखने के लिए प्रोटीन से भरपूर खाद्य पदार्थों के साथ-साथ बहुत सारे ताजे फल और सब्जियों के साथ संतुलित आहार लेने की सलाह दी जाती है।

फिटनेस और व्यायाम

आप आमतौर पर शारीरिक रूप से सक्रिय रहते हैं और शारीरिक व्यायाम का आनंद लेते हैं। आपको अपने स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को बनाए रखने के लिए नियमित शारीरिक गतिविधि में संलग्न होना चाहिए। अपनी शारीरिक फिटनेस को बनाए रखने में मदद करने के लिए उच्च तीव्रता वाले व्यायाम, जैसे दौड़ना, भारोत्तोलन और मार्शल आर्ट की सलाह दी जाती है।

तनाव प्रबंधन और आराम की तकनीकें

आप अपनी अधीरता और आसानी से निराश होने की प्रवृत्ति के कारण तनाव और चिंता का शिकार हो सकते हैं। योग और ध्यान का नियमित अभ्यास आपको तनाव को प्रबंधित करने और आंतरिक शांति प्राप्त करने में मदद कर सकता है। आप अपने मन और शरीर को शांत करने के लिए प्राणायाम जैसे गहरी साँस लेने के व्यायाम भी कर सकते हैं।

नींद का पैटर्न और गुणवत्ता

आपमें देर से सोने और जल्दी उठने की प्रवृत्ति हो सकती है। अपने स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को बनाए रखने के लिए आपके लिए पर्याप्त नींद लेना महत्वपूर्ण है। एक नियमित नींद कार्यक्रम और शांतिपूर्ण नींद के वातावरण की सलाह दी जाती है। बेहतर नींद की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए आप सोने से पहले विश्राम तकनीकों का भी अभ्यास कर सकते हैं, जैसे पढ़ना या सुखदायक संगीत सुनना।

आध्यात्मिक वृद्धि और आंतरिक सामंजस्य

.तिका नक्षत्र आध्यात्मिक विकास और आंतरिक सद्भाव से जुड़ा है। आपको आंतरिक शांति और सद्भाव प्राप्त करने के लिए ध्यान, जप और प्रार्थना जैसे नियमित आध्यात्मिक अभ्यासों में संलग्न होना चाहिए। आप अपने आध्यात्मिक स्व से जुड़ने के लिए पवित्र स्थानों पर भी जा सकते हैं या धर्मार्थ गतिविधियाँ कर सकते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए सुझाव

अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए आपको संतुलित आहार लेना चाहिए, नियमित शारीरिक गतिविधियों में संलग्न होना चाहिए, तनाव प्रबंधन तकनीकों का अभ्यास करना चाहिए, पर्याप्त नींद लेनी चाहिए और आध्यात्मिक अभ्यासों में संलग्न होना चाहिए। आपको अपनी आंखों की देखभाल भी करनी चाहिए और अच्छी व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए।

अच्छे स्वास्थ्य के उपाय

आपके लिए अच्छे स्वास्थ्य के कुछ उपायों में लाल मूंगा रत्न धारण करना, भगवान कार्तिकेय की

दैनिक पूजा करना और .तिका नक्षत्र मंत्र का जाप करना शामिल है। आपकी जन्म कुंडली के आधार पर व्यक्तिगत उपायों के लिए किसी ज्योतिषी से परामर्श करने की सलाह दी जाती है। सकारात्मक कार्मिक संतुलन बनाए रखने के लिए आपको दान के नियमित कार्य भी करने चाहिए।

शिक्षा, विद्या और विद्वता

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि क अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन का माध्यम बनाने के लि पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उ शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की दशा में शिक्षा बाधित होती है। इसलिए इन बाधाओं से सचेत रहने के लिए इसके बारे में जानना भी आवश्य है।

शिक्षा और सीखने की क्षमता

यह भविष्यवाणियां आपकी शिक्षा के लिए हैं, जो आपके विशिष्ट नक्षत्र के आधार पर हैं। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करती है जो आपको शैक्षिक परिदृश्य को समझने और अपने शैक्षिक प्रयासों में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। इस भविष्यवाणी का महत्व समझें –

(1) आपकी नैसर्गिक शिक्षण शैली, शक्तियाँ और कमजोरियाँ पहचानने में, जिससे आपके शैक्षिक अनुभव सफल और आनंदमय हो सकें।
(2) अपने शिक्षा संबंधी लक्ष्यों को अपनी प्राकृतिक प्रतिभाओं और क्षमताओं के साथ समन्वित करने में, जिससे पूर्णता और पुरस्कार प्राप्त हो सकें।
(3) अधिकतम उपयुक्त विषयों और अध्ययन क्षेत्रों का पता लगाने में, जिससे आप अपने चुने हुए क्षेत्र में समृद्ध और उत्कृष्ट हो सकें।
(4) संभावित चुनौतियों का पता लगाने और आपकी शैक्षिक यात्रा में किसी भी बाधाओं को पार करने के लिए मार्गदरशन प्रदान करने में।
(5) आपकी प्रेरणा, एकाग्रता और संकल्प को बढ़ावा देने में, जिससे आपका शैक्षिक प्रदर्शन सुधर सके और व्यक्तिगत विकास हो सके।
(6) आपको अपनी शिक्षा के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाने में, जो अंततः आपको सफलता और संतुष्टि की ओर ले जाता है।

स्वभाविक योग्यता

आपमें नेतृत्व, संवाद, और निर्णय लेने की स्वाभाविक प्रतिभाएं हैं। आपमें न्याय और निष्पक्षता की एक मजबूत भावना है, और आप तटस्थ होकर निर्णय ले सकते हैं। आपमें एक स्वाभाविक करिश्मा भी होता है जो लोगों को आपकी ओर आकर्षित करता है।

अध्ययन की शैली

आपकी शिक्षण शैली प्रतिस्पर्धात्मक होती है। आप चुनौतियों और प्रतियोगिता के माध्यम से सबसे अच्छी तरह सीखते हैं। आपकी याददाश्त तेज होती है और आप आसानी से जानकारी को याद कर सकते हैं।

सर्वोत्तम विषय

कानून, राजनीति, और व्यवस्थापन से संबंधित विषय आपके लिए सर्वश्रेष्ठ होते हैं। आपमें विज्ञान और इंजीनियरिंग की ओर भी स्वाभाविक झुकाव होता है।

विद्याध्ययन का सरल मार्ग

आप विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन आपको उस शैक्षिक पथ का अनुसरण करना चाहिए जो आपकी स्वाभाविक प्रतिभाओं और रुचियों के साथ मेल खाता है। आप कानून,

राजनीति, व्यवसाय प्रबंधन, या इंजीनियरिंग में करियर बनाने पर विचार कर सकते हैं।

उपाय

आप अपने ध्यान और एकाग्रता को बेहतर बनाने के लिए योग और ध्यान का अभ्यास करके लाभ उठा सकते हैं। आप अपनी नैसर्गिक प्रतिभाओं को बढ़ाने के लिए माणिक या गोमेद जैसे रत्न पहन सकते हैं।

विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ

आप असहिष्णुता और अधीरता से संघर्ष कर सकते हैं, जो दूसरों के साथ संघर्ष का कारण बन सकती है। आप काम और जीवन के बीच संतुलन बनाए रखने में संघर्ष कर सकते हैं तथा अपने करियर पर अत्अधिक ध्यान केंद्रित करने वाले बन सकते हैं।

सर्वोत्तम सुझाव

इन चुनौतियों को पार करने के लिए, आपको दूसरों के प्रति सहानुभूति और धैर्य विकसित करने पर काम करना चाहिए। आपको स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और अपने करियर लक्ष्यों का उपभोग होने देना चाहिए। इसके अतिरिक्त, आप अपनी स्वाभाविक प्रतिभाओं को निखारने करने के लिए नेतृत्व एवं सार्वजनिक रूप से बोलने के अवसरों की तलाश कर सकते हैं।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है। ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों को समय रहते जान कर उसके लिए उपाय करे तो संभवतः वह इन बाधाओं को दूर करने में सफल भी हो सकता है।

आपका व्यावसाय, कार्यक्षेत्र और जॉब प्रोफ़ाइल

यह भविष्यवाणी आपके व्यावसायिक जीवन या करियर के लिए है, जो आपके जन्म नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो आपको व्यावसायिक परिवेश में संचालन करने और करियर में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को निम्नलिखित बातों से समझिए –

(1) आपकी अन्तर्निहित व्यावसायिक शक्तियों और कमजोरियां की पहचान करना, आपको सबसे उपयुक्त करियर पथ की ओर मार्गदर्शन करना।
(2) विभिन्न उद्योगों में सफलता और विकास की आपकी क्षमताओं को उजागर करना, आपके लिए एक पूर्णतः संतोषप्रद व पुरस्कृत व्यावसायिक यात्रा सुनिश्चित करना।
(3) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुसार, प्रभावशाली संचार, टीमवर्क और नेतृत्व पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करना।
(4) आपके करियर में संभावित चुनौतियों को उजागर करना और आपके व्यावसायिक जीवन में किसी भी बाधा को दूर करने के उपाय प्रदान करना।
(5) आपकी निर्णय क्षमता, रचनात्मकता, और अनुकूलन क्षमता को बढ़ावा देना, जो बेहतर प्रदर्शन और नौकरी संतुष्टि प्रदान करेगी।
(6) आपको सशक्त करना ताकि आप अपने व्यावसाय, काम, या नौकरी के बारे में सूचित निर्णय ले सकें, जो अंततः सफलता और संपूर्णता की ओर ले जाता है।

जॉब प्रोफ़ाइल

आपको अपने नेतृत्व कौशलों के लिए जाना जाता है और आप उन नौकरियों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं जिनमें आपको टीमों का नेतृत्व और प्रबंधन करने की आवश्यकता होती है। आप महत्वाकांक्षी, प्रेरित हैं और दबाव में अच्छी तरह काम कर सकते हैं। आपके लिए उपयुक्त जॉब प्रोफ़ाइल में प्रबंधन पद, उद्यमी, सैन्य कर्मी, पुलिस अधिकारी, सर्जन, डoक्टर, इंजीनियर, और वैज्ञानिक शामिल हैं।

कार्यक्षेत्र का वातावरण

आपके लिए कार्य वातावरण गतिशील और चुनौतीपूर्ण होना चाहिए, जिसमें विकास और सीखने के लिए प्रचुर अवसर हों। आप ऐसे माहौल में सफल होते हैं जहां आप नेतृत्व कर सकते हैं और स्थितियों को संभाल सकते हैं, लेकिन आप टीम-आधारित वातावरण की भी सराहना करते हैं।

कौशल और योग्यताएं

आपके पास उत्कृष्ट संवाद और नेतृत्व कौशल हैं, और आप तेजी से सीखने वाले हैं। आप विवरणों पर ध्यान देने वाले हैं और जटिल कार्यों को कुशलतापूर्वक संभाल सकते हैं। प्रबंधन पदों के लिए, आपके पास व्यापार प्रशासन में डिग्री होनी चाहिए, जबकि चिकित्सा पेशेवरों के लिए, चिकित्सा या संबंधित क्षेत्र में डिग्री आवश्यक है। इसके अलावा, आप विज्ञापन और मीडिया जैसे

रचनात्मक क्षेत्रों में भी उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।

कार्य के घंटे

आपको अपने कठिन परिश्रम और समर्पण के लिए जाना जाता है। आप लंबे समय तक काम कर सकते हैं और दबाव को अच्छी तरह से संभाल सकते हैं। आप शिट में काम करने में सहज हैं, जो आपको अपातकालीन चिकित्सा सेवाओं और पुलिस बल जैसे पेशेवरों के लिए उपयुक्त बनाता है।

करियर में उन्नति

अपने नेतृत्व कौशल और परिश्रमी स्वभाव से आप अपने करियर में शीर्ष स्थानों तक पहुंच सकते हैं। आप सफल उद्यमी, सीईओ, और अपने क्षेत्र के नेता बन सकते हैं।

करियर में चुनौतियां

आप आवेगी हो सकते हैं और जल्दी-बाजी में निर्णय ले सकते हैं। आप ज़िद्दी भी हो सकते हैं और दूसरों पर को शासन करने की प्रवृत्ति हो सकती है, जो कार्यस्थल में संघर्ष का कारण बन सकती है। आपको अधिक धैर्यशाली होना और दूसरों के साथ मिलकर काम करना सीखना होगा।

पुरस्कार और सम्मान

आप अपने कठिन परिश्रम और समर्पण के लिए पुरस्.त होते हैं। आप अपने करियर में महान सफलता प्राप्त कर सकते हैं और अपने क्षेत्र में शीर्ष स्थानों तक पहुंच सकते हैं। आप अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं और आरामदायक जीवनशैली का आनंद ले सकते हैं।

धन – संपत्ति

मनुष्य का जीवन मिलने के बाद उसकी आवश्यकताएं विभिन्न रूप धारण करके उसके समक्ष आ खड़ी होती हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकता जरूर पड़ती है। मनुष्य का वर्तमान हो अथवा भविष्य आर्थिक पक्ष से अधिक प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति का आर्थिक पक्ष सुदृढ़ है तो उसकी अनेक समस्याएं आसानी से दूर हो जाती हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं सबकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ही हो। किसी के पास अपार धन होता है तो कोई धन के अभाव में अपना जीवन बहुत ही कठिनाई में व्यतीत करता है। जीवन में धन से जुड़ी हुई बाधाएं अनेक रूप में आती हैं। यह आवश्यक नहीं कि जिसके पास धनार्जन के अच्छे साधन हो अथवा जिसका व्यापार व आय अधिक हो उसे धन का कभी अभाव नहीं होता, एवं जिसकी आय कम होती है उसे ही धन बाधा का सामना करना पड़ता है। धन संबंधी बाधा तो किसी के भी जीवन में किसी भी स्वरूप में आ सकती है। ऐसी परिस्थिति जब व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो और उसके पास प्रत्यक्ष रूप से धन उपलब्ध न हो तो उसे धन बाधा कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की परिस्थितियां ग्रहों के योग से निर्मित होती हैं। यही कारण है कि एक ही माता–पिता की दो संतान माता–पिता द्वारा समान रूप से धन वितरण करने के बाद भी कोई धनवान व कोई गरीब हो जाती है। इसलिए इन ग्रहों के योग को जानना व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।

आपकी वित्तीय स्थिरता और आर्थिक विकास

यह आपके धन और वित्त के संदर्भ में भविष्यवाणी है, जो आपके नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो आपको वित्तीय परिदृश्य को समझने और आर्थिक सफलता प्राप्त करने में मदद करती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को समझें –

(1) आपकी नैसर्गिक वित्तीय शक्तियों और कमजोरियों को समझने के लिए, जो आपको सूचित वित्तीय निर्णयों की दिशा में मार्गदर्शन करती है।
(2) आपके धन सृजन और संचय की संभावनाओं का पता लगाने, जो आपको अपने वित्तीय अवसरों का अधिकतम उपयोग करने का सामर्थ्य प्रदान करती है।
(3) निवेश के लिए सबसे शुभ समयावधियों की पहचान करने, जो आपके वित्तीय प्रयासों में सफलता और वृद्धि सुनिश्चित करती है।
(4) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुसार बजट बनाने, बचत, और वित्तीय योजना पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करने।
(5) संभावित वित्तीय चुनौतियों का पता लगाना और आपके धन संबंधी यात्रा में किसी भी बाधा को दूर करने के उपाय प्रदान करना।
(6) आपको अपने पैसे और वित्त के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाना, जो अंततः वित्तीय स्थिरता और समृद्धि की दिशा में ले जाता है।

आपकी वित्तीय क्षमता

आपके पास पैसे कमाने और प्रबंधन करने की प्राकृतिक प्रतिभा है। आपकी मजबूत कार्य नीति है और आप वित्तीय रूप से सफल होने के लिए प्रेरित हैं। अपने कठिन परिश्रम, दृढ़ता, और बुद्धिमतापूर्ण निवेश संबंधी निर्णय लेने की क्षमता के माध्यम से वित्तीय सफलता प्राप्त करने की क्षमता रखते है।

धन और समृद्धि

आपको अपने जीवन में वित्तीय समृद्धि का अनुभव होने की संभावना है। आपके पास सफल व्यवसाय और निवेश करने का कौशल और विशेषज्ञता है। आपको वित्तीय प्रबंधन की उत्तम समझ है और आप ठोस वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम हैं। आप अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने और धन संचय करने में सक्षम हैं।

वित्तीय लक्षण और विशेषताएं

आप अपने मजबूत नेतृत्व कौशलों और जोखिम लेने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं। आप अत्यधिक प्रतिस्पर्धी हैं और वित्तीय रूप से सफल होने के लिए प्रेरित होते हैं। आपके पास उत्तम वित्तीय प्रबंधन कौशल हैं और आप बुद्धिमान निवेश निर्णय लेने में सक्षम हैं। आप अत्यधिक अनुकूलनीय हैं और बदलती हुई बाजार की स्थितियों को समझने में सक्षम हैं।

वित्तीय दृष्टिकोण को बेहतर कैसे बनायें ?

अपने वित्तीय दृष्टिकोण को सुधारने के लिए, आपको अपने चुने हुए क्षेत्र में अपने कौशल और विशेषज्ञता विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आपको नए अवसरों का पता लगाने और संगणित जोखिम लेने के लिए दिमाग खुला रखना चाहिए। आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक सम्पूर्ण निवेश पोर्टफोलियो बनाने का लक्ष्य रखना चाहिए।

धन प्रबंधन के सुझाव

आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए और अपने व्यय का प्रबंधन करने के लिए एक बजट बनाना चाहिए। आपको अपनी खर्च की आदतों पर ध्यान देना चाहिए और अधिक खर्च करने से बचना चाहिए। आपको पैसे बचाने और दीर्घकालिक विकास की संभावना वाले संपत्ति में निवेश करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आपको निवेश निर्णय लेते समय वित्तीय विशेषज्ञों की सलाह लेनी चाहिए।

वित्तीय सफलता में सुधार के लिए उपाय

आपको अपनी वित्तीय सफलता को बढ़ाने के लिए उपाय करने से लाभ हो सकता है। आप मंत्र जप, रत्न पहनने, और अपने अधिपति देवता को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठान कर सकते हैं। ये उपाय किसी भी वित्तीय बाधाओं को दूर करने और आपकी वित्तीय सफलता को बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

निवेश की योजनाएं

आप उच्च प्रतिफल प्रदान करने वाले संपत्ति में निवेश करने पर विचार कर सकते हैं, जैसे कि शेयर और म्यूचुअल फंड। आपको अपनी जोखिम सहनशीलता का ध्यान रखना चाहिए और निवेश निर्णय लेते समय वित्तीय विशेषज्ञों की सलाह लेनी चाहिए। आपको जोखिम कम करने और लाभों को अधिकतम करने के लिए अपने निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लानी चाहिए।

दीर्घकालिक वित्तीय वृद्धि के लिए योजनाएं

आपको अपने रिटायरमेंट लक्ष्यों और परिवार के लिए वित्तीय सुरक्षा समेत एक दीर्घकालिक वित्तीय योजना बनानी चाहिए। आपको अपने वित्तीय दायित्वों, जैसे कि ऋण भुगतान के प्रति सतर्क रहना चाहिए और अपने कर्जों को चुकता करने की एक योजना बनानी चाहिए। आपको अपनी वित्तीय योजना की समीक्षा करनी चाहिए और जरूरत पड़ने पर इसे समायोजित करना चाहिए, ताकि आप अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सही पथ पर रह सकें।

मकान/आवास सुख

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह–तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख–शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करने में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार–चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग–अलग होने के कारण सबको अलग–अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

घर, मकान, या निवास स्थल के लिए सुझाव

ये आपके घर, मकान, या निवास स्थल के लिए भविष्यवाणी हैं, जो आपके नक्षत्र (तारा) के आधार पर तैयार की गई हैं, यह आपके रहन-सहन को ग्रहों के प्रभाव से कैसे प्रभावित करते हैं, इसका पता लगाने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इस 2 से 3 पृष्ठीय विश्लेषण में आपके जन्म नक्षत्र का गहरा अध्ययन किया गया है, जिसमें देखा गया है कि आपके घर का माहौल आपकी सफलता, खुशी, और सामान्य कल्याण कैसे प्रभावित करता है। नक्षत्रों के आधार पर भविष्यवाणी के महत्व को समझें –

(1). अपनी प्राकृतिक ऊर्जा के साथ समन्वित एक घर बनाने से संतुलित और उत्साहजनक वातावरण बनेगा।
(2). अपने जीवन लक्ष्यों के साथ अपने घर को समन्वित करके आपको समृद्ध होने और व्यक्तिगत कठिनाइयों को पार करने में सहायता करना।
(3). आपके घर में संवाद और पारिवारिक संबंधों को सुधारने तथा शांति व सामंजस्य को बढ़ावा देने में मदद करना।
(4). संभावित समस्याओं की पहचान करने और आपके घर से जुड़ी किसी भी बाधा को दूर करने हेतु समाधान प्रदान करना।
(5). एक ऐसा माहौल बनाना जो शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा दे, ताकि स्वास्थ्य और कल्याण को अधिकतम किया जा सके।
(6). ज्योतिषीय और भौगोलिक चर के आधार पर आपके घर का आदर्श स्थान प्रकट करना।
(7). स्थानान्तरण या नवीनीकरण करने का सबसे शुभ समय बताना, ताकि सुचारू संक्रमण और सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित किया जा सके।
(8). आवासीय लेआउट, रंग, और इंटीरियर डिजाइन पर व्यक्तिगत सलाह देना, ताकि सकारात्मक प्रभावों को अधिकतम किया जा सके और नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।
(9). अपने नक्षत्र की विशेषताओं के साथ अपने निवास को मिलान करने से आपका आध्यात्मिक सम्बंध मजबूत होगा।
(10). आपको ऐसे समझदार चुनाव करने में सक्षम बनाना जो आपकी जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाएं तथा आपको उपलब्धि और संतोष की ओर ले जाएं।

घर, मकान, या निवास स्थल का स्वामित्व

आपको जीवन में किसी न किसी समय अपनी स्वयं की संपत्ति होने की संभावना है। आप मेहनती और महत्वाकांक्षी होते हैं, जो आपको संपत्ति स्वामित्व के अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करते हैं। हालांकि, आपको संपत्ति निवेश करते समय सतर्क रहना चाहिए और किसी भी निर्णय लेने से पहले पूरी तरह से जांच-पड़ताल करना चाहिए।

इंटीरियर डिज़ाइन

आपके पास सौन्दर्य के प्रति एक गहन दृष्टि होती है और आप अपने घर के लिए आधुनिक और सादगीपूर्ण आन्तरिक सजावट को पसंद कर सकते हैं। आप शायद पेड़-पौधे या प्राकृतिक चित्रण कला के तत्वों को अपने घर की सजावट में शामिल करना पसंद कर सकते हैं।

आपके घर के लिए सही जगह

वैदिक ज्योतिष के अनुसार, आपके लिए दक्षिण या दक्षिण-पूर्व दिशा में स्थित एक घर में रहना सर्वश्रेष्ठ होता है। इसके अलावा आपको कब्रिस्तानों या श्मशानघाटों के पास के घरों से बचने की सलाह दी जाती है।

परिवार की रहन-सहन की व्यवस्था

आप अपनी स्वतंत्रता और गोपनीयता को महत्व देते हैं, लेकिन आपको परिवार की भी मजबूत समझ होती है। आप अपने निकटतम परिवार के साथ रहना पसंद कर सकते हैं या अपने विस्तारित परिवार के आने जाने के लिए एक अलग रहने की जगह रख सकते हैं।

घर की देखभाल

आप अपने घर का रखरखाव करने के मामले में जिम्मेदार और परिश्रमी होते हैं। आप अपने घर की दिखावट और साफ-सफाई में गर्व महसूस कर सकते हैं, और नियमित रूप से मरम्मत और रखरखाव करते हैं।

घर में सुधार

आप घर में सुधार की ओर आकृष्ट होते हैं और अपनी रहन-सहन की जगहों को उन्नत बनाने में निवेश करना पसंद करते हैं। आप अपने घरों को अधिक कुशल और सुविधाजनक बनाने के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी और उपकरणों में निवेश करना पसंद कर सकते हैं। आप प्राकृतिक दृश्यों वाले और घर से बाहर रहने का स्थान बनाने में भी रुचि रख सकते हैं।

रियल एस्टेट में निवेश

आपको व्यापार की अच्छी समझ होती है और आप अचल संपत्ति निवेश में सफल हो सकते हैं। हालांकि, यह महत्वपूर्ण है कि आप कोई भी महत्वपूर्ण निवेश करने से पहले बाजार के रुझानों का गहन अनुसंधान और विश्लेषण करें।

किराए की संपत्तियां

आप किराए हेतु संपत्तियों में निवेश करना पसंद कर सकते हैं, क्योंकि यह एक स्थिर आय का स्रोत प्रदान कर सकता है। आप संभवतः कई संपत्तियों के प्रबंधन और रखरखाव की चुनौती का आनंद भी ले सकते हैं।

अच्छे घर/मकान/निवास के लिए युक्तियाँ

(1). .त्तिका नक्षत्र अग्नि से संबंधित होता है, अग्नि के तत्वों को जैसे कि उज्ज्वल रंग, मोमबत्तियाँ, और चिमनी को शामिल करने से घर में एक जोशपूर्ण व स्वागत योग्य वातावरण बन

सकता है।

(2). सूर्य इस नक्षत्र का शासक ग्रह हैं, इसलिए प्राकृतिक प्रकाश को घर में प्रवेश करने देना महत्वपूर्ण है। बड़ी खिड़कियाँ, स्काईलाइट, और कांच के दरवाजे प्राकृतिक प्रकाश को अधिक लाने में मदद कर सकते हैं।

(3). .त्तिका नक्षत्र सफाई और व्यवस्था के लिए जाना जाता है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि घर को बिखराव मुक्त और सुव्यवस्थित रखें। नियमित सफाई और अव्यवस्था हटाने से सकारात्मक और ऊर्जावान वातावरण बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

(4). लाल और सुनहरा रंग .त्तिका नक्षत्र के लिए शुभ होते हैं। इन रंगों को सजावट में शामिल करना, जैसे कि पर्दों, तकियों, या कलात्मक कार्यों में, इस नक्षत्र की सकारात्मक ऊर्जाओं को बढ़ावा दे सकता है।

अच्छे घर/मकान/निवास के लिए उपाय

(1). सूर्य .त्तिका नक्षत्र का शासक ग्रह हैं, इसलिए सूर्य की पूजा या उपासना करने से इस नक्षत्र की ऊर्जाओं को शांत करने और घर में सकारात्मक ऊर्जा लाने में मदद मिल सकती है।

(2). वास्तु शास्त्र प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला का विज्ञान है और यह सद्भावपूर्ण आवासीय स्थल बनाने में मदद कर सकता है। वास्तु उपायों का उपयोग करना जैसे कि उत्तर या पूर्व दिशा में एक दर्पण लगाना या उत्तर–पश्चिम दिशा में विंड चाइम्स लटकाना, घर में सकारात्मक ऊर्जाओं को बढ़ाने में मदद कर सकता है।

(3). नीम के पेड़ को शुद्धिकरण गुणों के लिए जाना जाता है और यह घर से नकारात्मक ऊर्जाओं को हटाने में मदद कर सकता है। घर के उत्तर–पश्चिम दिशा में एक नीम का पेड़ लगाने से सकारात्मक ऊर्जाओं को लाने और नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने में मदद मिल सकती है।

(4). सूरज को सूर्योदय के समय जल चढ़ाने से .त्तिका नक्षत्र की ऊर्जाओं को शांत करने और घर में सकारात्मकता और समरसता लाने में मदद मिल सकती है।

ज्योतिषीय उपचार

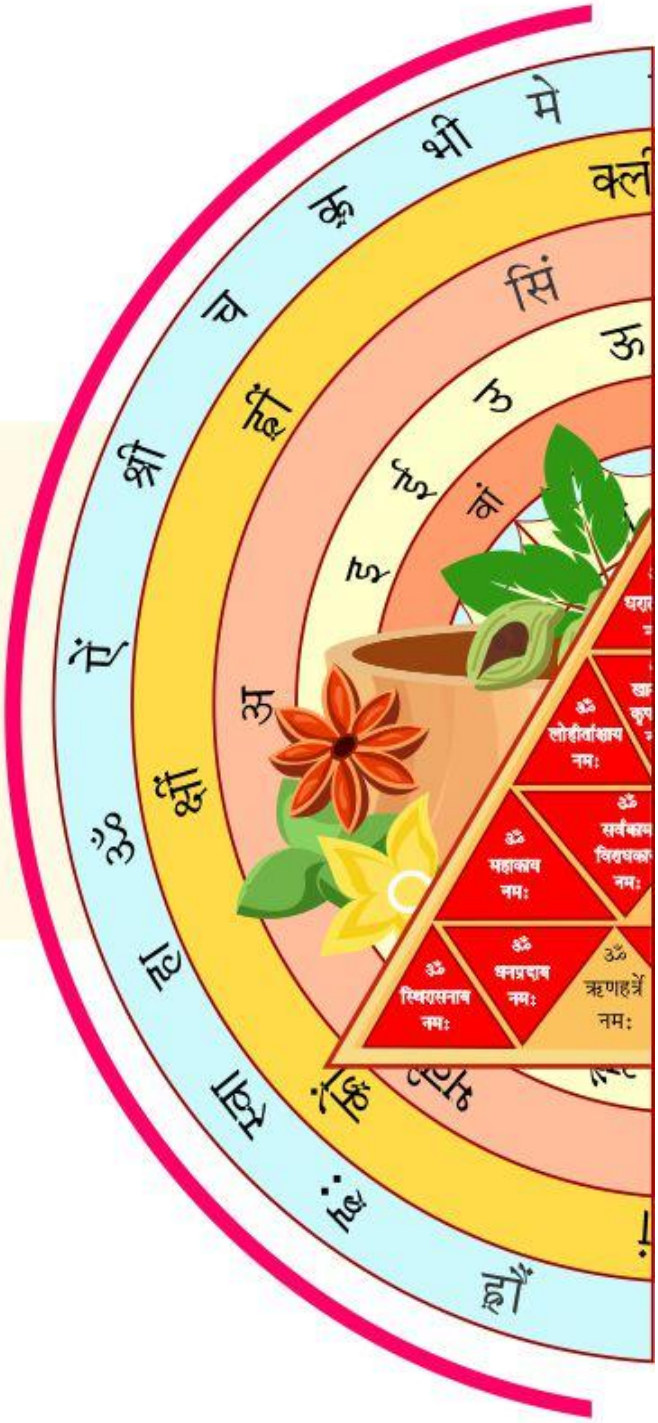

Name - sample

Date - 11/11/2011 Time - 11:11:00

POB - khatu (rajasthan) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Acko Astro

www.ackoastro.com, ackoastro@gmail.com

Contact = +91 8657171000

© Mindsutra's StarLight Premium 11

आपके लिए विस्तृत मार्गदर्शन

आप अपने अनुशासन, महत्वाकांक्षा और व्यावहारिकता के लिए जाने जाते हैं। सुबह की प्रार्थना और अनुष्ठानों में शामिल होने से आपकी ऊर्जा को संचालित करने और दिन के लिए एक सकारात्मक टोन सेट करने में मदद मिल सकती है। यहां आपके लिए कुछ सुझाई गई सुबह की प्रार्थनाएं और अनुष्ठान दिए गए हैं –

सुबह में क्या करें

1 ध्यान और प्राणायाम

मन को शांत करने और अपनी ऊर्जा को संतुलित करने के लिए अपने दिन की शुरुआत ध्यान और प्राणायाम जैसे कि अनुलोम-विलोम या भ्रामरी से करें।

2 सूर्य नमस्कार

सूर्य के प्रति आभार व्यक्त करने और शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण में वृद्धि के लिए प्रतिदिन सूर्य नमस्कार का अभ्यास करें।

3 शनि देव की पूजा करें

चूंकि शनि मकर राशि का स्वामी ग्रह है, इसलिए शनि से जुड़े देवता शनि की पूजा करने से अनुशासन, दृढ़ता और नकारात्मक प्रभावों से सुरक्षा मिल सकती है। शनि स्तोत्र का पाठ करें या शनि गायत्री मंत्र का जाप करें –

ओम काकध्वजाय विद्महे खड्ग हस्ताय धीमही तन्नो मंदः प्रचोदयात।।

4 नवग्रह स्तोत्रम

नवग्रह स्तोत्रम का पाठ नौ ग्रह देवताओं का आशीर्वाद लेने और ग्रहों के किसी भी बुरे प्रभाव को शांत करने के लिए करें।

5 भगवान गणेश की प्रार्थना

विघ्नहर्ता भगवान गणेश से प्रार्थना करें कि आपका दिन निर्विघ्न और सफल रहे –

वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समाप्रभा।
निर्विघ्नम कुरु मे देवा सर्व कार्येषु सर्वदा।।

6 भगवान शिव की पूजा करं

भगवान शिव की पूजा करने से आप लाभान्वित हो सकते हैं, जो अनुशासन और दृढ़ संकल्प का प्रतीक हैं। शिव तांडव स्तोत्रम, शिव महिम्न स्तोत्रम का पाठ करें या शिव गायत्री मंत्र का जाप करें –

ओम तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमही तन्नो रुद्र प्रचोदयात।।

7 योग का अभ्यास करें

शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण में वृद्धि के लिए दैनिक योग अभ्यास करें। ताड़ासन, वीरभद्रासन और उत्तानासन जैसे आसन आपके लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकते हैं।

8 पवित्र ग्रंथों को पढ़ें या सुनं

दिव्य मार्गदर्शन और ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने दिन की शुरुआत भगवद गीता, उपनिषद या पतंजलि के योग सूत्र जैसे पवित्र ग्रंथों के अंशों को पढ़कर या सुनकर करें।

9 कृतज्ञता का अभ्यास करें

अपने जीवन में सभी आशीर्वादों के लिए ब्रह्मांड को धन्यवाद देते हुए कुछ क्षण .तज्ञता में बिताएं। इन सुबह की प्रार्थनाओं और अनुष्ठानों को अपनी दिनचर्या में शामिल करने से आपको व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास के लिए अपने सहज गुणों का उपयोग करने में मदद मिल सकती है।

वेशभूषा और पहनावा

1 क्लासिक और पेशेवर

आप ऐसे कपड़ों की शैलियों को पसंद करते हैं जो क्लासिक, पेशेवर और उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री से बने हों।

2 बनवाया और सिलवाया गया

स्ट्रक्चर्ड डिज़ाइन और अच्छी तरह से सिलवाए गए कट्स वाले कपड़ों का चुनाव करें जो आपके अनुशासित और संगठित स्वभाव को दर्शाते हों।

3 कालातीत और बहुमुखी

ऐसे कपड़े चुनें जो सदाबहार और बहुमुखी हों, विभिन्न अवसरों और वातावरण के लिए उपयुक्त

हों, जैसा कि आप प्रायः व्यावहारिकता और स्थायित्व की सराहना करते हैं।

रंग

1 गहरा नीला

मकर राशि का स्वामी ग्रह शनि है, इसलिए गहरा नीला आपके लिए विशेष रूप से शुभ रंग है। यह अनुशासन, जिम्मेदारी और स्थिरता का प्रतिनिधित्व करता है।

2 काला

यह परिष्कृत और सुरुचिपूर्ण रंग भी आपके लिए अनुकूल हो सकता है, क्योंकि यह अधिकार, शक्ति और दृढ़ संकल्प का प्रतीक है।

3 अर्थ टोन

अपने व्यावहारिक और जमीन से जुड़े स्वभाव को दर्शाने के लिए जमीनी रंग जैसे ब्राउन, ग्रे और अ०लिव ग्रीन को अपनाएं।

4 गहरे और शांत रंग

मैरून, नेवी और चारकोल जैसे गहरे और शांत रंगों का चुनाव करें, जो आपके लिए संतुलन और संस्कार ला सकते हैं।

जीवन शैली

1 अनुशासन और संगठन

अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के लिए एक अनुशासित और संगठित दृष्टिकोण विकसित करें, क्योंकि आपमें प्रायः प्रबल आत्म-नियंत्रण और दृढ़ता की शक्ति विद्यमान होती है।

2 लक्ष्य-निर्धारण और महत्वाकांक्षा

यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करने और उनके प्रति लगन से काम करने पर ध्यान दें, क्योंकि आपमें प्रायः सफलता और उपलब्धि के लिए एक मजबूत संचालन शक्ति होती है।

3 व्यावसायिक विकास

पेशेवर विकास और उन्नति के अवसरों की तलाश करें, जैसा कि आप प्रायः अपने करियर में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं और अपनी उपलब्धियों पर गर्व करते हैं।

वित्तीय योजना और उत्तरदायित्व

वित्त के लिए एक जिम्मेदार और व्यावहारिक दृष्टिकोण बनाए रखें, दीर्घकालिक योजना और बुद्धिमतापूर्ण निवेश पर ध्यान केंद्रित करें।

नेटवर्किंग और कनेक्शन बनाना

संपर्कशील आयोजन और संबंध बनाने के अवसरों में व्यस्त रहें जो आपके पेशेवर विकास और सफलता का समर्थन कर सकें।

सचेतन और संतुलन

अपने दिमाग को शांत करने और अपनी अनुशासित ऊर्जा को संतुलित करने में मदद के लिए ध्यान और सचेतन क्रिया का अभ्यास करें।

परिवार और परंपरा

परिवार के साथ मजबूत संबंध बनाए रखने और परंपराओं को कायम रखने पर ध्यान दें, क्योंकि आप प्रायः स्थिरता और निरंतरता को महत्व देते हैं।

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल लग्न से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल सिंह राशि में स्थित है, जहां मंगल कोई दोष उत्पन्न नहीं करता है। यह एक अपवाद है, जहां पर कुज दोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। आप मांगलिक दोष से मुक्त हैं– आप मंगली नहीं हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना

करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

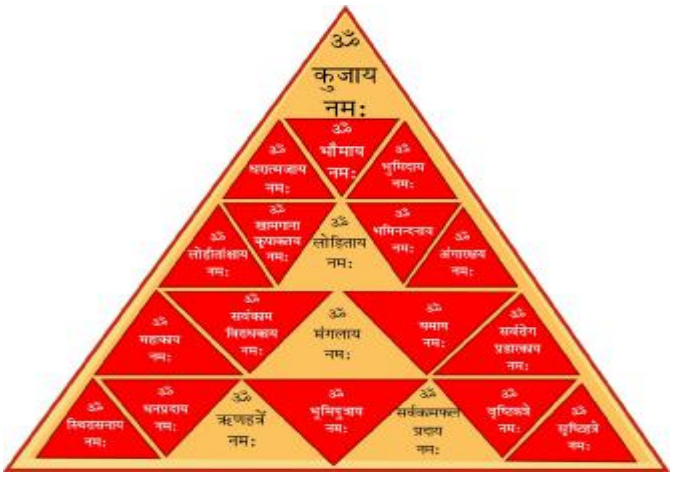

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

केमुद्रुम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

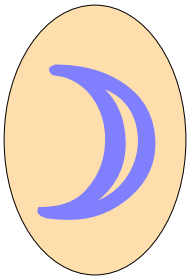

क्या है केमुद्रुम योग ?

आपकी कुण्डली में केमुद्रम योग प्रभावी नहीं है। आपको इस योग से संबंधित कोई उपाय की आवश्यकता नहीं है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।

(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।

(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।

(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।

(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।

(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।

(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।

(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

सूर्य ग्रह का उपाय

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य ग्रह को ग्रहों का राजा माना जाता है। जीवन में मान–सम्मान, नौकरी और समृद्धिशाली जीवन जीने के लिए सूर्य देव की कृपा जरूरी होती है और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सूर्य ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ सूर्याय नमः

Every morning, one should offer water to the Sun and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

Om hraam hreem hroum sah suryaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ घृणिः सूर्याय नमः

Om Ghrinih Suryaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भास्कराय विद्‌महे महातेजाय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात ।।

Om Bhaskaraya Vidmahe Mahatejaya Dhimahi,
Tanno Suryah Prachodayat.

व्रत और उपवास

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी– बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

चन्द्रमा ग्रह का उपाय

कुंडली में चंद्र दोष होने से कलह, मानसिक विकार, माता-पिता की बीमारी, दुर्बलता, धन की कमी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। चंद्रमा मन का कारक ग्रह होता है। कुंडली में चंद्र को मजबूत बनाने के लिए चंद्र ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ सोमाय नमः

This mantra should be chanted every Monday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः

Om shraam shreem shraum sah chandramase namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ सों सोमाय नमः

Om Som Somaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ क्षीरपुत्राय विद्‌महे मृतात्वाय धीमहि ।
तन्नोः चंद्रः प्रचोदयात ।।

Om Ksheeraputraya Vidmahe Mritatvaya Dhimahi,
Tannam Chandrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी - खिरनी की जड़।

मंगल ग्रह का उपाय

मंगल साहस और पराक्रम का कारक ग्रह है। कुंडली में मंगल के कमजोर होने पर उसके साहस और ऊर्जा में निरंतर कमी रहती है। मंगल को मजबूत करने के लिए मंगल ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ भौमाय नमः

This mantra is chanted for the planet Mars. It should be chanted on Tuesdays.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

Om kraam kreem kraum sah bhaumaaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ अंगारकाय नमः

Om Om Angarakaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ अंगारकाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः भौम प्रचोदयात ।।

Om Angarakaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Bhaumah Prachodayat.

व्रत और उपवास

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता क लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी– सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

बुध ग्रह का उपाय

जीवन में तरक्की और प्रसिद्धि पाने के लिए कुंडली में बुध का मजबूत होना आवश्यक है। बौद्धिक नजरिए से सबसे प्रबल ग्रह होता है। कुंडली में बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए बुध ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ बुधाय नमः

This mantra should be chanted every Wednesday. You can chant it in Lord Ganesha's temple.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

Om braam breem braum sah budhaaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ बुं बुधाय नमः

Om Bum Budhaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ सौम्यरुपाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः बुधः प्रचोदयात ।।

Om Saumyarupaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Budhah Prachodayat.

व्रत और उपवास

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी– भारंगी की जड़।

गुरू ग्रह का उपाय

वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से धन लाभ, सुख-सुविधा, सौभाग्य, लंबी आयु आदि मिलता है। कुंडली में देवगुरु बृहस्पति की मजबूती के लिए जातकों को गुरु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बृहस्पतये नमः

This mantra should be chanted while sitting in front of a Shivalinga. It should be chanted every Thursday.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः

Om graam greem graum sah gurave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ ब्रं बृहस्पतये नमः

Om Bram Brihaspataye

गायत्री मंत्र

ॐ गुरुदेवाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः गुरुः प्रचोदयात ।।

Om Gurudevaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Guru Prachodayat.

व्रत और उपवास

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी– केले की जड़।

शुक्र ग्रह का उपाय

कुंडली में शुक्र ग्रह के मजबूत होने पर सभी तरह के ऐशो–आराम की सुविधा मिलती है और इसे मजबूत करने के लिए जातकों को शुक्र बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ शुक्राय नमः

This mantra should be chanted every Friday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः

Om draam dreem draum sah shukraaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ शुं शुक्राय नमः

Om Shum Shukraya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भृगुसुताय विद्‌महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात ।।

Om Bhargusutaya Vidmahe Divyadehaya Dhimahi,
Tanno Shukrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी– अरंडे की जड़।

शनि ग्रह का उपाय

ज्योतिष में शनि देव को कर्म फलदाता के नाम से जाना जाता है। यदि कुंडली में शनि ग्रह भारी होता है तो जिंदगी में परेशानियां बनी रहती हैं। इन परेशानियों को दूर करने के लिए शनि बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ शनैश्चराय नमः

Every Saturday, sit in front of Lord Shani and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः

Om praam preem praum sah shanaishcharaaya

बीज मंत्र 2

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

Om Sham Shanaischaraya

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्‌महे मृत्युरुपाय धीमहि ।
तन्नोः सौरिः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Mrityurupaya Dhimahi,
Tanno Saurih Prachodayat.

व्रत और उपवास

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी– धतुरे की जड़।

राहु ग्रह का उपाय

राहु एक छाया ग्रह है। तनाव को कम करने के लिए राहु मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में यदि राहु अशुभ स्थिति में है, तो व्यक्ति को आसानी से सफलता नहीं मिलती है। राहु को मजबूत करने के लिए राहु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ राहवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

Om bhraam bhreem bhraum sah rahave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ रां राहुवे नमः

Om Ram Rahuve Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्‌महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः राहुः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Rahu Prachodayat.

व्रत और उपवास

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस–पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– चंदन की लकड़ी।
जड़ी– अष्टगन्ध मूल।

केतु ग्रह का उपाय

केतु एक छाया ग्रह ग्रह है, जिसका अपना कोई वास्तविक रूप नहीं है। यदि कुंडली में केतु की स्थिति कमजोर होती है तो यह जिंदगी को बदतर बना देता है। जीवन में कलह बना रहता है। ऐसे में कलह से बचने के लिए इस केतु बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ केतवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

Om sraam sreem sraum sah ketave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ के केतवे नमः

Om Ke Ketave Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः केतुः प्रचोदयात ।।

Om Gadahastaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Ketu Prachodayat.

व्रत और उपवास

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग–बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी– वट वृक्ष की जड़।

आपको किस देवता की पूजा करना

लग्न देवता

लग्नेश पर आधारित

शनि देव

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इष्ट देवता

पंचमेश पर आधारित

लक्ष्मी जी

ऊँ लक्ष्मी नमः

यदि आप लग्न देवता और इष्ट देवता के बीज मंत्रों का जाप करते हैं और उनके संबंधित दिन पर व्रत रखते हैं, तो आपके जीवन की हर समस्या का समाधान स्वतः ही आपके समक्ष आ जाएगा और जीवन में सफलता के द्वार खुलते जाएंगे।

आपको किस ग्रह के मंत्र का जाप करना चाहिए?

लग्नाधिपति	पंचमेश	दशाधिपति	भुक्ति अधिपति
शनि	शुक्र	चन्द्रमा	बुध
ऊँ शं शनैश्चराय नमः	ऊँ शुं शुक्राय नमः	ऊँ सों सोमाय नमः	ऊँ बुं बुधाय नमः

यदि आप लग्नेश के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगा क्योंकि लग्नेश को स्वास्थ्य का कारक माना जाता है। 5वें घर के अधिपति को इष्ट ग्रह कहा जाता है, यदि आप इष्ट ग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका बुद्धि और बल बढ़ेगा, अपने बुद्धि और बल के माध्यम से आप अपने सारे कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। जिस ग्रह की महादशा चल रही है, उसके मंत्र से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जिस ग्रह की अंतर्दशा चल रही है, उसके मंत्र से वर्तमान समय की घटनाएं सकारात्मक होंगी।

आपको किस ग्रह का दान करना चाहिए?

ग्रह का दान

मंगल

लग्नेश शनि से शत्रुता और एकादश भाव का स्वामी होने के कारण मंगल एक शक्तिशाली अशुभ ग्रह बन जाता है।

सप्ताह के उस दिन उस ग्रह से संबंधित दान करें, जैसे मंगलवार को मंगल, शनिवार को शनि और गुरुवार को बृहस्पति। दान की सूची से, आप प्रति सप्ताह 50 रुपये तक कोई भी एक वस्तु दान कर सकते हैं। किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति को दान दें।

अशुभ ग्रहों से संबंधित दान करने से हमारे ऊपर पड़ने वाले उनके नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप अशुभ ग्रह अपनी दशा या अन्तर्दशा में हमें बुरा फल नहीं देते, और यदि हम दान करने के साथ-साथ उन ग्रहों के बीज मंत्रों का जाप भी कर रहे हैं तो उस अशुभ ग्रह के परिणाम भी सकारात्मक ही आएंगे।

यदि आप किसी दिन बीज मंत्र का जाप करना भूल जाते हैं तो आप अगले दिन उसकी पूर्ति कर सकते हैं, उदाहरण के लिए अगले दिन 2 माला जाप करें। यदि अंतर अधिक हो तो एक माला अतिरिक्त जप कर बीज मंत्रों को पूरा करें।

आप किसी भी मंत्र में महारत हासिल कर सकते हैं। इसके बाद आपको सप्ताह के उस दिन संबंधित ग्रह के बीज मंत्र का जाप करना चाहिए, उदाहरण के लिए, यदि आपने बुध के बीज मंत्र में महारत हासिल कर ली है, तो आपको इसमें महारत हासिल करने के बाद हर बुधवार को मंत्र की एक माला का जाप करना चाहिए। इससे इसकी ऊर्जा बनी रहेगी।

वैदिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
कृतिका (1)

नक्षत्राधिपति
सूर्य

इन वैदिक उपायों को अपनायें

(1). अपने दिन की शुरुआत सूर्य नमस्कार से करें, जो 12 योग मुद्राओं का एक क्रम है, जिनमें से प्रत्येक के शरीर के लिए विशिष्ट लाभ हैं। अधिकतम लाभ के लिए सूर्योदय के दौरान इसका अभ्यास करें।

(2). सूर्य का रत्न माणिक है। अपने दाहिने हाथ की अनामिका में सोने में प्रमाणित, उच्च गुणवत्ता वाला माणिक पहनें। यह सूर्य के प्रभाव को मजबूत करने और आपकी जीवन शक्ति को बढ़ाने में मदद कर सकता है।

(3). सूर्योदय के समय गायत्री मंत्र का 108 बार जाप करें। यह शक्तिशाली मंत्र सूर्य को समर्पित है और माना जाता है कि यह स्वास्थ्य और दीर्घायु में सुधार करता है।

(4). रविवार का व्रत, सूर्य को समर्पित दिन, सूर्य को प्रसन्न कर सकता है और आपके स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

(5). प्रातःकाल तांबे के बर्तन में जल लेकर सूर्य को अर्पित करना एक प्राचीन प्रथा है जो आपके स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है।

(6). लाल या अन्य चमकीले रंग पहनने से, विशेष रूप से रविवार को, सूर्य का सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकता है।

(7). अपने समग्र स्वास्थ्य और आरोग्यता में सुधार के लिए, सूर्य यंत्र की पूजा करें, जो सूर्य से जुड़ा एक शक्तिशाली रहस्यमय चित्र है। इसको अपने घर या कार्यस्थल पर स्थापित करके लाल फूल और धूप से पूजा की जा सकती है।

(8). प्रत्येक सुबह सूर्य देव को समर्पित स्तोत्र, आदित्य हृदयम स्तोत्र का पाठ करें। ऐसा कहा जाता है कि यह कांतिमय स्वास्थ्य प्रदान करता है और भय को दूर करता है।

लाल किताब के उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
कृतिका (1)

नक्षत्राधिपति
सूर्य

इन लाल किताब के उपायों को अपनायें

(1). लाल किताब में सूर्य को एक शक्तिशाली खगोलीय पिंड माना गया है। अपने दिन की शुरुआत सूर्योदय के समय प्रार्थना करके करें। इससे आपके दिन में सकारात्मकता और ऊर्जा आएगी।

(2). प्रतिदिन सुबह सूर्य को तांबे के लोटे में कुछ लाल फूल डालकर जल चढ़ाएं। यह अभ्यास जीवन में बाधाओं को दूर करने और समृद्धि लाने में मदद करेगा।

(3). रविवार के दिन अपनी जेब में लाल कपड़े का टुकड़ा रखना या लाल रंग के कपड़े पहनना लाभकारी होता है। इससे आप पर सूर्य का सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकता है।

(4). रविवार के दिन गेहूं का दान करना आपके लिए लाभकारी हो सकता है। सुनिश्चित करें कि मात्रा लाल किताब के सुझाव के अनुसार 1.25 किलोग्राम के गुणकों में हो।

(5). सूर्य की स्थिति को मजबूत करने के लिए रविवार के दिन बहते पानी (जैसे नदी) में गुड़ और एक तांबे का सिक्का डालें।

(6). लाल किताब के अनुसार रविवार के दिन नमक से परहेज करना फायदेमंद साबित हो सकता है।

(7). वैदिक ज्योतिष में सूर्य पिता का भी प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए आपको अपने पिता और अन्य बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए।

(8). विशेष रूप से रविवार के दिन गाय को गेहूं की रोटी खिलाएं। यह सूर्य की .पा पाने का अचूक उपाय है।

(9). लाल चंदन की माला पहनने या जेब में लाल चंदन रखने से लाभ होता है। यह सौभाग्य लाता है और बुराई से बचाता है।

कार्मिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
कृतिका (1)

नक्षत्राधिपति
सूर्य

इन कार्मिक के उपायों को अपनायें

(1). अपने दिन की शुरुआत और अंत आभार व्यक्त करके करें। यह उतना ही सरल हो सकता है जितना कि ज़ोर से यह कहना कि आप किसके लिए आभारी हैं, या आप .तज्ञता पत्रिका रखना पसंद कर सकते हैं। अपने भावों में सूर्य की ऊर्जा और मार्गदर्शन के प्रति आभार व्यक्त करना याद रखें।

(2). सबसे सरल और सबसे शक्तिशाली कार्मिक उपचारों में से एक है बदले में कुछ भी अपेक्षा किए बिना खुलकर देना। यह धर्मार्थ दान, स्वयंसेवा, या यहां तक कि किसी जरूरतमंद पड़ोसी की मदद के रूप में भी हो सकता है।

(3). यह एक प्रमुख कर्म अभ्यास है। नाराजगी छोड़ें और उन लोगों को माफ कर दें जिन्होंने आपके साथ अन्याय किया है। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको भूलना होगा या लोगों को आपको नुकसान पहुंचाते रहने देना होगा। इसका अर्थ है पिछली घटनाओं से जुड़ी नकारात्मक ऊर्जा को दूर करना।

(4). प्रत्येक दिन कुछ क्षण प्रार्थना करने या दूसरों के लिए भलाई की कामना करने में बिताएं। इसमें परिवार, दोस्त या यहां तक कि वे लोग भी शामिल हो सकते हैं जिनसे आपकी नहीं बनती।

(5). प्रतिदिन ध्यान करें. दिन में केवल 10 मिनट का समय भी आपके समग्र कल्याण और सकारात्मक कर्म प्रकट करने की आपकी क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

(6). अपने विचारों, शब्दों और कार्यों से कोई नुकसान न पहुँचाने का सचेत प्रयास करें। इसमें न केवल शारीरिक क्षति बल्कि भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक क्षति भी शामिल है।

(7). आप अपने जीवन में जो बदलाव लाने का प्रयास कर रहे हैं, उसे सुदृढ़ करने के लिए प्रतिदिन सकारात्मक स्वीकृति का प्रयोग करें। उदाहरण के लिए, आप स्वीकृति कर सकते हैं 'मैं सकारात्मक ऊर्जा और अच्छे कर्म का स्रोत हूं।

(8). दयालुता के अनियमित .त्यों का अभ्यास करें। उसके लिए कुछ भी भव्य होना जरूरी नहीं है, बस मुस्कुराहट, एक दयालु शब्द, या एक छोटा सा उपकार जैसे छोटे कार्य बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं।

(9). याद रखें कि आपका खुद के साथ रिश्ता दूसरों के साथ आपके रिश्तों की दिशा तय करता है। अपने आप के साथ दयालुता, सम्मान और धैर्य के साथ व्यवहार करें, ठीक वैसे ही जैसे आप दूसरों के साथ करते हैं।

Disclaimer

(1) Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the Horoscope and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, associations, strengths, weaknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

(2) Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgment. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you receive shoul not be used as a substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or financial advisor.

(3) The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per the ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated result

(4) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

(5) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in th horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for referencing purpose if you may need to consult in future.

(6) Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event will MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

(7) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes.

ज्योतिष जीवन–सूत्र

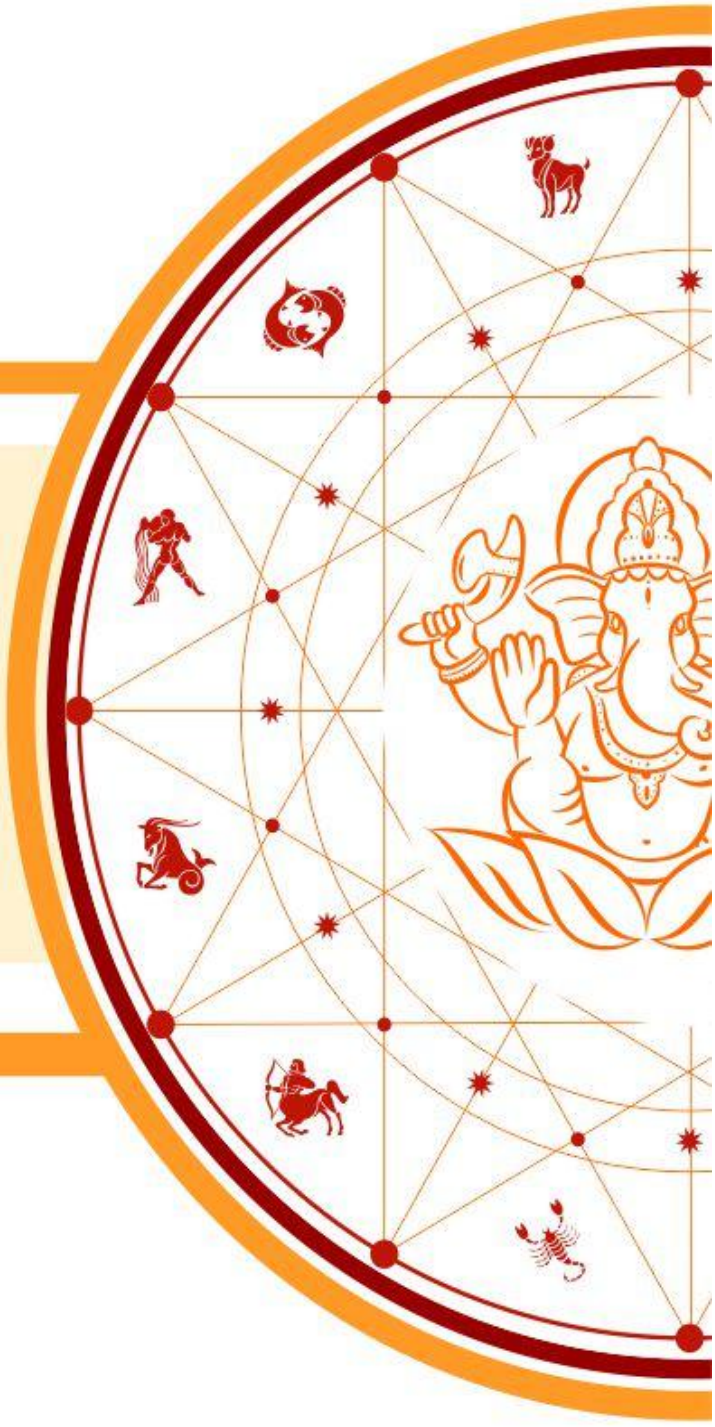

Name - sample

Date - 11/11/2011 Time - 11:11:00

POB - khatu (rajasthan) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Acko Astro

www.ackoastro.com, ackoastro@gmail.com

Contact = +91 8657171000

© Mindsutra's StarLight Premium 11

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	11 नवम्बर 2011
जन्म समय	11:11:00
जन्म दिन	शुक्रवार
जन्म स्थान	khatu
राज्य	rajasthan
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	11:17:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	14:37:47 hrs
इष्ट काल	12: 29: 52 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2068
शक संवत	1933
संवत्सर	खर
ऋतु	शरद
मास	अग्रहन
पक्ष	कृष्ण
वार	शुक्रवार
तिथि	प्रतिपदा
नक्षत्र (पद)	कृतिका (1)
योग	वारियन
करन	बल्लव

अवकहड़ा चक्र

पाया	लौह
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुश्पद
योनि	मेष (स्त्री)
गण	राक्षस
नाड़ी	अन्त
रज्जु	नाभि
तत्व	पृथ्वी
तत्वाधिपति	बुध
विहग	भारधंक
नाड़ी पद	अन्त
वेध	विशाखा
आद्याक्षर	अ
दशा बैलेंस	सूर्य – 5व00मा024दि0
वर्तमान दशा	चन्द्रमा–बुध–गुरू
भयात	10: 20: 16 Ghati
भभोग	66: 41: 54 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	तुला
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	वृश्चिक
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	024:01:22
देकानेट	2
फेस	IV
सूर्योदय	06:11:12AM
सूर्यास्त	05:03:49PM
जन्मदिन का ग्रह	शुक्र
जन्मसमय का ग्रह	मंगल

लग्न मकर	राशि मेष	नक्षत्र – पद कृतिका – 1
लग्नाधिपति शनि	राशिपति मंगल	नक्षत्रपति सूर्य

घात चक्र

कार्तिक अशुभ मास	रविवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मेष अशुभ राशि	मेष अशुभ लग्न	1, 6, 11 अशुभ तिथि
माघ अशुभ नक्षत्र	विषकुम्भ अशुभ योग	बावा अशुभ करन

शुभ बिन्दु

2 मूलांक	8 भाग्यांक	1, 4 मित्रांक
3, 6 शत्रु अंक	17, 19, 22, 26, 28, 31, 35, 37 शुभ वर्ष	शुक्रवार, शनिवार, बुधवार शुभ दिन
शुक्र, शनि, बुध शुभ ग्रह	गुरू, सूर्य अशुभ ग्रह	कर्क, तुला, धनु, कुम्भ मित्र राशि
मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक मित्र लग्न	नीलम शुभ रत्न	नीली, जमुनिया, लाजवर्त शुभ उपरत्न
पन्ना भाग्य रत्न	नरसिंह अनुकूल देवता	लोहा शुभ धातु
श्याम शुभ रंग	पश्चिम दिशा	संध्या शुभ समय
कुलथी, कस्तुरी, कृष्ण गाय, जता शुभ पदार्थ	उड़द शुभ अन्न	तेल शुभ द्रव्य

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य

तुला
24:26:58
विशाखा (2)
सम राशि

चन्द्रमा

मेष
28:44:27
कृतिका (1)
नीच राशि

मंगल

सिहं
06:00:11
मघा (2)
सम राशि

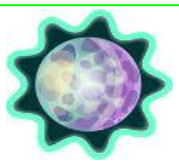

बुध

वृश्चिक
16:48:17
ज्येष्ठा (1)
मित्र राशि

गुरू (व.)

मेष
09:30:47
अश्विनी (3)
स्व नक्षत्र

शुक्र

वृश्चिक
16:59:33
ज्येष्ठा (1)
मित्र राशि

शनि

कन्या
29:33:02
चित्रा (2)
सम राशि

राहु

वृश्चिक
21:38:24
ज्येष्ठा (2)
मित्र राशि

केतु

वृष
21:38:24
रोहिणी (4)
नीच राशि

हर्षल (व.)

मीन
06:57:48
उत्तरभाद्र (2)
नीच राशि

नेपच्यून

कुम्भ
04:06:38
धनिष्ठा (4)
सम राशि

प्लूटो

धनु
11:38:00
मूला (4)
सम राशि

लग्न

मकर
02:50:12
उत्तराषाढ़ (2)
---

1 0वां कस्प

तुला
17:51:40
स्वाति (4)

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह		व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♑ मकर	02:50:12	उत्तराषाढ़ (21)	2		
☉	सूर्य		♎ तुला	24:26:58	विशाखा (16)	2	भ्रात्रि	नीच राशि
☽	चन्द्रमा		♈ मेष	28:44:27	कृतिका (3)	1	अमात्य	सम राशि
♂	मंगल		♌ सिहं	06:00:11	मघा (10)	2	दारा	मित्र राशि
☿	बुध		♏ वृश्चिक	16:48:17	ज्येष्ठा (18)	1	अपत्या	स्व नक्षत्र
♃	गुरू	व.	♈ मेष	09:30:47	अश्विनी (1)	3	ज्ञाति	मित्र राशि
♀	शुक्र		♏ वृश्चिक	16:59:33	ज्येष्ठा (18)	1	मात्रि	सम राशि
♄	शनि		♍ कन्या	29:33:02	चित्रा (14)	2	आत्म	मित्र राशि
☊	राहु		♏ वृश्चिक	21:38:24	ज्येष्ठा (18)	2		नीच राशि
☋	केतु		♉ वृष	21:38:24	रोहिणी (4)	4		नीच राशि
⚷	हर्षल	व.	♓ मीन	06:57:48	उत्तरभाद्र (26)	2		सम राशि
♆	नेपच्यून		♒ कुम्भ	04:06:38	धनिष्ठा (23)	4		सम राशि
♇	प्लूटो		♐ धनु	11:38:00	मूला (19)	4		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

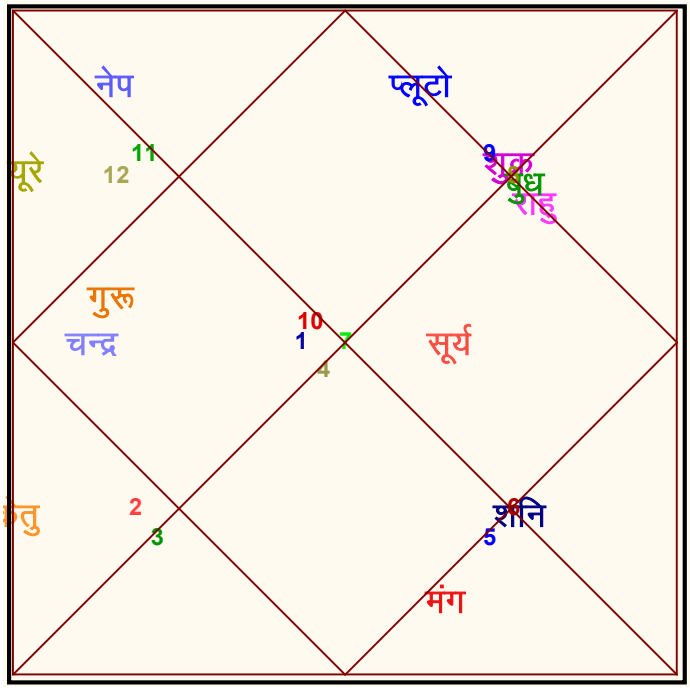

नवांश कुण्डली

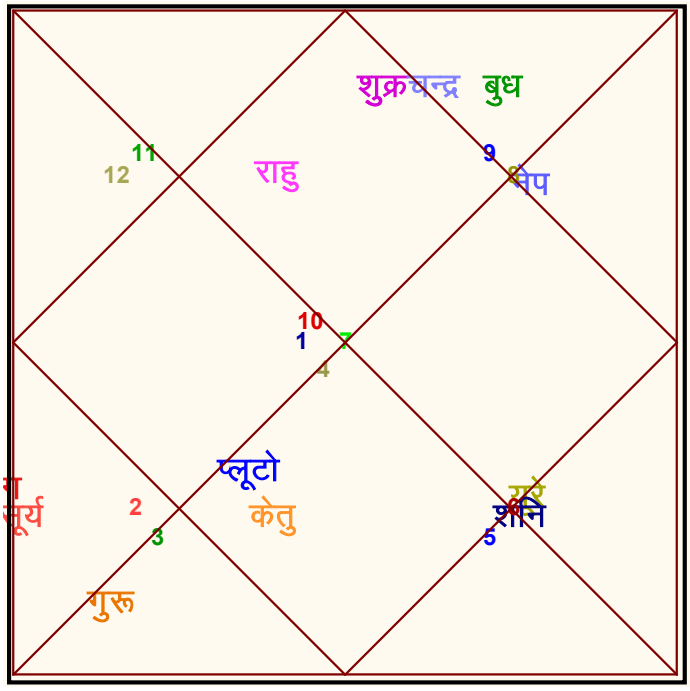

भाव स्फूट और कुण्डली

In Vedic astrology, the Bhava Chalit Chart is crucial as it reveals the exact position of planets in houses, providing deeper insights into one's life areas. While the Rashi chart determines planetary positions based on zodiac signs, the Bhava Chalit Chart focuses on house placements, allowing for a more precise understanding of a person's strengths, challenges, and life path. Through this, astrologers can make accurate predictions and offer tailored remedies.

भाव	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ--अन्त)			
1	मकर	02:50:12	धनु	20:20:27	मकर	20:20:27
2	कुम्भ	07:50:42	मकर	20:20:27	कुम्भ	25:20:56
3	मीन	12:51:11	कुम्भ	25:20:56	मेष	00:21:25
4	मेष	17:51:40	मेष	00:21:25	वृष	00:21:25
5	वृष	12:51:11	वृष	00:21:25	वृष	25:20:56
6	मिथुन	07:50:42	वृष	25:20:56	मिथुन	20:20:27
7	कर्क	02:50:12	मिथुन	20:20:27	कर्क	20:20:27
8	सिहं	07:50:42	कर्क	20:20:27	सिहं	25:20:56
9	कन्या	12:51:11	सिहं	25:20:56	तुला	00:21:25
10	तुला	17:51:40	तुला	00:21:25	वृश्चिक	00:21:25
11	वृश्चिक	12:51:11	वृश्चिक	00:21:25	वृश्चिक	25:20:56
12	धनु	07:50:42	वृश्चिक	25:20:56	धनु	20:20:27

लग्न कुण्डली

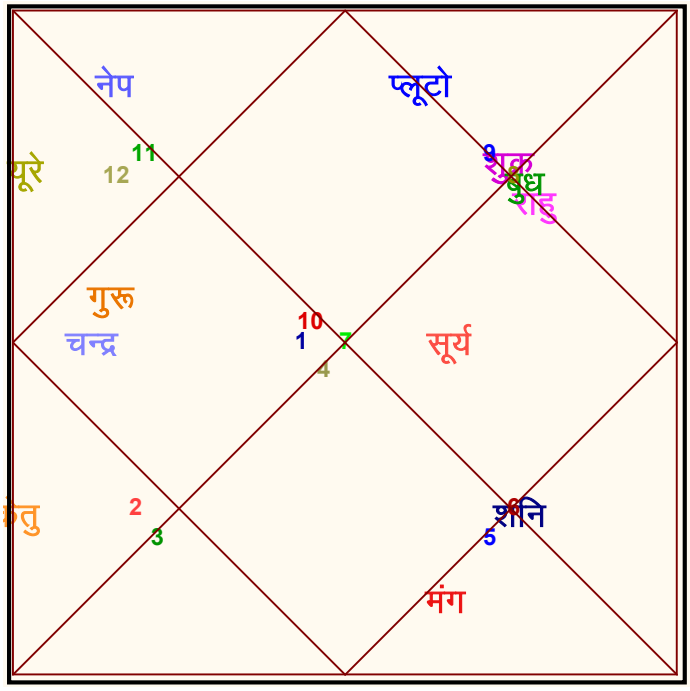

भाव चलित कुण्डली

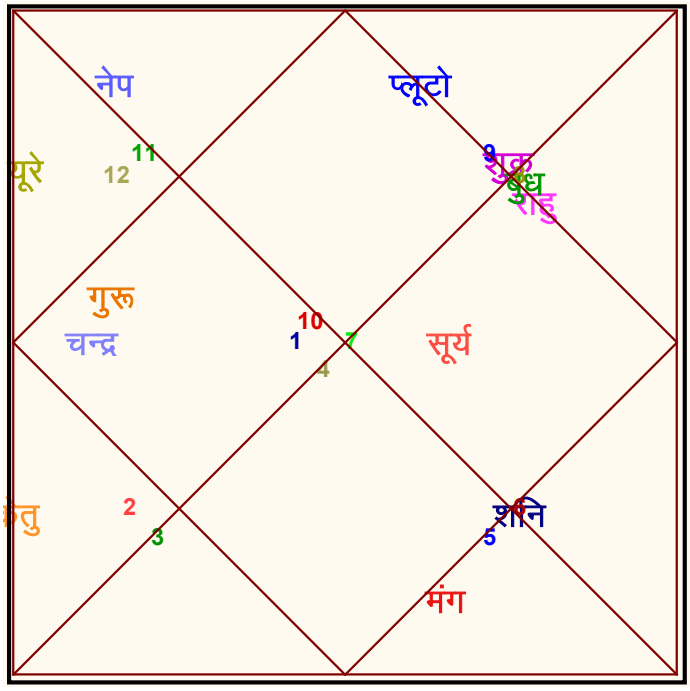

ग्रह मैत्री चक्र

In Vedic astrology, planetary friendships—comprising Natural, Temporary, and Five Fold Friendships—play a pivotal role in interpreting a chart. They indicate the harmony or discord between planets, influencing the outcomes in various life domains. Understanding these relationships helps astrologers assess the combined effects of planetary positions, offering deeper insights into a person's experiences and tendencies, and guiding holistic remedies.

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉ सूर्य	--	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☽ चन्द्रमा	मित्र	--	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂ मंगल	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
☿ बुध	मित्र	शत्रु	सम	--	सम	मित्र	सम	सम	सम
♃ गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	शत्रु	सम	मित्र	सम
♀ शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	--	मित्र	मित्र	मित्र
♄ शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	--	मित्र	मित्र
☊ राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	--	सम
☋ केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	--

तत्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉ सूर्य	....	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
☽ चन्द्रमा	शत्रु	....	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
♂ मंगल	मित्र	शत्रु	....	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
☿ बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	....	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
♃ गुरू	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
♀ शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	....	मित्र	शत्रु	शत्रु
♄ शनि	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	....	मित्र	शत्रु
☊ राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	....	शत्रु
☋ केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....

पचंधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉ सूर्य	....	सम	अधिमित्र	मित्र	सम	सम	सम	सम	अधिशत्रु
☽ चन्द्रमा	सम	....	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	सम
♂ मंगल	अधिमित्र	सम	....	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	अधिमित्र
☿ बुध	अधिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	....	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
♃ गुरू	सम	सम	सम	अधिशत्रु	....	अधिशत्रु	शत्रु	सम	मित्र
♀ शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	सम	शत्रु	....	अधिमित्र	सम	सम
♄ शनि	सम	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	....	अधिमित्र	सम
☊ राहु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	अधिमित्र	....	शत्रु
☋ केतु	अधिशत्रु	सम	अधिमित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	....

षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

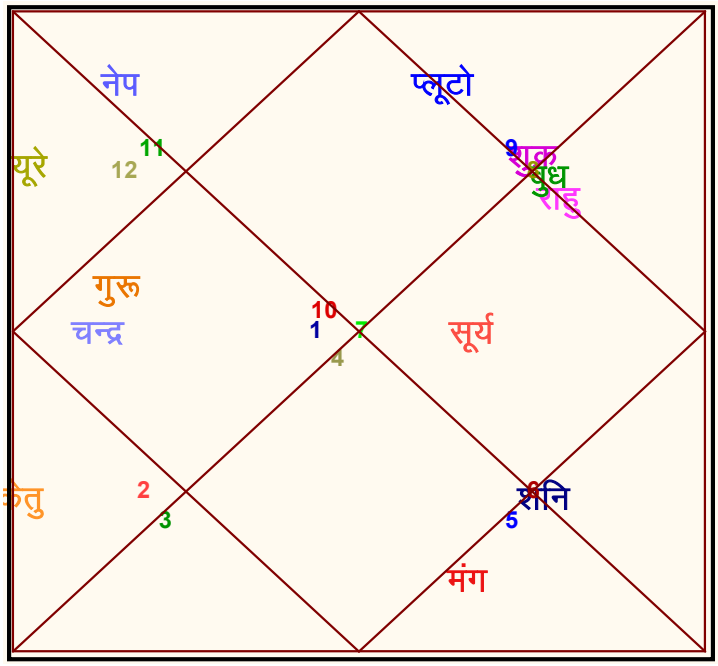

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

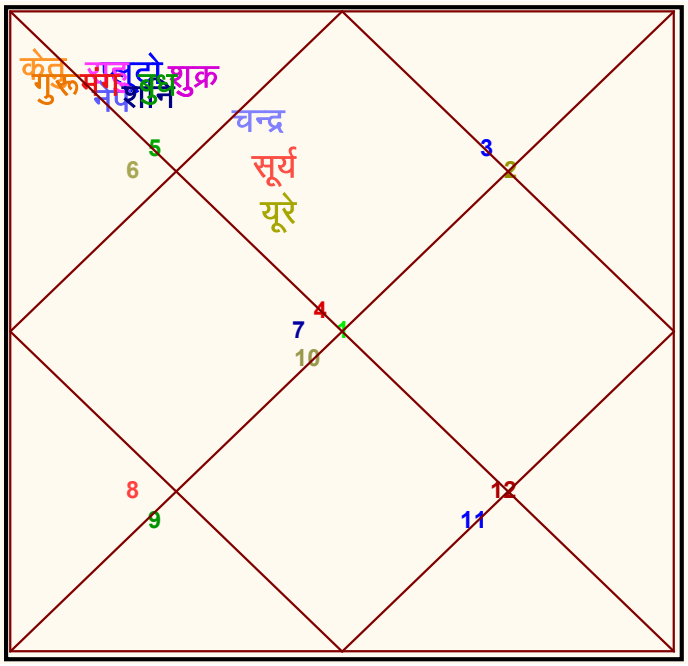

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

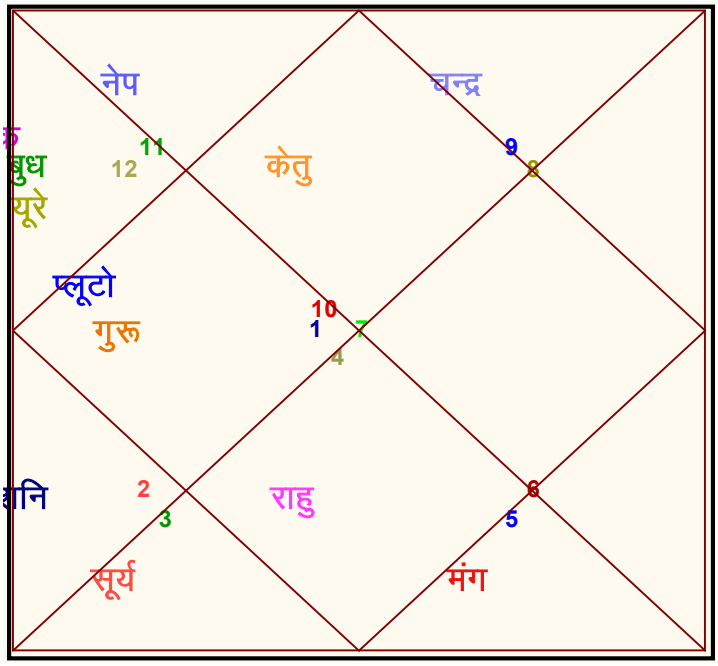

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई–बहनों, चचेरे भाई–बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

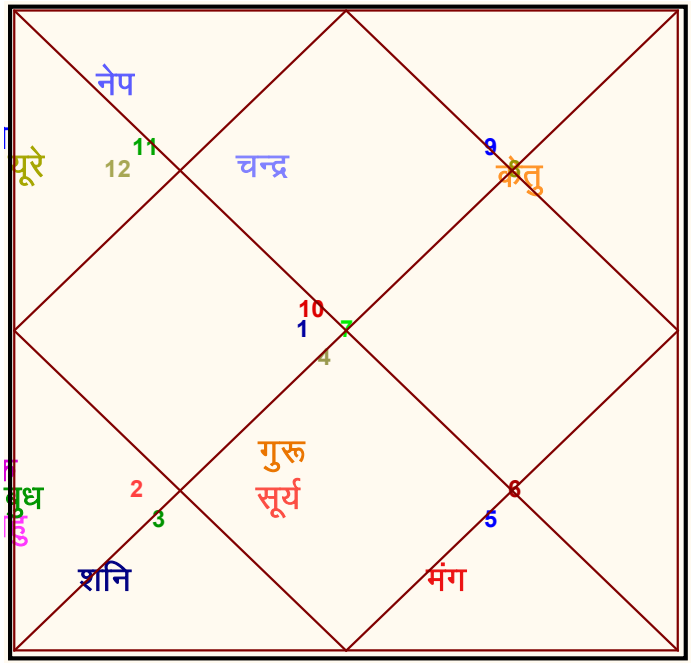

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

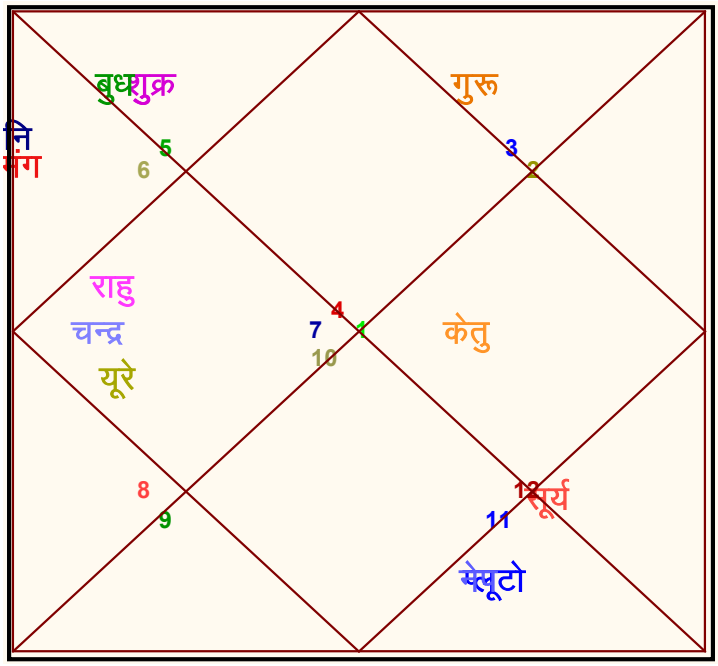

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

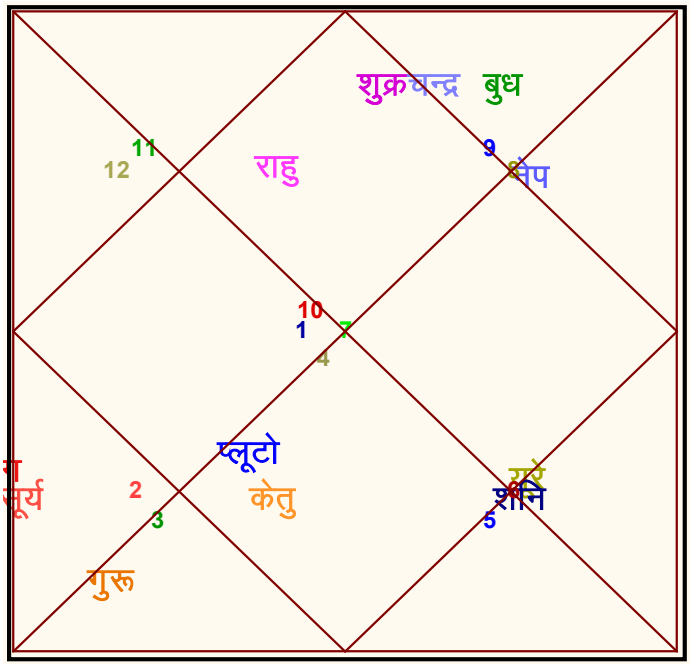

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

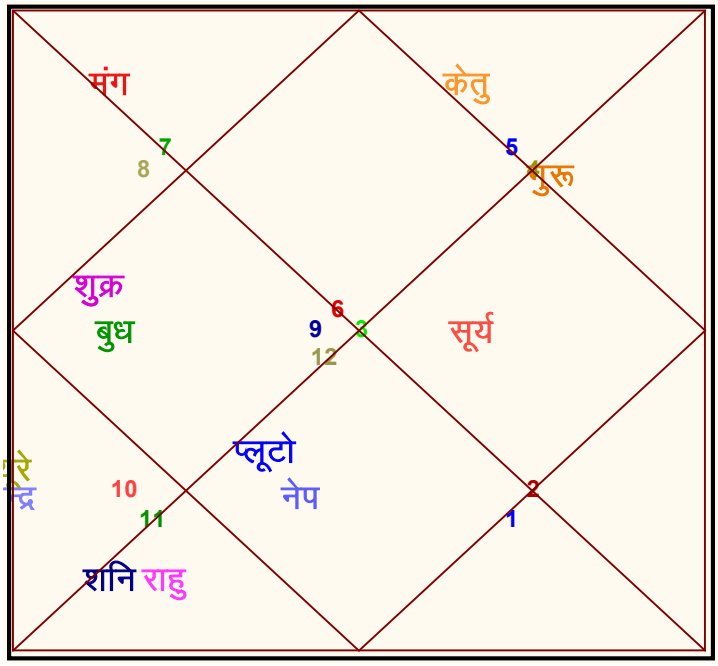

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

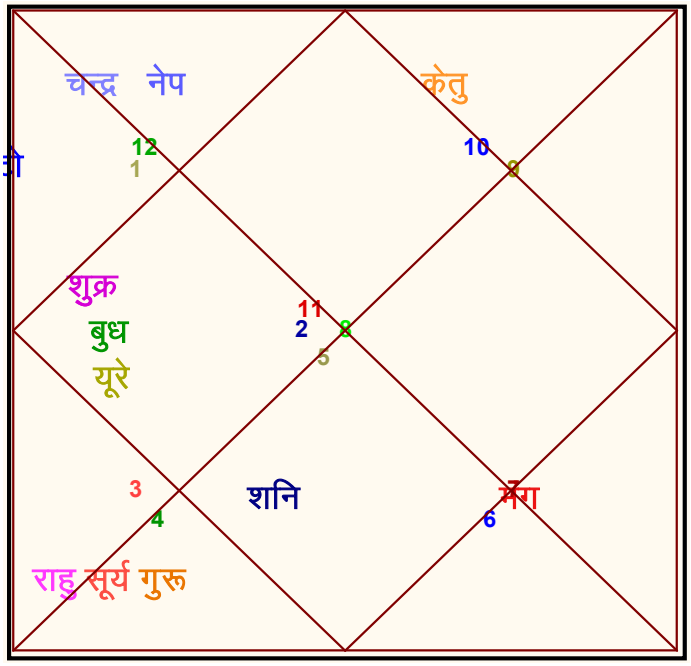

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता–पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता–पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

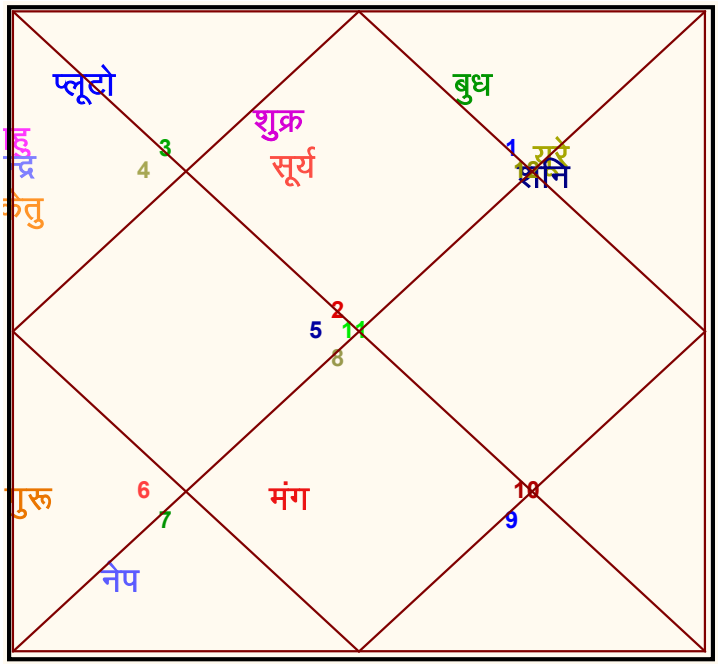

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के ऑटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

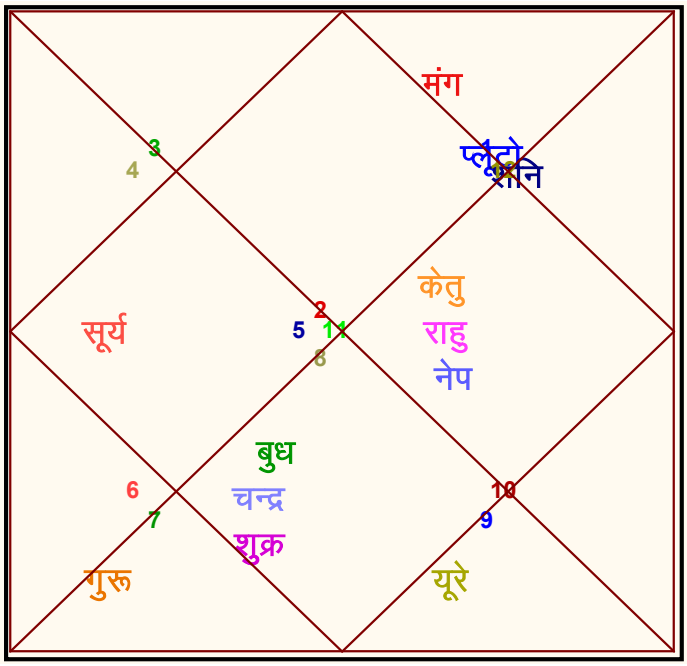

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

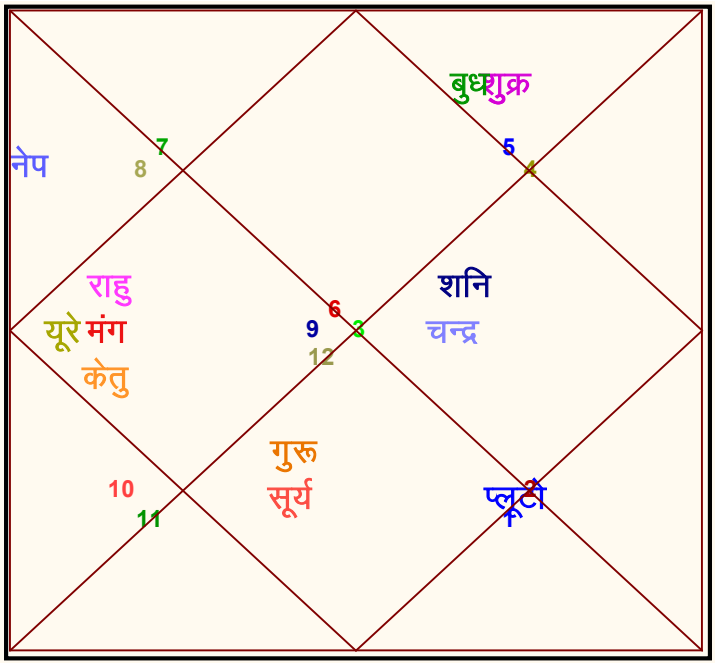

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

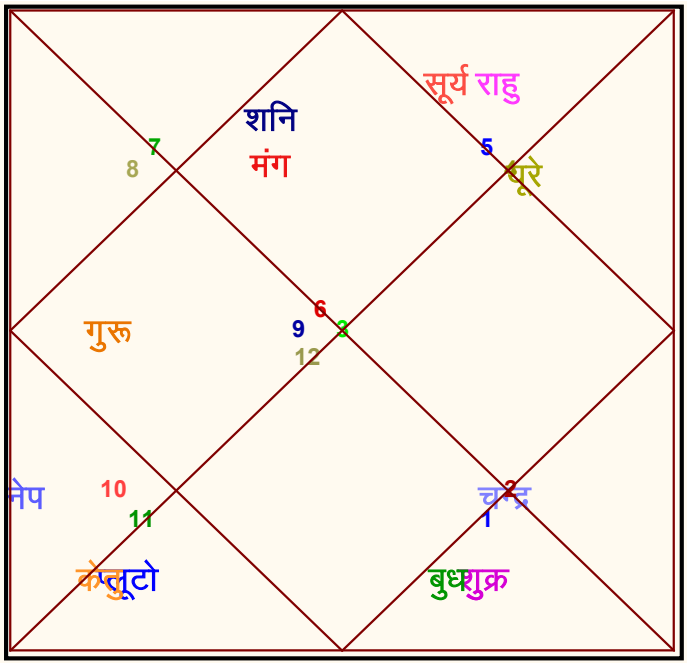

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

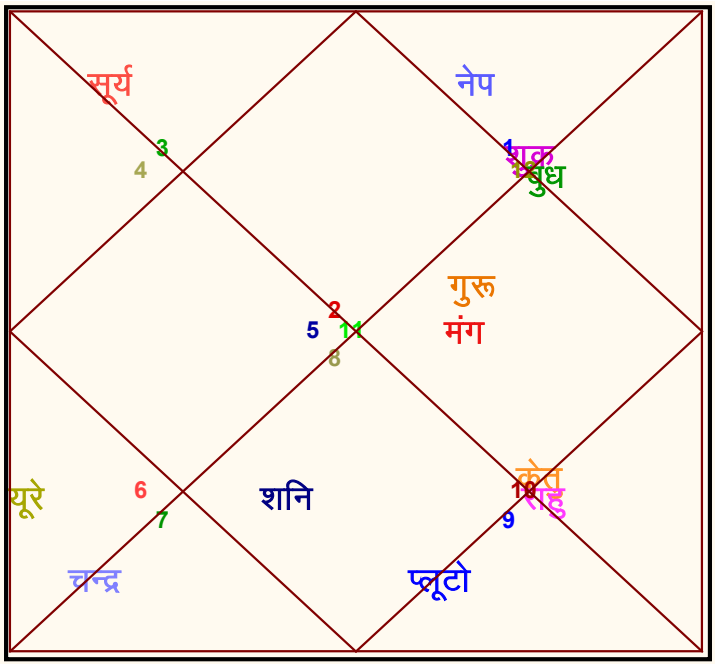

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

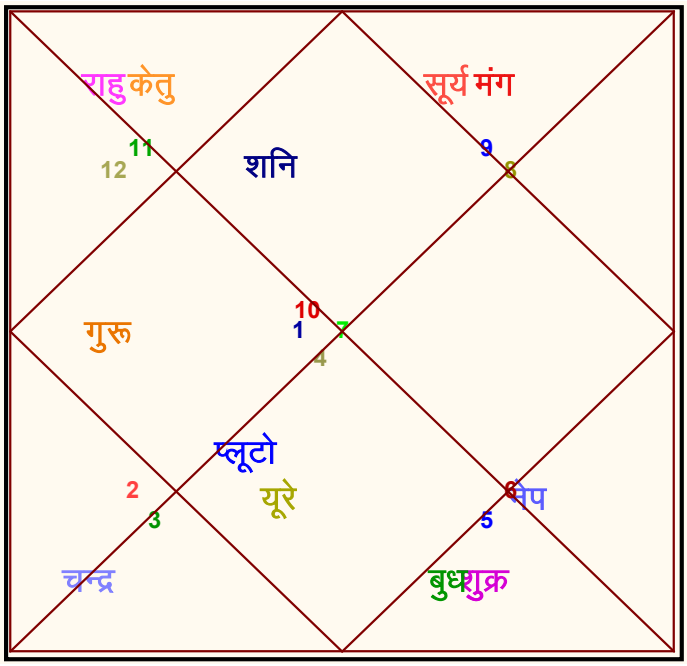

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

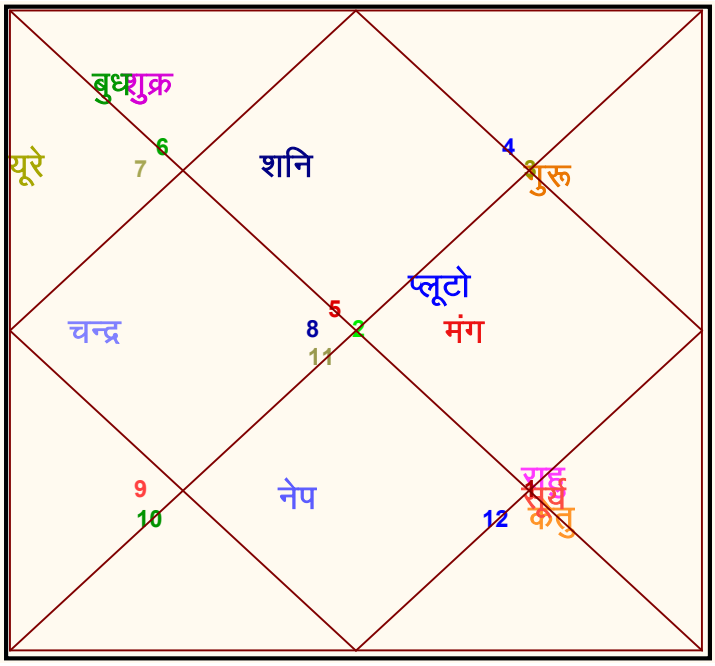

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

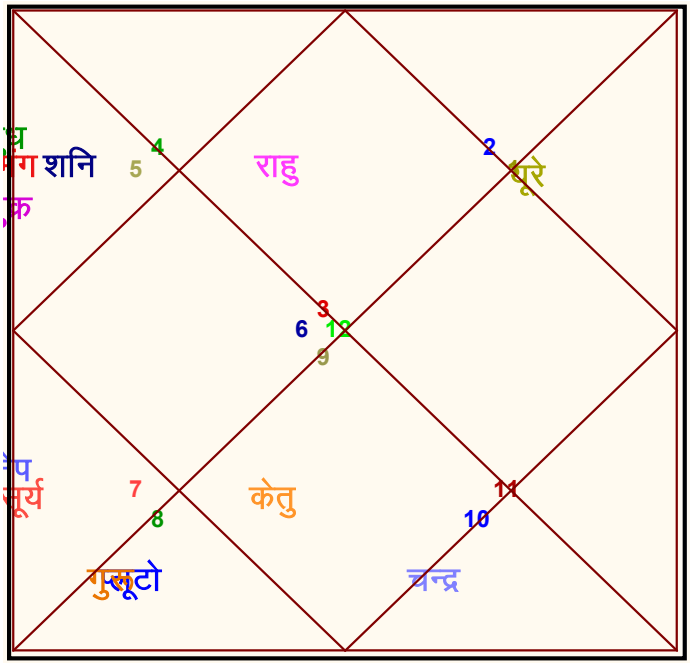

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षोडश वर्ग कुण्डली

पंचमांश कुण्डली (डी 5)

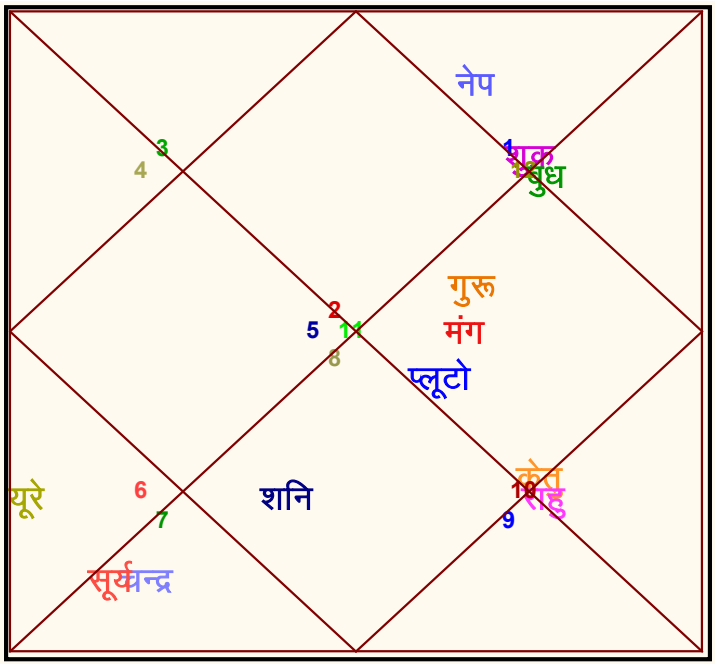

पंचांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 5 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 6 डिग्री में मापता है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। यह मुख्य रूप से जीवन के विभिन्न पहलुओं में किसी व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा और क्षमता में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह उन ज्योतिषियों के लिए उपयोगी जानकारी हो सकती है जो लोगों को उनके विशेष कौशल और गुणों की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने में मार्गदर्शन करते हैं।

षष्टमांश कुण्डली (डी 6)

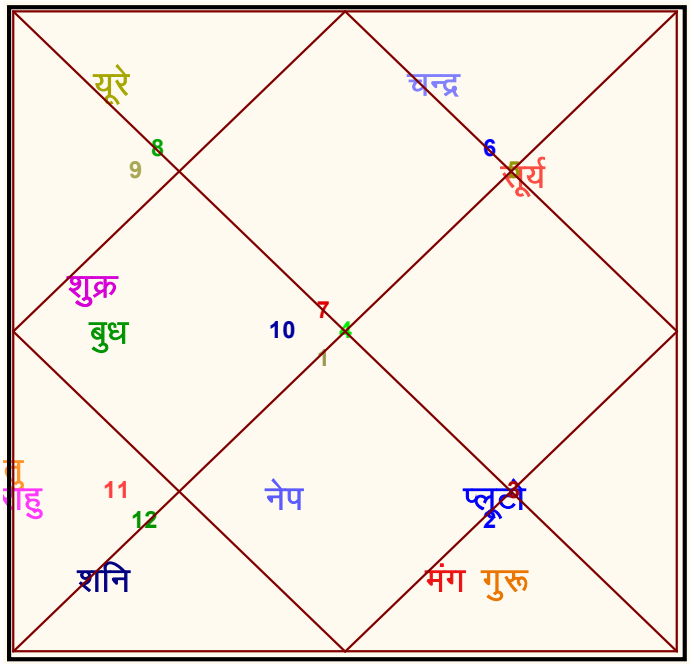

षष्टांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 6 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 5 डिग्री है। इस कुण्डली का पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति की छिपी हुई शक्तियों और जीवन के कई हिस्सों में खामियों को प्रकट करना है। षष्ठांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनकी क्षमता की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने के साथ–साथ समस्याओं पर काबू पाने में मार्गदर्शन करने में सहायता कर सकता है।

अष्टमांश कुण्डली (डी 8)

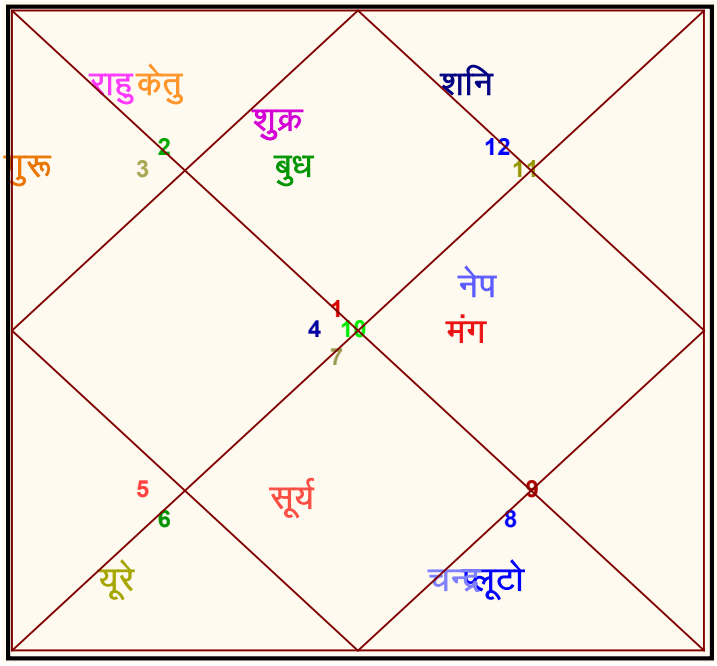

अष्टांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 8 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.75 डिग्री है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में शायद ही कभी उपयोग किया जाता है और वर्तमान अभ्यास में इसका बहुत कम उपयोग होता है। यह आमतौर पर किसी व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं और उनके जीवन पथ से जुड़ी विशेषताओं का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। अष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को लोगों को उनके जीवन के कई पहलुओं को समझने और सुधारने में मदद करने के लिए अधिक जानकारी दे सकता है।

एकादशांश कुण्डली (डी 11)

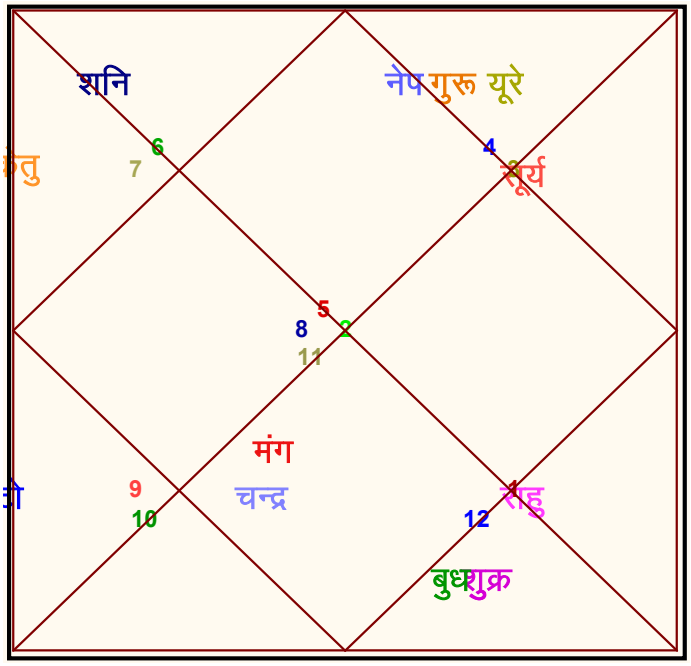

एकादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 11 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 2.73 डिग्री के आसपास फैला हुआ है। हांलाकि यह प्रायः पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में नियोजित नहीं होता है, यह वर्तमान अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सामान्यतः इसका उपयोग किसी व्यक्ति की उपलब्धियों और जीवन के कई पहलुओं में सफलता, विशेष रूप से उनकी नौकरी और करियर में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। एकादशांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनके चुने हुए क्षेत्र में उनकी अधिकतम क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है।

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	04.82	58.58	02.67	39.40	31.50	16.66	53.18
सप्त वर्ग बल	67.50	52.50	120.00	78.75	37.50	71.25	112.50
युग्म अयुग्म बल	15.00	00.00	15.00	15.00	30.00	15.00	00.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	30.00	60.00	30.00	15.00
द्रेक्कन बल	00.00	15.00	15.00	15.00	15.00	00.00	00.00
स्थान बल	**147.32**	**186.08**	**182.67**	**178.15**	**174.00**	**132.91**	**180.68**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	89.28	139.91	190.28	107.97	105.46	99.94	188.21
दिग बल	**57.80**	**56.37**	**36.05**	**44.66**	**27.77**	**09.71**	**31.10**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	165.15	112.75	120.16	127.59	79.36	19.42	103.65
नतोन्नत बल	57.75	02.25	02.25	57.75	00.00	57.75	02.25
पक्ष बल	01.43	58.57	01.43	01.43	58.57	58.57	01.43
त्रिभाग बल	60.00	00.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00	00.00	00.00
मास बल	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	45.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	07.86	06.48	43.92	57.12	45.38	01.88	40.94
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**187.04**	**97.29**	**47.60**	**116.30**	**178.95**	**163.20**	**44.62**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	167.00	97.29	71.05	103.84	159.77	163.20	66.59
चेष्टा बल	**07.86**	**58.57**	**30.00**	**45.00**	**60.00**	**45.00**	**30.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	15.72	195.23	75.00	90.00	120.00	150.00	75.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-08.08**	**-18.63**	**05.51**	**-18.21**	**-24.66**	**-18.21**	**06.67**
कुल षड्बल	**451.94**	**431.12**	**318.97**	**391.61**	**450.36**	**375.47**	**301.64**
षड्बल (रूप में)	**7.53**	**7.19**	**5.32**	**6.53**	**7.51**	**6.26**	**5.03**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	115.88	119.75	106.32	93.24	115.48	113.78	100.55
तुलनात्मक स्थिति	**1**	**3**	**6**	**4**	**2**	**5**	**7**
इष्ट फल	**08.17**	**58.57**	**08.95**	**42.11**	**43.48**	**27.38**	**39.94**
कष्ट फल	**51.83**	**01.43**	**51.05**	**17.89**	**16.52**	**32.62**	**20.06**
दिप्ति बल	**100.00**	**58.57**	**26.15**	**47.90**	**55.02**	**28.78**	**08.30**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
भावाधिपति बल	301.64	301.64	450.36	318.97	375.47	391.61	431.12	451.94	391.61	375.47	318.97	450.36
भाव दिग्बल	30.00	50.00	50.00	00.00	10.00	10.00	30.00	40.00	20.00	30.00	20.00	50.00
भाव दृष्टिबल	03.91	12.64	05.60	-22.01	06.55	-06.32	-15.17	04.91	33.33	-15.23	-13.40	-15.88
भावबल योग	**335.55**	**364.28**	**505.96**	**296.96**	**392.03**	**395.29**	**445.95**	**496.85**	**444.94**	**390.24**	**325.57**	**484.47**
भावबल (रूप में)	**5.59**	**6.07**	**8.43**	**4.95**	**6.53**	**6.59**	**7.43**	**8.28**	**7.42**	**6.50**	**5.43**	**8.07**
तुलनात्मक स्थिति	**10**	**9**	**1**	**12**	**7**	**6**	**4**	**2**	**5**	**8**	**11**	**3**

ग्रहों की दृष्टियाँ

In Vedic astrology, planetary aspects (drishti) are pivotal in analyzing a birth chart. Vedic aspects provide insights into the inherent influences planets exert on each other, Jaimini aspects focus on the sign-based interactions, and Tajika aspects, blend Persian techniques to reveal temporal influences. Together, they offer a comprehensive understanding of an individual's life patterns and potentialities.

ग्रह दृष्टि (पराशरी)

ग्रह		मुख्य दृष्टि	विशेष दृष्टि
☉	सूर्य	चन्द्रमा, गुरू	.....
☽	चन्द्रमा	सूर्य	.....
♂	मंगल	.....	बुध, शुक्र, राहु
☿	बुध	केतु	.....
♃	गुरू	सूर्य	मंगल
♀	शुक्र	केतु	.....
♄	शनि	.....	बुध, शुक्र, राहु
☊	राहु	केतु	.....
☋	केतु	बुध, शुक्र, राहु	.....

ग्रह दृष्टि (जैमिनी)

राशि (ग्रह)		सम्मुख दृष्टि	पृष्ठ दृष्टि
♈	मेष (च0, गु0)	वृश्चिक (बु0, शु0, रा0)	सिहं (मं0), कुम्भ
♉	वृष (के0)	तुला (सू0)	कर्क, मकर
♊	मिथुन	कन्या (श0)	धनु, मीन
♋	कर्क	कुम्भ	वृष (के0), वृश्चिक (बु0, शु0, रा0)
♌	सिहं (मं0)	मकर	मेष (च0, गु0), तुला (सू0)
♍	कन्या (श0)	मिथुन	धनु, मीन
♎	तुला (सू0)	वृष (के0)	सिहं (मं0), कुम्भ
♏	वृश्चिक (बु0, शु0, रा0)	मेष (च0, गु0)	कर्क, मकर
♐	धनु	मीन	मिथुन, कन्या (श0)
♑	मकर	सिहं (मं0)	वृष (के0), वृश्चिक (बु0, शु0, रा0)
♒	कुम्भ	कर्क	मेष (च0, गु0), तुला (सू0)
♓	मीन	धनु	मिथुन, कन्या (श0)

नोट – सम्मुख दृष्टि का प्रभाव पृष्ठ दृष्टि से अधिक होता है।

ग्रह दृष्टि (ताजिक)

ग्रह		लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
AC	लग्न	---									
☉	सूर्य	4/10 (-)	---								
☽	चन्द्रमा	4/10 (-)	7/7 (+)	---							
♂	मंगल	6/8 (+)	3/11 (-)	5/9 (-)	---						
☿	बुध	3/11 (-)	2/12 (+)	6/8 (-)	4/10 (-)	---					
♃	गुरू	4/10 (-)	7/7 (-)	1/1 (-)	5/9 (+)	6/8 (+)	---				
♀	शुक्र	3/11 (-)	2/12 (+)	6/8 (-)	4/10 (-)	1/1 (+)	6/8 (+)	---			
♄	शनि	5/9 (-)	2/12 (+)	6/8 (+)	2/12 (-)	3/11 (-)	6/8 (-)	3/11 (-)	---		
☊	राहु	3/11 (-)	2/12 (+)	6/8 (+)	4/10 (-)	1/1 (+)	6/8 (-)	1/1 (+)	3/11 (-)	---	
☋	केतु	5/9 (-)	6/8 (+)	2/12 (+)	4/10 (-)	7/7 (+)	2/12 (-)	7/7 (+)	5/9 (-)	7/7 (+)	---

लिजेण्ड –

लिजेण्ड – 1/1 युति, 2/12 अर्द्ध सेक्सटाइल, 3/11 सेक्सटाइल, 4/10 स्कवायर, 5/9 ट्राइन, 6/8 क्वीन्कशं, 7/7 से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश है। (+) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश नहीं है।

नोट – ग्रह दृष्टि के लिए ताजिक सिद्धान्त के अनुसार औसत ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग किया गया है। राहु और केतू लिए ग्रह दृष्टि की सीमा 6 अंश है, परन्तु लग्न के लिए ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग नहीं किया गया है।

ग्रह अवस्था

ग्रह		स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
☉	सूर्य	सुप्त	मृत	क्षुदित	दुःखित	––
☽	चन्द्रमा	स्वप्न	मृत	मुदित	शान्त	शान्त
♂	मंगल	स्वप्न	कुमार	मुदित	प्रमुदित	मुदित
☿	बुध	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुःखित	––
♃	गुरू	जाग्रत	कुमार	गर्वित	शान्त	वक्र
♀	शुक्र	जाग्रत	युवा	गर्वित	दीन	मुदित
♄	शनि	स्वप्न	बाल	––	दीन	मुदित
☊	राहु	सुप्त	वृद्ध	क्षुदित	दुःखित	शान्त
☋	केतु	स्वप्न	वृद्ध	लज्जित	शान्त	वक्र

सन्नड़ि

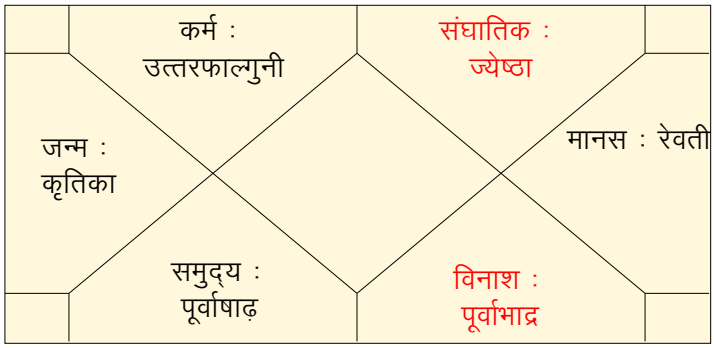

स्थुन		कंटक स्थुन–	हस्ता	जाति–	रेवाति	देश–	अश्विनी
कुज स्थुन–	अश्विनी	रक्त स्थुन–	मृगशिर	प्रतिष्ठा–	भरणी	त्रि–नाड़ि	

नव–तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	खेष्म	प्रत्यरी	साधक	निधन	मित्र	अति मित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिर	अरिद्रा	पुनर्वसु	पुष्य	अश्लेषा	मघा	पुर्वफाल्गुनी
उत्तरफाल्गुनी	हस्ता	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पूर्वाषाढ़
उत्तराषाढ़	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्र	उत्तरभाद्र	रेवती	अश्विनी	भरणी

आर्कचतुष्टय और नवशुभ अर्क

जन्म : कृतिका	कर्म : उत्तरफाल्गुनी	आधान : उत्तराषाढ़	नैधव : शतभिषा

आर्कचतुष्टय की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (28 नक्षत्रों के आधार पर)।

		दग्ध : विशाखा	क्षय : पूर्वाषाढ़
	शूल : धनिष्ठा	सन्निपात : भरणी	ध्वज : अरिद्रा
उल्का : अश्लेषा	भुकम्प : मघा	वज्रक : पुर्वफाल्गुनी	निर्घात : उत्तरफाल्गुनी

नवशुभ अर्क की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (27 नक्षत्रों के आधार पर)।

त्रि–पाप चक्र

प्रथम चक्र उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितिय चक्र उम्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतिय चक्र उम्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतू पताकी	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	गुरू	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल
केतू कुण्डली	बुध	बुध	बुध	मंगल	मंगल	मंगल	केतु	गुरू	गुरू	गुरू	चन्द्रमा	चन्द्रमा
गुरू कुण्डली	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	गुरू	शुक्र

प्रथम चक्र उम्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितिय चक्र उम्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतिय चक्र उम्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतू पताकी	बुध	शनि	गुरू	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	गुरू
केतू कुण्डली	चन्द्रमा	केतु	शुक्र	शुक्र	शुक्र	राहु	राहु	केतु	शनि	शनि	शनि	सूर्य
गुरू कुण्डली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रथम चक्र उम्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितिय चक्र उम्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतिय चक्र उम्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतू पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	गुरू	राहु	केतु	शुक्र
केतू कुण्डली	सूर्य	सूर्य	केतु	बुध	बुध	बुध	मंगल	मंगल	मंगल	केतु	गुरू	गुरू
गुरू कुण्डली	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा

त्रि–आयुध चक्र से विश्लेषण

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर रथ चक्र के अनुसार यह सामने स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप एक भाग्यशाली व्यक्ति रहेंगे। अपनी खुद की मेहनत और प्रयासों से आप बहुत अधिक धन प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर घूर्ण चक्र के अनुसार यह छठहे भाग में स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आपको अपने जीवन में कड़े विरोध का सामना करना पड़ सकता है। ऐसा होने पर आपको इस टकराव से बचना ही ठीक रहेगा।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर चाप चक्र के अनुसार यह धनुष के चाप प स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप साहसी और शक्तिशाली रहेंगे। आप अपने गुणों के द्वारा वीरता पूर्वक कार्य करके आप अपनी एक अमिट छाप छोडेंगे।

विंशोत्तरी दशा (1)

Sun (5 y.0 m.24 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (024:01:22)

अयनांश

सूर्य (6 वर्ष)

11/11/2011 To 05/12/2016

10th भाव नीच विशेष	तुला राशि विशा. (2) नक्षत्र	मित्र संबंध 8 भावपति
सूर्य	-------	-------
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	29-01-2012	00.00
राहु	24-12-2012	00.22
गुरू	12-10-2013	01.12
शनि	23-09-2014	01.92
बुध	31-07-2015	02.87
केतु	05-12-2015	03.72
शुक्र	05-12-2016	04.07

चन्द्रमा (10 वर्ष)

05/12/2016 To 05/12/2026

4th भाव विशेष	मेष राशि कृति. (1) नक्षत्र	शत्रु संबंन्ध 7 भावपति
चन्द्रमा	05-10-2017	05.07
मंगल	06-05-2018	05.90
राहु	05-11-2019	06.48
गुरू	07-03-2021	07.98
शनि	05-10-2022	09.32
बुध	06-03-2024	10.90
केतु	05-10-2024	12.32
शुक्र	06-06-2026	12.90
सूर्य	05-12-2026	14.57

मंगल (7 वर्ष)

05/12/2026 To 05/12/2033

8th भाव विशेष	सिहं राशि मघा (2) नक्षत्र	सम संबंन्ध 4 , 11 भावपति
मंगल	03-05-2027	15.07
राहु	21-05-2028	15.48
गुरू	27-04-2029	16.53
शनि	06-06-2030	17.46
बुध	03-06-2031	18.57
केतु	30-10-2031	19.56
शुक्र	30-12-2032	19.97
सूर्य	06-05-2033	21.13
चन्द्रमा	05-12-2033	21.48

राहु (18 वर्ष)

05/12/2033 To 05/12/2051

11th भाव नीच विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (2) नक्षत्र	शत्रु संबंन्ध भावपति
राहु	17-08-2036	22.07
गुरू	11-01-2039	24.77
शनि	17-11-2041	27.17
बुध	05-06-2044	30.02
केतु	24-06-2045	32.57
शुक्र	24-06-2048	33.62
सूर्य	19-05-2049	36.62
चन्द्रमा	17-11-2050	37.52
मंगल	05-12-2051	39.02

गुरू (16 वर्ष)

05/12/2051 To 05/12/2067

4th भाव वक्री विशेष	मेष राशि अशि. (3) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 12 , 3 भावपति
गुरू	23-01-2054	40.07
शनि	05-08-2056	42.20
बुध	11-11-2058	44.73
केतु	18-10-2059	47.00
शुक्र	18-06-2062	47.93
सूर्य	06-04-2063	50.60
चन्द्रमा	05-08-2064	51.40
मंगल	12-07-2065	52.73
राहु	05-12-2067	53.67

शनि (19 वर्ष)

05/12/2067 To 05/12/2086

9th भाव विशेष	कन्या राशि चित्रा (2) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 1 , 2 भावपति
शनि	08-12-2070	56.07
बुध	18-08-2073	59.08
केतु	26-09-2074	61.77
शुक्र	26-11-2077	62.88
सूर्य	08-11-2078	66.04
चन्द्रमा	08-06-2080	66.99
मंगल	18-07-2081	68.58
राहु	24-05-2084	69.68
गुरू	05-12-2086	72.53

विंशोत्तरी दशा (2)

बुध (17 वर्ष)

05/12/2086 To 05/12/2103

11th भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 6 , 9 भावपति
बुध	03-05-2089	75.07
केतु	30-04-2090	77.48
शुक्र	28-02-2093	78.47
सूर्य	05-01-2094	81.30
चन्द्रमा	06-06-2095	82.15
मंगल	02-06-2096	83.57
राहु	21-12-2098	84.56
गुरू	28-03-2101	87.11
शनि	05-12-2103	89.38

केतु (7 वर्ष)

05/12/2103 To 05/12/2110

5th भाव नीच विशेष	वृष राशि रोहि. (4) नक्षत्र	सम संबंन्ध भावपति
केतु	03-05-2104	92.07
शुक्र	03-07-2105	92.48
सूर्य	08-11-2105	93.64
चन्द्रमा	09-06-2106	93.99
मंगल	05-11-2106	94.58
राहु	23-11-2107	94.98
गुरू	30-10-2108	96.03
शनि	08-12-2109	96.97
बुध	05-12-2110	98.08

शुक्र (20 वर्ष)

05/12/2110 To 05/12/2130

11th भाव विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	शत्रु संबंन्ध 5 , 10 भावपति
शुक्र	06-04-2114	99.07
सूर्य	06-04-2115	102.40
चन्द्रमा	05-12-2116	103.40
मंगल	04-02-2118	105.07
राहु	04-02-2121	106.23
गुरू	05-10-2123	109.23
शनि	05-12-2126	111.90
बुध	05-10-2129	115.07
केतु	05-12-2130	117.90

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	चन्द्रमा	05:12:2016 (17:39:34)	05:12:2026 (19:18:58)
अन्तर्रदशा	बुध	05:10:2022 (23:18:58)	06:03:2024 (05:39:34)
प्रत्यन्तर्रदशा	गुरू	07:10:2023 (05:43:58)	15:12:2023 (04:23:58)
सूक्ष्मदशा	शुक्र	10:11:2023 (03:16:38)	21:11:2023 (15:03:18)
प्राणदशा	सूर्य	12:11:2023 (01:14:25)	12:11:2023 (15:01:45)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

सूर्य दशा

(11:11:2011 To 05:12:2016)

सूर्य अन्तर

सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

(11:11:2011 To 29:01:2012)

मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	26-11-2011	00.00
बुध	14-12-2011	00.04
केतु	22-12-2011	00.09
शुक्र	12-01-2012	00.11
सूर्य	18-01-2012	00.17
चन्द्रमा	29-01-2012	00.19

राहु अन्तर

(29:01:2012 To 24:12:2012)

राहु	19-03-2012	00.22
गुरू	01-05-2012	00.35
शनि	23-06-2012	00.47
बुध	08-08-2012	00.61
केतु	28-08-2012	00.74
शुक्र	21-10-2012	00.79
सूर्य	07-11-2012	00.94
चन्द्रमा	04-12-2012	00.99
मंगल	24-12-2012	01.06

गुरू अन्तर

(24:12:2012 To 12:10:2013)

गुरू	31-01-2013	01.12
शनि	19-03-2013	01.22
बुध	29-04-2013	01.35
केतु	16-05-2013	01.46
शुक्र	04-07-2013	01.51
सूर्य	18-07-2013	01.64
चन्द्रमा	12-08-2013	01.68
मंगल	29-08-2013	01.75
राहु	12-10-2013	01.80

शनि अन्तर

(12:10:2013 To 23:09:2014)

शनि	05-12-2013	01.92
बुध	24-01-2014	02.07
केतु	13-02-2014	02.20
शुक्र	12-04-2014	02.26
सूर्य	29-04-2014	02.42
चन्द्रमा	28-05-2014	02.46
मंगल	17-06-2014	02.54
राहु	08-08-2014	02.60
गुरू	23-09-2014	02.74

बुध अन्तर

(23:09:2014 To 31:07:2015)

बुध	06-11-2014	02.87
केतु	24-11-2014	02.99
शुक्र	15-01-2015	03.04
सूर्य	31-01-2015	03.18
चन्द्रमा	25-02-2015	03.22
मंगल	16-03-2015	03.29
राहु	01-05-2015	03.34
गुरू	11-06-2015	03.47
शनि	31-07-2015	03.58

केतु अन्तर

(31:07:2015 To 05:12:2015)

केतु	07-08-2015	03.72
शुक्र	28-08-2015	03.74
सूर्य	04-09-2015	03.80
चन्द्रमा	14-09-2015	03.81
मंगल	22-09-2015	03.84
राहु	11-10-2015	03.86
गुरू	28-10-2015	03.92
शनि	17-11-2015	03.96
बुध	05-12-2015	04.02

शुक्र अन्तर

(05:12:2015 To 05:12:2016)

शुक्र	04-02-2016	04.07
सूर्य	23-02-2016	04.23
चन्द्रमा	24-03-2016	04.28
मंगल	14-04-2016	04.37
राहु	08-06-2016	04.43
गुरू	27-07-2016	04.58
शनि	23-09-2016	04.71
बुध	14-11-2016	04.87
केतु	05-12-2016	05.01

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(05:12:2016 To 05:12:2026)

चन्द्रमा अन्तर

(05:12:2016 To 05:10:2017)		
चन्द्रमा	31-12-2016	05.07
मंगल	17-01-2017	05.14
राहु	04-03-2017	05.18
गुरू	14-04-2017	05.31
शनि	01-06-2017	05.42
बुध	14-07-2017	05.55
केतु	01-08-2017	05.67
शुक्र	20-09-2017	05.72
सूर्य	05-10-2017	05.86

मंगल अन्तर

(05:10:2017 To 06:05:2018)		
मंगल	18-10-2017	05.90
राहु	19-11-2017	05.93
गुरू	17-12-2017	06.02
शनि	20-01-2018	06.10
बुध	19-02-2018	06.19
केतु	04-03-2018	06.27
शुक्र	08-04-2018	06.31
सूर्य	19-04-2018	06.41
चन्द्रमा	06-05-2018	06.43

राहु अन्तर

(06:05:2018 To 05:11:2019)		
राहु	28-07-2018	06.48
गुरू	09-10-2018	06.71
शनि	03-01-2019	06.91
बुध	22-03-2019	07.15
केतु	23-04-2019	07.36
शुक्र	23-07-2019	07.45
सूर्य	19-08-2019	07.70
चन्द्रमा	04-10-2019	07.77
मंगल	05-11-2019	07.90

गुरू अन्तर

(05:11:2019 To 07:03:2021)		
गुरू	09-01-2020	07.98
शनि	26-03-2020	08.16
बुध	03-06-2020	08.37
केतु	02-07-2020	08.56
शुक्र	21-09-2020	08.64
सूर्य	15-10-2020	08.86
चन्द्रमा	25-11-2020	08.93
मंगल	24-12-2020	09.04
राहु	07-03-2021	09.12

शनि अन्तर

(07:03:2021 To 05:10:2022)		
शनि	06-06-2021	09.32
बुध	27-08-2021	09.57
केतु	30-09-2021	09.79
शुक्र	04-01-2022	09.88
सूर्य	02-02-2022	10.15
चन्द्रमा	22-03-2022	10.23
मंगल	25-04-2022	10.36
राहु	20-07-2022	10.45
गुरू	05-10-2022	10.69

बुध अन्तर

(05:10:2022 To 06:03:2024)		
बुध	18-12-2022	10.90
केतु	17-01-2023	11.10
शुक्र	13-04-2023	11.18
सूर्य	09-05-2023	11.42
चन्द्रमा	21-06-2023	11.49
मंगल	21-07-2023	11.61
राहु	07-10-2023	11.69
गुरू	15-12-2023	11.90
शनि	06-03-2024	12.09

केतु अन्तर

(06:03:2024 To 05:10:2024)		
केतु	18-03-2024	12.32
शुक्र	23-04-2024	12.35
सूर्य	03-05-2024	12.45
चन्द्रमा	21-05-2024	12.48
मंगल	03-06-2024	12.53
राहु	05-07-2024	12.56
गुरू	02-08-2024	12.65
शनि	05-09-2024	12.73
बुध	05-10-2024	12.82

शुक्र अन्तर

(05:10:2024 To 06:06:2026)		
शुक्र	15-01-2025	12.90
सूर्य	14-02-2025	13.18
चन्द्रमा	06-04-2025	13.26
मंगल	11-05-2025	13.40
राहु	11-08-2025	13.50
गुरू	31-10-2025	13.75
शनि	04-02-2026	13.97
बुध	01-05-2026	14.23
केतु	06-06-2026	14.47

सूर्य अन्तर

(06:06:2026 To 05:12:2026)		
सूर्य	15-06-2026	14.57
चन्द्रमा	30-06-2026	14.59
मंगल	11-07-2026	14.63
राहु	07-08-2026	14.66
गुरू	31-08-2026	14.74
शनि	29-09-2026	14.80
बुध	25-10-2026	14.88
केतु	05-11-2026	14.95
शुक्र	05-12-2026	14.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(05:12:2026 To 05:12:2033)

मंगल अन्तर

(05:12:2026 To 03:05:2027)

मंगल	14-12-2026	15.07
राहु	05-01-2027	15.09
गुरू	25-01-2027	15.15
शनि	18-02-2027	15.21
बुध	11-03-2027	15.27
केतु	20-03-2027	15.33
शुक्र	13-04-2027	15.35
सूर्य	21-04-2027	15.42
चन्द्रमा	03-05-2027	15.44

राहु अन्तर

(03:05:2027 To 21:05:2028)

राहु	30-06-2027	15.48
गुरू	20-08-2027	15.63
शनि	20-10-2027	15.77
बुध	13-12-2027	15.94
केतु	04-01-2028	16.09
शुक्र	08-03-2028	16.15
सूर्य	28-03-2028	16.32
चन्द्रमा	29-04-2028	16.38
मंगल	21-05-2028	16.46

गुरू अन्तर

(21:05:2028 To 27:04:2029)

गुरू	06-07-2028	16.53
शनि	29-08-2028	16.65
बुध	16-10-2028	16.80
केतु	05-11-2028	16.93
शुक्र	01-01-2029	16.98
सूर्य	18-01-2029	17.14
चन्द्रमा	15-02-2029	17.19
मंगल	07-03-2029	17.26
राहु	27-04-2029	17.32

शनि अन्तर

(27:04:2029 To 06:06:2030)

शनि	30-06-2029	17.46
बुध	27-08-2029	17.63
केतु	19-09-2029	17.79
शुक्र	26-11-2029	17.86
सूर्य	16-12-2029	18.04
चन्द्रमा	19-01-2030	18.10
मंगल	11-02-2030	18.19
राहु	13-04-2030	18.25
गुरू	06-06-2030	18.42

बुध अन्तर

(06:06:2030 To 03:06:2031)

बुध	27-07-2030	18.57
केतु	17-08-2030	18.71
शुक्र	17-10-2030	18.77
सूर्य	04-11-2030	18.93
चन्द्रमा	04-12-2030	18.98
मंगल	25-12-2030	19.06
राहु	17-02-2031	19.12
गुरू	06-04-2031	19.27
शनि	03-06-2031	19.40

केतु अन्तर

(03:06:2031 To 30:10:2031)

केतु	11-06-2031	19.56
शुक्र	06-07-2031	19.58
सूर्य	14-07-2031	19.65
चन्द्रमा	26-07-2031	19.67
मंगल	04-08-2031	19.70
राहु	26-08-2031	19.73
गुरू	15-09-2031	19.79
शनि	09-10-2031	19.84
बुध	30-10-2031	19.91

शुक्र अन्तर

(30:10:2031 To 30:12:2032)

शुक्र	09-01-2032	19.97
सूर्य	30-01-2032	20.16
चन्द्रमा	06-03-2032	20.22
मंगल	31-03-2032	20.32
राहु	03-06-2032	20.38
गुरू	30-07-2032	20.56
शनि	05-10-2032	20.72
बुध	05-12-2032	20.90
केतु	30-12-2032	21.07

सूर्य अन्तर

(30:12:2032 To 06:05:2033)

सूर्य	05-01-2033	21.13
चन्द्रमा	16-01-2033	21.15
मंगल	23-01-2033	21.18
राहु	11-02-2033	21.20
गुरू	28-02-2033	21.25
शनि	21-03-2033	21.30
बुध	08-04-2033	21.36
केतु	15-04-2033	21.40
शुक्र	06-05-2033	21.43

चन्द्रमा अन्तर

(06:05:2033 To 05:12:2033)

चन्द्रमा	24-05-2033	21.48
मंगल	06-06-2033	21.53
राहु	07-07-2033	21.57
गुरू	05-08-2033	21.65
शनि	08-09-2033	21.73
बुध	08-10-2033	21.82
केतु	20-10-2033	21.91
शुक्र	25-11-2033	21.94
सूर्य	05-12-2033	22.04

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(05:12:2033 To 05:12:2051)

राहु अन्तर

(05:12:2033 To 17:08:2036)		
राहु	02-05-2034	22.07
गुरू	11-09-2034	22.47
शनि	14-02-2035	22.83
बुध	03-07-2035	23.26
केतु	30-08-2035	23.64
शुक्र	10-02-2036	23.80
सूर्य	30-03-2036	24.25
चन्द्रमा	21-06-2036	24.38
मंगल	17-08-2036	24.61

गुरू अन्तर

(17:08:2036 To 11:01:2039)		
गुरू	13-12-2036	24.77
शनि	30-04-2037	25.09
बुध	01-09-2037	25.47
केतु	23-10-2037	25.81
शुक्र	18-03-2038	25.95
सूर्य	30-04-2038	26.35
चन्द्रमा	12-07-2038	26.47
मंगल	01-09-2038	26.67
राहु	11-01-2039	26.81

शनि अन्तर

(11:01:2039 To 17:11:2041)		
शनि	25-06-2039	27.17
बुध	19-11-2039	27.62
केतु	19-01-2040	28.02
शुक्र	10-07-2040	28.19
सूर्य	01-09-2040	28.66
चन्द्रमा	27-11-2040	28.81
मंगल	26-01-2041	29.04
राहु	01-07-2041	29.21
गुरू	17-11-2041	29.64

बुध अन्तर

(17:11:2041 To 05:06:2044)		
बुध	29-03-2042	30.02
केतु	22-05-2042	30.38
शुक्र	24-10-2042	30.53
सूर्य	10-12-2042	30.95
चन्द्रमा	25-02-2043	31.08
मंगल	21-04-2043	31.29
राहु	07-09-2043	31.44
गुरू	09-01-2044	31.82
शनि	05-06-2044	32.16

केतु अन्तर

(05:06:2044 To 24:06:2045)		
केतु	28-06-2044	32.57
शुक्र	31-08-2044	32.63
सूर्य	19-09-2044	32.80
चन्द्रमा	21-10-2044	32.86
मंगल	12-11-2044	32.94
राहु	09-01-2045	33.00
गुरू	01-03-2045	33.16
शनि	01-05-2045	33.30
बुध	24-06-2045	33.47

शुक्र अन्तर

(24:06:2045 To 24:06:2048)		
शुक्र	24-12-2045	33.62
सूर्य	16-02-2046	34.12
चन्द्रमा	19-05-2046	34.27
मंगल	21-07-2046	34.52
राहु	02-01-2047	34.69
गुरू	28-05-2047	35.14
शनि	17-11-2047	35.54
बुध	20-04-2048	36.02
केतु	24-06-2048	36.44

सूर्य अन्तर

(24:06:2048 To 19:05:2049)		
सूर्य	10-07-2048	36.62
चन्द्रमा	06-08-2048	36.66
मंगल	26-08-2048	36.74
राहु	14-10-2048	36.79
गुरू	27-11-2048	36.92
शनि	18-01-2049	37.04
बुध	06-03-2049	37.19
केतु	25-03-2049	37.31
शुक्र	19-05-2049	37.37

चन्द्रमा अन्तर

(19:05:2049 To 17:11:2050)		
चन्द्रमा	03-07-2049	37.52
मंगल	04-08-2049	37.64
राहु	25-10-2049	37.73
गुरू	06-01-2050	37.95
शनि	03-04-2050	38.15
बुध	19-06-2050	38.39
केतु	21-07-2050	38.60
शुक्र	21-10-2050	38.69
सूर्य	17-11-2050	38.94

मंगल अन्तर

(17:11:2050 To 05:12:2051)		
मंगल	09-12-2050	39.02
राहु	05-02-2051	39.08
गुरू	28-03-2051	39.24
शनि	28-05-2051	39.38
बुध	21-07-2051	39.54
केतु	12-08-2051	39.69
शुक्र	15-10-2051	39.75
सूर्य	03-11-2051	39.93
चन्द्रमा	05-12-2051	39.98

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(05:12:2051 To 05:12:2067)

गुरू अन्तर

(05:12:2051 To 23:01:2054)

गुरू	18-03-2052	40.07
शनि	20-07-2052	40.35
बुध	08-11-2052	40.69
केतु	23-12-2052	40.99
शुक्र	02-05-2053	41.12
सूर्य	10-06-2053	41.47
चन्द्रमा	14-08-2053	41.58
मंगल	28-09-2053	41.76
राहु	23-01-2054	41.88

शनि अन्तर

(23:01:2054 To 05:08:2056)

शनि	18-06-2054	42.20
बुध	27-10-2054	42.60
केतु	20-12-2054	42.96
शुक्र	23-05-2055	43.11
सूर्य	09-07-2055	43.53
चन्द्रमा	24-09-2055	43.66
मंगल	17-11-2055	43.87
राहु	04-04-2056	44.02
गुरू	05-08-2056	44.40

बुध अन्तर

(05:08:2056 To 11:11:2058)

बुध	01-12-2056	44.73
केतु	18-01-2057	45.05
शुक्र	05-06-2057	45.19
सूर्य	16-07-2057	45.56
चन्द्रमा	23-09-2057	45.68
मंगल	11-11-2057	45.87
राहु	15-03-2058	46.00
गुरू	03-07-2058	46.34
शनि	11-11-2058	46.64

केतु अन्तर

(11:11:2058 To 18:10:2059)

केतु	01-12-2058	47.00
शुक्र	27-01-2059	47.05
सूर्य	13-02-2059	47.21
चन्द्रमा	13-03-2059	47.26
मंगल	02-04-2059	47.33
राहु	23-05-2059	47.39
गुरू	07-07-2059	47.53
शनि	30-08-2059	47.65
बुध	18-10-2059	47.80

शुक्र अन्तर

(18:10:2059 To 18:06:2062)

शुक्र	28-03-2060	47.93
सूर्य	16-05-2060	48.38
चन्द्रमा	05-08-2060	48.51
मंगल	01-10-2060	48.73
राहु	24-02-2061	48.89
गुरू	04-07-2061	49.29
शनि	05-12-2061	49.64
बुध	22-04-2062	50.07
केतु	18-06-2062	50.44

सूर्य अन्तर

(18:06:2062 To 06:04:2063)

सूर्य	03-07-2062	50.60
चन्द्रमा	27-07-2062	50.64
मंगल	13-08-2062	50.71
राहु	26-09-2062	50.75
गुरू	04-11-2062	50.87
शनि	20-12-2062	50.98
बुध	30-01-2063	51.11
केतु	16-02-2063	51.22
शुक्र	06-04-2063	51.27

चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2063 To 05:08:2064)

चन्द्रमा	17-05-2063	51.40
मंगल	14-06-2063	51.51
राहु	26-08-2063	51.59
गुरू	30-10-2063	51.79
शनि	15-01-2064	51.97
बुध	24-03-2064	52.18
केतु	22-04-2064	52.37
शुक्र	12-07-2064	52.44
सूर्य	05-08-2064	52.67

मंगल अन्तर

(05:08:2064 To 12:07:2065)

मंगल	25-08-2064	52.73
राहु	15-10-2064	52.79
गुरू	30-11-2064	52.93
शनि	23-01-2065	53.05
बुध	12-03-2065	53.20
केतु	01-04-2065	53.33
शुक्र	28-05-2065	53.39
सूर्य	14-06-2065	53.54
चन्द्रमा	12-07-2065	53.59

राहु अन्तर

(12:07:2065 To 05:12:2067)

राहु	21-11-2065	53.67
गुरू	18-03-2066	54.03
शनि	03-08-2066	54.35
बुध	05-12-2066	54.73
केतु	25-01-2067	55.07
शुक्र	20-06-2067	55.21
सूर्य	03-08-2067	55.61
चन्द्रमा	15-10-2067	55.73
मंगल	05-12-2067	55.93

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(05:12:2067 To 05:12:2086)

शनि अन्तर

(05:12:2067 To 08:12:2070)		
शनि	28-05-2068	56.07
बुध	31-10-2068	56.54
केतु	03-01-2069	56.97
शुक्र	05-07-2069	57.14
सूर्य	29-08-2069	57.65
चन्द्रमा	28-11-2069	57.80
मंगल	31-01-2070	58.05
राहु	15-07-2070	58.22
गुरू	08-12-2070	58.67

बुध अन्तर

(08:12:2070 To 18:08:2073)		
बुध	27-04-2071	59.08
केतु	23-06-2071	59.46
शुक्र	04-12-2071	59.61
सूर्य	22-01-2072	60.06
चन्द्रमा	13-04-2072	60.20
मंगल	09-06-2072	60.42
राहु	04-11-2072	60.58
गुरू	15-03-2073	60.98
शनि	18-08-2073	61.34

केतु अन्तर

(18:08:2073 To 26:09:2074)		
केतु	10-09-2073	61.77
शुक्र	17-11-2073	61.83
सूर्य	07-12-2073	62.02
चन्द्रमा	10-01-2074	62.07
मंगल	02-02-2074	62.16
राहु	04-04-2074	62.23
गुरू	28-05-2074	62.39
शनि	31-07-2074	62.54
बुध	26-09-2074	62.72

शुक्र अन्तर

(26:09:2074 To 26:11:2077)		
शुक्र	07-04-2075	62.88
सूर्य	04-06-2075	63.40
चन्द्रमा	08-09-2075	63.56
मंगल	15-11-2075	63.83
राहु	06-05-2076	64.01
गुरू	08-10-2076	64.48
शनि	09-04-2077	64.91
बुध	20-09-2077	65.41
केतु	26-11-2077	65.86

सूर्य अन्तर

(26:11:2077 To 08:11:2078)		
सूर्य	14-12-2077	66.04
चन्द्रमा	11-01-2078	66.09
मंगल	01-02-2078	66.17
राहु	25-03-2078	66.22
गुरू	10-05-2078	66.37
शनि	04-07-2078	66.49
बुध	22-08-2078	66.64
केतु	11-09-2078	66.78
शुक्र	08-11-2078	66.83

चन्द्रमा अन्तर

(08:11:2078 To 08:06:2080)		
चन्द्रमा	26-12-2078	66.99
मंगल	29-01-2079	67.12
राहु	25-04-2079	67.22
गुरू	12-07-2079	67.45
शनि	11-10-2079	67.66
बुध	01-01-2080	67.92
केतु	04-02-2080	68.14
शुक्र	10-05-2080	68.23
सूर्य	08-06-2080	68.50

मंगल अन्तर

(08:06:2080 To 18:07:2081)		
मंगल	02-07-2080	68.58
राहु	01-09-2080	68.64
गुरू	25-10-2080	68.81
शनि	28-12-2080	68.95
बुध	23-02-2081	69.13
केतु	19-03-2081	69.29
शुक्र	25-05-2081	69.35
सूर्य	15-06-2081	69.54
चन्द्रमा	18-07-2081	69.59

राहु अन्तर

(18:07:2081 To 24:05:2084)		
राहु	21-12-2081	69.68
गुरू	09-05-2082	70.11
शनि	21-10-2082	70.49
बुध	17-03-2083	70.94
केतु	17-05-2083	71.35
शुक्र	06-11-2083	71.51
सूर्य	28-12-2083	71.99
चन्द्रमा	24-03-2084	72.13
मंगल	24-05-2084	72.37

गुरू अन्तर

(24:05:2084 To 05:12:2086)		
गुरू	25-09-2084	72.53
शनि	18-02-2085	72.87
बुध	29-06-2085	73.27
केतु	22-08-2085	73.63
शुक्र	23-01-2086	73.78
सूर्य	11-03-2086	74.20
चन्द्रमा	27-05-2086	74.33
मंगल	20-07-2086	74.54
राहु	05-12-2086	74.69

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(05:12:2086 To 05:12:2103)

बुध अन्तर

(05:12:2086 To 03:05:2089)

बुध	09-04-2087	75.07
केतु	30-05-2087	75.41
शुक्र	24-10-2087	75.55
सूर्य	07-12-2087	75.95
चन्द्रमा	18-02-2088	76.07
मंगल	09-04-2088	76.27
राहु	20-08-2088	76.41
गुरू	15-12-2088	76.77
शनि	03-05-2089	77.09

केतु अन्तर

(03:05:2089 To 30:04:2090)

केतु	24-05-2089	77.48
शुक्र	24-07-2089	77.53
सूर्य	11-08-2089	77.70
चन्द्रमा	10-09-2089	77.75
मंगल	01-10-2089	77.83
राहु	24-11-2089	77.89
गुरू	12-01-2090	78.04
शनि	10-03-2090	78.17
बुध	30-04-2090	78.33

शुक्र अन्तर

(30:04:2090 To 28:02:2093)

शुक्र	20-10-2090	78.47
सूर्य	10-12-2090	78.94
चन्द्रमा	07-03-2091	79.08
मंगल	06-05-2091	79.32
राहु	08-10-2091	79.48
गुरू	23-02-2092	79.91
शनि	05-08-2092	80.28
बुध	30-12-2092	80.73
केतु	28-02-2093	81.13

सूर्य अन्तर

(28:02:2093 To 05:01:2094)

सूर्य	16-03-2093	81.30
चन्द्रमा	11-04-2093	81.34
मंगल	29-04-2093	81.41
राहु	14-06-2093	81.46
गुरू	26-07-2093	81.59
शनि	13-09-2093	81.70
बुध	27-10-2093	81.84
केतु	14-11-2093	81.96
शुक्र	05-01-2094	82.01

चन्द्रमा अन्तर

(05:01:2094 To 06:06:2095)

चन्द्रमा	17-02-2094	82.15
मंगल	19-03-2094	82.27
राहु	05-06-2094	82.35
गुरू	12-08-2094	82.56
शनि	02-11-2094	82.75
बुध	15-01-2095	82.98
केतु	14-02-2095	83.18
शुक्र	11-05-2095	83.26
सूर्य	06-06-2095	83.50

मंगल अन्तर

(06:06:2095 To 02:06:2096)

मंगल	27-06-2095	83.57
राहु	20-08-2095	83.62
गुरू	07-10-2095	83.77
शनि	04-12-2095	83.91
बुध	24-01-2096	84.06
केतु	14-02-2096	84.20
शुक्र	15-04-2096	84.26
सूर्य	03-05-2096	84.43
चन्द्रमा	02-06-2096	84.48

राहु अन्तर

(02:06:2096 To 21:12:2098)

राहु	20-10-2096	84.56
गुरू	21-02-2097	84.94
शनि	19-07-2097	85.28
बुध	28-11-2097	85.68
केतु	21-01-2098	86.05
शुक्र	25-06-2098	86.19
सूर्य	11-08-2098	86.62
चन्द्रमा	27-10-2098	86.75
मंगल	21-12-2098	86.96

गुरू अन्तर

(21:12:2098 To 28:03:2101)

गुरू	10-04-2099	87.11
शनि	19-08-2099	87.41
बुध	14-12-2099	87.77
केतु	31-01-2100	88.09
शुक्र	18-06-2100	88.22
सूर्य	30-07-2100	88.60
चन्द्रमा	06-10-2100	88.71
मंगल	24-11-2100	88.90
राहु	28-03-2101	89.04

शनि अन्तर

(28:03:2101 To 05:12:2103)

शनि	30-08-2101	89.38
बुध	17-01-2102	89.80
केतु	15-03-2102	90.18
शुक्र	26-08-2102	90.34
सूर्य	14-10-2102	90.79
चन्द्रमा	04-01-2103	90.92
मंगल	02-03-2103	91.15
राहु	27-07-2103	91.30
गुरू	05-12-2103	91.71

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(05:12:2103 To 05:12:2110)

केतु अन्तर

(05:12:2103 To 03:05:2104)

केतु	14-12-2103	92.07
शुक्र	08-01-2104	92.09
सूर्य	15-01-2104	92.16
चन्द्रमा	28-01-2104	92.18
मंगल	06-02-2104	92.21
राहु	28-02-2104	92.24
गुरू	19-03-2104	92.30
शनि	12-04-2104	92.35
बुध	03-05-2104	92.42

शुक्र अन्तर

(03:05:2104 To 03:07:2105)

शुक्र	13-07-2104	92.48
सूर्य	03-08-2104	92.67
चन्द्रमा	08-09-2104	92.73
मंगल	03-10-2104	92.83
राहु	06-12-2104	92.89
गुरू	01-02-2105	93.07
शनि	09-04-2105	93.22
बुध	08-06-2105	93.41
केतु	03-07-2105	93.57

सूर्य अन्तर

(03:07:2105 To 08:11:2105)

सूर्य	10-07-2105	93.64
चन्द्रमा	20-07-2105	93.66
मंगल	28-07-2105	93.69
राहु	16-08-2105	93.71
गुरू	02-09-2105	93.76
शनि	22-09-2105	93.81
बुध	10-10-2105	93.86
केतु	18-10-2105	93.91
शुक्र	08-11-2105	93.93

चन्द्रमा अन्तर

(08:11:2105 To 09:06:2106)

चन्द्रमा	26-11-2105	93.99
मंगल	08-12-2105	94.04
राहु	09-01-2106	94.07
गुरू	06-02-2106	94.16
शनि	12-03-2106	94.24
बुध	11-04-2106	94.33
केतु	24-04-2106	94.41
शुक्र	29-05-2106	94.45
सूर्य	09-06-2106	94.55

मंगल अन्तर

(09:06:2106 To 05:11:2106)

मंगल	18-06-2106	94.58
राहु	10-07-2106	94.60
गुरू	30-07-2106	94.66
शनि	22-08-2106	94.71
बुध	12-09-2106	94.78
केतु	21-09-2106	94.84
शुक्र	16-10-2106	94.86
सूर्य	23-10-2106	94.93
चन्द्रमा	05-11-2106	94.95

राहु अन्तर

(05:11:2106 To 23:11:2107)

राहु	01-01-2107	94.98
गुरू	21-02-2107	95.14
शनि	23-04-2107	95.28
बुध	16-06-2107	95.45
केतु	09-07-2107	95.60
शुक्र	11-09-2107	95.66
सूर्य	30-09-2107	95.83
चन्द्रमा	01-11-2107	95.88
मंगल	23-11-2107	95.97

गुरू अन्तर

(23:11:2107 To 30:10:2108)

गुरू	08-01-2108	96.03
शनि	02-03-2108	96.16
बुध	19-04-2108	96.31
केतु	09-05-2108	96.44
शुक्र	05-07-2108	96.49
सूर्य	22-07-2108	96.65
चन्द्रमा	19-08-2108	96.69
मंगल	08-09-2108	96.77
राहु	30-10-2108	96.83

शनि अन्तर

(30:10:2108 To 08:12:2109)

शनि	02-01-2109	96.97
बुध	28-02-2109	97.14
केतु	24-03-2109	97.30
शुक्र	30-05-2109	97.36
सूर्य	19-06-2109	97.55
चन्द्रमा	23-07-2109	97.60
मंगल	16-08-2109	97.70
राहु	15-10-2109	97.76
गुरू	08-12-2109	97.93

बुध अन्तर

(08:12:2109 To 05:12:2110)

बुध	29-01-2110	98.08
केतु	19-02-2110	98.22
शुक्र	20-04-2110	98.27
सूर्य	08-05-2110	98.44
चन्द्रमा	07-06-2110	98.49
मंगल	28-06-2110	98.57
राहु	22-08-2110	98.63
गुरू	09-10-2110	98.78
शनि	05-12-2110	98.91

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(05:12:2110 To 05:12:2130)

शुक्र अन्तर

(05:12:2110 To 06:04:2114)

शुक्र	26-06-2111	99.07
सूर्य	26-08-2111	99.62
चन्द्रमा	05-12-2111	99.79
मंगल	14-02-2112	100.07
राहु	15-08-2112	100.26
गुरू	25-01-2113	100.76
शनि	06-08-2113	101.21
बुध	25-01-2114	101.73
केतु	06-04-2114	102.21

सूर्य अन्तर

(06:04:2114 To 06:04:2115)

सूर्य	24-04-2114	102.40
चन्द्रमा	25-05-2114	102.45
मंगल	15-06-2114	102.53
राहु	09-08-2114	102.59
गुरू	26-09-2114	102.74
शनि	23-11-2114	102.88
बुध	14-01-2115	103.03
केतु	04-02-2115	103.18
शुक्र	06-04-2115	103.23

चन्द्रमा अन्तर

(06:04:2115 To 05:12:2116)

चन्द्रमा	27-05-2115	103.40
मंगल	01-07-2115	103.54
राहु	30-09-2115	103.64
गुरू	21-12-2115	103.89
शनि	26-03-2116	104.11
बुध	20-06-2116	104.37
केतु	26-07-2116	104.61
शुक्र	05-11-2116	104.71
सूर्य	05-12-2116	104.98

मंगल अन्तर

(05:12:2116 To 04:02:2118)

मंगल	30-12-2116	105.07
राहु	04-03-2117	105.13
गुरू	30-04-2117	105.31
शनि	06-07-2117	105.47
बुध	05-09-2117	105.65
केतु	29-09-2117	105.82
शुक्र	09-12-2117	105.88
सूर्य	31-12-2117	106.08
चन्द्रमा	04-02-2118	106.14

राहु अन्तर

(04:02:2118 To 04:02:2121)

राहु	18-07-2118	106.23
गुरू	11-12-2118	106.68
शनि	03-06-2119	107.08
बुध	05-11-2119	107.56
केतु	08-01-2120	107.98
शुक्र	09-07-2120	108.16
सूर्य	02-09-2120	108.66
चन्द्रमा	02-12-2120	108.81
मंगल	04-02-2121	109.06

गुरू अन्तर

(04:02:2121 To 05:10:2123)

गुरू	14-06-2121	109.23
शनि	15-11-2121	109.59
बुध	02-04-2122	110.01
केतु	29-05-2122	110.39
शुक्र	07-11-2122	110.54
सूर्य	26-12-2122	110.99
चन्द्रमा	17-03-2123	111.12
मंगल	12-05-2123	111.34
राहु	05-10-2123	111.50

शनि अन्तर

(05:10:2123 To 05:12:2126)

शनि	06-04-2124	111.90
बुध	17-09-2124	112.40
केतु	24-11-2124	112.85
शुक्र	04-06-2125	113.03
सूर्य	01-08-2125	113.56
चन्द्रमा	05-11-2125	113.72
मंगल	12-01-2126	113.98
राहु	04-07-2126	114.17
गुरू	05-12-2126	114.64

बुध अन्तर

(05:12:2126 To 05:10:2129)

बुध	01-05-2127	115.07
केतु	30-06-2127	115.47
शुक्र	19-12-2127	115.63
सूर्य	09-02-2128	116.11
चन्द्रमा	06-05-2128	116.25
मंगल	05-07-2128	116.48
राहु	08-12-2128	116.65
गुरू	25-04-2129	117.07
शनि	05-10-2129	117.45

केतु अन्तर

(05:10:2129 To 05:12:2130)

केतु	30-10-2129	117.90
शुक्र	09-01-2130	117.97
सूर्य	31-01-2130	118.16
चन्द्रमा	07-03-2130	118.22
मंगल	01-04-2130	118.32
राहु	04-06-2130	118.39
गुरू	31-07-2130	118.56
शनि	06-10-2130	118.72
बुध	05-12-2130	118.90

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

अष्टोत्तरी दशा

जन्म के समय अष्टोत्तरी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 024:01:22) : शुक्र : 19 व0 10 मा0 28

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का क्रितिकादी सिद्धान्त प्र ावी हो रहा है।
राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।
कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में उपस्थित है।

शुक्र (21 वर्ष)

11/11/2011 To 10/10/2031

भाव	राशि	संबंन्ध
11th	वृश्चिक	सम
विशेष	नक्षत्र	भावपति
	ज्येष्ठा (1)	5 , 10

शुक्र	09-11-2014	00.00
सूर्य	09-01-2016	02.99
चन्द्रमा	09-12-2018	04.16
मंगल	30-06-2020	07.08
बुध	20-10-2023	08.63
शनि	29-09-2025	11.94
गुरू	10-06-2029	13.88
राहु	10-10-2031	17.58

सूर्य (6 वर्ष)

10/10/2031 To 10/10/2037

भाव	राशि	संबंन्ध
10th	तुला	सम
विशेष	नक्षत्र	भावपति
नीच	विशा. (2)	8

सूर्य	08-02-2032	19.91
चन्द्रमा	09-12-2032	20.24
मंगल	21-05-2033	21.08
बुध	30-04-2034	21.52
शनि	19-11-2034	22.47
गुरू	09-12-2035	23.02
राहु	09-08-2036	24.08
शुक्र	10-10-2037	24.74

चन्द्रमा (15 वर्ष)

10/10/2037 To 09/10/2052

भाव	राशि	संबंन्ध
4th	मेष	शत्रु
विशेष	नक्षत्र	भावपति
	कृति. (1)	7

चन्द्रमा	09-11-2039	25.91
मंगल	19-12-2040	27.99
बुध	30-04-2043	29.11
शनि	19-09-2044	31.47
गुरू	10-05-2047	32.86
राहु	09-01-2049	35.49
शुक्र	09-12-2051	37.16
सूर्य	09-10-2052	40.08

मंगल (8 वर्ष)

09/10/2052 To 09/10/2060

भाव	राशि	संबंन्ध
8th	सिहं	मित्र
विशेष	नक्षत्र	भावपति
	मघा (2)	4 , 11

मंगल	14-05-2053	40.91
बुध	16-08-2054	41.50
शनि	14-05-2055	42.76
गुरू	09-10-2056	43.50
राहु	30-08-2057	44.91
शुक्र	21-03-2059	45.80
सूर्य	30-08-2059	47.36
चन्द्रमा	09-10-2060	47.80

बुध (17 वर्ष)

09/10/2060 To 10/10/2077

भाव	राशि	संबंन्ध
11th	वृश्चिक	सम
विशेष	नक्षत्र	भावपति
स्वनक्षत्र	ज्येष्ठा (1)	6 , 9

बुध	13-06-2063	48.91
शनि	09-01-2065	51.59
गुरू	05-01-2068	53.16
राहु	26-11-2069	56.15
शुक्र	17-03-2073	58.04
सूर्य	25-02-2074	61.35
चन्द्रमा	06-07-2076	62.29
मंगल	10-10-2077	64.65

शनि (10 वर्ष)

10/10/2077 To 10/10/2087

भाव	राशि	संबंन्ध
9th	कन्या	मित्र
विशेष	नक्षत्र	भावपति
	चित्रा (2)	1 , 2

शनि	12-09-2078	65.91
गुरू	16-06-2080	66.84
राहु	27-07-2081	68.60
शुक्र	07-07-2083	69.71
सूर्य	26-01-2084	71.65
चन्द्रमा	17-06-2085	72.21
मंगल	14-03-2086	73.60
बुध	10-10-2087	74.34

गुरू (19 वर्ष)

10/10/2087 To 10/10/2106

भाव	राशि	संबंन्ध
4th	मेष	मित्र
विशेष	नक्षत्र	भावपति
वक्री	अश्वि. (3)	12 , 3

गुरू	12-02-2091	75.91
राहु	24-03-2093	79.25
शुक्र	03-12-2096	81.36
सूर्य	23-12-2097	85.06
चन्द्रमा	13-08-2100	86.11
मंगल	09-01-2102	88.75
बुध	05-01-2105	90.16
शनि	10-10-2106	93.15

राहु (12 वर्ष)

10/10/2106 To 10/10/2118

भाव	राशि	संबंन्ध
11th	वृश्चिक	शत्रु
विशेष	नक्षत्र	भावपति
नीच	ज्येष्ठा (2)	

राहु	08-02-2108	94.91
शुक्र	10-06-2110	96.24
सूर्य	08-02-2111	98.58
चन्द्रमा	09-10-2112	99.24
मंगल	30-08-2113	100.91
बुध	20-07-2115	101.80
शनि	30-08-2116	103.69
गुरू	10-10-2118	104.80

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(11:11:2011 To 10:10:2031)

शुक्र अन्तर

(11:11:2011 To 09:11:2014)		
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	11-05-2012	00.00
मंगल	30-08-2012	00.50
बुध	22-04-2013	00.80
शनि	07-09-2013	01.44
गुरू	27-05-2014	01.82
राहु	09-11-2014	02.54

सूर्य अन्तर

(09:11:2014 To 09:01:2016)		
सूर्य	03-12-2014	02.99
चन्द्रमा	31-01-2015	03.06
मंगल	03-03-2015	03.22
बुध	09-05-2015	03.31
शनि	18-06-2015	03.49
गुरू	01-09-2015	03.60
राहु	18-10-2015	03.80
शुक्र	09-01-2016	03.93

चन्द्रमा अन्तर

(09:01:2016 To 09:12:2018)		
चन्द्रमा	05-06-2016	04.16
मंगल	23-08-2016	04.57
बुध	07-02-2017	04.78
शनि	17-05-2017	05.24
गुरू	20-11-2017	05.51
राहु	18-03-2018	06.02
शुक्र	11-10-2018	06.35
सूर्य	09-12-2018	06.92

मंगल अन्तर

(09:12:2018 To 30:06:2020)		
मंगल	20-01-2019	07.08
बुध	20-04-2019	07.19
शनि	11-06-2019	07.44
गुरू	19-09-2019	07.58
राहु	21-11-2019	07.86
शुक्र	11-03-2020	08.03
सूर्य	12-04-2020	08.33
चन्द्रमा	30-06-2020	08.42

बुध अन्तर

(30:06:2020 To 20:10:2023)		
बुध	06-01-2021	08.63
शनि	28-04-2021	09.15
गुरू	26-11-2021	09.46
राहु	09-04-2022	10.04
शुक्र	30-11-2022	10.41
सूर्य	05-02-2023	11.05
चन्द्रमा	22-07-2023	11.23
मंगल	20-10-2023	11.69

शनि अन्तर

(20:10:2023 To 29:09:2025)		
शनि	24-12-2023	11.94
गुरू	28-04-2024	12.12
राहु	16-07-2024	12.46
शुक्र	01-12-2024	12.68
सूर्य	10-01-2025	13.06
चन्द्रमा	18-04-2025	13.16
मंगल	10-06-2025	13.43
बुध	29-09-2025	13.58

गुरू अन्तर

(29:09:2025 To 10:06:2029)		
गुरू	25-05-2026	13.88
राहु	21-10-2026	14.53
शुक्र	11-07-2027	14.94
सूर्य	24-09-2027	15.66
चन्द्रमा	29-03-2028	15.87
मंगल	07-07-2028	16.38
बुध	05-02-2029	16.65
शनि	10-06-2029	17.24

राहु अन्तर

(10:06:2029 To 10:10:2031)		
राहु	12-09-2029	17.58
शुक्र	25-02-2030	17.84
सूर्य	13-04-2030	18.29
चन्द्रमा	10-08-2030	18.42
मंगल	12-10-2030	18.74
बुध	23-02-2031	18.92
शनि	13-05-2031	19.28
गुरू	10-10-2031	19.50

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(10:10:2031 To 10:10:2037)

सूर्य अन्तर

(10:10:2031 To 08:02:2032)

सूर्य	16-10-2031	19.91
चन्द्रमा	02-11-2031	19.93
मंगल	11-11-2031	19.98
बुध	30-11-2031	20.00
शनि	12-12-2031	20.05
गुरू	02-01-2032	20.08
राहु	16-01-2032	20.14
शुक्र	08-02-2032	20.18

चन्द्रमा अन्तर

(08:02:2032 To 09:12:2032)

चन्द्रमा	22-03-2032	20.24
मंगल	13-04-2032	20.36
बुध	31-05-2032	20.42
शनि	29-06-2032	20.55
गुरू	21-08-2032	20.63
राहु	24-09-2032	20.78
शुक्र	22-11-2032	20.87
सूर्य	09-12-2032	21.03

मंगल अन्तर

(09:12:2032 To 21:05:2033)

मंगल	21-12-2032	21.08
बुध	16-01-2033	21.11
शनि	31-01-2033	21.18
गुरू	28-02-2033	21.22
राहु	18-03-2033	21.30
शुक्र	19-04-2033	21.35
सूर्य	28-04-2033	21.44
चन्द्रमा	21-05-2033	21.46

बुध अन्तर

(21:05:2033 To 30:04:2034)

बुध	14-07-2033	21.52
शनि	15-08-2033	21.67
गुरू	14-10-2033	21.76
राहु	22-11-2033	21.92
शुक्र	28-01-2034	22.03
सूर्य	16-02-2034	22.21
चन्द्रमा	05-04-2034	22.27
मंगल	30-04-2034	22.40

शनि अन्तर

(30:04:2034 To 19:11:2034)

शनि	19-05-2034	22.47
गुरू	24-06-2034	22.52
राहु	16-07-2034	22.62
शुक्र	25-08-2034	22.68
सूर्य	05-09-2034	22.79
चन्द्रमा	03-10-2034	22.82
मंगल	18-10-2034	22.89
बुध	19-11-2034	22.93

गुरू अन्तर

(19:11:2034 To 09:12:2035)

गुरू	26-01-2035	23.02
राहु	10-03-2035	23.21
शुक्र	24-05-2035	23.33
सूर्य	14-06-2035	23.53
चन्द्रमा	07-08-2035	23.59
मंगल	04-09-2035	23.74
बुध	04-11-2035	23.81
शनि	09-12-2035	23.98

राहु अन्तर

(09:12:2035 To 09:08:2036)

राहु	05-01-2036	24.08
शुक्र	22-02-2036	24.15
सूर्य	06-03-2036	24.28
चन्द्रमा	09-04-2036	24.32
मंगल	27-04-2036	24.41
बुध	05-06-2036	24.46
शनि	27-06-2036	24.57
गुरू	09-08-2036	24.63

शुक्र अन्तर

(09:08:2036 To 10:10:2037)

शुक्र	31-10-2036	24.74
सूर्य	24-11-2036	24.97
चन्द्रमा	22-01-2037	25.04
मंगल	23-02-2037	25.20
बुध	01-05-2037	25.28
शनि	09-06-2037	25.47
गुरू	23-08-2037	25.58
राहु	10-10-2037	25.78

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

चन्द्रमा दशा

(10:10:2037 To 09:10:2052)

चन्द्रमा अन्तर

(10:10:2037 To 09:11:2039)

चन्द्रमा	23-01-2038	25.91
मंगल	20-03-2038	26.20
बुध	18-07-2038	26.35
शनि	27-09-2038	26.68
गुरू	07-02-2039	26.88
राहु	03-05-2039	27.24
शुक्र	28-09-2039	27.47
सूर्य	09-11-2039	27.88

मंगल अन्तर

(09:11:2039 To 19:12:2040)

मंगल	09-12-2039	27.99
बुध	11-02-2040	28.08
शनि	20-03-2040	28.25
गुरू	30-05-2040	28.35
राहु	14-07-2040	28.55
शुक्र	01-10-2040	28.67
सूर्य	24-10-2040	28.89
चन्द्रमा	19-12-2040	28.95

बुध अन्तर

(19:12:2040 To 30:04:2043)

बुध	04-05-2041	29.11
शनि	23-07-2041	29.48
गुरू	22-12-2041	29.70
राहु	27-03-2042	30.11
शुक्र	11-09-2042	30.37
सूर्य	29-10-2042	30.83
चन्द्रमा	25-02-2043	30.96
मंगल	30-04-2043	31.29

शनि अन्तर

(30:04:2043 To 19:09:2044)

शनि	16-06-2043	31.47
गुरू	13-09-2043	31.60
राहु	09-11-2043	31.84
शुक्र	15-02-2044	31.99
सूर्य	15-03-2044	32.26
चन्द्रमा	24-05-2044	32.34
मंगल	01-07-2044	32.53
बुध	19-09-2044	32.64

गुरू अन्तर

(19:09:2044 To 10:05:2047)

गुरू	08-03-2045	32.86
राहु	23-06-2045	33.32
शुक्र	27-12-2045	33.61
सूर्य	19-02-2046	34.13
चन्द्रमा	02-07-2046	34.27
मंगल	12-09-2046	34.64
बुध	10-02-2047	34.83
शनि	10-05-2047	35.25

राहु अन्तर

(10:05:2047 To 09:01:2049)

राहु	17-07-2047	35.49
शुक्र	12-11-2047	35.68
सूर्य	16-12-2047	36.00
चन्द्रमा	10-03-2048	36.10
मंगल	24-04-2048	36.33
बुध	29-07-2048	36.45
शनि	23-09-2048	36.71
गुरू	09-01-2049	36.87

शुक्र अन्तर

(09:01:2049 To 09:12:2051)

शुक्र	04-08-2049	37.16
सूर्य	02-10-2049	37.73
चन्द्रमा	27-02-2050	37.89
मंगल	17-05-2050	38.30
बुध	31-10-2050	38.51
शनि	07-02-2051	38.97
गुरू	13-08-2051	39.24
राहु	09-12-2051	39.75

सूर्य अन्तर

(09:12:2051 To 09:10:2052)

सूर्य	26-12-2051	40.08
चन्द्रमा	07-02-2052	40.12
मंगल	29-02-2052	40.24
बुध	17-04-2052	40.30
शनि	15-05-2052	40.43
गुरू	08-07-2052	40.51
राहु	11-08-2052	40.66
शुक्र	09-10-2052	40.75

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(09:10:2052 To 09:10:2060)

मंगल अन्तर

(09:10:2052 To 14:05:2053)

मंगल	25-10-2052	40.91
बुध	29-11-2052	40.96
शनि	19-12-2052	41.05
गुरू	26-01-2053	41.10
राहु	19-02-2053	41.21
शुक्र	02-04-2053	41.27
सूर्य	14-04-2053	41.39
चन्द्रमा	14-05-2053	41.42

बुध अन्तर

(14:05:2053 To 16:08:2054)

बुध	25-07-2053	41.50
शनि	06-09-2053	41.70
गुरू	26-11-2053	41.82
राहु	16-01-2054	42.04
शुक्र	15-04-2054	42.18
सूर्य	11-05-2054	42.42
चन्द्रमा	13-07-2054	42.49
मंगल	16-08-2054	42.67

शनि अन्तर

(16:08:2054 To 14:05:2055)

शनि	10-09-2054	42.76
गुरू	28-10-2054	42.83
राहु	27-11-2054	42.96
शुक्र	19-01-2055	43.04
सूर्य	03-02-2055	43.19
चन्द्रमा	12-03-2055	43.23
मंगल	01-04-2055	43.33
बुध	14-05-2055	43.39

गुरू अन्तर

(14:05:2055 To 09:10:2056)

गुरू	12-08-2055	43.50
राहु	08-10-2055	43.75
शुक्र	16-01-2056	43.91
सूर्य	14-02-2056	44.18
चन्द्रमा	25-04-2056	44.26
मंगल	03-06-2056	44.46
बुध	23-08-2056	44.56
शनि	09-10-2056	44.78

राहु अन्तर

(09:10:2056 To 30:08:2057)

राहु	14-11-2056	44.91
शुक्र	17-01-2057	45.01
सूर्य	04-02-2057	45.18
चन्द्रमा	21-03-2057	45.23
मंगल	14-04-2057	45.36
बुध	04-06-2057	45.42
शनि	04-07-2057	45.56
गुरू	30-08-2057	45.64

शुक्र अन्तर

(30:08:2057 To 21:03:2059)

शुक्र	18-12-2057	45.80
सूर्य	19-01-2058	46.10
चन्द्रमा	08-04-2058	46.19
मंगल	20-05-2058	46.40
बुध	17-08-2058	46.52
शनि	09-10-2058	46.77
गुरू	17-01-2059	46.91
राहु	21-03-2059	47.18

सूर्य अन्तर

(21:03:2059 To 30:08:2059)

सूर्य	30-03-2059	47.36
चन्द्रमा	21-04-2059	47.38
मंगल	03-05-2059	47.44
बुध	29-05-2059	47.47
शनि	13-06-2059	47.54
गुरू	11-07-2059	47.59
राहु	29-07-2059	47.66
शुक्र	30-08-2059	47.71

चन्द्रमा अन्तर

(30:08:2059 To 09:10:2060)

चन्द्रमा	25-10-2059	47.80
मंगल	24-11-2059	47.95
बुध	27-01-2060	48.04
शनि	05-03-2060	48.21
गुरू	15-05-2060	48.31
राहु	30-06-2060	48.51
शुक्र	17-09-2060	48.63
सूर्य	09-10-2060	48.85

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(09:10:2060 To 10:10:2077)

बुध अन्तर

(09:10:2060 To 13:06:2063)

बुध	12-03-2061	48.91
शनि	11-06-2061	49.33
गुरू	30-11-2061	49.58
राहु	18-03-2062	50.05
शुक्र	24-09-2062	50.35
सूर्य	17-11-2062	50.87
चन्द्रमा	02-04-2063	51.02
मंगल	13-06-2063	51.39

शनि अन्तर

(13:06:2063 To 09:01:2065)

शनि	05-08-2063	51.59
गुरू	15-11-2063	51.73
राहु	17-01-2064	52.01
शुक्र	08-05-2064	52.18
सूर्य	09-06-2064	52.49
चन्द्रमा	28-08-2064	52.58
मंगल	10-10-2064	52.80
बुध	09-01-2065	52.91

गुरू अन्तर

(09:01:2065 To 05:01:2068)

गुरू	20-07-2065	53.16
राहु	18-11-2065	53.69
शुक्र	18-06-2066	54.02
सूर्य	18-08-2066	54.60
चन्द्रमा	17-01-2067	54.77
मंगल	07-04-2067	55.18
बुध	26-09-2067	55.40
शनि	05-01-2068	55.87

राहु अन्तर

(05:01:2068 To 26:11:2069)

राहु	22-03-2068	56.15
शुक्र	04-08-2068	56.36
सूर्य	11-09-2068	56.73
चन्द्रमा	16-12-2068	56.83
मंगल	05-02-2069	57.10
बुध	25-05-2069	57.24
शनि	28-07-2069	57.53
गुरू	26-11-2069	57.71

शुक्र अन्तर

(26:11:2069 To 17:03:2073)

शुक्र	18-07-2070	58.04
सूर्य	23-09-2070	58.68
चन्द्रमा	10-03-2071	58.87
मंगल	07-06-2071	59.33
बुध	14-12-2071	59.57
शनि	04-04-2072	60.09
गुरू	03-11-2072	60.40
राहु	17-03-2073	60.98

सूर्य अन्तर

(17:03:2073 To 25:02:2074)

सूर्य	06-04-2073	61.35
चन्द्रमा	23-05-2073	61.40
मंगल	18-06-2073	61.53
बुध	11-08-2073	61.60
शनि	12-09-2073	61.75
गुरू	12-11-2073	61.84
राहु	20-12-2073	62.00
शुक्र	25-02-2074	62.11

चन्द्रमा अन्तर

(25:02:2074 To 06:07:2076)

चन्द्रमा	25-06-2074	62.29
मंगल	28-08-2074	62.62
बुध	10-01-2075	62.79
शनि	31-03-2075	63.17
गुरू	30-08-2075	63.38
राहु	03-12-2075	63.80
शुक्र	19-05-2076	64.06
सूर्य	06-07-2076	64.52

मंगल अन्तर

(06:07:2076 To 10:10:2077)

मंगल	10-08-2076	64.65
बुध	21-10-2076	64.75
शनि	03-12-2076	64.94
गुरू	22-02-2077	65.06
राहु	14-04-2077	65.28
शुक्र	12-07-2077	65.42
सूर्य	07-08-2077	65.67
चन्द्रमा	10-10-2077	65.74

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(10:10:2077 To 10:10:2087)

शनि अन्तर

(10:10:2077 To 12:09:2078)

शनि	10-11-2077	65.91
गुरू	08-01-2078	66.00
राहु	15-02-2078	66.16
शुक्र	22-04-2078	66.26
सूर्य	10-05-2078	66.44
चन्द्रमा	26-06-2078	66.49
मंगल	21-07-2078	66.62
बुध	12-09-2078	66.69

गुरू अन्तर

(12:09:2078 To 16:06:2080)

गुरू	03-01-2079	66.84
राहु	16-03-2079	67.15
शुक्र	19-07-2079	67.34
सूर्य	23-08-2079	67.68
चन्द्रमा	21-11-2079	67.78
मंगल	07-01-2080	68.03
बुध	17-04-2080	68.16
शनि	16-06-2080	68.43

राहु अन्तर

(16:06:2080 To 27:07:2081)

राहु	31-07-2080	68.60
शुक्र	18-10-2080	68.72
सूर्य	10-11-2080	68.94
चन्द्रमा	05-01-2081	69.00
मंगल	04-02-2081	69.15
बुध	09-04-2081	69.23
शनि	17-05-2081	69.41
गुरू	27-07-2081	69.51

शुक्र अन्तर

(27:07:2081 To 07:07:2083)

शुक्र	12-12-2081	69.71
सूर्य	21-01-2082	70.09
चन्द्रमा	29-04-2082	70.19
मंगल	21-06-2082	70.46
बुध	10-10-2082	70.61
शनि	15-12-2082	70.91
गुरू	19-04-2083	71.09
राहु	07-07-2083	71.44

सूर्य अन्तर

(07:07:2083 To 26:01:2084)

सूर्य	18-07-2083	71.65
चन्द्रमा	15-08-2083	71.68
मंगल	30-08-2083	71.76
बुध	01-10-2083	71.80
शनि	20-10-2083	71.89
गुरू	25-11-2083	71.94
राहु	17-12-2083	72.04
शुक्र	26-01-2084	72.10

चन्द्रमा अन्तर

(26:01:2084 To 17:06:2085)

चन्द्रमा	05-04-2084	72.21
मंगल	13-05-2084	72.40
बुध	01-08-2084	72.50
शनि	17-09-2084	72.72
गुरू	16-12-2084	72.85
राहु	10-02-2085	73.09
शुक्र	19-05-2085	73.25
सूर्य	17-06-2085	73.52

मंगल अन्तर

(17:06:2085 To 14:03:2086)

मंगल	07-07-2085	73.60
बुध	18-08-2085	73.65
शनि	12-09-2085	73.77
गुरू	30-10-2085	73.84
राहु	29-11-2085	73.97
शुक्र	20-01-2086	74.05
सूर्य	04-02-2086	74.19
चन्द्रमा	14-03-2086	74.23

बुध अन्तर

(14:03:2086 To 10:10:2087)

बुध	12-06-2086	74.34
शनि	05-08-2086	74.58
गुरू	14-11-2086	74.73
राहु	17-01-2087	75.01
शुक्र	08-05-2087	75.18
सूर्य	09-06-2087	75.49
चन्द्रमा	28-08-2087	75.58
मंगल	10-10-2087	75.79

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(10:10:2087 To 10:10:2106)

गुरू अन्तर

(10:10:2087 To 12:02:2091)

गुरू	12-05-2088	75.91
राहु	24-09-2088	76.50
शुक्र	20-05-2089	76.87
सूर्य	27-07-2089	77.52
चन्द्रमा	12-01-2090	77.71
मंगल	13-04-2090	78.17
बुध	22-10-2090	78.42
शनि	12-02-2091	78.94

राहु अन्तर

(12:02:2091 To 24:03:2093)

राहु	08-05-2091	79.25
शुक्र	05-10-2091	79.49
सूर्य	17-11-2091	79.90
चन्द्रमा	03-03-2092	80.02
मंगल	29-04-2092	80.31
बुध	29-08-2092	80.47
शनि	08-11-2092	80.80
गुरू	24-03-2093	80.99

शुक्र अन्तर

(24:03:2093 To 03:12:2096)

शुक्र	11-12-2093	81.36
सूर्य	24-02-2094	82.08
चन्द्रमा	31-08-2094	82.29
मंगल	08-12-2094	82.80
बुध	09-07-2095	83.08
शनि	11-11-2095	83.66
गुरू	05-07-2096	84.00
राहु	03-12-2096	84.65

सूर्य अन्तर

(03:12:2096 To 23:12:2097)

सूर्य	24-12-2096	85.06
चन्द्रमा	16-02-2097	85.12
मंगल	16-03-2097	85.26
बुध	16-05-2097	85.34
शनि	20-06-2097	85.51
गुरू	27-08-2097	85.61
राहु	09-10-2097	85.79
शुक्र	23-12-2097	85.91

चन्द्रमा अन्तर

(23:12:2097 To 13:08:2100)

चन्द्रमा	06-05-2098	86.11
मंगल	16-07-2098	86.48
बुध	15-12-2098	86.68
शनि	14-03-2099	87.09
गुरू	30-08-2099	87.34
राहु	15-12-2099	87.80
शुक्र	21-06-2100	88.09
सूर्य	13-08-2100	88.61

मंगल अन्तर

(13:08:2100 To 09:01:2102)

मंगल	20-09-2100	88.75
बुध	10-12-2100	88.86
शनि	27-01-2101	89.08
गुरू	27-04-2101	89.21
राहु	23-06-2101	89.46
शुक्र	01-10-2101	89.61
सूर्य	29-10-2101	89.89
चन्द्रमा	09-01-2102	89.97

बुध अन्तर

(09:01:2102 To 05:01:2105)

बुध	30-06-2102	90.16
शनि	09-10-2102	90.63
गुरू	19-04-2103	90.91
राहु	18-08-2103	91.43
शुक्र	17-03-2104	91.77
सूर्य	17-05-2104	92.35
चन्द्रमा	16-10-2104	92.51
मंगल	05-01-2105	92.93

शनि अन्तर

(05:01:2105 To 10:10:2106)

शनि	06-03-2105	93.15
गुरू	27-06-2105	93.31
राहु	06-09-2105	93.62
शुक्र	09-01-2106	93.82
सूर्य	14-02-2106	94.16
चन्द्रमा	14-05-2106	94.26
मंगल	30-06-2106	94.50
बुध	10-10-2106	94.63

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(10:10:2106 To 10:10:2118)

राहु अन्तर

(10:10:2106 To 08:02:2108)

राहु	03-12-2106	94.91
शुक्र	07-03-2107	95.06
सूर्य	03-04-2107	95.32
चन्द्रमा	10-06-2107	95.39
मंगल	16-07-2107	95.58
बुध	01-10-2107	95.68
शनि	15-11-2107	95.89
गुरू	08-02-2108	96.01

शुक्र अन्तर

(08:02:2108 To 10:06:2110)

शुक्र	23-07-2108	96.24
सूर्य	09-09-2108	96.70
चन्द्रमा	05-01-2109	96.83
मंगल	09-03-2109	97.15
बुध	22-07-2109	97.32
शनि	08-10-2109	97.69
गुरू	07-03-2110	97.91
राहु	10-06-2110	98.32

सूर्य अन्तर

(10:06:2110 To 08:02:2111)

सूर्य	23-06-2110	98.58
चन्द्रमा	27-07-2110	98.61
मंगल	14-08-2110	98.71
बुध	22-09-2110	98.76
शनि	14-10-2110	98.86
गुरू	26-11-2110	98.92
राहु	23-12-2110	99.04
शुक्र	08-02-2111	99.11

चन्द्रमा अन्तर

(08:02:2111 To 09:10:2112)

चन्द्रमा	04-05-2111	99.24
मंगल	18-06-2111	99.48
बुध	22-09-2111	99.60
शनि	17-11-2111	99.86
गुरू	03-03-2112	100.02
राहु	10-05-2112	100.31
शुक्र	05-09-2112	100.49
सूर्य	09-10-2112	100.82

मंगल अन्तर

(09:10:2112 To 30:08:2113)

मंगल	02-11-2112	100.91
बुध	24-12-2112	100.98
शनि	23-01-2113	101.12
गुरू	21-03-2113	101.20
राहु	26-04-2113	101.36
शुक्र	28-06-2113	101.45
सूर्य	16-07-2113	101.63
चन्द्रमा	30-08-2113	101.68

बुध अन्तर

(30:08:2113 To 20:07:2115)

बुध	16-12-2113	101.80
शनि	18-02-2114	102.10
गुरू	20-06-2114	102.27
राहु	04-09-2114	102.60
शुक्र	16-01-2115	102.81
सूर्य	24-02-2115	103.18
चन्द्रमा	30-05-2115	103.29
मंगल	20-07-2115	103.55

शनि अन्तर

(20:07:2115 To 30:08:2116)

शनि	27-08-2115	103.69
गुरू	06-11-2115	103.79
राहु	21-12-2115	103.99
शुक्र	09-03-2116	104.11
सूर्य	01-04-2116	104.33
चन्द्रमा	28-05-2116	104.39
मंगल	27-06-2116	104.54
बुध	30-08-2116	104.63

गुरू अन्तर

(30:08:2116 To 10:10:2118)

गुरू	13-01-2117	104.80
राहु	08-04-2117	105.17
शुक्र	05-09-2117	105.41
सूर्य	18-10-2117	105.82
चन्द्रमा	02-02-2118	105.93
मंगल	31-03-2118	106.23
बुध	30-07-2118	106.38
शनि	10-10-2118	106.72

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

योगिनी दशा – 1

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 024:01:22) : उल्का (शनि) : 5 व0 0 मा0 24 दि0

उल्का (शनि) (कृतिका) दशा

11:11:2011 To 05:12:2016	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	024:00:00
उल्का (शनि)	05:12:2010
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2011
संकटा (राहु)	04:02:2013
मंगला (चन्द्र)	06:06:2014
पिंगला (सुर्य)	06:08:2014
धन्या (गुरू)	05:12:2014
भ्रमरी (मंगल)	06:06:2015
भद्रिका (बुध)	04:02:2016

सिद्धा (शुक्र) (रोहिणी) दशा

05:12:2016 To 05:12:2023	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	255:43:59
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2016
संकटा (राहु)	16:04:2018
मंगला (चन्द्र)	05:11:2019
पिंगला (सुर्य)	15:01:2020
धन्या (गुरू)	05:06:2020
भ्रमरी (मंगल)	05:01:2021
भद्रिका (बुध)	16:10:2021
उल्का (शनि)	06:10:2022

संकटा (राहु) (मृगशिर) दशा

05:12:2023 To 05:12:2031	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	357:38:35
संकटा (राहु)	05:12:2023
मंगला (चन्द्र)	15:09:2025
पिंगला (सुर्य)	05:12:2025
धन्या (गुरू)	17:05:2026
भ्रमरी (मंगल)	15:01:2027
भद्रिका (बुध)	05:12:2027
उल्का (शनि)	15:01:2029
सिद्धा (शुक्र)	17:05:2030

मंगला (चन्द्र) (अरिद्रा) दशा

05:12:2031 To 05:12:2032	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	260:22:50
मंगला (चन्द्र)	05:12:2031
पिंगला (सुर्य)	15:12:2031
धन्या (गुरू)	05:01:2032
भ्रमरी (मंगल)	04:02:2032
भद्रिका (बुध)	16:03:2032
उल्का (शनि)	06:05:2032
सिद्धा (शुक्र)	06:07:2032
संकटा (राहु)	15:09:2032

पिंगला (सुर्य) (पुनर्वसु) दशा

05:12:2032 To 05:12:2034	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	213:57:45
पिंगला (सुर्य)	05:12:2032
धन्या (गुरू)	15:01:2033
भ्रमरी (मंगल)	17:03:2033
भद्रिका (बुध)	06:06:2033
उल्का (शनि)	15:09:2033
सिद्धा (शुक्र)	15:01:2034
संकटा (राहु)	06:06:2034
मंगला (चन्द्र)	15:11:2034

धन्या (गुरू) (पुष्य) दशा

05:12:2034 To 05:12:2037	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	189:03:49
धन्या (गुरू)	05:12:2034
भ्रमरी (मंगल)	07:03:2035
भद्रिका (बुध)	06:07:2035
उल्का (शनि)	05:12:2035
सिद्धा (शुक्र)	05:06:2036
संकटा (राहु)	05:01:2037
मंगला (चन्द्र)	05:09:2037
पिंगला (सुर्य)	06:10:2037

भ्रमरी (मंगल) (अश्लेषा) दशा

05:12:2037 To 05:12:2041	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	352:48:28
भ्रमरी (मंगल)	05:12:2037
भद्रिका (बुध)	17:05:2038
उल्का (शनि)	05:12:2038
सिद्धा (शुक्र)	06:08:2039
संकटा (राहु)	16:05:2040
मंगला (चन्द्र)	06:04:2041
पिंगला (सुर्य)	17:05:2041
धन्या (गुरू)	06:08:2041

भद्रिका (बुध) (मघा) दशा

05:12:2041 To 05:12:2046	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	278:26:40
भद्रिका (बुध)	05:12:2041
उल्का (शनि)	16:08:2042
सिद्धा (शुक्र)	16:06:2043
संकटा (राहु)	05:06:2044
मंगला (चन्द्र)	16:07:2045
पिंगला (सुर्य)	05:09:2045
धन्या (गुरू)	15:12:2045
भ्रमरी (मंगल)	17:05:2046

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

योगिनी दशा – 2

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 024:01:22) : उल्का (शनि) : 5 व0 0 मा0 24 दि0

उल्का (शनि) (पुर्वफाल्गुनी) दशा

05:12:2046 To 05:12:2052	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	046:32:35
उल्का (शनि)	05:12:2046
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2047
संकटा (राहु)	04:02:2049
मंगला (चन्द्र)	06:06:2050
पिंगला (सुर्य)	06:08:2050
धन्या (गुरू)	05:12:2050
भ्रमरी (मंगल)	06:06:2051
भद्रिका (बुध)	04:02:2052

सिद्धा (शुक्र) (उत्तरफाल्गुनी) दशा

05:12:2052 To 05:12:2059	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	071:26:31
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2052
संकटा (राहु)	16:04:2054
मंगला (चन्द्र)	05:11:2055
पिंगला (सुर्य)	15:01:2056
धन्या (गुरू)	05:06:2056
भ्रमरी (मंगल)	05:01:2057
भद्रिका (बुध)	16:10:2057
उल्का (शनि)	06:10:2058

संकटा (राहु) (हस्ता) दशा

05:12:2059 To 05:12:2067	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	260:22:50
संकटा (राहु)	05:12:2059
मंगला (चन्द्र)	15:09:2061
पिंगला (सुर्य)	05:12:2061
धन्या (गुरू)	17:05:2062
भ्रमरी (मंगल)	15:01:2063
भद्रिका (बुध)	05:12:2063
उल्का (शनि)	15:01:2065
सिद्धा (शुक्र)	17:05:2066

मंगला (चन्द्र) (चित्रा) दशा

05:12:2067 To 05:12:2068	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	154:44:38
मंगला (चन्द्र)	05:12:2067
पिंगला (सुर्य)	15:12:2067
धन्या (गुरू)	05:01:2068
भ्रमरी (मंगल)	04:02:2068
भद्रिका (बुध)	16:03:2068
उल्का (शनि)	06:05:2068
सिद्धा (शुक्र)	06:07:2068
संकटा (राहु)	15:09:2068

पिंगला (सुर्य) (स्वाति) दशा

05:12:2068 To 05:12:2070	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	076:05:22
पिंगला (सुर्य)	05:12:2068
धन्या (गुरू)	15:01:2069
भ्रमरी (मंगल)	17:03:2069
भद्रिका (बुध)	06:06:2069
उल्का (शनि)	15:09:2069
सिद्धा (शुक्र)	15:01:2070
संकटा (राहु)	06:06:2070
मंगला (चन्द्र)	15:11:2070

धन्या (गुरू) (विशाखा) दशा

05:12:2070 To 05:12:2073	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	019:01:35
धन्या (गुरू)	05:12:2070
भ्रमरी (मंगल)	07:03:2071
भद्रिका (बुध)	06:07:2071
उल्का (शनि)	05:12:2071
सिद्धा (शुक्र)	05:06:2072
संकटा (राहु)	05:01:2073
मंगला (चन्द्र)	05:09:2073
पिंगला (सुर्य)	06:10:2073

भ्रमरी (मंगल) (अनुराधा) दशा

05:12:2073 To 05:12:2077	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	305:33:13
भ्रमरी (मंगल)	05:12:2073
भद्रिका (बुध)	17:05:2074
उल्का (शनि)	05:12:2074
सिद्धा (शुक्र)	06:08:2075
संकटा (राहु)	16:05:2076
मंगला (चन्द्र)	06:04:2077
पिंगला (सुर्य)	17:05:2077
धन्या (गुरू)	06:08:2077

भद्रिका (बुध) (ज्येष्ठा) दशा

05:12:2077 To 05:12:2082	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	093:36:33
भद्रिका (बुध)	05:12:2077
उल्का (शनि)	16:08:2078
सिद्धा (शुक्र)	16:06:2079
संकटा (राहु)	05:06:2080
मंगला (चन्द्र)	16:07:2081
पिंगला (सुर्य)	05:09:2081
धन्या (गुरू)	15:12:2081
भ्रमरी (मंगल)	17:05:2082

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

योगिनी दशा – 3

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 024:01:22) : उल्का (शनि) : 5 व0 0 मा0 24 दि0

उल्का (शनि) (मूला) दशा

05:12:2082 To 05:12:2088

प्रोफेक्शन प्वाइंट	231:11:26
उल्का (शनि)	05:12:2082
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2083
संकटा (राहु)	04:02:2085
मंगला (चन्द्र)	06:06:2086
पिंगला (सुर्य)	06:08:2086
धन्या (गुरू)	05:12:2086
भ्रमरी (मंगल)	06:06:2087
भद्रिका (बुध)	04:02:2088

सिद्धा (शुक्र) (पूर्वाषाढ़) दशा

05:12:2088 To 05:12:2095

प्रोफेक्शन प्वाइंट	093:59:05
सिद्धा (शुक्र)	05:12:2088
संकटा (राहु)	16:04:2090
मंगला (चन्द्र)	05:11:2091
पिंगला (सुर्य)	15:01:2092
धन्या (गुरू)	05:06:2092
भ्रमरी (मंगल)	05:01:2093
भद्रिका (बुध)	16:10:2093
उल्का (शनि)	06:10:2094

संकटा (राहु) (उत्तराषाढ़) दशा

05:12:2095 To 05:12:2103

प्रोफेक्शन प्वाइंट	076:05:22
संकटा (राहु)	05:12:2095
मंगला (चन्द्र)	15:09:2097
पिंगला (सुर्य)	05:12:2097
धन्या (गुरू)	17:05:2098
भ्रमरी (मंगल)	15:01:2099
भद्रिका (बुध)	05:12:2099
उल्का (शनि)	15:01:2101
सिद्धा (शुक्र)	17:05:2102

मंगला (चन्द्र) (श्रवण) दशा

05:12:2103 To 05:12:2104

प्रोफेक्शन प्वाइंट	057:28:53
मंगला (चन्द्र)	05:12:2103
पिंगला (सुर्य)	15:12:2103
धन्या (गुरू)	05:01:2104
भ्रमरी (मंगल)	04:02:2104
भद्रिका (बुध)	16:03:2104
उल्का (शनि)	06:05:2104
सिद्धा (शुक्र)	06:07:2104
संकटा (राहु)	15:09:2104

पिंगला (सुर्य) (धनिष्ठा) दशा

05:12:2104 To 05:12:2106

प्रोफेक्शन प्वाइंट	330:27:09
पिंगला (सुर्य)	05:12:2104
धन्या (गुरू)	15:01:2105
भ्रमरी (मंगल)	17:03:2105
भद्रिका (बुध)	06:06:2105
उल्का (शनि)	15:09:2105
सिद्धा (शुक्र)	15:01:2106
संकटा (राहु)	06:06:2106
मंगला (चन्द्र)	15:11:2106

धन्या (गुरू) (शतभिषा) दशा

05:12:2106 To 05:12:2109

प्रोफेक्शन प्वाइंट	241:09:11
धन्या (गुरू)	05:12:2106
भ्रमरी (मंगल)	07:03:2107
भद्रिका (बुध)	06:07:2107
उल्का (शनि)	05:12:2107
सिद्धा (शुक्र)	05:06:2108
संकटा (राहु)	05:01:2109
मंगला (चन्द्र)	05:09:2109
पिंगला (सुर्य)	06:10:2109

भ्रमरी (मंगल) (पूर्वाभाद्र) दशा

05:12:2109 To 05:12:2113

प्रोफेक्शन प्वाइंट	135:30:58
भ्रमरी (मंगल)	05:12:2109
भद्रिका (बुध)	17:05:2110
उल्का (शनि)	05:12:2110
सिद्धा (शुक्र)	06:08:2111
संकटा (राहु)	16:05:2112
मंगला (चन्द्र)	06:04:2113
पिंगला (सुर्य)	17:05:2113
धन्या (गुरू)	06:08:2113

भद्रिका (बुध) (उत्तरभाद्र) दशा

05:12:2113 To 05:12:2118

प्रोफेक्शन प्वाइंट	046:21:19
भद्रिका (बुध)	05:12:2113
उल्का (शनि)	16:08:2114
सिद्धा (शुक्र)	16:06:2115
संकटा (राहु)	05:06:2116
मंगला (चन्द्र)	16:07:2117
पिंगला (सुर्य)	05:09:2117
धन्या (गुरू)	15:12:2117
भ्रमरी (मंगल)	17:05:2118

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

जैमिनी चर दशा

जैमिनी चर दशा, जैसा कि ईरानगति रंगाचार्य द्वारा समझाया गया है, वैदिक ज्योतिष में एक सम्मानित प्रगति प्रणाली है जो महत्वपूर्ण जीवन की घटनाओं की भविष्यवाणी के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। यह गतिशील कारकों पर जोर देता है और ग्रहों की स्थिति के बजाय संकेतों के स्थान पर निर्भर करता है, जो इसे अद्वितीय बनाता है। रंगाचार्य की व्याख्या सूक्ष्म बारीकियों को सामने लाती है, जिससे सटीक और प्रासंगिक रूप से सुसंगत भविष्यवाणियां प्रदान करने में प्रणाली की प्रभावशीलता बढ़ जाती है।

मकर दशा

(11:11:2011 - 11:11:2020)

कन्या	11-11-2012	00.00
सिहं	11-11-2013	01.00
कर्क	11-11-2014	02.00
मिथुन	11-11-2015	03.00
वृष	11-11-2016	04.00
मेष	11-11-2017	05.00
मीन	11-11-2018	06.00
कुम्भ	11-11-2019	07.00
मकर	11-11-2020	08.00

धनु दशा

(11:11:2020 - 11:11:2029)

मेष	11-11-2021	09.00
वृष	11-11-2022	10.00
मिथुन	11-11-2023	11.00
कर्क	11-11-2024	12.00
सिहं	11-11-2025	13.00
कन्या	11-11-2026	14.00
तुला	11-11-2027	15.00
वृश्चिक	11-11-2028	16.00
धनु	11-11-2029	17.00

वृश्चिक दशा

(11:11:2029 - 11:11:2033)

सिहं	11-11-2030	18.00
कन्या	11-11-2031	19.00
तुला	11-11-2032	20.00
वृश्चिक	11-11-2033	21.00

तुला दशा

(11:11:2033 - 11:11:2035)

वृश्चिक	11-11-2034	22.00
तुला	11-11-2035	23.00

कन्या दशा

(11:11:2035 - 11:11:2038)

वृश्चिक	11-11-2036	24.00
तुला	11-11-2037	25.00
कन्या	11-11-2038	26.00

सिहं दशा

(11:11:2038 - 11:11:2049)

तुला	11-11-2039	27.00
वृश्चिक	11-11-2040	28.00
धनु	11-11-2041	29.00
मकर	11-11-2042	30.00
कुम्भ	11-11-2043	31.00
मीन	11-11-2044	32.00
मेष	11-11-2045	33.00
वृष	11-11-2046	34.00
मिथुन	11-11-2047	35.00
कर्क	11-11-2048	36.00
सिहं	11-11-2049	37.00

कर्क दशा

(11:11:2049 - 11:11:2053)

मेष	11-11-2050	38.00
वृष	11-11-2051	39.00
मिथुन	11-11-2052	40.00
कर्क	11-11-2053	41.00

मिथुन दशा

(11:11:2053 - 11:11:2059)

वृश्चिक	11-11-2054	42.00
तुला	11-11-2055	43.00
कन्या	11-11-2056	44.00
सिहं	11-11-2057	45.00
कर्क	11-11-2058	46.00
मिथुन	11-11-2059	47.00

वृष दशा

(11:11:2059 - 11:11:2066)

वृश्चिक	11-11-2060	48.00
तुला	11-11-2061	49.00
कन्या	11-11-2062	50.00
सिहं	11-11-2063	51.00
कर्क	11-11-2064	52.00
मिथुन	11-11-2065	53.00
वृष	11-11-2066	54.00

मेष दशा

(11:11:2066 - 11:11:2075)

सिहं	11-11-2067	55.00
कन्या	11-11-2068	56.00
तुला	11-11-2069	57.00
वृश्चिक	11-11-2070	58.00
धनु	11-11-2071	59.00
मकर	11-11-2072	60.00
कुम्भ	11-11-2073	61.00
मीन	11-11-2074	62.00
मेष	11-11-2075	63.00

मीन दशा

(11:11:2075 - 11:11:2087)

मेष	11-11-2076	64.00
वृष	11-11-2077	65.00
मिथुन	11-11-2078	66.00
कर्क	11-11-2079	67.00
सिहं	11-11-2080	68.00
कन्या	11-11-2081	69.00
तुला	11-11-2082	70.00
वृश्चिक	11-11-2083	71.00
धनु	11-11-2084	72.00
मकर	11-11-2085	73.00
कुम्भ	11-11-2086	74.00
मीन	11-11-2087	75.00

कुम्भ दशा

(11:11:2087 - 11:11:2095)

कन्या	11-11-2088	76.00
सिहं	11-11-2089	77.00
कर्क	11-11-2090	78.00
मिथुन	11-11-2091	79.00
वृष	11-11-2092	80.00
मेष	11-11-2093	81.00
मीन	11-11-2094	82.00
कुम्भ	11-11-2095	83.00

मकर दशा

(11:11:2011 TO 11:11:2020)

कन्या भुक्ति (11:11:2011 - 11:11:2012)

वृश्चिक	11:12:2011	0.0
तुला	11:01:2012	0.1
कन्या	10:02:2012	0.2
सिहं	12:03:2012	0.3
कर्क	11:04:2012	0.3
मिथुन	12:05:2012	0.4
वृष	11:06:2012	0.5
मेष	12:07:2012	0.6
मीन	11:08:2012	0.7
कुम्भ	11:09:2012	0.7
मकर	11:10:2012	0.8
धनु	11:11:2012	0.9

सिहं भुक्ति (11:11:2012 - 11:11:2013)

तुला	11:12:2012	1.0
वृश्चिक	11:01:2013	1.1
धनु	10:02:2013	1.2
मकर	13:03:2013	1.3
कुम्भ	12:04:2013	1.3
मीन	13:05:2013	1.4
मेष	12:06:2013	1.5
वृष	12:07:2013	1.6
मिथुन	12:08:2013	1.7
कर्क	11:09:2013	1.7
सिहं	12:10:2013	1.8
कन्या	11:11:2013	1.9

कर्क भुक्ति (11:11:2013 - 11:11:2014)

मेष	11:12:2013	2.0
वृष	11:01:2014	2.1
मिथुन	10:02:2014	2.2
कर्क	13:03:2014	2.3
सिहं	12:04:2014	2.3
कन्या	13:05:2014	2.4
तुला	12:06:2014	2.5
वृश्चिक	12:07:2014	2.6
धनु	12:08:2014	2.7
मकर	11:09:2014	2.7
कुम्भ	12:10:2014	2.8
मीन	11:11:2014	2.9

मिथुन भुक्ति (11:11:2014 - 11:11:2015)

वृश्चिक	11:12:2014	3.0
तुला	11:01:2015	3.1
कन्या	10:02:2015	3.2
सिहं	13:03:2015	3.3
कर्क	12:04:2015	3.3
मिथुन	13:05:2015	3.4
वृष	12:06:2015	3.5
मेष	12:07:2015	3.6
मीन	12:08:2015	3.7
कुम्भ	11:09:2015	3.7
मकर	12:10:2015	3.8
धनु	11:11:2015	3.9

वृष भुक्ति (11:11:2015 - 11:11:2016)

वृश्चिक	11:12:2015	4.0
तुला	11:01:2016	4.1
कन्या	10:02:2016	4.2
सिहं	12:03:2016	4.3
कर्क	11:04:2016	4.3
मिथुन	12:05:2016	4.4
वृष	11:06:2016	4.5
मेष	12:07:2016	4.6
मीन	11:08:2016	4.7
कुम्भ	11:09:2016	4.7
मकर	11:10:2016	4.8
धनु	11:11:2016	4.9

मेष भुक्ति (11:11:2016 - 11:11:2017)

सिहं	11:12:2016	5.0
कन्या	11:01:2017	5.1
तुला	10:02:2017	5.2
वृश्चिक	13:03:2017	5.3
धनु	12:04:2017	5.3
मकर	13:05:2017	5.4
कुम्भ	12:06:2017	5.5
मीन	12:07:2017	5.6
मेष	12:08:2017	5.7
वृष	11:09:2017	5.7
मिथुन	12:10:2017	5.8
कर्क	11:11:2017	5.9

मीन भुक्ति (11:11:2017 - 11:11:2018)

मेष	11:12:2017	6.0
वृष	11:01:2018	6.1
मिथुन	10:02:2018	6.2
कर्क	13:03:2018	6.3
सिहं	12:04:2018	6.3
कन्या	13:05:2018	6.4
तुला	12:06:2018	6.5
वृश्चिक	12:07:2018	6.6
धनु	12:08:2018	6.7
मकर	11:09:2018	6.7
कुम्भ	12:10:2018	6.8
मीन	11:11:2018	6.9

कुम्भ भुक्ति (11:11:2018 - 11:11:2019)

कन्या	11:12:2018	7.0
सिहं	11:01:2019	7.1
कर्क	10:02:2019	7.2
मिथुन	13:03:2019	7.3
वृष	12:04:2019	7.3
मेष	13:05:2019	7.4
मीन	12:06:2019	7.5
कुम्भ	12:07:2019	7.6
मकर	12:08:2019	7.7
धनु	11:09:2019	7.7
वृश्चिक	12:10:2019	7.8
तुला	11:11:2019	7.9

मकर भुक्ति (11:11:2019 - 11:11:2020)

कन्या	11:12:2019	8.0
सिहं	11:01:2020	8.1
कर्क	10:02:2020	8.2
मिथुन	12:03:2020	8.3
वृष	11:04:2020	8.3
मेष	12:05:2020	8.4
मीन	11:06:2020	8.5
कुम्भ	12:07:2020	8.6
मकर	11:08:2020	8.7
धनु	11:09:2020	8.7
वृश्चिक	11:10:2020	8.8
तुला	11:11:2020	8.9

धनु दशा

(11:11:2020 TO 11:11:2029)

मेष भुक्ति

(11:11:2020 - 11:11:2021)		
सिहं	11:12:2020	9.0
कन्या	11:01:2021	9.1
तुला	10:02:2021	9.2
वृश्चिक	13:03:2021	9.3
धनु	12:04:2021	9.3
मकर	13:05:2021	9.4
कुम्भ	12:06:2021	9.5
मीन	12:07:2021	9.6
मेष	12:08:2021	9.7
वृष	11:09:2021	9.7
मिथुन	12:10:2021	9.8
कर्क	11:11:2021	9.9

वृष भुक्ति

(11:11:2021 - 11:11:2022)		
वृश्चिक	11:12:2021	10.0
तुला	11:01:2022	10.1
कन्या	10:02:2022	10.2
सिहं	13:03:2022	10.3
कर्क	12:04:2022	10.3
मिथुन	13:05:2022	10.4
वृष	12:06:2022	10.5
मेष	12:07:2022	10.6
मीन	12:08:2022	10.7
कुम्भ	11:09:2022	10.7
मकर	12:10:2022	10.8
धनु	11:11:2022	10.9

मिथुन भुक्ति

(11:11:2022 - 11:11:2023)		
वृश्चिक	11:12:2022	11.0
तुला	11:01:2023	11.1
कन्या	10:02:2023	11.2
सिहं	13:03:2023	11.3
कर्क	12:04:2023	11.3
मिथुन	13:05:2023	11.4
वृष	12:06:2023	11.5
मेष	12:07:2023	11.6
मीन	12:08:2023	11.7
कुम्भ	11:09:2023	11.7
मकर	12:10:2023	11.8
धनु	11:11:2023	11.9

कर्क भुक्ति

(11:11:2023 - 11:11:2024)		
मेष	11:12:2023	12.0
वृष	11:01:2024	12.1
मिथुन	10:02:2024	12.2
कर्क	12:03:2024	12.3
सिहं	11:04:2024	12.3
कन्या	12:05:2024	12.4
तुला	11:06:2024	12.5
वृश्चिक	12:07:2024	12.6
धनु	11:08:2024	12.7
मकर	11:09:2024	12.7
कुम्भ	11:10:2024	12.8
मीन	11:11:2024	12.9

सिहं भुक्ति

(11:11:2024 - 11:11:2025)		
तुला	11:12:2024	13.0
वृश्चिक	11:01:2025	13.1
धनु	10:02:2025	13.2
मकर	13:03:2025	13.3
कुम्भ	12:04:2025	13.3
मीन	13:05:2025	13.4
मेष	12:06:2025	13.5
वृष	12:07:2025	13.6
मिथुन	12:08:2025	13.7
कर्क	11:09:2025	13.7
सिहं	12:10:2025	13.8
कन्या	11:11:2025	13.9

कन्या भुक्ति

(11:11:2025 - 11:11:2026)		
वृश्चिक	11:12:2025	14.0
तुला	11:01:2026	14.1
कन्या	10:02:2026	14.2
सिहं	13:03:2026	14.3
कर्क	12:04:2026	14.3
मिथुन	13:05:2026	14.4
वृष	12:06:2026	14.5
मेष	12:07:2026	14.6
मीन	12:08:2026	14.7
कुम्भ	11:09:2026	14.7
मकर	12:10:2026	14.8
धनु	11:11:2026	14.9

तुला भुक्ति

(11:11:2026 - 11:11:2027)		
वृश्चिक	11:12:2026	15.0
तुला	11:01:2027	15.1
कन्या	10:02:2027	15.2
सिहं	13:03:2027	15.3
कर्क	12:04:2027	15.3
मिथुन	13:05:2027	15.4
वृष	12:06:2027	15.5
मेष	12:07:2027	15.6
मीन	12:08:2027	15.7
कुम्भ	11:09:2027	15.7
मकर	12:10:2027	15.8
धनु	11:11:2027	15.9

वृश्चिक भुक्ति

(11:11:2027 - 11:11:2028)		
सिहं	11:12:2027	16.0
कन्या	11:01:2028	16.1
तुला	10:02:2028	16.2
वृश्चिक	12:03:2028	16.3
धनु	11:04:2028	16.3
मकर	12:05:2028	16.4
कुम्भ	11:06:2028	16.5
मीन	12:07:2028	16.6
मेष	11:08:2028	16.7
वृष	11:09:2028	16.7
मिथुन	11:10:2028	16.8
कर्क	11:11:2028	16.9

धनु भुक्ति

(11:11:2028 - 11:11:2029)		
मेष	11:12:2028	17.0
वृष	11:01:2029	17.1
मिथुन	10:02:2029	17.2
कर्क	13:03:2029	17.3
सिहं	12:04:2029	17.3
कन्या	13:05:2029	17.4
तुला	12:06:2029	17.5
वृश्चिक	12:07:2029	17.6
धनु	12:08:2029	17.7
मकर	11:09:2029	17.7
कुम्भ	12:10:2029	17.8
मीन	11:11:2029	17.9

वृश्चिक दशा

(11:11:2029 TO 11:11:2033)

सिहं भुक्ति			कन्या भुक्ति			तुला भुक्ति			वृश्चिक भुक्ति		
(11:11:2029 - 11:11:2030)			(11:11:2030 - 11:11:2031)			(11:11:2031 - 11:11:2032)			(11:11:2032 - 11:11:2033)		
तुला	11:12:2029	18.0	वृश्चिक	11:12:2030	19.0	वृश्चिक	11:12:2031	20.0	सिहं	11:12:2032	21.0
वृश्चिक	11:01:2030	18.1	तुला	11:01:2031	19.1	तुला	11:01:2032	20.1	कन्या	11:01:2033	21.1
धनु	10:02:2030	18.2	कन्या	10:02:2031	19.2	कन्या	10:02:2032	20.2	तुला	10:02:2033	21.2
मकर	13:03:2030	18.3	सिहं	13:03:2031	19.3	सिहं	12:03:2032	20.3	वृश्चिक	13:03:2033	21.3
कुम्भ	12:04:2030	18.3	कर्क	12:04:2031	19.3	कर्क	11:04:2032	20.3	धनु	12:04:2033	21.3
मीन	13:05:2030	18.4	मिथुन	13:05:2031	19.4	मिथुन	12:05:2032	20.4	मकर	13:05:2033	21.4
मेष	12:06:2030	18.5	वृष	12:06:2031	19.5	वृष	11:06:2032	20.5	कुम्भ	12:06:2033	21.5
वृष	12:07:2030	18.6	मेष	12:07:2031	19.6	मेष	12:07:2032	20.6	मीन	12:07:2033	21.6
मिथुन	12:08:2030	18.7	मीन	12:08:2031	19.7	मीन	11:08:2032	20.7	मेष	12:08:2033	21.7
कर्क	11:09:2030	18.7	कुम्भ	11:09:2031	19.7	कुम्भ	11:09:2032	20.7	वृष	11:09:2033	21.7
सिहं	12:10:2030	18.8	मकर	12:10:2031	19.8	मकर	11:10:2032	20.8	मिथुन	12:10:2033	21.8
कन्या	11:11:2030	18.9	धनु	11:11:2031	19.9	धनु	11:11:2032	20.9	कर्क	11:11:2033	21.9

तुला दशा

(11:11:2033 TO 11:11:2035)

वृश्चिक भुक्ति			तुला भुक्ति								
(11:11:2033 - 11:11:2034)			(11:11:2034 - 11:11:2035)								
सिहं	11:12:2033	22.0	वृश्चिक	11:12:2034	23.0						
कन्या	11:01:2034	22.1	तुला	11:01:2035	23.1						
तुला	10:02:2034	22.2	कन्या	10:02:2035	23.2						
वृश्चिक	13:03:2034	22.3	सिहं	13:03:2035	23.3						
धनु	12:04:2034	22.3	कर्क	12:04:2035	23.3						
मकर	13:05:2034	22.4	मिथुन	13:05:2035	23.4						
कुम्भ	12:06:2034	22.5	वृष	12:06:2035	23.5						
मीन	12:07:2034	22.6	मेष	12:07:2035	23.6						
मेष	12:08:2034	22.7	मीन	12:08:2035	23.7						
वृष	11:09:2034	22.7	कुम्भ	11:09:2035	23.7						
मिथुन	12:10:2034	22.8	मकर	12:10:2035	23.8						
कर्क	11:11:2034	22.9	धनु	11:11:2035	23.9						

कन्या दशा

(11:11:2035 TO 11:11:2038)

वृश्चिक भुक्ति			तुला भुक्ति			कन्या भुक्ति					
(11:11:2035 - 11:11:2036)			(11:11:2036 - 11:11:2037)			(11:11:2037 - 11:11:2038)					
सिहं	11:12:2035	24.0	वृश्चिक	11:12:2036	25.0	वृश्चिक	11:12:2037	26.0			
कन्या	11:01:2036	24.1	तुला	11:01:2037	25.1	तुला	11:01:2038	26.1			
तुला	10:02:2036	24.2	कन्या	10:02:2037	25.2	कन्या	10:02:2038	26.2			
वृश्चिक	12:03:2036	24.3	सिहं	13:03:2037	25.3	सिहं	13:03:2038	26.3			
धनु	11:04:2036	24.3	कर्क	12:04:2037	25.3	कर्क	12:04:2038	26.3			
मकर	12:05:2036	24.4	मिथुन	13:05:2037	25.4	मिथुन	13:05:2038	26.4			
कुम्भ	11:06:2036	24.5	वृष	12:06:2037	25.5	वृष	12:06:2038	26.5			
मीन	12:07:2036	24.6	मेष	12:07:2037	25.6	मेष	12:07:2038	26.6			
मेष	11:08:2036	24.7	मीन	12:08:2037	25.7	मीन	12:08:2038	26.7			
वृष	11:09:2036	24.7	कुम्भ	11:09:2037	25.7	कुम्भ	11:09:2038	26.7			
मिथुन	11:10:2036	24.8	मकर	12:10:2037	25.8	मकर	12:10:2038	26.8			
कर्क	11:11:2036	24.9	धनु	11:11:2037	25.9	धनु	11:11:2038	26.9			

सिहं दशा

(11:11:2038 TO 11:11:2049)

तुला भुक्ति (11:11:2038 - 11:11:2039)

वृश्चिक	11:12:2038	27.0
तुला	11:01:2039	27.1
कन्या	10:02:2039	27.2
सिहं	13:03:2039	27.3
कर्क	12:04:2039	27.3
मिथुन	13:05:2039	27.4
वृष	12:06:2039	27.5
मेष	12:07:2039	27.6
मीन	12:08:2039	27.7
कुम्भ	11:09:2039	27.7
मकर	12:10:2039	27.8
धनु	11:11:2039	27.9

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2039 - 11:11:2040)

सिहं	11:12:2039	28.0
कन्या	11:01:2040	28.1
तुला	10:02:2040	28.2
वृश्चिक	12:03:2040	28.3
धनु	11:04:2040	28.3
मकर	12:05:2040	28.4
कुम्भ	11:06:2040	28.5
मीन	12:07:2040	28.6
मेष	11:08:2040	28.7
वृष	11:09:2040	28.7
मिथुन	11:10:2040	28.8
कर्क	11:11:2040	28.9

धनु भुक्ति (11:11:2040 - 11:11:2041)

मेष	11:12:2040	29.0
वृष	11:01:2041	29.1
मिथुन	10:02:2041	29.2
कर्क	13:03:2041	29.3
सिहं	12:04:2041	29.3
कन्या	13:05:2041	29.4
तुला	12:06:2041	29.5
वृश्चिक	12:07:2041	29.6
धनु	12:08:2041	29.7
मकर	11:09:2041	29.7
कुम्भ	12:10:2041	29.8
मीन	11:11:2041	29.9

मकर भुक्ति (11:11:2041 - 11:11:2042)

कन्या	11:12:2041	30.0
सिहं	11:01:2042	30.1
कर्क	10:02:2042	30.2
मिथुन	13:03:2042	30.3
वृष	12:04:2042	30.3
मेष	13:05:2042	30.4
मीन	12:06:2042	30.5
कुम्भ	12:07:2042	30.6
मकर	12:08:2042	30.7
धनु	11:09:2042	30.7
वृश्चिक	12:10:2042	30.8
तुला	11:11:2042	30.9

कुम्भ भुक्ति (11:11:2042 - 11:11:2043)

कन्या	11:12:2042	31.0
सिहं	11:01:2043	31.1
कर्क	10:02:2043	31.2
मिथुन	13:03:2043	31.3
वृष	12:04:2043	31.3
मेष	13:05:2043	31.4
मीन	12:06:2043	31.5
कुम्भ	12:07:2043	31.6
मकर	12:08:2043	31.7
धनु	11:09:2043	31.7
वृश्चिक	12:10:2043	31.8
तुला	11:11:2043	31.9

मीन भुक्ति (11:11:2043 - 11:11:2044)

मेष	11:12:2043	32.0
वृष	11:01:2044	32.1
मिथुन	10:02:2044	32.2
कर्क	12:03:2044	32.3
सिहं	11:04:2044	32.3
कन्या	12:05:2044	32.4
तुला	11:06:2044	32.5
वृश्चिक	12:07:2044	32.6
धनु	11:08:2044	32.7
मकर	11:09:2044	32.7
कुम्भ	11:10:2044	32.8
मीन	11:11:2044	32.9

मेष भुक्ति (11:11:2044 - 11:11:2045)

सिहं	11:12:2044	33.0
कन्या	11:01:2045	33.1
तुला	10:02:2045	33.2
वृश्चिक	13:03:2045	33.3
धनु	12:04:2045	33.3
मकर	13:05:2045	33.4
कुम्भ	12:06:2045	33.5
मीन	12:07:2045	33.6
मेष	12:08:2045	33.7
वृष	11:09:2045	33.7
मिथुन	12:10:2045	33.8
कर्क	11:11:2045	33.9

वृष भुक्ति (11:11:2045 - 11:11:2046)

वृश्चिक	11:12:2045	34.0
तुला	11:01:2046	34.1
कन्या	10:02:2046	34.2
सिहं	13:03:2046	34.3
कर्क	12:04:2046	34.3
मिथुन	13:05:2046	34.4
वृष	12:06:2046	34.5
मेष	12:07:2046	34.6
मीन	12:08:2046	34.7
कुम्भ	11:09:2046	34.7
मकर	12:10:2046	34.8
धनु	11:11:2046	34.9

मिथुन भुक्ति (11:11:2046 - 11:11:2047)

वृश्चिक	11:12:2046	35.0
तुला	11:01:2047	35.1
कन्या	10:02:2047	35.2
सिहं	13:03:2047	35.3
कर्क	12:04:2047	35.3
मिथुन	13:05:2047	35.4
वृष	12:06:2047	35.5
मेष	12:07:2047	35.6
मीन	12:08:2047	35.7
कुम्भ	11:09:2047	35.7
मकर	12:10:2047	35.8
धनु	11:11:2047	35.9

कर्क भुक्ति (11:11:2047 - 11:11:2048)

मेष	11:12:2047	36.0
वृष	11:01:2048	36.1
मिथुन	10:02:2048	36.2
कर्क	12:03:2048	36.3
सिहं	11:04:2048	36.3
कन्या	12:05:2048	36.4
तुला	11:06:2048	36.5
वृश्चिक	12:07:2048	36.6
धनु	11:08:2048	36.7
मकर	11:09:2048	36.8
कुम्भ	11:10:2048	36.8
मीन	11:11:2048	36.9

सिहं भुक्ति (11:11:2048 - 11:11:2049)

तुला	11:12:2048	37.0
वृश्चिक	11:01:2049	37.1
धनु	10:02:2049	37.2
मकर	13:03:2049	37.3
कुम्भ	12:04:2049	37.3
मीन	13:05:2049	37.4
मेष	12:06:2049	37.5
वृष	12:07:2049	37.6
मिथुन	12:08:2049	37.7
कर्क	11:09:2049	37.8
सिहं	12:10:2049	37.8
कन्या	11:11:2049	37.9

जैमिनी चर दशा

कर्क दशा
(11:11:2049 TO 11:11:2053)

मेष भुक्ति			वृष भुक्ति			मिथुन भुक्ति			कर्क भुक्ति		
(11:11:2049 - 11:11:2050)			(11:11:2050 - 11:11:2051)			(11:11:2051 - 11:11:2052)			(11:11:2052 - 11:11:2053)		
सिहं	11:12:2049	38.0	वृश्चिक	11:12:2050	39.0	वृश्चिक	11:12:2051	40.0	मेष	11:12:2052	41.0
कन्या	11:01:2050	38.1	तुला	11:01:2051	39.1	तुला	11:01:2052	40.1	वृष	11:01:2053	41.1
तुला	10:02:2050	38.2	कन्या	10:02:2051	39.2	कन्या	10:02:2052	40.2	मिथुन	10:02:2053	41.2
वृश्चिक	13:03:2050	38.3	सिहं	13:03:2051	39.3	सिहं	12:03:2052	40.3	कर्क	13:03:2053	41.3
धनु	12:04:2050	38.3	कर्क	12:04:2051	39.3	कर्क	11:04:2052	40.3	सिहं	12:04:2053	41.3
मकर	13:05:2050	38.4	मिथुन	13:05:2051	39.4	मिथुन	12:05:2052	40.4	कन्या	13:05:2053	41.4
कुम्भ	12:06:2050	38.5	वृष	12:06:2051	39.5	वृष	11:06:2052	40.5	तुला	12:06:2053	41.5
मीन	12:07:2050	38.6	मेष	12:07:2051	39.6	मेष	12:07:2052	40.6	वृश्चिक	12:07:2053	41.6
मेष	12:08:2050	38.7	मीन	12:08:2051	39.7	मीन	11:08:2052	40.7	धनु	12:08:2053	41.7
वृष	11:09:2050	38.8	कुम्भ	11:09:2051	39.8	कुम्भ	11:09:2052	40.8	मकर	11:09:2053	41.8
मिथुन	12:10:2050	38.8	मकर	12:10:2051	39.8	मकर	11:10:2052	40.8	कुम्भ	12:10:2053	41.8
कर्क	11:11:2050	38.9	धनु	11:11:2051	39.9	धनु	11:11:2052	40.9	मीन	11:11:2053	41.9

मिथुन दशा

(11:11:2053 TO 11:11:2059)

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2053 - 11:11:2054)

सिहं	11:12:2053	42.0
कन्या	11:01:2054	42.1
तुला	10:02:2054	42.2
वृश्चिक	13:03:2054	42.3
धनु	12:04:2054	42.3
मकर	13:05:2054	42.4
कुम्भ	12:06:2054	42.5
मीन	12:07:2054	42.6
मेष	12:08:2054	42.7
वृष	11:09:2054	42.8
मिथुन	12:10:2054	42.8
कर्क	11:11:2054	42.9

तुला भुक्ति (11:11:2054 - 11:11:2055)

वृश्चिक	11:12:2054	43.0
तुला	11:01:2055	43.1
कन्या	10:02:2055	43.2
सिहं	13:03:2055	43.3
कर्क	12:04:2055	43.3
मिथुन	13:05:2055	43.4
वृष	12:06:2055	43.5
मेष	12:07:2055	43.6
मीन	12:08:2055	43.7
कुम्भ	11:09:2055	43.8
मकर	12:10:2055	43.8
धनु	11:11:2055	43.9

कन्या भुक्ति (11:11:2055 - 11:11:2056)

वृश्चिक	11:12:2055	44.0
तुला	11:01:2056	44.1
कन्या	10:02:2056	44.2
सिहं	12:03:2056	44.3
कर्क	11:04:2056	44.3
मिथुन	12:05:2056	44.4
वृष	11:06:2056	44.5
मेष	12:07:2056	44.6
मीन	11:08:2056	44.7
कुम्भ	11:09:2056	44.8
मकर	11:10:2056	44.8
धनु	11:11:2056	44.9

सिहं भुक्ति (11:11:2056 - 11:11:2057)

तुला	11:12:2056	45.0
वृश्चिक	11:01:2057	45.1
धनु	10:02:2057	45.2
मकर	13:03:2057	45.3
कुम्भ	12:04:2057	45.3
मीन	13:05:2057	45.4
मेष	12:06:2057	45.5
वृष	12:07:2057	45.6
मिथुन	12:08:2057	45.7
कर्क	11:09:2057	45.8
सिहं	12:10:2057	45.8
कन्या	11:11:2057	45.9

कर्क भुक्ति (11:11:2057 - 11:11:2058)

मेष	11:12:2057	46.0
वृष	11:01:2058	46.1
मिथुन	10:02:2058	46.2
कर्क	13:03:2058	46.3
सिहं	12:04:2058	46.3
कन्या	13:05:2058	46.4
तुला	12:06:2058	46.5
वृश्चिक	12:07:2058	46.6
धनु	12:08:2058	46.7
मकर	11:09:2058	46.8
कुम्भ	12:10:2058	46.8
मीन	11:11:2058	46.9

मिथुन भुक्ति (11:11:2058 - 11:11:2059)

वृश्चिक	11:12:2058	47.0
तुला	11:01:2059	47.1
कन्या	10:02:2059	47.2
सिहं	13:03:2059	47.3
कर्क	12:04:2059	47.3
मिथुन	13:05:2059	47.4
वृष	12:06:2059	47.5
मेष	12:07:2059	47.6
मीन	12:08:2059	47.7
कुम्भ	11:09:2059	47.8
मकर	12:10:2059	47.8
धनु	11:11:2059	47.9

वृष दशा

(11:11:2059 TO 11:11:2066)

वृश्चिक भुक्ति

(11:11:2059 - 11:11:2060)		
सिहं	11:12:2059	48.0
कन्या	11:01:2060	48.1
तुला	10:02:2060	48.2
वृश्चिक	12:03:2060	48.3
धनु	11:04:2060	48.3
मकर	12:05:2060	48.4
कुम्भ	11:06:2060	48.5
मीन	12:07:2060	48.6
मेष	11:08:2060	48.7
वृष	11:09:2060	48.8
मिथुन	11:10:2060	48.8
कर्क	11:11:2060	48.9

तुला भुक्ति

(11:11:2060 - 11:11:2061)		
वृश्चिक	11:12:2060	49.0
तुला	11:01:2061	49.1
कन्या	10:02:2061	49.2
सिहं	13:03:2061	49.3
कर्क	12:04:2061	49.3
मिथुन	13:05:2061	49.4
वृष	12:06:2061	49.5
मेष	12:07:2061	49.6
मीन	12:08:2061	49.7
कुम्भ	11:09:2061	49.8
मकर	12:10:2061	49.8
धनु	11:11:2061	49.9

कन्या भुक्ति

(11:11:2061 - 11:11:2062)		
वृश्चिक	11:12:2061	50.0
तुला	11:01:2062	50.1
कन्या	10:02:2062	50.2
सिहं	13:03:2062	50.3
कर्क	12:04:2062	50.3
मिथुन	13:05:2062	50.4
वृष	12:06:2062	50.5
मेष	12:07:2062	50.6
मीन	12:08:2062	50.7
कुम्भ	11:09:2062	50.8
मकर	12:10:2062	50.8
धनु	11:11:2062	50.9

सिहं भुक्ति

(11:11:2062 - 11:11:2063)		
तुला	11:12:2062	51.0
वृश्चिक	11:01:2063	51.1
धनु	10:02:2063	51.2
मकर	13:03:2063	51.3
कुम्भ	12:04:2063	51.3
मीन	13:05:2063	51.4
मेष	12:06:2063	51.5
वृष	12:07:2063	51.6
मिथुन	12:08:2063	51.7
कर्क	11:09:2063	51.8
सिहं	12:10:2063	51.8
कन्या	11:11:2063	51.9

कर्क भुक्ति

(11:11:2063 - 11:11:2064)		
मेष	11:12:2063	52.0
वृष	11:01:2064	52.1
मिथुन	10:02:2064	52.2
कर्क	12:03:2064	52.3
सिहं	11:04:2064	52.3
कन्या	12:05:2064	52.4
तुला	11:06:2064	52.5
वृश्चिक	12:07:2064	52.6
धनु	11:08:2064	52.7
मकर	11:09:2064	52.8
कुम्भ	11:10:2064	52.8
मीन	11:11:2064	52.9

मिथुन भुक्ति

(11:11:2064 - 11:11:2065)		
वृश्चिक	11:12:2064	53.0
तुला	11:01:2065	53.1
कन्या	10:02:2065	53.2
सिहं	13:03:2065	53.3
कर्क	12:04:2065	53.3
मिथुन	13:05:2065	53.4
वृष	12:06:2065	53.5
मेष	12:07:2065	53.6
मीन	12:08:2065	53.7
कुम्भ	11:09:2065	53.8
मकर	12:10:2065	53.8
धनु	11:11:2065	53.9

वृष भुक्ति

(11:11:2065 - 11:11:2066)		
वृश्चिक	11:12:2065	54.0
तुला	11:01:2066	54.1
कन्या	10:02:2066	54.2
सिहं	13:03:2066	54.3
कर्क	12:04:2066	54.3
मिथुन	13:05:2066	54.4
वृष	12:06:2066	54.5
मेष	12:07:2066	54.6
मीन	12:08:2066	54.7
कुम्भ	11:09:2066	54.8
मकर	12:10:2066	54.8
धनु	11:11:2066	54.9

मेष दशा

(11:11:2066 TO 11:11:2075)

सिहं भुक्ति		
(11:11:2066 - 11:11:2067)		
तुला	11:12:2066	55.0
वृश्चिक	11:01:2067	55.1
धनु	10:02:2067	55.2
मकर	13:03:2067	55.3
कुम्भ	12:04:2067	55.3
मीन	13:05:2067	55.4
मेष	12:06:2067	55.5
वृष	12:07:2067	55.6
मिथुन	12:08:2067	55.7
कर्क	11:09:2067	55.8
सिहं	12:10:2067	55.8
कन्या	11:11:2067	55.9

कन्या भुक्ति		
(11:11:2067 - 11:11:2068)		
वृश्चिक	11:12:2067	56.0
तुला	11:01:2068	56.1
कन्या	10:02:2068	56.2
सिहं	12:03:2068	56.3
कर्क	11:04:2068	56.3
मिथुन	12:05:2068	56.4
वृष	11:06:2068	56.5
मेष	12:07:2068	56.6
मीन	11:08:2068	56.7
कुम्भ	11:09:2068	56.8
मकर	11:10:2068	56.8
धनु	11:11:2068	56.9

तुला भुक्ति		
(11:11:2068 - 11:11:2069)		
वृश्चिक	11:12:2068	57.0
तुला	11:01:2069	57.1
कन्या	10:02:2069	57.2
सिहं	13:03:2069	57.3
कर्क	12:04:2069	57.3
मिथुन	13:05:2069	57.4
वृष	12:06:2069	57.5
मेष	12:07:2069	57.6
मीन	12:08:2069	57.7
कुम्भ	11:09:2069	57.8
मकर	12:10:2069	57.8
धनु	11:11:2069	57.9

वृश्चिक भुक्ति		
(11:11:2069 - 11:11:2070)		
सिहं	11:12:2069	58.0
कन्या	11:01:2070	58.1
तुला	10:02:2070	58.2
वृश्चिक	13:03:2070	58.3
धनु	12:04:2070	58.3
मकर	13:05:2070	58.4
कुम्भ	12:06:2070	58.5
मीन	12:07:2070	58.6
मेष	12:08:2070	58.7
वृष	11:09:2070	58.8
मिथुन	12:10:2070	58.8
कर्क	11:11:2070	58.9

धनु भुक्ति		
(11:11:2070 - 11:11:2071)		
मेष	11:12:2070	59.0
वृष	11:01:2071	59.1
मिथुन	10:02:2071	59.2
कर्क	13:03:2071	59.3
सिहं	12:04:2071	59.3
कन्या	13:05:2071	59.4
तुला	12:06:2071	59.5
वृश्चिक	12:07:2071	59.6
धनु	12:08:2071	59.7
मकर	11:09:2071	59.8
कुम्भ	12:10:2071	59.8
मीन	11:11:2071	59.9

मकर भुक्ति		
(11:11:2071 - 11:11:2072)		
कन्या	11:12:2071	60.0
सिहं	11:01:2072	60.1
कर्क	10:02:2072	60.2
मिथुन	12:03:2072	60.3
वृष	11:04:2072	60.3
मेष	12:05:2072	60.4
मीन	11:06:2072	60.5
कुम्भ	12:07:2072	60.6
मकर	11:08:2072	60.7
धनु	11:09:2072	60.8
वृश्चिक	11:10:2072	60.8
तुला	11:11:2072	60.9

कुम्भ भुक्ति		
(11:11:2072 - 11:11:2073)		
कन्या	11:12:2072	61.0
सिहं	11:01:2073	61.1
कर्क	10:02:2073	61.2
मिथुन	13:03:2073	61.3
वृष	12:04:2073	61.3
मेष	13:05:2073	61.4
मीन	12:06:2073	61.5
कुम्भ	12:07:2073	61.6
मकर	12:08:2073	61.7
धनु	11:09:2073	61.8
वृश्चिक	12:10:2073	61.8
तुला	11:11:2073	61.9

मीन भुक्ति		
(11:11:2073 - 11:11:2074)		
मेष	11:12:2073	62.0
वृष	11:01:2074	62.1
मिथुन	10:02:2074	62.2
कर्क	13:03:2074	62.3
सिहं	12:04:2074	62.3
कन्या	13:05:2074	62.4
तुला	12:06:2074	62.5
वृश्चिक	12:07:2074	62.6
धनु	12:08:2074	62.7
मकर	11:09:2074	62.8
कुम्भ	12:10:2074	62.8
मीन	11:11:2074	62.9

मेष भुक्ति		
(11:11:2074 - 11:11:2075)		
सिहं	11:12:2074	63.0
कन्या	11:01:2075	63.1
तुला	10:02:2075	63.2
वृश्चिक	13:03:2075	63.3
धनु	12:04:2075	63.3
मकर	13:05:2075	63.4
कुम्भ	12:06:2075	63.5
मीन	12:07:2075	63.6
मेष	12:08:2075	63.7
वृष	11:09:2075	63.8
मिथुन	12:10:2075	63.8
कर्क	11:11:2075	63.9

मीन दशा

(11:11:2075 TO 11:11:2087)

मेष भुक्ति (11:11:2075 - 11:11:2076)

सिहं	11:12:2075	64.0
कन्या	11:01:2076	64.1
तुला	10:02:2076	64.2
वृश्चिक	12:03:2076	64.3
धनु	11:04:2076	64.3
मकर	12:05:2076	64.4
कुम्भ	11:06:2076	64.5
मीन	12:07:2076	64.6
मेष	11:08:2076	64.7
वृष	11:09:2076	64.8
मिथुन	11:10:2076	64.8
कर्क	11:11:2076	64.9

वृष भुक्ति (11:11:2076 - 11:11:2077)

वृश्चिक	11:12:2076	65.0
तुला	11:01:2077	65.1
कन्या	10:02:2077	65.2
सिहं	13:03:2077	65.3
कर्क	12:04:2077	65.3
मिथुन	13:05:2077	65.4
वृष	12:06:2077	65.5
मेष	12:07:2077	65.6
मीन	12:08:2077	65.7
कुम्भ	11:09:2077	65.8
मकर	12:10:2077	65.8
धनु	11:11:2077	65.9

मिथुन भुक्ति (11:11:2077 - 11:11:2078)

वृश्चिक	11:12:2077	66.0
तुला	11:01:2078	66.1
कन्या	10:02:2078	66.2
सिहं	13:03:2078	66.3
कर्क	12:04:2078	66.3
मिथुन	13:05:2078	66.4
वृष	12:06:2078	66.5
मेष	12:07:2078	66.6
मीन	12:08:2078	66.7
कुम्भ	11:09:2078	66.8
मकर	12:10:2078	66.8
धनु	11:11:2078	66.9

कर्क भुक्ति (11:11:2078 - 11:11:2079)

मेष	11:12:2078	67.0
वृष	11:01:2079	67.1
मिथुन	10:02:2079	67.2
कर्क	13:03:2079	67.3
सिहं	12:04:2079	67.3
कन्या	13:05:2079	67.4
तुला	12:06:2079	67.5
वृश्चिक	12:07:2079	67.6
धनु	12:08:2079	67.7
मकर	11:09:2079	67.8
कुम्भ	12:10:2079	67.8
मीन	11:11:2079	67.9

सिहं भुक्ति (11:11:2079 - 11:11:2080)

तुला	11:12:2079	68.0
वृश्चिक	11:01:2080	68.1
धनु	10:02:2080	68.2
मकर	12:03:2080	68.3
कुम्भ	11:04:2080	68.3
मीन	12:05:2080	68.4
मेष	11:06:2080	68.5
वृष	12:07:2080	68.6
मिथुन	11:08:2080	68.7
कर्क	11:09:2080	68.8
सिहं	11:10:2080	68.8
कन्या	11:11:2080	68.9

कन्या भुक्ति (11:11:2080 - 11:11:2081)

वृश्चिक	11:12:2080	69.0
तुला	11:01:2081	69.1
कन्या	10:02:2081	69.2
सिहं	13:03:2081	69.3
कर्क	12:04:2081	69.3
मिथुन	13:05:2081	69.4
वृष	12:06:2081	69.5
मेष	12:07:2081	69.6
मीन	12:08:2081	69.7
कुम्भ	11:09:2081	69.8
मकर	12:10:2081	69.8
धनु	11:11:2081	69.9

तुला भुक्ति (11:11:2081 - 11:11:2082)

वृश्चिक	11:12:2081	70.0
तुला	11:01:2082	70.1
कन्या	10:02:2082	70.2
सिहं	13:03:2082	70.3
कर्क	12:04:2082	70.3
मिथुन	13:05:2082	70.4
वृष	12:06:2082	70.5
मेष	12:07:2082	70.6
मीन	12:08:2082	70.7
कुम्भ	11:09:2082	70.8
मकर	12:10:2082	70.8
धनु	11:11:2082	70.9

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2082 - 11:11:2083)

सिहं	11:12:2082	71.0
कन्या	11:01:2083	71.1
तुला	10:02:2083	71.2
वृश्चिक	13:03:2083	71.3
धनु	12:04:2083	71.3
मकर	13:05:2083	71.4
कुम्भ	12:06:2083	71.5
मीन	12:07:2083	71.6
मेष	12:08:2083	71.7
वृष	11:09:2083	71.8
मिथुन	12:10:2083	71.8
कर्क	11:11:2083	71.9

धनु भुक्ति (11:11:2083 - 11:11:2084)

मेष	11:12:2083	72.0
वृष	11:01:2084	72.1
मिथुन	10:02:2084	72.2
कर्क	12:03:2084	72.3
सिहं	11:04:2084	72.3
कन्या	12:05:2084	72.4
तुला	11:06:2084	72.5
वृश्चिक	12:07:2084	72.6
धनु	11:08:2084	72.7
मकर	11:09:2084	72.8
कुम्भ	11:10:2084	72.8
मीन	11:11:2084	72.9

मकर भुक्ति (11:11:2084 - 11:11:2085)

कन्या	11:12:2084	73.0
सिहं	11:01:2085	73.1
कर्क	10:02:2085	73.2
मिथुन	13:03:2085	73.3
वृष	12:04:2085	73.3
मेष	13:05:2085	73.4
मीन	12:06:2085	73.5
कुम्भ	12:07:2085	73.6
मकर	12:08:2085	73.7
धनु	11:09:2085	73.8
वृश्चिक	12:10:2085	73.8
तुला	11:11:2085	73.9

कुम्भ भुक्ति (11:11:2085 - 11:11:2086)

कन्या	11:12:2085	74.0
सिहं	11:01:2086	74.1
कर्क	10:02:2086	74.2
मिथुन	13:03:2086	74.3
वृष	12:04:2086	74.3
मेष	13:05:2086	74.4
मीन	12:06:2086	74.5
कुम्भ	12:07:2086	74.6
मकर	12:08:2086	74.7
धनु	11:09:2086	74.8
वृश्चिक	12:10:2086	74.8
तुला	11:11:2086	74.9

मीन भुक्ति (11:11:2086 - 11:11:2087)

मेष	11:12:2086	75.0
वृष	11:01:2087	75.1
मिथुन	10:02:2087	75.2
कर्क	13:03:2087	75.3
सिहं	12:04:2087	75.3
कन्या	13:05:2087	75.4
तुला	12:06:2087	75.5
वृश्चिक	12:07:2087	75.6
धनु	12:08:2087	75.7
मकर	11:09:2087	75.8
कुम्भ	12:10:2087	75.8
मीन	11:11:2087	75.9

कुम्भ दशा

(11:11:2087 TO 11:11:2095)

कन्या भुक्ति (11:11:2087 - 11:11:2088)

वृश्चिक	11:12:2087	76.0
तुला	11:01:2088	76.1
कन्या	10:02:2088	76.2
सिहं	12:03:2088	76.3
कर्क	11:04:2088	76.3
मिथुन	12:05:2088	76.4
वृष	11:06:2088	76.5
मेष	12:07:2088	76.6
मीन	11:08:2088	76.7
कुम्भ	11:09:2088	76.8
मकर	11:10:2088	76.8
धनु	11:11:2088	76.9

सिहं भुक्ति (11:11:2088 - 11:11:2089)

तुला	11:12:2088	77.0
वृश्चिक	11:01:2089	77.1
धनु	10:02:2089	77.2
मकर	13:03:2089	77.3
कुम्भ	12:04:2089	77.3
मीन	13:05:2089	77.4
मेष	12:06:2089	77.5
वृष	12:07:2089	77.6
मिथुन	12:08:2089	77.7
कर्क	11:09:2089	77.8
सिहं	12:10:2089	77.8
कन्या	11:11:2089	77.9

कर्क भुक्ति (11:11:2089 - 11:11:2090)

मेष	11:12:2089	78.0
वृष	11:01:2090	78.1
मिथुन	10:02:2090	78.2
कर्क	13:03:2090	78.3
सिहं	12:04:2090	78.3
कन्या	13:05:2090	78.4
तुला	12:06:2090	78.5
वृश्चिक	12:07:2090	78.6
धनु	12:08:2090	78.7
मकर	11:09:2090	78.8
कुम्भ	12:10:2090	78.8
मीन	11:11:2090	78.9

मिथुन भुक्ति (11:11:2090 - 11:11:2091)

वृश्चिक	11:12:2090	79.0
तुला	11:01:2091	79.1
कन्या	10:02:2091	79.2
सिहं	13:03:2091	79.3
कर्क	12:04:2091	79.3
मिथुन	13:05:2091	79.4
वृष	12:06:2091	79.5
मेष	12:07:2091	79.6
मीन	12:08:2091	79.7
कुम्भ	11:09:2091	79.8
मकर	12:10:2091	79.8
धनु	11:11:2091	79.9

वृष भुक्ति (11:11:2091 - 11:11:2092)

वृश्चिक	11:12:2091	80.0
तुला	11:01:2092	80.1
कन्या	10:02:2092	80.2
सिहं	12:03:2092	80.3
कर्क	11:04:2092	80.3
मिथुन	12:05:2092	80.4
वृष	11:06:2092	80.5
मेष	12:07:2092	80.6
मीन	11:08:2092	80.7
कुम्भ	11:09:2092	80.8
मकर	11:10:2092	80.8
धनु	11:11:2092	80.9

मेष भुक्ति (11:11:2092 - 11:11:2093)

सिहं	11:12:2092	81.0
कन्या	11:01:2093	81.1
तुला	10:02:2093	81.2
वृश्चिक	13:03:2093	81.3
धनु	12:04:2093	81.3
मकर	13:05:2093	81.4
कुम्भ	12:06:2093	81.5
मीन	12:07:2093	81.6
मेष	12:08:2093	81.7
वृष	11:09:2093	81.8
मिथुन	12:10:2093	81.8
कर्क	11:11:2093	81.9

मीन भुक्ति (11:11:2093 - 11:11:2094)

मेष	11:12:2093	82.0
वृष	11:01:2094	82.1
मिथुन	10:02:2094	82.2
कर्क	13:03:2094	82.3
सिहं	12:04:2094	82.3
कन्या	13:05:2094	82.4
तुला	12:06:2094	82.5
वृश्चिक	12:07:2094	82.6
धनु	12:08:2094	82.7
मकर	11:09:2094	82.8
कुम्भ	12:10:2094	82.8
मीन	11:11:2094	82.9

कुम्भ भुक्ति (11:11:2094 - 11:11:2095)

कन्या	11:12:2094	83.0
सिहं	11:01:2095	83.1
कर्क	10:02:2095	83.2
मिथुन	13:03:2095	83.3
वृष	12:04:2095	83.3
मेष	13:05:2095	83.4
मीन	12:06:2095	83.5
कुम्भ	12:07:2095	83.6
मकर	12:08:2095	83.7
धनु	11:09:2095	83.8
वृश्चिक	12:10:2095	83.8
तुला	11:11:2095	83.9

आपकी लग्न राशि मकर है। इस राशि को भौतिक, प्रधान (चलायमान या तीव्र), उष्णकटिबंधीय राशि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। कई अन्य नैसर्गिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें विद्यमान हैं। यह स्त्रीलिंग, पाशविक, उदासीन और हिंसक प्रकृति की राशि है।

आपकी कुण्डली के प्रथम भाव का विश्लेषण

सामान्य जानकारी, मानसिक शांति, व्यक्तित्व, अवसर और जीवन की दिशा

आप परिष्कृत मस्तिष्क, परिवर्तनशील मिजाज, विनोदपूर्ण प्रकृति के हो सकते हैं, किन्तु आप कुछ–कुछ स्वार्थी, पर्याप्त स्वेच्छाचारी और बहुत हठी हो सकते हैं तथा अपने उद्देश्यों के प्रति सजग और अपने कार्यों के प्रति वास्तव में सक्रिय होंगे। आप अत्यंत महात्वाकांक्षी और दूसरों पर शासन करने के जन्मजात इच्छुक होंगे। आप समायोजनीय होंगे और स्वयं को प्रत्येक स्थिति के अनुकूल बनाने में सक्षम होंगे। आप ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में निपुण होंगे।

आप आमतौर पर लंबे एवं सुगठित शरीर वाले होंगे। लेकिन शरीर के नीचे वाला हिस्सा दुबला एवं कमजोर हो सकता है। आप बहुत ज्यादा उत्साही होंगे, लेकिन कभी–कभी उदासी का शिकार भी हो सकते हैं। आप बोलने में बहुत मुखर होंगे, भले ही आपके शब्दों से दूसरों को चोट पहुंचे। खराब स्थिति में आप संदिग्ध, मतलबी, कायर एवं घमंडी हो सकते हैं। जिस किसी ने कभी आपको हानि पहुंचायी होगी, उससे बदला लेने के लिए आप हमेशा तैयार रह सकते हैं। अपने सामाजिक संबंधों में आप बहुत हठी हो सकते हैं। आपके चरित्र में कुछ विरोधाभास भी हो सकते हैं। आप आमतौर पर भौतिकवादी होंगे तथा अपनी स्थिति का आकलन धन–संपत्ति के आधार पर कर सकते हैं। आपको भगवान से डर लग सकता है तथा इसकी वजह से आप अपने कर्मों के प्रति सावधान रहेंगे। आप कफ एवं वात रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

आपको व्यवसाय की उत्तम समझ होगी और किसी भी व्यापार को प्रारम्भ करने से पहले उसके सभी पहलुओं को भली–भांति जांचने–परखने में सक्षम होंगे। आप गैरमिलनसार और एकांत प्रकृति के होंगे, किन्तु साथ ही आप बहुत युक्तिपूर्ण और अस्थिर होंगे। आपमें अपने विरोधी का कमजोर पक्ष खोजने की विचित्र क्षमता होगी और आप अपनी इस निपुणता का प्रयोग करके किसी भी आने वाले अवसर का उचित लाभ उठाने के लिए तत्पर रहेंगे। इन गुणों के कारण आप अपने सभी समकालीनों से आगे निकलने में सक्षम होंगे– भले ही उनमें से कुछ बाहर से अपेक्षाकृत अधिक योग्य प्रतीत हों। आपको साहित्य, दर्शन और विज्ञान में गहन रूचि होगी। यद्यपि आप सदगुणों व नैतिकता की प्रतिमूर्ति नहीं हो सकते हैं, फिर भी आपको अपने अनेकों मित्रों व शुभचिन्तकों से प्रशंसा व आभार प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त आपके अनेक समर्पित अनुयायी होंगे।

आप अपेक्षाकृत छोटे कद के, कुछ–कुछ झुके हुए और रूखी संरचना वाले हो सकते हैं– किन्तु कुछ अंग विशिष्ट हो सकते हैं, जैसे भीतर को झुकी नाक, दृढ़ होंठ, छोटी ठोढ़ी, पतली गर्दन और कमजोर घुटने।

सकारात्मक गुण

आप लोकोपकारी और सहानुभूतिपूर्ण स्वभाव वाले व्यक्ति होंगे। आप एक अच्छे श्रोता होंगे और उत्तम सुझावों का अनुसरण करने में कभी नहीं हिचकिचाएंगे। आप शांत, स्थिर और चिरस्थायी होंगे। आप बहुत व्यावहारिक, अनुशासित और विश्वसनीय होंगे। आप रचनात्मक होंगे और आपकी सोच उत्पादक होंगी।

नकारात्मक गुण

आपमें आत्म विश्वास की कमी हो सकती है और आप निराशावादी होंगे। आप स्वयं को अलग तरीके का दिखाने का प्रयास करेंगे। आप धूर्त, प्रतिशोधपूर्ण और कर्कश हो सकते हैं।

विशिष्ट गुण

1– आप व्यावहारिक, तार्किक और दृढ़ होंगे।

2– आपकी स्मृति बहुत तीक्ष्ण होगी और आप ज्ञान के विभिन्न भागों को सीखने में रूचि रखेंगे।

खान–पान, स्वास्थ्य और ब्यायाम

आपके शरीर प्रणाली और मनोबल को ऊँचा बनाने के लिए शारीरिक क्रियायें उपयोगी होंगी। यद्यपि आपको शारीरिक रूप से सक्रिय होना पसन्द होगा, किन्तु आप कठोर, नीरस और एकरस स्वास्थ्य दिनचर्या को पसन्द नहीं करेंगे। आपके लिए शारीरिक और मानसिक रूप से जीवंत और सक्रिय होना महत्वपूर्ण होगा। आपमें पित्त तत्वों की अधिकता होगी। चूंकि आपमें पित्त तत्व अधिक है आपके गुर्दे कमजोर हो सकते हैं। अतः आपको माँसाहारी भोजन, सूखे मेवे और अखरोट, बादाम आदि का सेवन कम ही करना चाहिए।

आपको प्राकृतिक रूप से लाल रंग के खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए। आप फलों में अनार का प्रयोग कर सकते हैं। आप लाल चुकन्दर को भूनकर या उबाल कर खा सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप लाल टमाटर, लाल चेरी, संतरा को भी सलाद या मिठाई के रूप में खा सकते हैं। आप नरम किन्तु पौष्टिक भोजन के स्थान पर तीखा और विदेशी भोजन पसन्द कर सकते हैं। वजन कम करने के लिए मिर्च का संतुलित मात्रा में प्रयोग उपयोगी हो सकता है। आपको एक दिन में कम से कम 7–8 गिलास पानी पीना चाहिए।

आपमें पित्त तत्व की अधिकता है, इसलिए आपको मिर्च का प्रयोग संयम के साथ करना चाहिए। आपको अपने दैनिक आहार में बहुत अधिक माँसाहारी भोजन शामिल नहीं करना चाहिए, किन्तु यदि आप माँसाहार करते हैं, तो इसके साथ आपको सब्जियों को सलाद के रूप में शामिल करना चाहिए। दिन में कम से कम एक बार के भोजन में केवल सलाद या केवल फलों का सेवन करना चाहिए। आप व्यायाम के किसी भी एक दिनचर्या से आसानी से उकता जायेंगे, इसलिए आपको शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए बदल–बदल कर व्यायाम करते रहना चाहिए। आपको हृदय संबंधी व्यायाम के साथ–साथ खिंचाई वाले व्यायाम करना चाहिए। आपकी सभी इच्छाएं और भावनाएं आपके भीतर बन्द होंगी, इसलिए आप तनावग्रस्त व चिन्तित रह सकते हैं। अतः आपको तंत्रिकाओं को शांत करने के लिए ध्यान या प्राणायाम करना चाहिए।

आपकी कुण्डली के द्वितीय भाव का विश्लेषण

धन–सम्पदा, परिवार, मान–सम्मान, भाषण कला और समाज में स्थान और सामाजिक संबंध

आपके बाल्यकाल से ही मन–मस्तिष्क में धन को व्यर्थ में ना खर्च करने की धारणा बनी हो सकती है, जिसके कारण आप बहुत कंजूस प्रवृत्ति के या मितव्ययी हो सकते हैं। आप काफी धन संचित करने में सक्षम होंगे। आपके पास कालाकृतियों का संग्रह होगा। आप अपनी उदारता से अधिक अपनी धन–संपत्ति के लिए प्रसिद्ध होंगे। आप अपने परिवार के कल्याण के संबंध में बहुत अधिक चिन्तित हो सकते हैं। आपके पिता अपने संतान के कारण विचलित रह सकते हैं। आपकी माता के परिवार का जीवन अधिक सुगम नहीं हो सकता है। आपकी पत्नी दीर्घायु होंगी, किन्तु आपके दाम्पत्य संबंधों में अधिक जोश व मधुरता नहीं हो सकती है। आपकी संतान अपने जीवन के बाद के समय में उत्तम कार्य कर सकती है। आप दानशील प्रवृत्ति के होंगे तथा योगी, तपस्वी व भिक्षुकों को भोजन आदि कराएंगे।

आपकी कुण्डली के तृतीय भाव का विश्लेषण

साहस और पराक्रम, शौक और रूचियाँ, भाई–बहन और पड़ोसी

आप किसी जलीय स्थान के निकट निवास कर सकते हैं। आपकी रूचि संगीत के साथ–साथ धर्म व दर्शन में भी हो सकती है। आप समाज में लोकप्रिय एवं सम्मानित होंगे। आप अपनी धन–संपत्ति, सुशीलता, अच्छा पारिवारिक महौल एवं आतिथ्य सत्कार के लिए प्रसिद्ध होंगे। आपका रूझान आध्यात्मिकता की ओर भी हो सकता है तथा आप साधना का अभ्यास कर सकते हैं। आपके बड़े भाई धनी व संपन्न होंगे। आप अपने आस–पास में प्राध्यापक या पादरी के रूप में कार्य कर सकते हैं। आपकी मामी/मौसी एक व्यावसायिक महिला हो सकती हैं। आपके छोटे भाई/बहन का वजन अधिक हो सकता है, किन्तु वे मनोहारी व रूचिकर हो सकते हैं तथा उनके बहुत सरल स्वभाव के होने से लोग उन्हें आसानी से धोखा दे सकते हैं। उनको अपने व्यवसाय में बहुत अधिक रूचि हो सकती है।

आपकी कुण्डली के चतुर्थ भाव का विश्लेषण

माता, भूमि–भवन–वाहन, शिक्षा और स्वयं का परिवार और सुःख

आप चालाक व तार्किक बुद्धि वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आपकी पत्नी मंगल की दशावधि में राजयोग का सुख प्राप्त कर सकती हैं। आपकी कुण्डली में प्रतिकूल प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप धन–संपदा प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं। आपके बड़े भाई को किसी विवाद या मुकदमे में उलझना पड़ सकता है अथवा शल्यचिकित्सा से गुजरना पड़ सकता है। आपके पिता को यात्रा के दौरान बड़ी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है। आपकी सबसे बड़ी संतान को कष्ट या खतरा हो सकता है। आप अपनी शिक्षा निर्बाध रूप से जारी रख सकते हैं तथा वांछित शैक्षिक संस्थान में प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं। आप लोकप्रियता, महानता एवं सुख–साधनों से भरपूर जीवन व्यतीत करेंगे। आपकी संगति प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ होगी तथा हर तरह के आनंद की प्राप्ति होगी। ऐसी स्थिति में आप अज्ञात चीजों की खोज में मग्न हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के चौथे भाव में चन्द्रमा स्थित है, आपकी लालसा कम होगी, लेकिन कुछ नई एवं अलग होगी। आमतौर पर आप शांत एवं मिलनसार होंगे, लेकिन आंतरिक तौर पर आप हमेशा दूसरी ताकतों की धुन में हो सकते हैं। आपके अंदर असाधारण मानसिक क्षमता होगी, जिसके लिए कोई दीवार या सीमा नहीं होगी। इसके साथ ही दुर्भाग्य एवं शुभ घटनायें समान रुप से होती रह सकती हैं। आपके व्यक्तिगत संबंधों में नवीनता एवं सहानुभूति हमेशा होगी। आप समृद्ध, विलासी जीवन जीने वाले, वैवाहिक खुशियां प्राप्त करने वाले एवं धार्मिक झुकाव वाले होंगे।

आपकी कुण्डली के चौथे भाव में बृहस्पति स्थित है, आप लोकप्रिय, सहानुभूति रखने वाले, धार्मिक, भगवान से डरने वाले तथा किसी सम्मानित व्यवसाय में जुड़े होंगे। आपके संबंधी आपकी तरफ मदद, मार्गदर्शन एवं अपनी जीविका के लिए नजर उठाकर देखेंगे। आमतौर पर आप अपने भाई–बहनों एवं दूसरे संबंधियों द्वारा ठगे जा सकते है। इसके अलावा आप अक्सर बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। आप अपने जन्म स्थान के बाहर प्रसिद्ध होंगे।

आपकी कुण्डली के पंचम् भाव का विश्लेषण

सन्तान, विद्वता और बुद्धि, पूर्वपुण्य, लेखन, मानसिक स्थिति और ज्ञान

आपकी संतान अच्छे संस्कार एवं उत्तम शिक्षा प्राप्त करने वाली होगी। आप समाज में एक उत्तम स्थिति प्राप्त करेंगे, जिसके परिणामस्वरुप आपके व्यक्तित्व एवं संतान में सौहार्दपूर्ण विकास होगा। आप ललित कला, सामाजिक विज्ञान एवं आंतरिक साज–सजावट में दिलचस्पी लेंगे। आप अपने व्यावसायिक मामलों में एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे, किन्तु आपको अपने व्यावसायिक जीवन में अवरोध का सामना करना पड़ सकता

है। आपके पिता को पर्याप्त धन प्रप्त होगा। आपकी पत्नी बहुत भाग्यशाली होगी तथा उनको अपने कार्य में गहन रूचि होगी। आपकी पत्नी के नाम से संपत्ति प्राप्त की जा सकती है। आपकी संतान सुन्दर होगी तथा समाज में प्रतिष्ठित व उत्तम स्थान प्राप्त होगा। किन्तु उनको चोट आदि लगने की संभावना रह सकती है। आपके छोटे भाई/बहन दीर्घायु हो सकते हैं। आपकी बड़ी बहन के विवाह संबंध के लिए यह योग उत्तम नहीं हो सकता है तथा उनका संभवतः संबंध विच्छेद हो सकता है।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा मेष राशि में स्थित है, जो मंगल द्वारा संचालित होता है। यह चलायमान और आग्नेय राशि है। आप संवेगी, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर तथा आशावादी हो सकते हैं। आप उग्र तथा कुछ–कुछ आक्रामक स्वभाव के हो सकते हैं। आप विनम्र या आज्ञाकारी बिल्कुल भी नहीं हो सकते हैं, तथा परम्परा और रीति–रिवाजों को अधिक महत्व नहीं देंगे। आप परिर्वतशील एवं चंचल हो सकते हैं तथा आप धैर्यवान नहीं होंगे। आपका स्वभाव चिड़चिड़ा होगा, एवं आप जल्द गुस्सा हो जाएंगे। आप दूसरों के द्वारा दी गई सलाह नहीं मानेंगे और सदा अपने विचारों को मान्यता देंगे। आपमें एक विशेष आकर्षण होगा, जो दूसरों को प्रभावित करने में आपकी मदद करेगा। आप अपने दायरे में लोकप्रियता अर्जित करेंगे और आपके अनेक प्रशंसक व मित्र होंगे।

आपमें दूसरों में जागरूकता लानें की क्षमता होगी, जिससे आप बड़ी संख्या में लोंगों को अपने नियंत्रण में रखने में सक्षम होंगे। अपने विशिष्ट गुणों के कारण आप जल्दी ही अपनी पहचान बनायेंगे तथा आप किसी विभाग, कार्यालय या किसी संगठन के अध्यक्ष बन सकते हैं। यदि आपको अपने कार्यस्थल पर कोई विशेषाधिकार प्राप्त नहीं होता है, तो आप शीघ्र ही अपने लिए नए रास्तों की तलाश कर लेंगे। छोटी आयु में ही आप निश्चित रूप से उत्तम स्थिति हासिल कर लेंगे। यद्यपि आपको किसी भी प्रकार की गोपनियता या गुट पसन्द नहीं होगी, फिर भी आपके व्यवसाय में किसी प्रकार की गोपनीयता बनाए रखने की जरूरत हो सकती है। रहस्यमय चीजें आपको पूरी तरह आकर्षित करेंगी एवं तंत्र–मंत्र व गूढ़ विषयों में आपकी गहरी रूचि विकसित हो सकती है।

आप में अद्भुत जीवन शक्ति होगी। लेकिन आपको समय–समय पर कुछ छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। बचपन में किसी दुर्घटना के फलस्वरूप आपके सिर या चेहरे पर निशान हो सकता है। आपको कुछ अधिक गर्मी महसूस हो सकती है या आप बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। आप महिला समुदाय के प्रति आकर्षित होंगे और छोटी उम्र में ही आपकी इच्छानुसार आपके द्वारा पसन्द किए गये व्यक्ति से आपका विवाह हो सकता है। आपको शिशुओं से भी बहुत लगाव होगा और आपकी पहली संतान आपको अत्यंत प्रिय होगी। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी ग्रह उपस्थित नहीं है, तो माता–पिता में से किसी एक के साथ आपके गहरे मतभेद हो सकते हैं या किशोरावस्था में ही परिस्थितिवश उनसे अलग होना पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली के पांचवें भाव में केतु स्थित है, आप मौज–मस्ती संबंधित मामलों में अपरंपरागत विचारों को जन्म देने वाले हो सकते हैं। आपका समाज द्वारा त्याग किया जा सकता है तथा आपकी शिक्षा भी बाधित हो सकती है।

आपकी कुण्डली के षष्ट भाव का विश्लेषण

रोग और कष्ट, शत्रु, दुर्घटना, ननिहाल, नौकर और चोट

आपको पूर्व जन्म के कर्मों के कारण वर्तमान जीवन में दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है। आपकी आंतरिक शक्ति किसी कार्य को करने के लिए इतना मजबूर कर देती है कि बाद में आपके लिए परेशानियां पैदा हो सकती हैं। जो विचार आपको समाज के खिलाफ सख्त कारवाई करने के लिए प्रेरित करता है वह बाद में उचित हो सकता है। लेकिन आपके कार्य पूरी तरह से मनोवैाानिक मजबूरी से प्रेरित हो सकते हैं। आपके जीवन में मुसीबतें आपकी आंतरिक मानसिक प्रतिक्रिया एवं विपरीत लिंग के व्यक्तियों के प्रति उत्पन्न आकर्षण के कारण हो सकती है। आपका व्यावसायिक व्यक्तियों के साथ शत्रुतपूर्ण संबंध हो सकता है।

आपका शिक्षाविदों एवं बौद्धिक लोगों के साथ उत्तम संबंध नहीं हो सकता है। आपको अपने जीवन में बाधाओं व कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। संभवतः आप महिलाओं के कारण शत्रुता कर सकते हैं। आपके पिता उत्तम पद प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। आपकी पत्नी अपने छोटे भाई/बहन के साथ खुश नहीं रह सकती है। आपके छोटे भाई/बहन किताबों का व्यापार कर सकते हैं अथवा उनके कार्य का संबंध शिक्षण व प्रशिक्षण से हो सकता है।

आपकी कुण्डली के सप्तम् भाव का विश्लेषण

जीवनसाथी, साझेदारी, वैवाहिक सुख, प्रतिष्ठा और जीवन के प्रति उत्साह

आप अपनी प्यारी वस्तु को प्राप्त करने के लिए हर तरह के सामाजिक एवं नैतिक मर्यादाओं का उल्लंघन कर सकते हैं, लेकिन आध्यात्म के प्रति थोड़ा सा भी झुकाव होने पर मन की धैर्य, भावना की शांति तथा चेतना का विस्तार प्राप्त होता है। जिससे कि आप अपने व्यक्तिगत एवं पारिवारिक संबंधों में आगे बढ़ने में सक्षम होंगे। आपको ऐसी पत्नी की तलाश हो सकती है, जो आपको प्रेम करे एवं आपकी देखभाल करे। आपकी पत्नी गौर वर्ण एवं सुन्दर स्वरूप की होगी तथा विनम्र व कोमल हृदय की महिला होगी। वह बहुत आज्ञाकारी, सरल, निष्कपट व भाग्यशाली होगी तथा अतिथियों का आदर–सत्कार करने वाली होगी। आपके वैवाहिक जीवन में स्थिरता व स्थायीत्व का अभाव हो सकता है। आपके छोटे भाई/बहन की कन्या संतान अधिक एवं पुत्र संतान की संख्या कम हो सकती है। आप विदेश में एक स्थान पर नहीं रह सकते हैं। संभवतः आपका एक से अधिक विवाह हो सकता है।

आपकी कुण्डली के अष्टम् भाव का विश्लेषण

आयु, असाध्य रोग, मानसिक कष्ट, अप्रत्यासित लाभ–हानि, अड़चनें और छुपी हुई प्रतिभा

आपको पेट से संबंधित गंभीर समस्याओं से पीड़ित रहना पड़ सकता है। आपको जंगल में अकेले जाने से बचना चाहिए संभवतः जंगली जानवर आप पर हमला कर सकते है। आपको अपने जीवन में कुछ मामलों में दुखों व परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपकी पत्नी की वाणी कठोर व कर्कश हो सकती है। आपका आध्यात्मिकता की तरफ झुकाव होगा। यह भौतिकवादी दुनिया के प्रति हताशा के कारण हो सकता है या आपके अतीत के कार्य ऐसा फल देंगे, जिससे आप आध्यात्मिकता का रास्ता पकड़ सकते हैं। हर स्थिति में आपका दुनियादारी से मोहभंग हो सकता है।

आपकी कुण्डली के आठवें भाव में मंगल स्थित है, आपके जीवन में जो कुछ भी अवांछित होगा, वो नष्ट हो जायेगा तथा सक्रिय रुप से आध्यात्मिकता की तरफ ले जायेगा। आप भौतिक सुख की वजाय आध्यात्मिक सुख का महत्व अधिक देंगे। इसके लिए आप अपने वैवाहिक सुख का त्याग कर सकते हैं तथा सामाजिकता से दूर हो सकते हैं। इसके साथ ही पारिवारिक विरासत का नुकसान हो सकता है या अपने भाई–बहनों से अलगाव हो सकता है। आप खुद अपने दम पर अडिग रहेंगे। दुर्घटनायें, शल्य चिकित्सा, खून से संबंधित समस्यायें या प्रजनन अंगों से संबंधित रोग आदि आपको परेशान कर सकते हैं। इसकी वजह से आप अपना मुकाम हासिल करने में नाकामयाब साबित होगें।

आपकी कुण्डली के नवम् भाव का विश्लेषण

पिता, गुरू, धार्मिक रूचि, तीर्थ यात्रा, दानशीलता और भाग्य

आपके अंदर आध्यात्मिक भावना विकसित होगी, जिसकी वजह से आपकी पहचान दूर–दूर तक होगी। आप एक आंतरिक आवेग से प्रेरित होंगे और इसके उपर आपका कोई नियंत्रण नहीं हो सकता है। आम लोग

आपकी आलोचना कर सकते हैं, लेकिन आप मजबूत इरादे वाले होंगे। आपको यह पता होगा कि आप किस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। आप किसी अनैतिक कार्य में संलग्न हो सकते हैं या आप पाखंडी व्यवहार करने वाले हो सकते हैं। लेकिन आपको अपने कार्यों में कुछ भी अनैतिक या पाखंड से भरा नजर नहीं आ सकता है। आपके पिता भाषा–विज्ञानी व विद्वान व्यक्ति होंगे तथा एक उच्च पद पर आसीन होंगे। वह कई बार हठी व मनमाना व्यवहार कर सकते हैं। आप बहुत विद्वान होंगे। आप अपनी पत्नी के धर्म का अनुसरण कर सकते हैं। आपके छोटे भाई/बहन पुस्तकों अथवा अन्य छपाई से संबंधित कार्यों में संलग्न हो सकते हैं। आपके मामा/मौसा बहुत विद्वान होंगे तथा आपकी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं अन्यथा आपके मार्ग में आने वाली बाधाओं व कठिनाइयों के कारण आप असफल हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के नौवें भाव में शनि स्थित है, आप धार्मिक नेता बन सकते हैं, लेकिन आपकी सोच एवं काम में अंतर हो सकता है। आप विदेशी उग्रपंथियों को धोखा दे सकते हैं, लेकिन आपके रीति–रिवाज या तो गलत आध्यात्मिक सिद्धांतों पर आधारित होंगे या छल–कपट से प्रेरित हो सकते हैं। आमलोगों के बीच में आप पाखंडियों जैसा व्यवहार कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दशम् भाव का विश्लेषण

व्यवसाय, कर्म, आजिविका के साधन, ब्यापार और धार्मिक कार्य

आप एक असाधारण व्यक्ति होंगे, लेकिन आपके जीवन की शुरुआत खुशहाली के साथ नहीं हो सकती है। आप कई तरह से पीड़ित हो सकते हैं। समाज आपकी आंतरीक अभिलाषाओं को समझने में नाकाम हो सकती है। यहां तक कि आपके द्वारा किये गये कल्याणकारी कार्य को भी गलत तरीके से समझाया जा सकता है। आप अपने कार्यस्थल पर खुशनुमा व संगत वातावरण बनाए रखने का प्रयास कर सकते हैं। आप सांझेदारी का व्यवसाय कर सकते हैं अथवा आपकी पत्नी आपके व्यवसाय में सहयोग कर सकती है। सामान्यतः आपको सभी पसन्द करेंगे। आप उचित मार्ग का अनुसरण कर धनोपार्जन करेंगे। आपको पद, प्रतिष्ठा, अधिकार व शक्ति के साथ–साथ मनोरंजन या शेयर सट्टा के माध्यम से धन की प्राप्ति हो सकती है। आपको अपनी संतान एवं महिलाओं के माध्यम से भी धन–लाभ हो सकता है। आपको समय–समय पर अपने व्यवसाय के संबंध में विदेश में निवास करना भी पड़ सकता है। आप ललित कलाओं की किसी विधा या मनोरंजन के क्षेत्र से संबंधित कोई कार्य कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के दसवें भाव में सूर्य स्थित है। आप कुछ अज्ञात बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं और इसकी वजह से समाज के साथ आपके रिश्ते खराब हो सकते हैं। अपने पेशे के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है तथा आप मानसिक शांति की कमी के शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के एकादश भाव का विश्लेषण

लाभ, भौतिक सुख की प्राप्ति, लोभ, पुरस्कार और दण्ड और स्वास्थ्य लाभ

आप उन स्रोतों से आय अर्जित कर सकते हैं, जो कि सम्मानजनक नहीं हो सकते हैं। आपके अध्ययन का संबंध भवन, मशीन, इंजीनियरिंग, अस्त्र–शस्त्र, सैन्य विज्ञान, जल–विद्युत, विद्युत आदि से हो सकता है तथा आप इनके माध्यम से लाभार्जन भी कर सकते हैं। आपको अधिकार व पद के माध्यम से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। आप गूढ़ ज्ञान से धनार्जन कर सकते हैं। आपको पापपूर्ण या नीतिज्ञानहीन साधनों के माध्यम से लाभ प्राप्त हो सकता है। आप झूठ व कपटपूर्ण तरीके से धन कमाने का प्रयास कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के ग्यारहवें भाव में बुध स्थित है। आपके उपर नैतिकता हावी हो सकती है तथा आप ऐसे कारणों में संलग्न हो सकते हैं, जो सामाजिक रुप से स्वीकार्य होते हैं। हालांकि आप हमेशा एक अधीनस्थ की तरह कार्य कर सकते हैं तथा आपको धन की जरुरत हमेशा बनी रह सकती है। जीवनकाल में कभी

ऐसी स्थिति भी आ सकती है कि किसी तरह अनियमितता के कारण आपको कोर्ट–कचहरी के चक्कर लगाने पड़ सकते हैं।

आपकी कुण्डली के ग्यारहवें भाव में शुक्र स्थित है। आपमें नैतिकता की कमी हो सकती है तथा मौज–मस्ती की प्रवृतियां बढ़ सकती हैं। हालांकि आपकी आमदनी अच्छी होगी। आपका अपना अलग सामाजिक दायरा होगा, जहां पर लोग आपको विश्वसनीय मानेंगे।

आपकी कुण्डली के ग्यारहवें भाव में राहु स्थित है। आप कभी–कभी अव्यवहारिक गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं। आपके खिलाफ आपराधिक कारवाई शुरु की जा सकती है। आपकी विश्वसनीयता एवं प्रतिष्ठा अक्सर सवाल के घेरे में हो सकती है।

आपकी कुण्डली के द्वादश भाव का विश्लेषण

व्यय, अलगाव, हानि, सुख, निद्रा, विदेश यात्रा और मानसिक संतुलन

आप अपने संसाधनों, उर्जा एवं धन को दूसरों को धोखा देने के लिए बर्बाद कर सकते हैं। आप वैसे लोगों के साथ जुड़ सकते हैं, जो अनैतिक कार्यों में लिप्त होंगे तथा अपना भला सोचेंगे। आप वैसे लोगों की चापलूसी कर सकते हैं, जिनसे आपको भविष्य में एहसान की उम्मीद होगी। आप अपने खर्चे के मामले में बहुत सोच–विचार करेंगे। आप अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए धन व्यय कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप कृषि पर, दूसरों को धोखा देने के लिए एवं बुरे लोगों की संगति में पड़कर भी धन व्यर्थ में व्यय कर सकते हैं। आपके छोटे भाई/बहन अपने पेशे में प्रगति व विस्तार करने के लिए किसी नए स्थान पर निवास करने का निर्णय ले सकते हैं।

शुभ और अशुभ ग्रह

1– पंचमेश और दशमेश शुक्र सर्वाधिक शुभ ग्रह है।

2– नवमेश बुध और लग्नेश शनि शुभ ग्रह हैं।

3– चंद्रमा, मंगल और बृहस्पति अशुभ ग्रह हैं।

4– सूर्य और चंद्रमा मारकेश हैं।

5– सूर्य तटस्थ है।

कुण्डली में लागू होने वाले ग्रह योग (ग्रह–युति)

कुण्डली में लागू होने वाले महत्वपूर्ण योग

काम योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश एक अनुकूल भाव में स्थित है तथा लग्नेश का राशिपति भी एक अनुकूल भाव में स्थित है। यह समग्र योग असाधारण रूप से अनुकूल है, जैसाकि इसे सफल काम योग माना जाता है। आप जन्मजात भाग्यशाली व्यक्ति होंगे और अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। लोग यह मान सकते हैं कि आप पारस पत्थर जैसे दैवीय वरदान के साथ जन्मे हैं, जैसेकि आप जो भी छुयेंगे वह सोना बन जाएगा। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और सभी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी।

अनिवाहप्पू योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक विशेष ग्रह एक राशि में अकेले स्थित है, चार ग्रह इसकी छः पूर्ववर्ती राशियों में स्थित हैं, जबकि बाकी के चार ग्रह इसकी अनुवर्ती राशियों में कहीं स्थित हैं। यह बहुत अनुकूल योग का निर्माण कर रहा है, इसे अनिवाहप्पू योग कहते हैं। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप विशिष्ट बौद्धिक क्षमता वाले व्यक्ति होंगे, तथा अवश्य ही एक अधिकारपूर्ण पद तक पहुंचेंगे। जहां एक तरफ आपको वरिष्ठों/अधिकारियों से सक्रिय सहयोग प्राप्त होगा, जबकि दूसरी तरफ, बड़ी संख्या में आपके समर्पित अनुयायी होंगे। (हालांकि, यदि अनिवाहप्पू योग बनाने वाला एकाकी ग्रह एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की दृष्टि पड़ने से पीड़ित है, तो इस योग की शक्ति परिणामस्वरूप कम हो जाएगी, ऐसे में आप एक कमाण्डर या प्रबंध निदेशक होने के बजाय केवल एक कप्तान या साधारण सुपरवाइजर तक ही सीमित रह सकते हैं।)

कलानिर्देष्ट अपत्य हानि योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह (जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में है) लग्न से पांचवें भाव में स्थित है और एक समान अशुभ ग्रह बृहस्पति से पांचवें भाव में भी स्थित है। यह एक प्रतिकूल योग है, जिसे कलानिर्देष्ट अपत्य हानि योग के नाम से जाना जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग की उपस्थिति के कारण, आप 32 या 33 या 40 वर्ष की आयु के आस–पास अपने किसी एक संतान– विशेषकर प्रथम संतान– के स्वास्थ्य और सुख के कारण गंभीर रूप से चिन्तित हो सकते हैं।

शंख योग

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेश और षष्ठमेश एक दूसरे से परस्पर केन्द्र भाव में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है तथा इन दोनों ग्रहों मे से कम से कम एक ग्रह उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में होने के कारण बली है। समग्र रूप से यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, इसे शंख योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप एक विद्वान, न्यायसंगत प्रकृति और परोपकारी स्वभाव वाले व्यक्ति होंगे। आप बहुत धनी होंगे, आपकी अपनी भूमि और संपत्ति होगी और आपको समर्पित जीवनसाथी एवं योग्य संतान का सुख प्राप्त होगा।

सत कलत्र योग

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी सर्वोत्तम नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

सत कलत्र योग

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह (बुध) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

तीव्र–बुद्धि योग

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेश एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। पंचमेश की नवांश–राशि का स्वामी भी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। इन दोनों ग्रहों में से कोई भी अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक बहुत अनुकूल योग है, इसे तीव्र–बुद्धि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के मौजूद होने के कारण, आप बहुत तीक्ष्ण बुद्धि वाले होंगे और आपकी सोचने की क्षमता बहुत तीव्र होगी। आप किसी भी विषय को बहुत गहराई में जानने में सक्षम होंगे तथा बहुत तेजी से चीजों को आत्मसात करेंगे।

पूर्व दृढ़चित्त योग

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश उच्चस्थ है और यह एक चर राशि या नवांश में स्थित है। इसके अतिरिक्त, यह एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह/गहों के साथ संबद्ध है– जबकि इसके साथ किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो युति है और ना ही इस पर दृष्टि है। समग्र रूप से

यह बहुत अनुकूल योग नहीं है, इसे पूर्व दृढ़चित्त योग कहते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपमें किसी चुनौतीपूर्ण कार्य को प्रारम्भ करने से पहले बहुत साहसी होने का दिखावा करने की प्रवृत्ति हो सकती है, किन्तु, जब आप वास्तविक स्थिति का सामना करेंगे, तो आप विचलित, भयभीत और बहुत असहाय महसूस कर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले धन योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस-पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की बृहस्पति के साथ युति है- जो कि एक अनुकूल स्थिति में है। एक शुभ योग का निर्माण हो रहा है। आप धन संबंधी मामलों में भाग्यशाली होंगे, अत्युत्तम आय होगी तथा निश्चित रूप से बहुत धनवान होंगे।

जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक जल तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से उत्तर दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले वित्तहानि योग

जसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, एक घोर अशुभ ग्रह आपके आठवें भाव में स्थित है- जो कि किसी शुभ ग्रह से प्रभावित नहीं है। यद्यपि आप काफी सम्पन्न होंगे, तो भी आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए एवं अनावश्यक रूप से अत्यधिक जोखिम नहीं उठाना चाहिए। आपको गम्भीर प्रकार की अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है। इस बात की भी संभावना है, कि आप किसी अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों को गंभीर चोट पहुंचा सकते हैं- जिसके लिए आपकी पेशी हो सकती है या दंडित तक किया जा सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की दृष्टि द्वादशेश के नवांश-राशिपति पर है। यह एक वित्त हानि योग है। आप धनी व्यक्ति नहीं हो सकते हैं। आप आदतन फिजूलखर्ची हो सकते हैं। आपकी इस प्रकृति के कारण, बाद की आयु में आपको आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले नभष योग

पाश योग

आपकी कुण्डली में पाश योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक बहुत अनुकूल योग

नहीं है, तथा आपके जीवन में किसी समय के दौरान, आपको प्रतिकूलताओं और बाधाओं के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ सकता है। आप दयनीय स्थिति में औसत पारिश्रमिक पर दूसरों की सेवा में रह सकते हैं तथा आपको उचित सम्मान भी नहीं मिल सकता है। यद्यपि आप कार्य में कुशल होंगे, फिर भी आपका स्वभाव कुछ हद तक विद्वेषपूर्ण हो सकता है। कई बार आप शिष्टाचार भूल सकते हैं तथा औचित्य की भावना खो सकते हैं। परिस्थितिजन्य अनिवार्यता के कारण आपको अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले अनिष्ट योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक (या अधिक) अशुभ ग्रह पांचवें भाव में स्थित है (या हैं), जबकि कोई भी शुभ ग्रह इसमें स्थित नहीं है। अशुभ ग्रह ना तो उच्चस्थ हैं और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित हैं। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अनिष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी योग उपस्थित नहीं हैं, तो आप अपनी संतान के कारण दुखी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, केतु आपके पांचवें भाव में स्थित है, यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। इस भाव में कोई भी शुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही उसकी इस पर दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अनिष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपकी संतान का जन्म बहुत समस्याग्रस्त हो सकता है, साथ ही आपकी संतानें बहुत योग्य या कर्तव्यनिष्ठ नहीं हो सकती हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले रवि योग

उभयचारी योग

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। जैसाकि इन दोनों में से एक ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह है, जबकि दूसरा ग्रह नैसर्गिक अशुभ ग्रह है, अतः यह योग सामान्य रूप से शुभ होगा– जैसाकि सूर्य आपकी कुण्डली में मिश्र–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी–मिश्र करतरी योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आपका जन्म एक काफी अच्छे परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन के मध्य आयु के आस–पास किसी समय एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से कुछ लाभ प्राप्त करेंगे और काफी आरामदायक और आनन्ददायक जीवन व्यतीत करेंगे। हालांकि, आपको दृष्टि से संबंधित कुछ छोटी परेशानियां हो सकती हैं तथा अपने वित्तिय मामलों में कुछ उतार–चढ़ाव का सामना कर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले चन्द्र योग

गज केसरी योग

आपकी जन्मकुण्डली में अनुकूल गज केसरी योग उपस्थित है। आपका जन्म काफी सम्पन्न परिवार में हुआ है, आपका पालन–पोषण बहुत उत्तम होगा, अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे, काफी स्थायी पद प्राप्त करेंगे तथा आपके भाग्य में धीरे–धीरे वृद्धि होगी।

शरीर के विभिन्न अंगो का ज्योतिषीय विश्लेषण

बाहरी व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, कद–काठी व त्वचा का रंग

इनमें से प्रत्येक तत्व अनेक कारकों पर निर्भर हैं, जहां प्रत्येक कारक अनेक संशोधनकारी प्रभाव उत्पन्न कर सकता है, जैसे– लग्न–राशि, लग्न में उपस्थित ग्रह (यदि कोई है तो), लग्न पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (यदि कोई है तो), चंद्र–राशि में उपस्थित ग्रह(यदि कोई है तो), चंद्र–राशि पर दृष्टि डालने वाले ग्रह, लग्न का क्रिशांश, ग्रहों की राशिगत स्थिति, लग्नेश की भावगत स्थिति इत्यादि।

संभावित कद (लंम्बाई) का अनुमान (वयस्क होने पर)

आपकी लग्न राशि मकर है तथा लग्न में बहुत अधिक ग्रह स्थित नहीं है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का स्वामी लग्न से अपोक्लिम भाव में स्थित है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की शायन डिग्री राशि के चौथे या अंतिम चतुर्थांश में है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

त्वचा के रंग पर ग्रहों का संयुक्त प्रभाव

सूय से लेकर शनि तक के सभी ग्रहों के संचित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि आप मध्यम वर्ण के हो सकते हैं अर्थात ना ही गहरे और ना ही गौर वर्ण के।

शरीर के स्थूलकाय (मोटे) होने का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति व चंद्रमा की युति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इस ग्रह स्थिति के प्रभाव के कारण संभवतः किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से या उसके बाद के आयु–काल से आपके शरीर का वजन बढ़ना शुरु हो सकता है। जिससे आपका शरीर बहुत जल्दी ही स्थूल व वजनी हो सकता है।

आँखे और आँखो की रोशनी का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा मेष राशि में स्थित है, जबकि शनि की इस पर दृष्टि (ताजक के

अनुसार) पड़ रही है। इसके अतिरिक्त, दो ग्रह दृष्टि में शामिल हैं जो कि एक दूसरे से 3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर है। अतः ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। आपको अपनी आँखों का विशेष ख्याल रखना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपनी दृष्टि से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यदि आपको कभी ऐसी किसी प्रकार की असुविधा महसूस होती है तो उसे आपको अनदेखा नहीं करना चाहिए। बल्कि किसी अनुभवी नेत्र-विशेषज्ञ से दिखाना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य नीचस्थ और/या ग्रसित है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपनी दाईं आँख में कुछ परेशानी हो सकती है तथा आपको चश्मा पहनना पड़ सकता है। आपको अपनी आँख के प्रति अधिक सावधानी रखनी चाहिए एवं कभी किसी प्रकार की असुविधा महसूस होने पर किसी अनुभवी नेत्र-विशेषज्ञ से आपको जांच व परामर्श लेना चाहिए।

जीभ, दांत और बोलने की क्षमता का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी ना ही उच्चस्थ है एवं ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। इसके अतिरिक्त यह एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके दांत अधिक आकर्षक नहीं होंगे अथवा वे अधिक लंबे समय तक मोतियों जैसे या चमकदार नहीं रहेंगे। जैसाकि आप अपने दांतों का उचित ख्याल नहीं रखेंगे इसलिए वे समय से पूर्व ही खराब हो सकते हैं।

जैसा कि बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में छः बिन्दु है। यह योग कुछ अनुकूल तथ्यों की ओर इंगित करता है। इसके प्रभाव से आप एक अनुकूल/ आनन्ददायक वक्ता होंगे। इसके अतिरिक्त आप एक समर्थ लेखक भी होंगे। आप दूसरे लोगों से अपनी बात मनवाने में सक्षम होंगे एवं अपने विचारों व मतों के लिए समर्थन प्राप्त कर लेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार (या अधिक) बिन्दु हैं। बृहस्पति अपनी कक्षा में एक बिन्दु का योगदान कर रहा है, जबकि इस भाव राशि में एक (या अधिक) शुभ ग्रह भी बिन्दु का योगदान कर रहा है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपमें मनोहारी शिष्टाचार होगा। बातचीत के दौरान आपकी बातें बुद्धिमतापूर्ण, स्पष्ट एवं अधिक उपदेशात्मक/शिक्षाप्रद होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार (या अधिक) बिन्दु हैं। शुक्र अपनी कक्षा में एक बिन्दु का योगदान कर रहा है, जबकि इस भाव राशि में एक (या अधिक) शुभ ग्रह भी बिन्दु का योगदान कर रहा है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपमें मनोहारी शिष्टाचार होगा। बातचीत के दौरान आपकी बातें उंचे आदर्शों एवं रोचक किस्सों के साथ फैलेंगी।

कान और सुनने की शक्ति

आपकी जन्मकुण्डली में ग्यारहवें भाव में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप एक पुरुष है इसलिए आपके बाएं कान/श्रवण शक्ति से संबंधित किसी प्रकार की समस्या होने की संभावना अत्यंत कम है।

हृदय और पीठ की स्थिति का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी की शनि के साथ युति अथवा दृष्टि संबंध है, जबकि शनि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह योग आपके लिए अनुकूल नहीं है। जैसा कि पांचवें भाव के स्वामी का आधिपत्य हृदय एवं पीठ वाले भाग पर होता है। अतः आपके शरीर के ये भाग संभवतः स्वस्थ्य या मजबूत नहीं रहेंगे।

उदर (पेट) और पाचन क्रिया का अनुमान

चाथ भाव का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस भाव पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि इस पर किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य-प्रणाली छोटी-मोटी समस्याओं से मुक्त नहीं रह सकती है और आपकी पाचन शक्ति भी अच्छी नहीं रहेगी।

चौथे भाव के स्वामी का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह की चौथे भाव के स्वामी पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि इस पर किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपके पेट की कार्य-प्रणाली समस्यारहित होगी और आपकी पाचन शक्ति अच्छी रहेगी।

कन्या राशि एवं इसके स्वामी बुध का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में कन्या राशि का स्वामी ग्रह बुध शक्तिशाली स्थिति में है, क्योंकि यह उच्चस्थ है या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की पाचन-प्रणाली समस्यारहित होगी, जिससे कि आप स्वस्थ्य रहेंगे।

कन्या राशि का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में स्थित हैं, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह इस राशि में स्थित नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की पाचन-प्रणाली समस्यारहित नहीं हो सकती है, जिससे कि आप स्वस्थ्य नहीं रह पाएंगे।

छठवें भाव का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि किसी भी नैसर्गिक शुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने पाचन-प्रणाली को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं से गुजरना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है।

शरीर के ग्राही, अवशोषी और उत्सर्जी अंगो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली बिना किसी समस्या के काम करती रहेगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित होने या उनकी इस पर दृष्टि पड़ने के कारण दूषित हो रहा है। अतः यह अनुकूल संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अक्सर अपने शरीर के तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तुला राशि में स्थित है अथवा उसकी इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह ना तो इस राशि में स्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है। अतः ये संकेत आपके लिए अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो संभवतः आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र शक्तिशाली स्थिति में नहीं है, जैसा कि यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। इसके अतिरिक्त यह दो या दो से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ जुड़े होने से अथवा उनकी दृष्टि पड़ने से दूषित है। अतः ये संकेत आपके लिए अनुकूल नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

जाँघ, घुटना, टांगो और पंजो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है, जैसाकि यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में उपस्थित है। नौवें भाव का स्वामी नितंब वाले भाग एवं जांघों को संचालित करता है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग काफी विकसित होंगे।

प्राकृतिक राशि–चक्र की नौवीं राशि का स्वामी गुरु है, जो कि आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ युत है, जबकि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो इसके साथ युति है और ना ही दृष्टि पड़ रही है। अतः ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के नितंब वाले भाग एवं जांघ अधिक विकसित नहीं होंगे। या फिर आप अपने शरीर के इन भागों के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह ग्यारहवें भाव में उपस्थित है, जो कि आपके शरीर के टांग के आस–पास के भाग, 'घुटने से नीचे एवं टखने से ऊपर वाले भाग', को संचालित करता है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर का यह भाग काफी विकसित होगा।

प्राकृतिक राशि–चक्र की बारहवीं राशि का स्वामी बृहस्पति है, जो कि आपकी कुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ युत है, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो इसके साथ स्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के पैर व पैर की उंगलियां मजबूत स्थिति एवं अच्छे आकार में नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग में कुछ जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

शिक्षा की संभावना और संबंधित तथ्यों की जाँच

शिक्षा के दौरान आने वाली बाधाओं का आकलन

आपकी जन्मकुण्डली में वक्री ग्रह प्रमुख शिक्षा संबंधी भावों में से एक में (दूसरे या चौथे या पांचवें) स्थित है। फिर भी यह एक लाभदायक कारक है। चूंकि आप बहुत नियमित या अत्यधिक अध्ययनशील नहीं हो सकते हैं। तब भी आप में एकाग्रता की विशिष्ट क्षमता विद्यमान होगी तथा आप अत्यंत कम समय में अविश्वसनीय रूप से बहुत कुछ प्राप्त करेंगे। आपका उत्साह अवधि/वर्ष/पाठ्यक्रम के प्रारम्भ होने पर और पुनः अन्तिम परीक्षा के दौरान अपने चरम पर होगा, जिसमें की आप निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, वृहस्पति वक्री है। यह शिक्षा के लिए कदापि बाधक कारक नहीं है, अपितु यह काफी लाभदायक है। आप निश्चित रूप से उच्च महात्वाकांक्षा वाले तथा गर्व की भावना से पूर्ण होंगे, जो कि अप्रत्यक्ष रूप से आपको उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगा। यद्यपि आप असंतुलित विचारों वाले हो सकते हैं तथा धन को बहुत अधिक महत्व दे सकते हैं, तथापि आपको भाषा, व्याकरण और साहित्य का अत्यंत उत्तम ज्ञान होगा।

लिखावट (तीसरे भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य और तीसरे भाव के स्वामी की परस्पर एक दूसरे पर दृष्टि पड़ रही है। यह दर्शाता है कि आप प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले व्यक्ति होंगे एवं आपमें असाधारण लेखन क्षमता विद्यमान होगी। आपकी लिखावट अत्यंत आकर्षक होगी, जिसे भी सुन्दर कहा जा सकता है।

शिक्षा में लग्नाधिपति की विशेष भूमिका

आपकी जन्मकुण्डली में, पहले भाव के स्वामी की पांचवें भाव के स्वामी पर दृष्टि पड़ रही है, इसमें पांचवें भाव का स्वामी स्मरणशक्ति, मेधा, बुद्धि तथा व्यवहारपरक शिक्षा का महत्वपूर्ण कारक है। चूंकि इससे पांचवें भाव की शक्ति में वृद्धि होती है, अतः आपके लिए यह उत्तम शिक्षा प्राप्त करने में लाभदायक सिद्ध होगा। आप कम से कम एक डिग्री या डिप्लोमाधारी होंगे।

सामान्य शिक्षा (चौथे भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह चौथे भाव में उपस्थित हैं। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से यह एक अनुकूल संकेत है। ना केवल आप अपनी स्नातक की ही शिक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्थान से कोई व्यावसायिक शिक्षा या शिक्षा के उपरान्त

प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं।

बुद्धि, मेधा और योग्यता (पाँचवे भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध की पांचवें भाव के स्वामी के साथ युति है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अनुकूल संकेत दे रहा है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरणशक्ति वाले होंगे। आप असाधारण गुणों से सम्पन्न हो सकते हैं। आप ना केवल सुगमतापूर्वक अपनी स्नातक की शिक्षा ग्रहण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप सामान्य क्षेत्रों में उच्च शिक्षा जारी रख सकते हैं अथवा अपनी प्रतिष्ठा में वृद्धि करने के लिए या अपने व्यावसायिक स्तर में सुधार लाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्था से कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

वस्तु–परक शिक्षा (केन्द्र और त्रिकोन के बीच का सह संबंध)

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें एवं दसवें भाव के स्वामी की एक साथ युति है। तकनीकि या इंजीनियरिंग जैसे व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अत्यंत अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आप आधुनिक तकनीकियों को सीखने के लिए काफी उत्सुक हो सकते हैं, जो कि बहुत बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन में उपयोगी हो सकता है। अतः आप तकनीकि या इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त व्यापार प्रबंधन और विधि–अध्ययन जैसे विषय भी आपको आकर्षित कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, नौवें एवं दसवें भाव के स्वामी की युति है। तकनीकि या इंजीनियरिंग जैसी व्यवहारपरक शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह बहुत अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि, अवधारक स्मरण शक्ति, उत्तम प्रकृति तथा दैवीय ज्ञान से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार किसी भी व्यावसायिक पाठ्यक्रम को अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से पूर्ण करने में सक्षम होंगे। आपको कुटनीतिक कार्यों, विदेशी मामले अथवा आयात–निर्यात में अधिक रूचि हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप धर्म, दर्शन आदि में भी काफी रूचि ले सकते हैं। आप किसी धार्मिक या सांस्कृतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी दूरस्थ स्थान पर अथवा विदेश भी जा सकते हैं।

उच्च/व्यावहारिक शिक्षा और शोध (नौवें भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें तथा नौवें भाव के स्वामी की परस्पर युति है। अच्छी शिक्षा प्राप्ति के लिए यह बहुत लाभदायक योग है, जैसाकि पांचवा भाव योग्यता को एवं नौवां भाव उच्च शिक्षा को दर्शाता है। आपमें बहुत अच्छी दक्षता विद्यमान होगी तथा आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे। जैसाकि पांचवां भाव व्यावहारपरक शिक्षा को एवं नौवां भाव दूरस्थ स्थान या विदेश को भी दर्शाता है। अतः आप अपनी व्यावसायिक शिक्षा किसी प्रतिष्ठित विदेशी संस्थान से प्राप्त करेंगे।

गुप्त और रहस्यमय विद्याओं का अध्ययन और शोध

आपकी जन्मकुण्डली में, बारहवें भाव का स्वामी चौथे भाव में उपस्थित है। जैसाकि बारहवां भाव चौथे भाव से नौवां भाव है (या नौवें भाव से चौथा भाव है)। अतः आप अपनी सामान्य अथवा उच्च शिक्षा के लिए किसी दूरस्थ स्थान पर अथवा विदेश भी जा सकते हैं तथा वहां काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यद्यपि आप किसी दूरस्थ स्थान पर नहीं जाते हैं तो ऐसी संभावना है कि आपको स्कूल या कॉलेज या विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहना पड़ सकता है।

शिक्षा की संभावना और रूझान के क्षेत्र

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध के भिन्नाष्टक-वर्ग में, नौवें भाव में शुभ बिन्दु काफी संख्या (7 या 8) में हैं। यह एक अनुकूल योग है। संभवतः आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। प्रबल संभावना है कि आप अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए कोई व्यावसायिक पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करेंगे।

ऐसी शिक्षा जो बाद में व्यवसाय में काम आये

आपकी जन्मकुण्डली में, दसवें भाव के स्वामी की पांचवें भाव के स्वामी के साथ युति है। जैसाकि दसवां भाव ज्ञान का कारक है तथा पांचवा भाव योग्यता के स्तर को दर्शाता है। अतः यह बहुत ही अनुकूल संकेत है। यह योग ये सुनिश्चित करता है कि आपको अच्छी शिक्षा प्राप्त होगी तथा अनौपचारिक अध्ययन भी करेंगे, जिसका उपयोग आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में सम्पूर्ण कार्यकाल के दौरान प्रभावपूर्ण ढंग से करेंगे।

शिक्षा की गुणवत्ता और विस्तार (चर्तुविशांश से)

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता है) में, एक केन्द्र भाव के स्वामी की एक त्रिकोण भाव के स्वामी के साथ युति है। यह दर्शाता है कि आप व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षा जारी रख सकते हैं, जिसका संबंध तकनीकि या इंजीनियरिंग से हो सकता है।

भिन्नाष्टक वर्ग से शिक्षा की संभावना का आकलन

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। यह आपको उपयोगी सूचना को एकत्र करने के मामले में बुद्धिमान, सौम्य और सजग बनाएगा तथा आप उनका उपयोग प्रभावशाली रूप से व उद्देश्यपूर्ण ढंग से करने में सक्षम होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, ग्यारहवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपका विभिन्न विषयों में गहन रूझान होगा, जिसके बारे में आप ज्ञान व जानकारी एकत्र करेंगे। जो

कि आपको अपने मित्रों व परिचितों के मध्य आकर्षण का केन्द्र बनाने में मदद करेगा। वे लोग आपके विचारों को महत्व देंगे तथा आवश्यकता पड़ने पर कुछ मसलों पर आपसे सूझाव भी लेंगे।

व्यवसाय की संभावनाओं का ज्यातिषिय विश्लेषण

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य लग्न से दसवें भाव में उपस्थित है। अतः आप अत्यंत कर्मठ होंगे एवं अपने सभी प्रयत्नों में सफल होंगे। आपको सरकारी विभागों, दूतावासों आदि से संरक्षण प्राप्त होगा तथा अपनी मध्य आयु में आपको सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी ख्याति सुरक्षित रहेगी। आपमें नेतृत्व करने का गुण विद्यमान होगा तथा आप दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत होंगे। आपका उठना–बैठना उच्च स्तरीय लोगों के साथ होगा तथा आप अपने विभिन्न उपायों व प्रयासों से धन अर्जित करेंगे। आपको सराहना प्राप्त होगी तथा आपका नाम व यश चारों तरफ फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप बहुत लोकप्रिय होंगे तथा आपको धनी विवाहित महिलाओं के साथ नजदीकी संबंध से बहुत लाभ प्राप्त होगा। आप अनेक कौशल से युक्त होंगे, आप प्रभावशाली वक्ता तथा कलात्मक प्रतिभा वाले होंगे। आपमें सार्वजनिक जीवन जीने की अभिलाषा होगी तथा आप अपने रोजगार में कई बदलाव कर सकते हैं, यहां तक कि दूसरे क्षेत्रों में भी जा सकते हैं। आप बहुत कलाप्रवीण होंगे और यदि आप व्यवसाय में संलग्न हैं तो काफी कम उम्र में ही आप अत्यधिक उन्नति कर सकते हैं, किन्तु जल्दी पतन भी हो सकता है। आप अपने रोजगार के सिलसिले में कई दूरस्थ स्थानों की यात्रा कर सकते हैं और विदेश भी जा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति लग्न से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप अत्यंत भाग्यशाली होंगे क्योंकि यह जीवन में समृद्धि, खुशहाली और स्पर्द्धा के लिए सर्वोत्तम योग है। आप विभिन्न स्रोतों से आय का उपार्जन करेंगे, मानसिक कार्यों से धन अर्जित करेंगे, सरकारी अधिकारियों से सम्मान व संरक्षण प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवन में बहुत उन्नति करेंगे, विश्वास और ख्याति अर्जित करेंगे। आपका यश चिर स्थायी होंगा। आपमें नेतृत्व का गुण विद्यमान होगा, आप एक गुणवान व्यक्ति होंगे तथा धर्मों के प्रति आपकी गहरी आस्था होगी। आप कानून को मानने वाले जिम्मेदार नागरिक होंगे तथा समाज में लोग आपका बहुत सम्मान करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दशमेश बुध के साथ जुड़ा हुआ है। अतः आप बौद्धिक धन्धों में संलग्न हो सकते हैं। या फिर आप ट्रेडिंग और व्यापार एजेंसी के व्यवसाय में अच्छा कर सकते हैं। अपने व्यवसाय के सिलसिले में आप ज्ञान और सूचना के संग्रह व प्रसार के कार्य में संलग्न हो सकते हैं। आप शैक्षिक प्रतिष्ठानों से अथवा छपाई, प्रकाशन, किताबें, लेखन सामग्री आदि से भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में दशमेश (पेशा) शुक्र पर ग्यारहवें भाव के स्वामी (आय) मंगल की दृष्टि पड़ रही है। अतः आप अपने पेशे और आय के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप सक्रिय, उर्जावान, साहसी और निडर होंगे। आपमें एक प्रकार की दृढ़ता होगी जो आपको कभी हार

स्वीकारने की अनुमति नहीं देगी। अपने प्रयासों को सही दिशा देकर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आप अपने कॅरियर के शुरूआती समय में नौकरी में हो सकते हैं। आपकी प्रबल इच्छाएं ही आपका मार्गदर्शन करेंगी। आप अपने प्रयत्नों में सफल होंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य आजीविका का प्राथमिक कारक है। अतः आप सरकारी नौकरी में कार्यरत हो सकते हैं या सरकार के साथ संबंधित कार्यों में सफल हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप राजनीति से जुड़ सकते हैं या यहां तक कि राजदूत भी बन सकते हैं। आप आधुनिक या पारम्परिक दवाओं या हड्डी के रोगों का उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं अथवा नेत्र संबंधी विषयों में आपकी विशेष रूचि हो सकती है। सोना, तांबा, गहनें, घड़ियां व दसरे चमकीले धातुओं आदि का व्यापार आपके लिए अनुकूल होगा। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य अच्छी स्थिति में नहीं है तो आप चावल, गेंहू, उनी वस्तुओं, जूट उत्पाद, लकड़ियों के फर्नीचर आदि जैसे उपभोग योग्य वस्तुओं का कारोबार कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति आजीविका का गौण कारक है, इसलिए आपकी रूचि धन संबंधी मामलों में अत्यधिक होगी। जैसाकि आपके पेशे का कुछ संबंध बैंकिंग, बीमा, कर संबंधी मामले, सट्टा, निवेश आदि से हो सकता है। यदि शुक्र आपकी कुण्डली में अच्छी स्थिति में है तो आप कानून की अध्ययन कर सकते हैं तथा यदि बुध आपकी कुण्डली में अच्छी स्थिति में है तो आप सलाकार की हैसियत से कार्य कर सकते हैं या एक सलाहकार बन सकते हैं। आप ज्योतिष और उससे संबंधित विषयों जैसे मंत्र, तंत्र आदि के जानकार होंगे एवं एक लेखक भी बन सकते हैं। आपका धर्मों के प्रति गहरा झुकाव होगा एवं आप आध्यात्मिकता की तरफ आकर्षित हो सकते हैं। आप एक पुजारी या साधु हो सकते हैं। आपकी रूचि स्त्री–रोग विज्ञान अथवा मौसम विज्ञान में भी हो सकती है।

कालचक्र दशा अंश और जीव राशि से व्यवसाय का विश्लेषण

आपकी कालचक्र दशा अंश राशि – धनु

आपकी कालचक्र दशा जीव राशि – धनु

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु की आपके जीव–राशि (जीवन) पर दृष्टि पड़ रही है, अतः आप प्रसन्नचित्त स्वभाव व आशावादी दृष्टिकोण वाले ईमानदार व्यक्ति होंगे। आपमें धर्मों के प्रति गहरी आस्था होगी तथा आप पवित्र धार्मिक ग्रंथो का अध्ययन करेंगे। आप निरंतर धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन करेंगे तथा आपका छोटे बच्चों के प्रति अत्यधिक लगाव होगा। आपकी आय बहुत अच्छी होगी एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व आनन्दपूर्ण व्यतीत होगा। आप अपने खुद के व्यवसाय में संलग्न हो सकते हैं अथवा किसी बड़ी प्रतिष्ठित वित्तिय संस्थान में कार्यरत हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 3 (या कम) है। शुक्र के नैसर्गिक कारकों– विवाह व विवाहित जीवन की खुशियों के संदर्भ में यह भाग्यशाली योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। वह बहुत आकर्षक नहीं होंगी और ना ही किसी प्रतिष्ठित परिवार से होंगी। इसके अतिरिक्त उनमें व्यवहारकुशलता, सुसंस्कारीता व परिष्कृत रूचियों का अभाव हो सकता है। यद्यपि वह उद्यमशील हो सकती हैं, फिर भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं हो सकता है, जैसाकि वह विवादप्रिय तथा हठी प्रकृति की हो सकती हैं तथा यथार्थ से बिल्कुल विपरीत वृथा–अभिमानी स्वभाव की हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 5 (या अधिक) है। यह अत्यंत भाग्यशाली योग है। आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। वह बहुत ही दयालु, उदार, विवेकपूर्ण, सुसभ्य व कर्तव्यनिष्ठ होंगी तथा प्रतिष्ठित परिवार से संबंधित होंगी। आपका दाम्पत्य जीवन बहुत फलदायी व सुखमय व्यतीत होगा, क्योंकि आप पूर्ण रूप से सम्पन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह नवांश में सातवें भाव में है तथा इसका स्वामी लग्न कुण्डली में या नवांश कुण्डली में ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है। अतः यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपका दाम्पत्य जीवन अधिक खुशहाल नहीं हो सकता है। आपका अपने जीवनसाथी के साथ निरंतर गलतफहमियां और झगड़े हो सकते हैं जो अक्सर जीवन की सुन्दरता को तोड़ देते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, चन्द्रमा गुरु के साथ स्थित (या गुरु की उस पर दृष्टि पड़ रही है) है, जबकि शुक्र बुध के साथ जुड़ा हुआ है (या बुध की उस पर दृष्टि पड़ रही है)। यह एक अत्यंत शुभ इष्ट–योग है। आप अपने विवाह तथा वैवाहिक जीवन की खुशहाली के संदर्भ में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। खुशहाली की किरणें आपके आस–पास सदैव जगमगाती रहेंगी औा आप सुख के सागर में सदैव गोते लगाते रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह शुक्र ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है, जबकि यह प्रतिकूल षष्ठेश के साथ जुड़ा हुआ है। अतः यह अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके जीवनसाथी को कुछ दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है तथा आपका दाम्पत्य जीवन शांतिपूर्ण अथवा सुखमय नहीं हो सकता है। यद्यपि आपके कोई चाचा आपके विवाह के अंतिम निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं अथवा यदि कोई ऐसा रिश्तेदार जो कि आपके और आपकी पत्नी दोनों का सामान्य रूप से संबंधी हो तो समस्याओं की गंभीरता तुलनात्मक रूप से कम

होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में प्रतिकूल तृतीयेश चौथे भाव में उपस्थित है। यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। जबकि यह वक्री है। अतः यह अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो यह दाम्पत्य जीवन की खुशियों में वृद्धि करने के लिए अनुकूल नहीं है, क्योंकि संभवतः अप्रत्याशित घटनाओं तथा परिस्थितियों में तीव्र उतार-चढ़ाव के कारण शांति का अभाव हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 4 (या 5) है। यह एक अनुकूल योग है। आपकी पत्नी बहुत विचारवान होंगी। वह आपकी पसन्द और नापसन्द को उचित महत्व देंगी तथा आपके विचारों का सम्मान करेंगी। आपका दाम्पत्य जीवन खुशहाल व आनन्दपूर्ण व्यतीत होगा।

आपकी नवांश कुण्डली में सप्तमेश एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है। यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका वैवाहिक जीवन गलतफहमियों और निरंतर भावनात्मक टकराव के कारण संभवतः दुखमय व्यतीत हो सकता है।

आपकी नवांश कुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह सातवें भाव में उपस्थित है, जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका वैवाहिक जीवन बिना वजह की गलतफहमियों और निरंतर होने वाले भावनात्मक तकरारों के कारण खुशहाल नहीं हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी चौथे भाव में उपस्थित है तथा यह दूषित नहीं है-जैसाकि यह अस्त या नीचस्थ या ग्रसित या वक्री नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग है। आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। वह बहुत दूरदर्शी तथा समझौतावाती प्रवृति की होंगी। वह सदैव आपसे प्रेम करेंगी तथा आपके प्रति विश्वसनीय व बहुत वफादार होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें भाव का स्वामी लग्न से केन्द्र भाव में स्थित है। इसके अतिरिक्त यह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है तथा यह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के आधिपत्य वाले नवांश राशि में भी स्थित है। अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। वह पवित्र और समर्पित महिला होंगी तथा आपके दाम्पत्य जीवन को परमसुखमय और आनन्दमय बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगी। वह सदैव आपके लिए गर्व व आनन्द का स्रोत बनी रहेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह शुक्र छठवें भाव के स्वामी के साथ स्थित

है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। वह रोगी, मनमौजी तथा तुनकमिजाज प्रकृति की हो सकती हैं, जिससे आपके वैवाहिक जीवन में सुख–शांति का अभाव हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन की अवधि भी बहुत लम्बी नहीं हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र से गणना करने पर तीन महत्वपूर्ण राशियों (चौथे, आठवें व बारहवें) में से केवल एक राशि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह से अधिग्रहित है, जबकि उस राशि में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह काफी प्रतिकूल योग है जिसे अरिष्ट–योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल सौम्य प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो यह योग आपके दाम्पत्य जीवन की खुशियों को बिगाड़ने तथा कलह पैदा करने की संभावना व क्षमता रखता है।

स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पीड़ित है, अतः आप किसी प्रकार के जैविक विकार से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी मौलिक संरचना अधिक उत्तम नहीं हो सकती है एवं आपमें आनुवांशिक रूप से कोई रोग प्रवेश कर सकता है– संभवतः अपने पिता से।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा पीड़ित है, अतः आपको कुछ क्रियात्मक अनियमितता से पीड़ित होना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य अधिक समय तक अच्छा नहीं रह सकता है तथा आपको बाह्य कारणों जैसे जलवायु व वातावरणीय स्थितियों में परिवर्तन के कारण रोग हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न पीड़ित है। अतः आपमें रोगों के लड़ने की उत्तम प्रतिरोधक क्षमता नहीं होगी। आप कभी–कभी एक या अन्य रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव का स्वामी (आठवां भाव – गंभीर समस्या) सूर्य के साथ स्थित है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप अपने जीवनकाल में कभी किसी गंभीर रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव के स्वामी (आठवां भाव – गंभीर समस्या) की चंद्रमा पर दृष्टि पड़ रही है। आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप कभी–कभी किसी मामूली रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव का स्वामी (बारहवां भाव– बिस्तर पर रहने या अस्पताल में भर्ती होने की दशा) चंद्र राशि में स्थित है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप कभी–कभी किसी एक या अन्य रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव के स्वामी (बारहवां भाव– बिस्तर पर रहने या अस्पताल में भर्ती होने की दशा) की सूर्य पर दृष्टि पड़ रही है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आपको अपने जीवन में कभी किसी गंभीर रोग से पीड़ित होना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल सिंह राशि में स्थित है तथा लग्न उससे पीड़ित है। अतः आप बुखार, मलेरिया, हृदय रोग, हृदय का फैलाव, कटने, जलने आदि से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि कन्या राशि में स्थित है तथा चन्द्रमा उससे पीड़ित है। अतः आप अत्यधिक प्रवाह, कृमि रोग, श्लेष्मा और आंतों में कुछ विकार से ग्रसित हो सकते हैं। आपके पैरों व अंगुठे में भी दर्द होने की कुछ संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी अपनी नीच राशि में स्थित है। अतः आपको अपने जीवन काल में कभी किसी गंभीर दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है। आपको कोई बड़ी शल्य चिकित्सा भी करवानी पड़ सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में दो घोर अशुभ ग्रह मंगल व शनि एक ही राशि को प्रभावित कर रहे हैं तथा वह राशि वृश्चिक है। अतः इससे संबंधित शरीर का भाग किसी दुर्घटना के कारण अथवा किसी अन्य प्रकार से प्रभावित हो सकता है, जिसके कारण आपको अत्यधिक सावधान रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में वृश्चिक राशि पर मंगल व शनि का संयुक्त प्रभाव है। अतः किन्ही आन्तरिक अथवा बाह्य कारणों से आपके गुर्दे, गुप्तांगों व गुदा में विकार होने की संभावना है।

आप पुरुष हैं और पीड़ित राशि एक सम राशि है। अतः आपके शरीर के दांएं हिस्से जो कि पीड़ित राशि दर्शाती है, उसमें चोट लगने या किसी अन्य प्रकार से प्रभावित होने की संभावना है।

यात्रा, भ्रमण और विदेश यात्रा

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश चर-राशि में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप अनेक परिवर्तन करेंगे एवं प्रायः समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश चौथे भाव में उपस्थित है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है और अष्टमेश ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक प्रतिकूल योग है जो कि आकस्मिक स्थानान्तरण की संभावना को दर्शाता है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको कई बार अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है और आप लम्बे समय तक एक स्थान पर नहीं रह सकते हैं। या फिर, ऐसी भी संभावना है कि आपका व्यवसाय/नौकरी स्थानन्तरणीय हो अथवा कई बार आप अपने व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आपको अपना निवासस्थान बदलना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, एकादशेश चतुर्थेश के साथ उपस्थित है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है और एकादशेश ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक प्रतिकूल योग है जो कि आकस्मिक स्थानान्तरण की संभावना को दर्शाता है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको कई बार अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है और आप लम्बे समय तक एक स्थान पर नहीं रह सकते हैं। या फिर, ऐसी भी संभावना है कि आपका व्यवसाय/नौकरी स्थानन्तरणीय हो अथवा कई बार आप अपने व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आपको अपना निवासस्थान बदलना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 150 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह किसी आकस्मिक व अप्रत्याशित घटनाक्रम के कारण आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल-निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो संभावित कारण परिस्थितियों में आकस्मिक परिवर्तन, दुर्घटना या अशुभ घटनाएं आदि हो सकती है।

शुभ दिशा का चुनाव ? यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपके लिए अनुकूल दिशा दक्षिण-पश्चिम होगी।

विंशोत्तरी दशाफल

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

चन्द्रमा दशा (05:12:2016 – 05:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में चौथे भाव में स्थित है। आपको सभी यौन सुख मिलेंगे। आपको भिक्षा देने में रूचि होगी। मित्र आपको प्रसन्न रखेंगे। आपको वाहन का सुख प्राप्त होगा। आप माता से अलग हो सकते हैं या चंद्रमा के भयानक रूप से पीड़ित होने से आपकी माता की मृत्यु हो सकती है। आपका उनसे किसी भी रूप में अलगाव हो सकता है। यदि माता कहीं कार्यरत हैं, तो वह अधिकतर समय आपसे दूर रही सकती हैं या आप अपनी पढ़ाई के समय छात्रावास में रह सकते हैं और नौकरी मिलने पर किसी अलग स्थान पर आप जा सकते हैं। यह एक छुपा वरदान होगा, जिसमें आपकी माता की मृत्यु नहीं हो सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि आपको माता का सुख और साथ नहीं मिल सकता है। आप एक नए घर का निर्माण कर सकते हैं या आप अपने पुराने घर को नया रूप दे सकते हैं। आपका यश बढ़ेगा। आप कविता और दूसरे लेखनों में रूचि लेंगे।

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में मेष राशि में स्थित है। चंद्रमा की अपनी दशा के दौरान, आपके जीवनसाथी और मवेशियों को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि, आपको अपने जीवनसाथी एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप विदेशी भूमि पर काम करने में रूचि लेंगे। आपका व्यय अधिक होगा। आपका व्यवहार निर्दयी हो सकता है। आपको सिर की बीमारियों और भाइयों व शत्रुओं से परेशानियां हो सकती हैं। आप अनियंत्रित परिस्थितियों, बहुधा रोगों के कारण अपने लोगों से अलग हो सकते हैं।

दशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी

तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या धन–संपत्ति, रोग आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चाँदी की अंगूठी में मोती धारण करें।
2– चाँदी का कमल दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

चन्द्रमा अर्न्तदशा (05:12:2016 से 05:10:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यदि यह अन्तर्दशा विवाह की अवस्था के दौरान चलती है, और आप अविवाहित हैं, तो आपके विवाह की संभावना है। यदि पहले से विवाहित हैं, तो एक पुत्री का जन्म हो सकता है। आप किसी प्रियजन के विवाह समारोह में शामिल हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में आपके भाई–बहनों का विवाह हो सकता है– यदि वे विवाह योग्य हैं। आपको नये परिधान प्राप्त होंगे। आपको बहुत ज्ञानी और संस्कारित लोगों के सम्पर्क में आने के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको जीवनसाथी और संतानों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप अपनी माता की अभिलाषाओं को पूरा करेंगे तथा साथ ही उनका पूर्ण प्रेम, स्नेह और ध्यान आपको मिलेगा। आपको संबंधियों और मित्रों से अवसरीय मदद मिलेगी। आपको चहुंमुखी संपन्नता तथा उत्तम नींद प्राप्त होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, धन–सम्पत्ति, माता, भाई–बन्धु, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चंद्रमा के बीज मंत्र का पाठ करें।
2– सफेद गाय या चाँदी की गाय का दान करें।
3– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (05:12:2016 से 31:12:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। यदि आपकी आर्थिक स्थिति पहले से उत्तम है, तो आपको भूमि और सम्पत्ति प्राप्त होगी। आप एक आरामदायक और खुशहाल जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको सरकार का समर्थन प्राप्त होगा और स्वादिष्ट भोजन मिलेगा। यदि आप साधारण परिवार में जन्में हैं, तो भी आप बिना किसी अधिक प्रयास के अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (31:12:2016 से 17:01:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने आस–पास के लोगों से उत्तम सम्मान मिलेगा। आपकी आर्थिक स्थिति

संतोषजनक होगी। सामान्यतः यह एक साधारण दशा होगी। जीवन में बहुत अशांति नहीं होगी। हालाँकि आपको अपने शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (17:01:2017 से 04:03:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक मिली–जुली दशा होगी। आपको सुख और दुख का समान रूप से अनुभव होगा और प्रायः उसमें बदलाव होता रहेगा। घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। कई सारे लोग आपसे मिलने आयेंगे और आपका साथ देंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:03:2017 से 14:04:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको नौकरी में पदोन्नति प्राप्त होगी। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको बहुत उत्तम लाभ प्राप्त होंगे। घर पर वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी और संतान की आपको अति सुखद संगति मिलेगी। विशिष्टों से आपको सहयोग मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (14:04:2017 से 01:06:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर होगी, फिर भी अप्रत्याशित रूप से आपके व्यय बढ़ सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी के साथ झगड़ा हो सकता है और वह बीमार हो सकती है। संतान भी आपके लिए परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपको बुखार, पेचिश और सिर दर्द की शिकायत हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:06:2017 से 14:07:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका रूझान नयी चीजों को सीखने की तरफ होगा। इस दशा के दौरान आप अपने काल्पनिक विचारों को व्यावहारिक रूप में प्रयोग कर सकते हैं। आपको लेखन के क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त होगा। रोजगार में बदलाव के लिए यह एक उत्तम समय है। शैक्षिणिक क्षेत्रों में आपकी संतानों की सफलता आपको खुशी प्रदान करेगी। जीवनसाथी का भी आपको सुन्दर सहयोग मिलेगा। हालाँकि, आपके गुप्त शत्रु आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (14:07:2017 से 01:08:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अपने परिवार से दूर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। एक समय पर दो प्रतिष्ठान होंगे। आपको निरन्तर धन की प्राप्ति होगी, लेकिन आय से अधिक व्यय भी हो सकता है। आपको धन उधार लेने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है और आप उसे वापस करने में असमर्थ हो सकते हैं। आपको अपनी कुछ वस्तुओं को बेचना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:08:2017 से 20:09:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपका या आपकी बहन का विवाह हो

सकता है। ससुराल से आपको विरासत में कोई सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है। शुक्र की वस्तुओं से आपको लाभ होगा। अज्ञात महिलाओं के साथ आप शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, जिससे आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (20:09:2017 से 05:10:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। उनके साथ आपके संबंध भी आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपके पुत्र का स्वास्थ्य भी उत्तम नहीं हो सकता है। आपको बहुत गंभीर स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

मंगल अन्तर्दशा (05:10:2017 से 06:05:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपको पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। रक्त की अशुद्धता, व्यग्रता, कफ, आग, विद्युत और अन्य गर्म चीजों के कारण होने वाले विकारों से आप ग्रस्त हो सकते हैं। आप चोरों और शत्रुओं के कारण अपना धन गवाँ सकते हैं। आपमें धैर्य की कमी हो सकती है और आप हर स्तर पर चिड़चिड़े हो सकते हैं। एक समय पर आप सबसे संतुष्ट व्यक्ति होंगे, जिसे सांसारिक सुखों की आवश्यकता नहीं होगी, लेकिन अचानक आपका दिमाग पलट सकता है और आप अपने कार्य क्षेत्र में असफल हो सकते हैं। आपक स्थानान्तराण हो सकता है या दंड अथवा गबन के आरोप के कारण आप पूर्व प्राप्त पद से हाथ धो सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन हानि, मकान, मुकदमा आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– मंगल के बीज मंत्र का दस हजार जप करें।

2– ब्रह्मचर्य बनकर हनुमान बाहुक का पाठ करें।

3– मूंगा धारण करें।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (05:10:2017 से 18:10:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप कफ या तपेदिक से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको आग से भय हो सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। जनता से आपको अनादर मिल सकता है। शत्रु आपको भयभीत करने की कोशिश कर सकते हैं। भाइयों से आपका विवाद हो सकता है। आपका एक नजदीकी संबंधी आपके जीवन को कष्टकारी बना सकता है। महिलाओं से आपको विरोध का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (18:10:2017 से 19:11:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा के दौरान पैदा हुए रोगों का प्रभाव और बढ़ सकता है। आप अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं। उपचार में आपका भारी धन व्यय हो सकता है। अधीनस्थ और विशिष्ट लोग आपके

लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। बेतुकी बातों पर आपका अपने जीवनसाथी से झगड़ा हो सकता है और आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (19:11:2017 से 17:12:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप एक राजा की तरह आनन्द प्राप्त करेंगे। आप हर प्रकार के रोगों से मुक्त रहेंगे। आपको अप्रत्याशित क्षेत्रों से धन प्राप्त होगा। बहने आपकी प्रसन्नता का कारण होंगी। यदि अब तक कोई संपत्ति विवाद अनसुलझा है, तो उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा। आप तनावरहित जीवन व्यतीत करेंगे, समय पर भोजन और अपनी मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:12:2017 से 20:01:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन को छोड़कर पिछली दशा में आपको प्राप्त अन्य सभी सुख गायब हो सकते हैं। आपका व्यय आय से अधिक हो सकता है। चूंकि, आपने पिछली दशा में पर्याप्त धन संग्रह कर लिया था, अतः इस दशा में आपको उसकी कमी महसूस नहीं होगी। आपको अपने विरोधियों से सावधान रहना चाहिए। बिना किसी कारण के विवाद हो सकते हैं। ऐसा 7 दिनों तक हो सकता है। उसके बाद स्थिति सामान्य हो जायेगी।

बुध प्रत्यंतर्दशा (20:01:2018 से 19:02:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके घुटने में चोट लगने या आप्रेशन होने की संभावना है। आप गठिया रोग से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको सट्टों और विशिष्ट व्यक्तियों से लाभ मिलेगा। आपका मिजाज प्रायः अन्तरालों पर बदलता रहेगा। आपमें एकाग्रता का अभाव हो सकता है। आपके किसी एक संतान का स्वास्थ्य आपकी चिन्ता का कारण बन सकता है। इस दशा के दौरान वास्तव में आपके जीवनसाथी को परेशानी होगी– जैसाकि उसे आप और आपके संतान की देखभाल करनी पड़ेगी।

केतु प्रत्यंतर्दशा (19:02:2018 से 04:03:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं होगी। परिवार में विवाह या धार्मिक कार्यों जैसे समारोहों में भारी व्यय होगा। आपका एक नजदीकी मित्र आपको धोखा सकता है और आपका धन तथा आभूषण लेकर भाग सकता है। आपके भाइयों के लिए यह एक खराब दशा हो सकती है। आपके किसी नजदीकी संबंधी से आपका अप्रत्याशित रूप से वियोग हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (04:03:2018 से 08:04:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सम्पत्ति और सट्टों में निवेश करने के लिए यह शुभ समय है। आपके किसी नजदीकी की मृत्यु के कारण आपको अप्रत्याशित रूप से कोई विरासतीय उपहार मिल सकता है। आपको महिलाओं से आनन्द और लाभ मिलेगा। आप किसी महिला के धन दौलत की देखभाल कर सकते हैं और साथ ही उससे लाभ प्राप्त कर सकते हैं। महिलाओं के कारण झगड़े और लड़ाईयां हो सकती हैं। मित्र आपके शत्रु बन सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (08:04:2018 से 19:04:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने सगे भाई बहनों से लाभ प्राप्त करेंगे। आपको नेत्र रोग, बुखार और जोड़ों में दर्द की शिकायत हो सकती है। आप ऋण ले सकते हैं और उसे वापस करने में असक्षम हो सकते हैं। आप कहीं छिप सकते हैं और कुछ मानसिक शांति पाने के लिए नशे का सहारा ले सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:04:2018 से 06:05:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सरकार का समर्थन मिलेगा। आपको जलीय उत्पादों और दवाओं के व्यापर में लाभ होगा। आपको अति उत्तम शैक्षिणिक परिणाम प्राप्त होंगे। यदि आपका कोई प्रेम प्रसंग चल रहा है, तो वह शादी में परिणित हो सकता है। आप किसी दूर स्थान की यात्रा कर सकते हैं और एक नया घरेलू उपयोग का सामान खरीद सकते हैं।

राहु अर्न्तदशा (06:05:2018 से 05:11:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं तथा बाद में उसके लिये पछतावा होगा। लेकिन तब तक बहुत देर हो सकती है और सबको अपना शत्रु बना सकते हैं। हालांकि, चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा जो आगे आने वाली है, के दौरान विभिन्न चीजों के लिए आपके रवैये और व्यवहार में वास्तविक बदलाव आयेगा। आपके संबंधियों को समस्यायें हो सकती हैं और आपको उन पर धन खर्च करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपको जलीय पदार्थों से विषाक्तता होने की संभावना हो सकती है। आप बुखार, अपच या गठिया रोग से ग्रसित हो सकते हैं। आपको आंधी, तूफान और तड़ित से खतरा हो सकता है। आपको मदिरा से सर्वथा दूर रहना चाहिए– जैसाकि यह एक जलीय पदार्थ है। चूंकि आपकी आय से व्यय अधिक हो सकता है, अतः आपको धन व्यय करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या नौकरी, संतान, कर्ज, धन हानि आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– मंगल का व्रत रखें एवं हनुमान जी के चरणों में सिंदूर अर्पित करें।
2– दुर्गासुक्त का पाठ करें।
3– चाँदी का हाथी दान करें।

राहु प्रत्यंतर्दशा (06:05:2018 से 28:07:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप चर्म रोगों, सिर में चोट का सामना कर सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है। आपके व्यापार में अपने भागीदार या अपने किसी एक अधीनस्थ से धोखा मिल सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (28:07:2018 से 09:10:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप धार्मिक क्षेत्र में थका देने वाली गतिविधियों में शामिल रहेंगे। समय पर आप भोजन नहीं कर पायेंगे। आपके पुत्र पढ़ाई में विशेष योग्यता प्राप्त करेंगे। घरेलू वातावरण खुशहाल होगा। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपके ज्ञान मे बृद्धि होगी। संबंधियों का आपको साथ मिलेगा और आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। परिवार की महिलाओं का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:10:2018 से 03:01:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सभी संभव विपदाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी को तत्काल चिकित्सकीय उपचार की आवश्यकता हो सकती है। आपकी या आपके जीवनसाथी की शल्य चिकित्सा हो सकती है। आप लकवे का शिकार हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको लॉटरी और सट्टों से दूर रहना चाहिए।

बुध प्रत्यंतर्दशा (03:01:2019 से 22:03:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपने क्षेत्र में विशेष ज्ञान प्राप्त होगा। आपका एक चचेरा भाई आपके परिवार के लिए समस्यायें पैदा कर सकता है। आपकी बहन का विवाह हो सकता है। प्रायः परेशानियां हो सकती हैं, किसी बड़े व्यक्ति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है– संभवतः दादा या दादी को, जिससे आपका अपने सहोदरों से अलगाव हो सकता है। आपको जीवनसाथी से लाभ मिल सकता है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (22:03:2019 से 23:04:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा निराशापूर्ण हो सकती है। परिवार से अलगाव के कारण आप अकेला महसूस कर सकते हैं और आपमें असुरक्षा की भावना आ सकती है। यदि आप परिवार से अलग नहीं होते हैं, तो भी संयुक्त परिवार मे रहते हुए आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। आपकी बौद्धिक क्षमता का ह्रास हो सकता है और आपको धन हानि हो सकती है। नये शत्रुओं से आपको खतरा हो सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:04:2019 से 23:07:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। घरेलू घटनाओं के कारण आप निराश हो सकते हैं। आपके जीवनसाथी आपके मित्रों का साथ दे सकती है। बुरी आत्माओं से आपको खतरा हो सकता है। आपका वाहन खो सकता है या दुर्घटना हो सकती है। आपको रति जन्य रोग हो सकते हैं। आपके गुप्तांगों और गुदा में खुजली हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:07:2019 से 19:08:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको ससुराल से सम्पत्ति मिलेगी, लेकिन मानसिक शांति का अभाव हो सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान के लिए यह दशा बहुत खराब हो सकती है। आप उनकी आवश्यक देखभाल नहीं कर पायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (19:08:2019 से 04:10:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। कोई भी बुरा परिणाम देने में राहु अप्रभावी रहेगा। आप ईश्वर की आराधना में पूरी

तरह से रत रहेंगे। आपको गंभीर सर्दी और खांसी हो सकती है। सम्मान की हानि हो सकती है। नजदीकी और प्रियजनों से झगड़ा हो सकता है। आप अपने से बड़ी महिलाओं के साथ मौज–मस्ती करेंगे और उन पर धन बर्बाद करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (04:10:2019 से 05:11:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है। यदि एक या तीनों ग्रह भी उत्तम स्थिति में हैं, तो भी आपको बहुत कष्ट हो सकते हैं। एक समस्या हल होगी, तो दूसरी समस्या खड़ी हो जायेगी। आपको धन और सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आपके गुदा में फोड़े या बवासीर हो सकता है। रक्त में खराबी के कारण रोग हो सकते हैं। यदि राहु और मंगल अशुभ भाव या राशि में स्थित हैं, तो आपको रक्त चढ़वाना पड़ सकता है।

गुरू अन्तर्दशा (05:11:2019 से 07:03:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा शुभ और उत्कृष्ट होगी। यदि बृहस्पति आपकी कुण्डली में शुभ नहीं भी है, तो भी आपको विषम परिणाम नहीं प्राप्त होंगे। आपमें राहु की अन्तर्दशा– जो पहले आयेगी– के दौरान सहिष्णुता की भावना का विकास होगा और आपको प्राप्त सीख बृहस्पति की अन्तर्दशा के दौरान पूरी तरह से आपको एक नया इंसान बनायेगी। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा देंगे। आपकी सोच में परिपक्वता होगी और गलत–सही की पहचान करने की क्षमता होगी।

आपको उत्तम कपड़ों और आभूषड़ों को पहनने में अधिक रूचि होगी। आप उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। अधिकतर लोग आपको पसन्द करेंगे। आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। विभिन्न स्रोतों से आप आय प्राप्त करेंगे और संतानों के मामले में आप बहुत सुखी होंगे। आपकी संतानें भी आपको खुशियां प्रदान करेंगी। आपमें वाहन प्राप्त करने की चाह होगी, जो इस अन्तर्दशा के अन्त तक पूरी होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, दुर्घटना आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2– काली गाय या भैंस का दान करें।

3– शनिस्तोत्र का पाठ करें।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (05:11:2019 से 09:01:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। आपको सभी कामों में सफलता मिलेगी। आप प्रायः तीर्थस्थानों की यात्रा करेंगे। धन अर्जित करने में आप बहुत व्यस्त रहेंगे। अतः आप उत्तम और समयबद्ध भोजन प्राप्त नहीं कर सकेंगे। आपका विवाह हो सकता है और आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप एक ऊँचे पद को प्राप्त करेंगे। आपके घर पर शुभ समारोह आयोजित होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (09:01:2020 से 26:03:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और सम्पत्ति खरीदेंगे। आपको वाहन का लाभ होगा। सभी से आपको स्नेह मिलेगा। इस दशा के दौरान आप कई लोगों को भोजन करायेंगे। महिलाओं से आपको अपमान मिल सकता है। नौकरानी और अन्य निचले स्तर के लोगों के साथ आप मौज–मस्ती प्राप्त कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (26:03:2020 से 03:06:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप वाहन और आभूषण खरीदेंगे। आप शास्त्रों और वेदों को सीखने में रूचि लेंगे। निवेश के लिए यह एक अति उत्तम दशा होगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। आपका विवाह हो सकता है। अपने जीवनसाथी और संतान के साथ आप आनन्दभ्रमण पर जायेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (03:06:2020 से 02:07:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक असहज दशा हो सकती है। परिवार के किसी बड़े व्यक्ति को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। शत्रु परिवार में कलह उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आपकी बहन के विवाह में परेशानियां आ सकती हैं। आपके आभूषण खो सकते हैं। सरकारी और विशिष्ट अधिकारियों से आपको परेशानियां हो सकती हैं। आपको पीलिया या जिगर की अन्य समस्यायें हो सकती हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (02:07:2020 से 21:09:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्ट रहित दशा होगी। आपको वस्त्र, रत्न और आभूषण प्राप्त होंगे। आप अपने जीवनसाथी सहित महिलाओं को खुश करने में व्यस्त रहेंगे। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। आप कई प्रकार की चीजें सीखेंगे। आप समारोहों और अन्य मौज–मस्ती के कामों में पूरी तरह से रत रहेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (21:09:2020 से 15:10:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सरकार से लाभ होगा। आप रोजगार में बदलाव कर सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो चुनाव लड़ने के लिए यह एक उत्तम समय है। आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:10:2020 से 25:11:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी अधिकतर कामनाओं को पूरा करने में सक्षम होंगे। निवेश के लिए यह उपयुक्त समय है। आपका विवाह हो सकता है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। विभिन्न स्रोतों से आपको धन का लाभ होगा। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित हो सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के अन्तिम दो दिन आपके पूरे परिवार के लिए बहुत खराब हो सकते हैं। किसी दूर स्थान से कोई अशुभ समाचार मिल सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (25:11:2020 से 24:12:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पेट में अल्सर, तीव्र जलन, अपचन, बवासीर या गुदा में दर्द की शिकायत हो सकती है। आपको हथियारों से खतरा हो सकता है। अपने जीवनसाथी और संतान से आपका अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (24:12:2020 से 07:03:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। परिणाम लगभग पिछली दशा के समान ही होंगे। आपको अचानक धन का लाभ हो सकता है। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद सुलझ जायेंगे। आपके सहोदरों को कष्ट हो सकता है।

शनि अन्तर्दशा (07:03:2021 से 05:10:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अकथित परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप संबंधियों के कारण दुख और खतरों का सामना कर सकते हैं। आप, आपका जीवनसाथी, संतानें, माता–पिता एक साथ कई रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपका चिकित्सकीय खर्चा बढ़ सकता है। आप उपचार के विभिन्न तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद कर सकते हैं। हालांकि, अन्तर्दशा के अन्त में आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो कुछ उपचार के तरीके बतायेगा और आप उनका प्रयोग आखिरी उपाय के रूप में करके परिणाम प्राप्त करेंगे।

बिना उपायों के प्रयोग के अगली बुध की अन्तर्दशा में सुधार होना तय है– जो कि सबसे उत्तम दशा होगी। परिस्थितियों के कारण आपको खुशियां प्राप्त होने में कठिनाई आ सकती है। आपको अपनी माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– जैसाकि यह अन्तर्दशा माता के लिए संकटकरी हो सकती है। आपको अपने परिवार के बड़ों या पारिवारिक देवता का शाप लग सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है और आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में बहुत परेशानी हो सकती है। डॉक्टर रोग का पता लगाने में असफल हो सकते हैं। अन्ततः आपको पता चल सकता है कि कोई अदृश्य ताकत आपके शरीर के अन्दर है। आपको सरकारी अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शनि की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या शत्रु, माता, संबंधी, भाई–बन्धु, कर्ज आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– रोज शनि स्तोत्र का पाठ करें।
2– महामृत्युंजय मंत्र का जप एवं हवन करें।
3– सोने की गाय या भैंस का दान करें।

शनि प्रत्यंतर्दशा (07:03:2021 से 06:06:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दूसरों की सलाह मानकर अदृश्य जाल में फंस सकते हैं। शत्रु आपको केवल हताश करने के लिए गलत सलाह दे सकते हैं। आपके सगे भाई बहन आपके द्वारा दिये गये गलत उपचार के कारण परेशान हो सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (06:06:2021 से 27:08:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में जीवन के अति कटु अनुभवों का अहसास इस दशा में धीरे–धीरे बदल जायेगा। आपमें एक ऐसा अहसास विकसित होगा, कि आपके आस–पास की हर चीज वास्तविक रूप से आपके अनुकूल हो रही है। हालाँकि आपको पूर्णिमा और कृष्ण पक्ष के दौरान बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको इन दिनों में लम्बी यात्रायें नहीं करना चाहिए– जैसाकि कुछ दुर्घटनायें हो सकती हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (27:08:2021 से 30:09:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान अनिश्चितता की स्थिति बनी रहेगी। एक के बाद एक समस्यायें पैदा हो सकती हैं। परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। परिवार में वैवाहिक संबंध टूट सकते हैं। सम्पत्ति के बंटवारे में विवाद हो सकता है, आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे और बाहरी लोगों से आपका झगड़ा हो सकता है। जीवनसाथी और संतान आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (30:09:2021 से 04:01:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके प्रेमपूर्ण जीवन में उतार–चढ़ाव आ सकते हैं। आप और आपके जीवनसाथी के बीच परस्पर प्रेम एक समय पर शिखर पर होगा और थोड़े ही समय में वह धरातल पर आ सकता है। आप दोनों को अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बनाने के अवसर मिलेंगे, जिससे आप दोनों के बीच प्रायः कटुता आ सकती है। इस दशा के दौरान संतानों को कष्ट हो सकता है। रक्त संबंधी रोग हो सकते हैं। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (04:01:2022 से 02:02:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत खराब दशा हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य गंभीर हो सकता है। आपके अपने पिता के इलाज में भारी धन व्यय करना पड़ सकता है। साथ ही आपकी माता को लकवा हो सकता है। आपको अपने रोजगार या व्यापार से दूर होने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (02:02:2022 से 22:03:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। बहुत अधिक गतिविधियां नहीं होंगी। हालाँकि, आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी आय भी कुछ हद तक बेहतर होगी। आप समय–समय पर मौज मस्ती करेंगे और तीर्थयात्रा पर जायेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (22:03:2022 से 25:04:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको अपने शरीर के सुरक्षा की अधिक देखभाल करनी चाहिए। प्रायः आपको छोटी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। ये दुर्घटनायें सिर्फ वाहन से ही

नहीं, बल्कि स्नानागार में फिसलने, सब्जी आदि काटते समय चाकू से कटने से भी हो सकती है। आपका अपने जीवनसाथी से प्रायः विवाद हो सकता है। आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (25:04:2022 से 20:07:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली दशा में कामों की शुरूआत कर दी थी, लेकिन आपका उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता है और आपने जो कुछ निवेश किया था, उसका आपको नुकसान हो सकता है। अतः आपके लिए यह बेहतर होगा, कि आप अपनी पूंजी तैयार रखें, जिसकी किसी भी समय आवयकता पड़ सकती है। आपके जीवनसाथी से आपके प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आप समय पर भोजन नहीं कर पायेंगे। यदि मंगल बली है, तो आप मंगल से संबंधित वस्तुओं से उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (20:07:2022 से 05:10:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने पिछली कुछ दशाओं में जो खोया है, वह इस दशा में वापस मिल जायेगा। आपकी प्रगति धीरे–धीरे शुरू हो जायेगी। इस प्रत्यंतर्दशा के मध्य में आपको सारभूत आय होगी। आपके अपनी संतान और जीवनसाथी से आत्मीय संबंध होंगे।

बुध अन्तर्दशा (05:10:2022 से 06:03:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः धन प्राप्त करने के लिए यह सबसे उत्तम दशा है। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा। हालांकि, मात्रा आपके परिवार की पृष्ठभूमि और आपको प्राप्त पद के स्तर के अनुसार होगी। आपको सुन्दर परिधान, आभूषण तथा नये मवेशी प्राप्त होंगे। आप अपने सभी उपक्रमों में सफलता और विभिन्न तरीकों से लाभ की आशा कर सकते हैं। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी तथा आपको समाज में उचित स्थान प्राप्त होगा। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा से आप संपन्नता प्राप्त करेंगे। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर भी है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत परेशानी नहीं होगी।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, व्यापार, प्रतिष्ठा, धन–संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– दुर्गा की पूजा करें एवं छोटी कन्याओं की सेवा करें।
2– विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।
3– बकरी का दान करें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (05:10:2022 से 18:12:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप अपनी अधिकतर चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। धन का सहज

आगमन होगा। आप भूमि, सम्पत्ति और आभूषण खरीदेंगे। आपको जीवनसाथी और संतान को सुख प्राप्त होगा। व्यापार में सम्पन्नता आएगी। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी। यदि अब तक कोई सम्पत्ति विवाद अनसुलझा है, तो इस दशा के दौरान उसका निर्णय आपके पक्ष में हो जायेगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (18:12:2022 से 17:01:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। लेकिन आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आप बुखार, पीलिया और चर्म रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी संतानें शैक्षिणिक और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में अपनी दक्षता प्रदर्शित करेंगी। आपको पदोन्नति मिल सकती है। हालाँकि, शत्रु आपसे ईर्ष्या करेंगे और आपके लिए परेशानियां पैदा करने की कोशिश करेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (17:01:2023 से 13:04:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपना अधिकतर समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे। आप सरकारी अधिकारियों की मदद से अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करेंगे। आपको कृषि उत्पादों से लाभ हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (13:04:2023 से 09:05:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप सरकार की मदद से धन अर्जित करेंगे। यदि सूर्य पर मंगल की दृष्टि है, तो आपको भूमि, भोजन और वस्त्र प्राप्त होंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (09:05:2023 से 21:06:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि चंद्रमा केन्द्र या त्रिकोण या अपने भाव या उच्चस्थ भाव में स्थित है, तो आप एक राजा की तरह अति उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि चंद्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि है, तो आपका विवाह हो सकता है, आपको एक पुत्र और नये वस्त्रों तथा आभूषणों की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने घर का निर्माण कर सकते हैं। आप शास्त्रों का अध्ययन करेंगे और अपने देश के दक्षिणी स्थानों की यात्रा करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:06:2023 से 21:07:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको मवेशियों और कृषि योग्य भूमि की प्राप्ति होगी। आपको अपनी खोई हुई स्थिति पुनः प्राप्त होगी। संबंधी आपसे स्नेह करेंगे और आपको धन का लाभ होगा।

राहु प्रत्यंतर्दशा (21:07:2023 से 07:10:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको धन का लाभ होगा। आप धार्मिक स्थानों की यात्रा और धार्मिक कार्यों का निर्वहन करेंगे, आपको सरकार से समर्थन प्राप्त होगा। आपको इस दशा के आरम्भ में कुछ समस्यायें हो सकती हैं, जो बाद में समाप्त हो जायेंगी और आपको लाभ प्राप्त होंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (07:10:2023 से 15:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप धन संग्रह करेंगे, भूमि खरीदेंगे और घर पर शुभ समारोहों का आयोजन करेंगे। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। अपने वर्तमान व्यापार का विस्तार करने के लिए यह एक अति उत्तम दशा है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (15:12:2023 से 06:03:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशा में प्राप्त लाभों से आप इस दशा के दौरान और फायदा उठायेंगे। आपकी सारी गतिविधियों का आगे और विस्तार होगा और आपके धन कोष में बढ़ोत्तरी होगी। इस समय आप अपनी आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आय में वृद्धि को देखकर आपमें अधिक से अधिक आनन्द प्राप्त करने की प्रवृत्ति आयेगी। लेकिन आपने जो इस और पिछली दशा के दौरान अर्जित किया है, उसे आपको बचाकर रखना चाहिए– जैसाकि आगे आपको अति अशुभ दशा का सामना करना पड़ सकता है।

केतु अर्न्तदशा (06:03:2024 से 05:10:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आप मानसिक तनाव से गुजर सकते हैं। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरण के साथ आपमें दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति हो सकती है। पानी और जलीय चीजों से आपको खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से संबंधित गतिविधियों जैसे तैराकी, नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। द्रव रसायनों से संबंधित किसी व्यापार में आपको संलग्न नहीं होना चाहिए। हालांकि, आपको इसमें लाभ हो सकता है, लेकिन विस्फोट होने या जहर फैलने का इसमें खतरा हो सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या पिता, रोग, कार्य (नौकरी या व्यवसाय) आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– केतु के बीज मंत्र का 21 दिनों में सतरह हजार जप करें।

2– सर्वसम्पत्प्रदायक मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें।

3– गणपति के 108 नामों का जप करें।

केतु प्रत्यंतर्दशा (06:03:2024 से 18:03:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होगी। आप भूमि खरीदेंगे। आपकी कुण्डली में केतु नीचस्थ है या लग्न से आठवें या बारहवें भाव में है। आपको हृदय रोग, बदनामी, धन हानि और जीवनसाथी एवं संतान के कारण निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं या सरकार द्वारा अधिग्रहीत की जा सकती हैं। आप अपना समय धार्मिक कार्यों में लगायेंगे।

आपकी मंत्र जाप और भगवान शिव की आराधना में रूचि होगी। आप अपने निवास स्थान से दक्षिण की दिशा में यात्रा करेंगे। आपके नाना को खतरा हो सकता है। आप बुखार, नेत्र विकार, लिवर की शिकायतों, खांसी, सर्दी और आंतों में दर्द से पीड़ित हो सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है। आपको दवाओं और ज्योतिषशास्त्र से आय प्राप्त होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (18:03:2024 से 23:04:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका भाग्य उत्तम होगा। आपको खोई हुई सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपको वाहन सुख प्राप्त होगा और आप पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (23:04:2024 से 03:05:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपमें भगवान शिव के प्रति आस्था विकसित होगी। राजनीति में आपको सफलता मिलेगी। सरकार से आपको समर्थन प्राप्त होगा। आप तीर्थयात्रा पर जायेंगे। पिता के साथ आपका झगड़ा हो सकता है। आपको जलीय उत्पादों से आय प्राप्त होगी। आप उदर और आंत के रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता को लकवा हो सकता है। आप ईर्ष्यालु लोगों की संगति कर सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (03:05:2024 से 21:05:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप बेहतर पारिवारिक जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे। आप जलीय उत्पादों से आय प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:05:2024 से 03:06:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप परिवहन से आय प्राप्त करेंगे। आपकी माता और जीवनसाथी को विभिन्न रोग हो सकते हैं। आपकी रूचि रोजगार या व्यापार में परिवर्तन करने में हो सकती है। आपको मानसिक हताशा हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (03:06:2024 से 05:07:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। भवन निर्माण, सीमेंट, संगमरमर और अन्य पत्थर की चीजों के व्यापार के लिए यह अति उत्तम दशा है। यदि आप पहले से इस क्षेत्र में व्यापार कर रहे हैं, तो आपको भारी लाभ होगा।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (05:07:2024 से 02:08:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने गुरु को अप्रसन्न कर सकते हैं, जिससे आपको उनके शाप का भाजन बनना पड़ सकता है। अध्यापन के द्वारा आप अतिरिक्त आय प्राप्त करेंगे। आपको सर्दी, खांसी, दमा, हार्निया की शिकायत हो सकती है। आपके दार्शनिक और धार्मिक ज्ञान में बढ़ोत्तरी होगी। यद्यपि आपकी संतान का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, लेकिन उनके शैक्षिणिक कामों में विशिष्टता आपको खुशी प्रदान करेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (02:08:2024 से 05:09:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विरोधपूर्ण दशा होगी। नौकर आपके लिए एक समस्या बन सकते हैं। आपके घर में चोरी हो सकती है। संबंधी समस्यायें पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। मित्र शत्रु बन सकते हैं। आपको व्यवसाय से अवसरीय लाभ मिलेंगे। आप सिरदर्द, जोड़ों में दर्द, पेचिश और भारी हताशा का सामना कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (05:09:2024 से 05:10:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पूर्ण रूप से संशयग्रस्त और विभ्रमित दिमाग के कारण आप अशांत हो सकते हैं। आपको एक दास की तरह जीवन यापन करना पड़ सकता है। आप मिर्गी और पागलपन का शिकार हो सकते हैं। आप जुए में रत रह सकते हैं और धन गवाँ सकते हैं। आपको अपनी भूमि और अन्य सम्पत्ति बेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपके प्रायः सभी से विवाद और बहस हो सकती है। आपको ग्रहों के क्रोध को शांत करने के लिए भगवान शिव और देवी पार्वती की आराधना करनी चाहिए।

शुक्र अन्तर्दशा (05:10:2024 से 06:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आप नावों या जहाजों से यात्रायें करेंगे और सोना, पानी, रत्नों, महिलाओं और कृषि से संबंधित सामानों के व्यापार में संलग्न रहेंगे। आप महिलाओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में गहरी रूचि लेंगे। संतान, मित्र और मवेशी प्राप्त करने के लिए यह अनुकूल दशा है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बहुत बली नहीं है, तो भी विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, सरकारी कार्य, मित्र, परिवारजन आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– शुक्रवार को एक गड्ढा खोदकर दो सौ ग्राम दही रखकर सफेद कपड़ा से ढक कर राख डालें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– चाँदी की दुर्गा–मूर्ति दान करें।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:10:2024 से 15:01:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको प्रचुर धन प्राप्त होगा, लेकिन वह खर्च हो जायेगा और आप कर्जदार हो सकते हैं। आपके विवाहेत्तर संबंध हो सकते हैं और उसमें आप धन बर्बाद कर सकते हैं। आपमें ईश्वर के प्रति तीव्र आस्था होगी। आपको पीलिया और नाखूनों में समस्यायें हो सकती है। आपको किसी जानवर के काटने का भय है। यदि आप दवा के व्यापारी या एक कलाकार हैं, तो आपको लाभ प्राप्त होंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (15:01:2025 से 14:02:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के पहले अर्धभाग में आपको अति उत्तम परिणाम प्राप्त होंगे। आपको धन, भूमि और सम्पत्ति का अप्रत्याशित लाभ प्राप्त होगा। दशा के दूसरे अर्धभाग में आप उदर विकार, गले, नाक, आँख के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। शत्रु आपको हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। धोखा धड़ी के द्वारा आपको धन हानि हो सकती है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (14:02:2025 से 06:04:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपकी आय व्यय से अधिक होगी। आपको महिलाओं से मदद मिलेगी। आपका विवाह तय हो जायेगा। वैवाहिक समारोहों में कुछ समस्यायें आ सकती हैं। अतः आपको विवाह स्थगित कर देना चाहिए। यदि आप विवाहित हैं, तो आपको एक पुत्री प्राप्त हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (06:04:2025 से 11:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप दवाओं, सोने, तांबे और आभूषणों का व्यापार करेंगे। हालाँकि, बेहतर परिणाम के लिए आपको अगली प्रत्यंतर्दशा तक प्रतीक्षा करनी होगी। आपको भूमि प्राप्त हो सकती है या आप उसको बेच कर उत्तम मात्रा में लाभ कमा सकते हैं। जिन स्त्रियों के साथ आपको अतिरिक्त लगाव होगा, उनके साथ आपको कुछ गलतफहमी हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:05:2025 से 11:08:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस पाने का अवसर मिलेगा। आपकी संतानों की पढ़ाई में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। अब तक अनसुलझे सम्पत्ति विवाद इस दशा के दौरान सुलझ जायेंगे। आपके शरीर में चोट लग सकती है, आग से आपको भय हो सकता है। चोर भी आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (11:08:2025 से 31:10:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपका विवाह हो सकता है या आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको भूमि और संपत्ति की प्राप्ति होगी। आप अन्य भौतिक सम्पत्तियों में निवेश करेंगे। सरकार से आपको सम्मान मिलेगा। आप विभिन्न प्रकार के धार्मिक कार्य करेंगे। आप तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं और सन्तों का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (31:10:2025 से 04:02:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में रहेंगे। उनकी मदद से आप बहुत अधिक धन कमाने में सक्षम होंगे। हालाँकि, आप धन की प्राप्ति के लिए सभी दूसरे दर्जे के तरीके अपनायेंगे, जैसे घूस देना आदि। दशा के मध्य में आप अपने सभी कामों में सफल होंगे। दशा के अन्त में आपको भारी नुकसान और विभिन्न रोग हो सके हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (04:02:2026 से 01:05:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आप सौन्दर्य प्रसाधनों, पेड़ों, फलों, जानवरों और परिवहन से आय प्राप्त कर सकते हैं। आपके शत्रु परास्त होंगे। भूमि के विक्रय से आपको धन प्राप्त होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (01:05:2026 से 06:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक सामान्य दशा होगी। आपकी दैनिक गतिविधियों में प्रायः बदलाव होंगे। सुबह में आपको लगेगा कि समय आपके अनुकूल हो रहा है, और आप कई योजनायें बनायेंगे, लेकिन शाम होने तक आपके सारे सपने और योजनायें ध्वस्त हो सकती हैं। रोग आपसे आँख मिचौली खेल सकते हैं।

सूर्य अन्तर्दशा (06:06:2026 से 05:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आप सरकारी अधिकारियों से समर्थन प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आप अत्यधिक साहस और वीरता का प्रदर्शन करेंगे। समाज में आपको सम्मान मिलेगा। रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालांकि, कभी–कभी आपको पित्त रस और वायु विकार हो सकते हैं। आपको दुर्घटना के कारण चोट लग सकती है। एक तरफ आपको उत्तम मात्रा में धन मिलेगा, लेकिन आप चोरी आदि के कारण उसको खो भी सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–सम्पत्ति, पिता, जन्मस्थान, आँख आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– जल में चीनी एवं लाल फूल डालकर सूर्य को अर्घ्य दें।

2– भगवान शिव की पूजा करें।

3– आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (06:06:2026 से 15:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिकार और शक्ति प्राप्त लोगों से लाभ मिलेगा। हालाँकि, आपको भूमि की हानि हो सकती है और आपके खर्चे बहुत बढ़ सकते हैं। आपका सहोदरों के साथ सम्पत्ति मामलों में विवाद हो सकते हैं। आप निराशा के कारण घर छोड़ सकते हैं। आप बुखार से पीड़ित हो सकते हैं। दशा के अन्त में आपको कुछ हद तक उत्तम परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (15:06:2026 से 30:06:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका विवाह हो सकता है। आपके धन में बढ़ोत्तरी होगी, आप भूमि और भवन खरीदेंगे, ससुराल से आपको विरासत में भूमि मिल सकती है और आपकी पैतृक सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। आप नेत्र या जलीय रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी। यदि आप नौकरी में हैं,

तो आपको पदोन्नति मिलेगी और यदि व्यापार कर रहे हैं, तो आपको उसमें भारी लाभ होगा।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (30:06:2026 से 11:07:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। धन और संपत्ति के मामले में यह एक उत्तम दशा होगी। आपके सगे भाई–बहन आपका सहयोग करेंगे। आपको अपने जीवनसाथी और संतान से आराम एवं खुशियां प्राप्त होंगी। आपके पिता के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आप तीर्थयात्राओं पर जायेंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:07:2026 से 07:08:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली दशाओं में आपको जो लाभ प्राप्त हुए थे, वे इस दशा में लुप्त हो सकते हैं। आप अनैतिक कार्यों से धन कमा सकते हैं। आपका सरकारी अधिकारियों से विवाद हो सकता है। आपके कई शत्रु पैदा हो सकते हैं, जो आपको किसी भी समय फंसा सकते हैं। आपका विवाह हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (07:08:2026 से 31:08:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके सम्मान में बढ़ोत्तरी होगी, संतान की प्राप्ति होगी, सरकार और संतानों से आपको धन मिलेगा। आपको कान और फेफड़ों के रोग हो सकते हैं। आप अपने पद को खो सकते हैं। आप ईश्वर की आराधना और धार्मिक कार्य करेंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (31:08:2026 से 29:09:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक बहुत उत्तम दशा होगी। आप विभिन्न सौदों में भारी लाभ की आशा कर सकते हैं। आप भूमि और संपत्ति खरीद सकते हैं और विभिन्न तरीकों से आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। आप बाहर घूमने जा सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (29:09:2026 से 25:10:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा अति शुभ और अति अशुभ परिणामों का मिश्रण होगी। यदि प्रथम अर्द्धावस्था बहुत शुभ है, तो बाद की दूसरी अवस्था अशुभ हो सकती है या इसका उलटा हो सकता है। यदि अन्य अनुकूल युतियां भी विद्यमान हैं, तो आप एक राजा या उसके समान बन सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (25:10:2026 से 05:11:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक उत्तम दशा नहीं हो सकती है। विभिन्न कारणों से आपको भारी दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने पद और धन की हानि हो सकती है। आपमें आत्महत्या करने की प्रवृत्ति आ सकती है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं, जहाँ आपको दुखों का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (05:11:2026 से 05:12:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दशा के प्रथम 10 दिनों के दौरान आप वाहन खरीद सकते हैं या वाहनों की मुफ्त में सवारी करेंगे। अगले 10 दिनों के दौरान आप अपने परिवार के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपके पास अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन होगा। आखिरी 10 दिनों के दौरान आपको दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है। आप परिश्रम से अर्जित किया हुआ धन, नाम और सम्मान गवाँ सकते हैं। आपको गले के रोग, लकवा और शरीर में दर्द की शिकायत हो सकती है।

अष्टोत्तरी दशा से भविष्यफल

Ashtottari Dasha, based on a 108-year cycle, is especially useful for readings of charts where the Moon is placed in an even sign. This Dasha system emphasizes the transformative periods in an individual's life, revealing the potential unfolding of karmic events. With its unique time frame and calculation, Ashtottari provides astrologers with an alternative perspective, complementing other Dasha systems, to enhance the accuracy and depth of predictions.

सूर्य(कृतिका) दशा (11:11:2011 – 20:07:2013)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

सूर्य(रोहिणी) दशा (20:07:2013 – 20:07:2015)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

सूर्य(मृगशिरा) दशा (20:07:2015 – 20:07:2017)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरे भाव में है जो कि कई मामलों में अनुकूल है। इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सिलसिले में कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। यदि आप रोजगार में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण अथवा नए घर में स्थानान्तरित होते के बारे में सोच रहे हैं तो यह अवधि आपके लिए अनुकूल है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप बहुत अच्छा कार्य करेंगे तथा इससे भी अधिक जिम्मेदारी वाले किसी पद पर आसीन हो सकते हैं। यदि आप लेखक, सम्पादक या अनुवादक हैं तो आप सर्वाधिक प्रगति करेंगे। किन्तु यदि आप मुद्रण, प्रकाशन, विज्ञापन आदि से संबंधित व्यवसाय में हैं तो आप बहुत सम्पन्न होंगे। फिर भी, आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की शनि के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा असामान्य/विचलित मनोस्थिति में वाहन चलाने के कारण किसी छोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 19:09:2015, 23:09:2015, 25:03:2016, 18:09:2016, 23:12:2016, 23:12:2016,

26:03:2017

चन्द्रमा(अरिद्रा) दशा (20:07:2017 – 20:04:2021)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट बारहवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आपको अप्रत्याशित स्रोतों से उपजे आकस्मिक कारणों से कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। कुछ ईर्ष्यालु लोग आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं जिसकी वजह से आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको बार–बार ऋण लेना पड़ सकता है। आपको सट्टा आदि में निवेश करने अथवा ऋण देने से बचना चाहिए, क्योंकि आपके धन के अवरूद्ध होने अथवा घाटा होने की संभावना है। यदि आप अपने रोजगार को बदलने या स्थानान्तरण की सोच रहे हैं तो यह आपके लिए अनुकूल समय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ऐसी राशि में है जो कि आठवीं पद राशि के समान है, किन्तु राशि का स्वामी अच्छी स्थिति में नहीं है, अतः यह दशा–अवधि आपके लिए काफी समस्यापूर्ण साबित होगी। आपके रिश्तेदार व मित्र आपके प्रति मददगार नहीं हो सकते है एवं आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप एक सुनहरा अवसर खो सकते हैं। यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आप अपने कार्य स्थल पर अनेक परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए क्योंकि आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा व्यवसाय में आघात लगने का भय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथी पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आप परीक्षा में सफलता की सुर्खियों में होंगे एवं प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता प्राप्त करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग या आंतरिक सजावट से है तो आप अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं और धन संचय कर सकते हैं। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि

होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 06:09:2017, 04:08:2018, 11:08:2018, 23:07:2019, 17:06:2020, 15:12:2020, 15:12:2020

चन्द्रमा(पुनर्वसु) दशा (20:04:2021 – 19:01:2025)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर संतान और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की मंगल के साथ 90 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर लोगों से व्यवहार करते समय। अन्यथा आप विवादों और झगड़े में फंस सकते हैं और संशयपूर्ण पृष्ठभूमि वाले कुछ अराजक लोगों के साथ आपका क्रोधपूर्ण टकराव होने के कारण शारीरिक हिंसा का शिकार होने का भी भय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरी पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में किसी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी निकट स्थान पर तबादला हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपके सगे और चचेरे अनुज, पड़ोसी एवं सहकर्मी तक आपके लिए सहयोगी व मददगार होंगे। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवीं पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय, अन्य स्रोतो से प्राप्त होने वाले लाभ तथा मित्रों के दायरे सभी में वृद्धि होगी। आप आनन्दपूर्ण मुद्रा में रहेंगे तथा अपने रिश्तेदारों व मित्रों के साथ अपने जीवन का सुखपूर्वक आनन्द प्राप्त करेंगे। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक

इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं और आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है तथा राशि–स्वामी सुव्यवस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यवसाय से आय और आपके शेयर, सट्टा आदि जैसे निवेशों में भी वृद्धि होगी। आप कोई नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी ख्याति में सदैव वृद्धि होगी एवं आपके मित्र आपकी आवश्यकता या जरूरत के अनुसार किसी भी प्रकार की सहायता या सहारा देने के लिए तत्पर रहेंगे। आप आनन्द और मौजमस्ती के शौकीन होंगे एवं प्रसन्नचित्त व आनन्दित मुद्रा में रहेंगे। आप काल्पनिक प्रवृति के हो सकते हैं एवं विवेकपूर्ण निवेशों से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मनोरंजन के क्षेत्र आपको आकर्षित कर सकते हैं। आप आनन्द और लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्द का स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 14:11:2021, 10:10:2022, 08:04:2023, 08:04:2023, 30:09:2023, 27:08:2024, 03:09:2024

चन्द्रमा(पुष्य) दशा (19:01:2025 – 19:10:2028)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दसवें भाव में स्थित है, जो कि आपके लग्न से केन्द्र–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अत्यंत उर्जावान व सक्रिय होंगे और अनेक मामलों में आधारभूत सुधार होगा। यदि आप औपचारिक रूप से अध्ययनरत हैं तो आप अत्यंत अधिक उन्नति करेंगे, परीक्षाओं में सफलता अर्जित करेंगे और गौरवपूर्ण योग्यता प्राप्त करेंगे। आप अपने गुणों, अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय में काफी सुधार करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन हो सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान नई उचांईयों को छुएगा। किन्तु जैसाकि आप अपना अत्यधिक ध्यान अपने व्यवसाय की ओर लगाएंगे तो आपका घरेलु जीवन कुछ–कुछ उपेक्षित हो सकता

है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 31:03:2025, 31:03:2025, 22:09:2025, 19:08:2026, 27:08:2026, 07:08:2027, 02:07:2028

चन्द्रमा(अश्लेषा) दशा (19:10:2028 – 20:07:2032)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट बारहवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आपको अप्रत्याशित स्रोतों से उपजे आकस्मिक कारणों से कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। कुछ ईर्ष्यालु लोग आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं जिसकी वजह से आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको बार–बार ऋण लेना पड़ सकता है। आपको सट्टा आदि में निवेश करने अथवा ऋण देने से बचना चाहिए, क्योंकि आपके धन के अवरूद्ध होने अथवा घाटा होने की संभावना है। यदि आप अपने रोजगार को बदलने या स्थानान्तरण की सोच रहे हैं तो यह आपके लिए अनुकूल समय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ऐसी राशि में है जो कि आठवीं पद राशि के समान है, किन्तु राशि का स्वामी अच्छी स्थिति में नहीं है, अतः यह दशा–अवधि आपके लिए काफी समस्यापूर्ण साबित होगी। आपके रिश्तेदार व मित्र आपके प्रति मददगार नहीं हो सकते है एवं आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप एक सुनहरा अवसर खो सकते हैं। यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आप अपने कार्य स्थल पर अनेक परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए क्योंकि आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा व्यवसाय में आघात लगने का भय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट चौथी पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आप परीक्षा में सफलता की सुर्खियों में होंगे एवं प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता प्राप्त करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग या आंतरिक सजावट से है तो आप अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं और धन संचय कर सकते हैं। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 25:12:2028, 21:11:2029, 29:11:2029, 09:11:2030, 05:10:2031, 03:04:2032, 03:04:2032

मंगल(मघा) दशा (20:07:2032 – 21:03:2035)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

मंगल(पुर्वफाल्गुनी) दशा (21:03:2035 – 19:11:2037)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरे भाव में है जो कि कई मामलों में अनुकूल है। इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सिलसिले में कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। यदि आप रोजगार में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण अथवा नए घर में स्थानान्तरित होते के बारे में सोच रहे हैं तो यह अवधि आपके लिए अनुकूल है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप बहुत अच्छा कार्य करेंगे तथा इससे भी अधिक जिम्मेदारी वाले किसी पद पर आसीन हो सकते हैं। यदि आप लेखक, सम्पादक या अनुवादक हैं तो आप सर्वाधिक प्रगति करेंगे। किन्तु यदि आप मुद्रण, प्रकाशन, विज्ञापन आदि से संबंधित व्यवसाय में हैं तो आप बहुत सम्पन्न होंगे। फिर भी, आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की सूर्य के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा यातायात नियमों का ध्यान दिए बिना वाहन चलाने के कारण किसी छोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 09:04:2035, 15:04:2035, 16:12:2035, 07:08:2036, 14:12:2036, 14:12:2036,

17:04:2037

मंगल(उत्तरफाल्गुनी) दशा (19:11:2037 – 20:07:2040)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरे भाव में है जो कि कई मामलों में अनुकूल है। इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सिलसिले में कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। यदि आप रोजगार में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण अथवा नए घर में स्थानान्तरित होते के बारे में सोच रहे हैं तो यह अवधि आपके लिए अनुकूल है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप बहुत अच्छा कार्य करेंगे तथा इससे भी अधिक जिम्मेदारी वाले किसी पद पर आसीन हो सकते हैं। यदि आप लेखक, सम्पादक या अनुवादक हैं तो आप सर्वाधिक प्रगति करेंगे। किन्तु यदि आप मुद्रण, प्रकाशन, विज्ञापन आदि से संबंधित व्यवसाय में हैं तो आप बहुत सम्पन्न होंगे। फिर भी, आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की शनि के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा असामान्य/विचलित मनोस्थिति में वाहन चलाने के कारण किसी छोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 07:02:2038, 13:02:2038, 16:10:2038, 08:06:2039, 14:10:2039, 14:10:2039, 15:02:2040

बुध(हस्ता) दशा (20:07:2040 – 19:10:2044)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट बारहवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आपको अप्रत्याशित स्रोतों से उपजे आकस्मिक कारणों से कुछ गंभीर प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण

कठिनाई में पड़ सकते हैं। कुछ ईर्ष्यालु लोग आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं जिसकी वजह से आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको बार-बार ऋण लेना पड़ सकता है। आपको सट्टा आदि में निवेश करने अथवा ऋण देने से बचना चाहिए, क्योंकि आपके धन के अवरूद्ध होने अथवा घाटा होने की संभावना है। यदि आप अपने रोजगार को बदलने या स्थानान्तरण की सोच रहे हैं तो यह आपके लिए अनुकूल समय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट ऐसी राशि में है जो कि आठवीं पद राशि के समान है, किन्तु राशि का स्वामी अच्छी स्थिति में नहीं है, अतः यह दशा-अवधि आपके लिए काफी समस्यापूर्ण साबित होगी। आपके रिश्तेदार व मित्र आपके प्रति मददगार नहीं हो सकते है एवं आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप एक सुनहरा अवसर खो सकते हैं। यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आप अपने कार्य स्थल पर अनेक परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए क्योंकि आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा व्यवसाय में आघात लगने का भय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट चौथी पद-राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आप परीक्षा में सफलता की सुर्खियों में होंगे एवं प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता प्राप्त करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग या आंतरिक सजावट से है तो आप अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं और धन संचय कर सकते हैं। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट पांचवीं पद-राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ- 03:10:2040, 14:10:2041, 23:10:2041, 18:11:2042, 27:11:2043, 19:06:2044, 19:06:2044

बुध(चित्रा) दशा (19:10:2044 – 19:01:2049)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरे भाव में है जो कि कई मामलों में अनुकूल है। इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सिलसिले में कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। यदि आप रोजगार में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण अथवा नए घर में स्थानान्तरित होते के बारे में सोच रहे हैं तो यह अवधि आपके लिए अनुकूल है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप बहुत अच्छा कार्य करेंगे तथा इससे भी अधिक जिम्मेदारी वाले किसी पद पर आसीन हो सकते हैं। यदि आप लेखक, सम्पादक या अनुवादक हैं तो आप सर्वाधिक प्रगति करेंगे। किन्तु यदि आप मुद्रण, प्रकाशन, विज्ञापन आदि से संबंधित व्यवसाय में हैं तो आप बहुत सम्पन्न होंगे। फिर भी, आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की सूर्य के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा यातायात नियमों का ध्यान दिए बिना वाहन चलाने के कारण किसी छोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 20:11:2044, 29:11:2044, 25:12:2045, 03:01:2047, 26:07:2047, 26:07:2047, 09:02:2048

बुध(स्वाति) दशा (19:01:2049 – 20:04:2053)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट सातवें भाव में स्थित है, जो कि आपके लग्न से केन्द्र–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अत्यंत उर्जावान व सक्रिय होंगे और अनेक मामलों में आधारभूत सुधार होगा। यदि आप एक नए रोजगार का अवसर तलाश रहे हैं अथवा अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए बहुत अनुकूल है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान नई उंचाईयों को छुएगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आप विवाह कर सकते हैं। या फिर आप साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित हो सकते हैं।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 04:01:2050, 27:07:2050, 27:07:2050, 10:02:2051, 21:02:2052, 29:02:2052,

27:03:2053

बुध(विशाखा) दशा (20:04:2053 – 20:07:2057)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 25:09:2053, 06:10:2054, 14:10:2054, 10:11:2055, 18:11:2056, 11:06:2057, 11:06:2057

शनि(अनुराधा) दशा (20:07:2057 – 19:11:2060)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरे भाव में है जो कि कई मामलों में अनुकूल है। इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सिलसिले में कुछ छोटी यात्राएं कर सकते हैं। यदि आप रोजगार में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण अथवा नए घर में स्थानान्तरित होते के बारे में सोच रहे हैं तो यह अवधि आपके लिए अनुकूल है। यदि आप नौकरी में हैं तो आप बहुत अच्छा कार्य करेंगे तथा इससे भी अधिक जिम्मेदारी वाले किसी पद पर आसीन हो सकते हैं। यदि आप लेखक, सम्पादक या अनुवादक हैं तो आप सर्वाधिक प्रगति करेंगे। किन्तु यदि आप मुद्रण, प्रकाशन, विज्ञापन आदि से संबंधित व्यवसाय में हैं तो आप बहुत सम्पन्न होंगे। फिर भी, आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, इस दशा में, एक ही ग्रह ग्रह–स्वामी और नक्षत्र–स्वामी दोनों है। अतः दशा अवधि निश्चित रूप से घटनाओं से पूर्ण होगी। लगभग दशा के प्रारम्भ में, दशा की मध्यावधि में एवं दशा के अन्त में भी कुछ महत्वपूर्ण अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में यह एक विशेष दशा है, जब एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह शनि दशा का स्वामी है, जो कि शक्तिशाली नहीं है क्योंकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव में है। अतः यह दशा आपके लिए काफी कष्टप्रद साबित हो सकता है। आप अनेक मामलों में विलम्ब और निराशाओं के कारण दुखी हो सकते हैं। आपकी सामान्य प्रगति बाधित हो सकती है और आपको अनेक अवरोधों का सामना करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान धीरे-धीरे मंद पड़ सकती है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ- 24:07:2057, 31:07:2057, 03:06:2058, 23:03:2059, 30:08:2059, 30:08:2059, 01:02:2060

शनि(ज्येष्ठा) दशा (19:11:2060 – 20:03:2064)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट पांचवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण-भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे- विशेषकर संतान और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट तीसरी पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में किसी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी निकट स्थान पर तबादला हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपके सगे और चचेरे अनुज, पड़ोसी एवं सहकर्मी तक आपके लिए सहयोगी व मददगार होंगे। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट ग्यारहवीं पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय, अन्य स्रोतो से प्राप्त होने वाले लाभ तथा मित्रों के दायरे सभी में वृद्धि होगी। आप आनन्दपूर्ण मुद्रा में रहेंगे तथा अपने रिश्तेदारों व मित्रों के साथ अपने जीवन का सुखपूर्वक आनन्द प्राप्त करेंगे। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं और आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको

चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है तथा राशि–स्वामी सुव्यवस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यवसाय से आय और आपके शेयर, सट्टा आदि जैसे निवेशों में भी वृद्धि होगी। आप कोई नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी ख्याति में सदैव वृद्धि होगी एवं आपके मित्र आपकी आवश्यकता या जरूरत के अनुसार किसी भी प्रकार की सहायता या सहारा देने के लिए तत्पर रहेंगे। आप आनन्द और मौजमस्ती के शौकीन होंगे एवं प्रसन्नचित्त व आनन्दित मुद्रा में रहेंगे। आप काल्पनिक प्रवृति के हो सकते हैं एवं विवेकपूर्ण निवेशों से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मनोरंजन के क्षेत्र आपको आकर्षित कर सकते हैं। आप आनन्द और लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्द का स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 26:04:2061, 13:02:2062, 23:07:2062, 23:07:2062, 25:12:2062, 16:10:2063, 22:10:2063

शनि(मूला) दशा (20:03:2064 – 20:07:2067)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

गुरू(पूर्वाषाढ़) दशा (20:07:2067 – 19:04:2072)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का

स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 12:01:2068, 08:03:2069, 17:03:2069, 29:05:2070, 20:07:2071, 05:03:2072, 05:03:2072

गुरू(उत्तराषाढ़) दशा (19:04:2072 – 19:01:2077)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की मंगल के साथ 90 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर लोगों से व्यवहार करते समय। अन्यथा आप विवादों और झगड़े में फंस सकते हैं और संशयपूर्ण पृष्ठभूमि वाले कुछ अराजक लोगों के साथ आपका क्रोधपूर्ण टकराव होने के कारण शारीरिक हिंसा का शिकार होने का भी भय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी दसवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा अधिक जिम्मेदारी वाला पद प्राप्त कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान और प्रतिष्ठा सभी में वृद्धि होगी।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 22:06:2072, 22:06:2072, 29:01:2073, 25:03:2074, 04:04:2074, 15:06:2075,

06:08:2076

गुरू(अभिजीत) दशा (19:01:2077 – 20:10:2081)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवें भाव (लाभ) में है, जो कि बहुत अनुकूल है क्योंकि यह आय और लाभ का भाव है, इसलिए आपके व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय में और अन्य स्रोतों से प्राप्त होने वाले लाभ में निरंतर वृद्धि होती रहेगी और आप अपने मित्रों व शुभ चिन्तकों से प्रत्यक्ष लाभ व अप्रत्यक्ष सहयोग प्राप्त करेंगे। आपकी विश्वसनीयता, सम्मान आप प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्राएं भी कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी अच्छी स्थिति में है तो आप किसी सांस्कृतिक या शैक्षिक उद्देश्य से किसी दूरस्थ स्थान अथवा विदेश तक की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपको चिन्तित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की मंगल के साथ 90 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर लोगों से व्यवहार करते समय। अन्यथा आप विवादों और झगड़े में फंस सकते हैं और संशयपूर्ण पृष्ठभूमि वाले कुछ अराजक लोगों के साथ आपका क्रोधपूर्ण टकराव होने के कारण शारीरिक हिंसा का शिकार होने का भी भय है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 23:03:2077, 23:03:2077, 30:10:2077, 24:12:2078, 02:01:2079, 15:03:2080, 07:05:2081

गुरू(श्रवण) दशा (20:10:2081 – 20:07:2086)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर संतान और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं

अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की मंगल के साथ 90 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर लोगों से व्यवहार करते समय। अन्यथा आप विवादों और झगड़े में फंस सकते हैं और संशयपूर्ण पृष्ठभूमि वाले कुछ अराजक लोगों के साथ आपका क्रोधपूर्ण टकराव होने के कारण शारीरिक हिंसा का शिकार होने का भी भय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरी पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में किसी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी निकट स्थान पर तबादला हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपके सगे और चचेरे अनुज, पड़ोसी एवं सहकर्मी तक आपके लिए सहयोगी व मददगार होंगे। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवीं पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय, अन्य स्रोतो से प्राप्त होने वाले लाभ तथा मित्रों के दायरे सभी में वृद्धि होगी। आप आनन्दपूर्ण मुद्रा में रहेंगे तथा अपने रिश्तेदारों व मित्रों के साथ अपने जीवन का सुखपूर्वक आनन्द प्राप्त करेंगे। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं और आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है तथा राशि–स्वामी सुव्यवस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यवसाय से आय और आपके शेयर, सट्टा आदि जैसे निवेशों में भी वृद्धि होगी। आप कोई नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी ख्याति में सदैव वृद्धि होगी एवं आपके मित्र आपकी आवश्यकता या जरूरत के अनुसार किसी भी प्रकार की सहायता या सहारा देने के लिए तत्पर रहेंगे। आप आनन्द और मौजमस्ती के शौकीन होंगे एवं प्रसन्नचित्त व आनन्दित मुद्रा में रहेंगे। आप काल्पनिक प्रवृति के हो सकते हैं एवं विवेकपूर्ण निवेशों से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मनोरंजन के क्षेत्र आपको आकर्षित कर सकते हैं। आप आनन्द और लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्द का स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित

हो सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 10:07:2082, 01:09:2083, 16:04:2084, 16:04:2084, 24:11:2084, 18:01:2086, 27:01:2086

राहु(धनिष्ठा) दशा (20:07:2086 – 20:07:2090)

यह अष्टोत्तरी दशा अधिक घटनापूर्ण नहीं है। यद्यपि हम बहुत अधिक स्थितियों की गणना कर रहे हैं।

राहु(शतभिषा) दशा (20:07:2090 – 20:07:2094)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट सातवें भाव में स्थित है, जो कि आपके लग्न से केन्द्र–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अत्यंत उर्जावान व सक्रिय होंगे और अनेक मामलों में आधारभूत सुधार होगा। यदि आप एक नए रोजगार का अवसर तलाश रहे हैं अथवा अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए बहुत अनुकूल है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान नई उंचाईयों को छुएगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आप विवाह कर सकते हैं। या फिर आप साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, इस दशा में, एक ही ग्रह ग्रह–स्वामी और नक्षत्र–स्वामी दोनों है। अतः दशा अवधि निश्चित रूप से घटनाओं से पूर्ण होगी। लगभग दशा के प्रारम्भ में, दशा की मध्यावधि में एवं दशा के अन्त में भी कुछ महत्वपूर्ण अनुकूल परिवर्तन हो सकते हैं।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 26:05:2091, 05:12:2091, 05:12:2091, 08:06:2092, 28:05:2093, 05:06:2093, 09:06:2094

राहु(पूर्वाभाद्र) दशा (20:07:2094 – 20:07:2098)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट बारहवें भाव में स्थित है जो कि प्रतिकूल त्रिक–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आपको अप्रत्याशित स्रोतों से उपजे आकस्मिक कारणों से कुछ गंभीर प्रकार

की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने कार्यस्थल पर भी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है तथा आप अपने वरिष्ठों या सरकारी अधिकारियों के कारण कठिनाई में पड़ सकते हैं। कुछ ईर्ष्यालु लोग आपके खिलाफ साजिश कर सकते हैं जिसकी वजह से आप निरंतर तनाव झेल सकते हैं। आपका व्यय आपकी आय से अधिक हो सकता है एवं आपको बार-बार ऋण लेना पड़ सकता है। आपको सट्टा आदि में निवेश करने अथवा ऋण देने से बचना चाहिए, क्योंकि आपके धन के अवरूद्ध होने अथवा घाटा होने की संभावना है। यदि आप अपने रोजगार को बदलने या स्थानान्तरण की सोच रहे हैं तो यह आपके लिए अनुकूल समय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट ऐसी राशि में है जो कि आठवीं पद राशि के समान है, किन्तु राशि का स्वामी अच्छी स्थिति में नहीं है, अतः यह दशा-अवधि आपके लिए काफी समस्यापूर्ण साबित होगी। आपके रिश्तेदार व मित्र आपके प्रति मददगार नहीं हो सकते है एवं आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं हो सकता है। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो आप एक सुनहरा अवसर खो सकते हैं। यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आप अपने कार्य स्थल पर अनेक परेशानियों का सामना कर सकते हैं। आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए क्योंकि आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है अथवा व्यवसाय में आघात लगने का भय है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट चौथी पद-राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो आप परीक्षा में सफलता की सुर्खियों में होंगे एवं प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता प्राप्त करेंगे। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध शैक्षिक या प्रशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग या आंतरिक सजावट से है तो आप अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं और धन संचय कर सकते हैं। किन्तु आपके पिता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट पांचवीं पद-राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत महात्वाकांक्षी, उर्जावान व सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप रोजगार की तलाश में हैं तो आपको एक प्रतिष्ठित पद प्राप्त होगा। आपके सभी प्रयत्न पूर्णतः सफल होंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में सदैव वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ- 26:11:2094, 15:11:2095, 23:11:2095, 26:11:2096, 13:11:2097, 24:05:2098,

24:05:2098

शुक्र(उत्तरभाद्र) दशा (20:07:2098 – 20:10:2103)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवें भाव में स्थित है जो कि आपके लग्न से एक त्रिकोण–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर संतान और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के कारण उचित पहचान प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो आप एक लाभप्रद पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, किन्तु यदि आप व्यापारी हैं तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधता ला सकते हैं अथवा साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट तीसरी पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में किसी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी निकट स्थान पर तबादला हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपके सगे और चचेरे अनुज, पड़ोसी एवं सहकर्मी तक आपके लिए सहयोगी व मददगार होंगे। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट ग्यारहवीं पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान व्यवसाय से प्राप्त होने वाली आपकी आय, अन्य स्रोतो से प्राप्त होने वाले लाभ तथा मित्रों के दायरे सभी में वृद्धि होगी। आप आनन्दपूर्ण मुद्रा में रहेंगे तथा अपने रिश्तेदारों व मित्रों के साथ अपने जीवन का सुखपूर्वक आनन्द प्राप्त करेंगे। आपकी कुछ महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी एवं आपकी कुछ हार्दिक इच्छाएं पूरी होंगी। आप मनोरंजन एवं लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं और आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है। किन्तु आपकी माता का स्वास्थ्य आपको चिन्तित अवस्था में रख सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पांचवीं पद–राशि में है तथा राशि–स्वामी सुव्यवस्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यवसाय से आय और आपके शेयर, सट्टा आदि जैसे निवेशों में भी वृद्धि होगी। आप कोई नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी ख्याति में सदैव वृद्धि होगी एवं आपके मित्र आपकी आवश्यकता या जरूरत के अनुसार किसी भी प्रकार की सहायता या सहारा देने के लिए तत्पर रहेंगे। आप आनन्द और मौजमस्ती के शौकीन होंगे एवं प्रसन्नचित्त व आनन्दित मुद्रा में रहेंगे। आप काल्पनिक प्रवृति के हो सकते हैं एवं विवेकपूर्ण निवेशों से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। मनोरंजन के क्षेत्र आपको आकर्षित कर सकते हैं। आप आनन्द और लाभ के लिए लम्बी यात्रा भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट प्रथम पद–राशि में है। अतः आप बहुत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत उर्जावान व सक्रिय होंगे। इस दशा के दौरान आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। आप अपनी विशेष उपलब्धियों के कारण अपने परिवार के लिए गौरव और आनन्द का स्रोत होंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आपके परिवार में कोई शुभ समारोह आयोजित हो सकता है।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 24:03:2099, 29:06:2100, 08:03:2101, 08:03:2101, 07:11:2101, 14:02:2103, 25:02:2103

शुक्र(रेवाति) दशा (20:10:2103 – 19:01:2109)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट सातवें भाव में स्थित है, जो कि आपके लग्न से केन्द्र–भाव है। अतः इस दशा के दौरान आप अत्यंत उर्जावान व सक्रिय होंगे और अनेक मामलों में आधारभूत सुधार होगा। यदि आप एक नए रोजगार का अवसर तलाश रहे हैं अथवा अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए बहुत अनुकूल है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान नई उंचाईयों को छुएगा। यदि आप अविवाहित हैं तो आप विवाह कर सकते हैं। या फिर आप साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित हो सकते हैं।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 20:01:2105, 29:09:2105, 29:09:2105, 31:05:2106, 07:09:2107, 18:09:2107, 14:01:2109

शुक्र(अश्विनी) दशा (19:01:2109 – 20:04:2114)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट आपके लग्न में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर परिवार और वित्तिय मामलों के संबंध में। आप बहुत उर्जावान और सक्रिय होंगे तथा अपनी अर्जित योग्यताओं और प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए सुविख्यात होंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अच्छा कार्य करेंगे और कुछ लाभदायक परिवर्तन भी हो सकते हैं। यदि आपकी रूचि है तो आप नए संभावित क्षेत्र में विविधीकरण का कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं

और/या साझेदारी या सहयोग से लाभान्वित भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट की मंगल के साथ 150 डिग्री की दृष्टि में है, अतः इस दशा के दौरान आपको अत्यधिक सावधान व सचेत रहना चाहिए– विशेषकर किसी व्यस्त गली से वाहन चलाकर गुजरते समय अथवा पार करते समय। अन्यथा लापरवाही व असावधानी से वाहन चलाने के कारण किसी छोटी दुर्घटना का शिकार होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट नौवें पद राशि में है, अतः इस दशा के दौरान आप अपने व्यवसाय के सबंध में एक लम्बी यात्रा पर जा सकते हैं। या तो आपका किसी दूरस्थ स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है या आप ऐसे किसी स्थान पर नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप अपना कोई नया उपक्रम प्रारम्भ करने की सोच रहे हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आप किसी धनी और प्रभावशाली व्यक्ति से बिल्कुल अप्रत्याशित रूप से कुछ समर्थन और लाभ प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट सातवीं पद–राशि में है। अतः इस दशा के दौरान आप बहुत सक्रिय होंगे। आप अपने प्रयत्नों और अथक प्रयासों के द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति करेंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो शादी के बन्धन में बंध सकते हैं। यदि आप साझेदारी या सहभागिता करना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा एवं आपका पारिवारिक जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण व्यतीत होगा। यदि आपके व्यवसाय का कोई संबंध विदेशी व्यापार या विदेशों से संबंध रखने वाली कम्पनियों से है तो आप ऐसे स्रोतों से भारी लाभ प्राप्त कर सकते हैं एवं धन एकत्र कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट के नक्षत्र का स्वामी पांचवें भाव में स्थित है। अतः इस दशा के दौरान आपके व्यावसायिक संभावनाओं में काफी सुधार होगा। आप कोई नया रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप औपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और किसी परीक्षा में बैठ रहे हैं तो आप किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में एक प्रभावशाली शैक्षिक योग्यता के साथ सफलता प्राप्त करेंगे। आपका नाम और यश दूर–दूर तक फैलेगा।

दशा अवधि के दौरान महत्वपूर्ण तिथियाँ– 28:03:2110, 08:04:2110, 05:08:2111, 09:11:2112, 20:07:2113, 20:07:2113, 21:03:2114

योगिनी दशा से भविष्यफल

Yogini Dasha, with its 36-year cycle, offers a concise and swift system, making it efficient for astrologers to predict significant life events. It focuses on the Nakshatras and the ruling Yoginis, revealing an individual's life path in relation to feminine cosmic energies. This Dasha system, when combined with other methods, provides a multi-dimensional view, assisting astrologers in pinpointing transformative periods and events in one's life.

उल्का (शनि){कृतिका} दशा (11:11:2011 – 05:12:2016)

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि नौवें भाव में उपस्थित है, अतः आपका आगामी समय समस्याग्रस्त हो सकता है। आप पर कई नए प्रतिबन्ध लगाए जा सकते हैं– बिना किसी औचित्य के। कभी–कभी आप स्वयं को बहुत असहाय महसूस कर सकते हैं– अपने सभी सर्वोत्तम प्रयासों का बावजूद आप वांछित परिणाम प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपकी आय में कमी आ सकती है और संभवतः आपको कुछ हानियां भी हो सकती हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आपके लिए अपने वादों को पूरा करना निरंतर कठिन हो सकता है तथा अपने ऋणदाताओं के दबाव में रह सकते हैं। आपकी पत्नी या व्यापारिक साझेदार अत्यधिक मांग करने वाले हो सकते हैं, जिससे आपमें मानसिक शांति का अभाव हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के योग–स्फूट नक्षत्र के स्वामी की एक ग्रह के साथ युति है, जो कि अष्टमेश है। यदि आप नौकरी में हैं तो संभवतः आपको अपना पद बनाए रखने के लिए काफी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है और दबाव में आने के कारण आप स्वयं उसे छोड़ सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आपका आगामी समय कठिन हो सकता है। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में धीरे–धीरे कमी आ सकती है। हालांकि यदि आप ज्योतिष जैसे गूढ़ विषयों का अध्ययन कर रहे हैं तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी शनि दशा की अवधि वास्तव में आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। आपको बहुत सावधान व सजग रहना चाहिए एवं सदैव सतर्कता बरतनी चाहिए। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है– कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों के कारण।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी शनि दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी

प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली :प में व्यक्त करने के लिए और अच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शनि दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

सिद्धा (शुक्र){रोहिणी} दशा (05:12:2016 – 05:12:2023)

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र ग्यारहवें भाव में उपस्थित है। अतः आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपको किसी से प्रेम हो सकता है। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना कर रहे हैं तो आप एक संतान की उम्मीद कर सकते हैं– संभवतः एक सुन्दर कन्या की। आपकी आय में विशेष :प से वृद्धि होगी और आप अपने मित्रों व परिचितों के मध्य आकर्षण का केन्द्र होंगे। यदि किसी कलात्मक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं या आपके पेशे का कुछ संबंध मनोरंजन के क्षेत्र से है तो इस योगिनी दशा की अवधि के दौरान आप उल्लेखनीय प्रगति करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शुक्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

संकटा (राहु){मृगशिर} दशा (05:12:2023 – 05:12:2031)

याागेनी दशा चक्र की अन्तिम समयावधि प्रायः प्रतिकूल प्रतिफल उत्पन्न करती है। दशा चक्र के अन्त की पहली, दूसरी व तीसरी तिथि क्रमशः 05:12:2031ए 05:12:2067 और 05:12:2103 हैं। अतः इन तीनों तिथियों से तीन महीने आगे–पीछे तक की अवधि में आपको सावधान रहना चाहिए। इन तिथियों के पूर्वगामी कुछ महीनों के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित राहु की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा एवं इन तिथियों के ठिक बाद के कुछ महीनों के आरम्भ के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित चंद्रमा की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दो नैसर्गिक अशुभ ग्रहों मंगल व शनि के साथ युति अथवा दृष्टि के

संयुक्त प्रभाव में है। अतः योगिनी राहु दशा आपके लिए काफी प्रतिकूल हो सकती है। इस दशा की अन्तिम अवधि के दौरान किसी समय आपको अपने व्यवसाय और/या विस्थापन का सामना करना पड़ सकता है। आपको सावधान व सतर्क भी रहना चाहिए, क्योंकि आपके साथ किसी दुर्घटना के घटित होने की भी संभावना है। आपकी आय अत्यंत कम हो सकती है और आपकी आर्थिक स्थिति असामान्य :प से कमजोर हो सकती है।

मंगला (चन्द्रमा){अरिद्रा} दशा (05:12:2031 – 05:12:2032)

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ स्थित है, किन्तु एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः इस दशा की अवधि के दौरान आपको मिश्रित (शुभ व अशुभ दोनों) परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। योगिनी चंद्र दशा का प्रारम्भिक भाग कुछ अनुकूल फल प्रदान करेगा और आप आनन्द की अनुभूति करेंगे, किन्तु इस दशा का अन्तिम भाग आपके लिए कुछ तनावपूर्ण हो सकता है और अप्रसन्नता महसूस कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

पिंगला (सुर्य){पुनर्वसु} दशा (05:12:2032 – 05:12:2034)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य अष्टमेश है और यह दसवें भाव में स्थित है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि के दौरान कई मामलों में आप अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में दशमेश सुव्यवस्थित नहीं है तो तो इस दशा के दौरान अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए आप कुछ बडी कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता व सम्मान दांव पर लग सकते हैं और आप निंदा व अपमान के शिकार हो सकते है। यदि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की सूर्य के साथ युति है या उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है तो आपके विःद्ध कुछ अधिकारिक कार्यवाही संस्थापित की जा सकती है और आपको अधिकारियों के कोप का भाजन बनना पड़ सकता है। आपको अपमान, निलम्बन या निष्कासन का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अपने सभी मामलों में अत्यंत उन्नति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल

हैं। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

धन्या (बृहस्पति){पुष्य} दशा (05:12:2034 – 05:12:2037)

वतमान में आपकी योगिनी वृहस्पति दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति चौथे भाव में उपस्थित है। इस दशा के दौरान आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि आप अध्ययन कर रहे हैं तो आप अत्यंत उत्तम प्रगति करेंगे। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो समय आपके लिए एक लाभप्रद व प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने के लिए अनुकूल है। किन्तु यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आपकी पदोन्नति किसी प्रतिष्ठित पद पर होगी। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी तथा आपका घरेलु जीवन शान्तिपूर्ण व सुखमय होगा।

वर्तमान में आपकी योगिनी वृहस्पति दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति चौथे भाव में उपस्थित है। अतः आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप बहुत सक्रिय व्यक्ति होंगे। आप अच्छी शिक्षा ग्रहण करेंगे और आपमें अनेक वांछित गुणात्मक विशेषताएं होंगी। आपकी कुण्डली में वृहस्पति दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है, अतः आप निश्चित :प से अपने पेशे के क्षेत्र में एक उच्च पद प्राप्त करेंगे और अकलंकित प्रतिष्ठा का आनन्द लेंगे। यदि आपका लग्न मेष या कन्या या धनु है तो आप सर्वोत्तम संभावित परिणामों की आशा कर सकते हैं। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे और शान्तिपूर्ण, संतुष्ट व सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे। यदि गुरु की शुक्र या बुध या चंद्रमा के साथ युति है तो आप प्रचुरता व समृद्धि से परिपूर्ण होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, वृहस्पति के योग–स्फूट नक्षत्र का स्वामी नौवें भाव में उपस्थित है। अतः आपका स्थानान्तरण या रोजगार में परिवर्तन हो सकता है। आपको किसी दूरस्थ स्थान पर या विदेश जाना पड़ सकता है और वहां काफी लम्बे समय तक रहना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बृहस्पति दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भ्रमरी (मंगल){अश्लेषा} दशा (05:12:2037 – 05:12:2041)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली :प में व्यक्त करने के लिए और अच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भद्रिका (बुध){मघा} दशा (05:12:2041 – 05:12:2046)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध ग्यारहवें भाव में उपस्थित है, अतः आप बहुत भाग्यशाली और सक्रिय होंगे। आप अपने पेशे में अच्छा करेंगे और इस दशा की अवधि के दौरान आपकी आय में विशेष :प से वृद्धि होगी। आपका अनेक नए लोगों से सम्पक्र स्थापित होगा और आपके मित्रों व परिचितों का दायरा और विस्तृत होगा। यदि आप शैक्षिक या बौद्धिक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आप निश्चित :प से सराहनीय प्रगति करेंगे। यदि आप विविधता के लिए कुछ संभावित नए क्षेत्र में जाना चाहते हैं तो

समय आपके लिए अनुकूल है। आपको एक से अधिक बार अवसर प्राप्त होंगे और आप उनका उपयोग कुशलतापूर्वक अपनी प्रगति के लिए करने में सक्षम होंगे। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है अथवा किसी कारणवश आपको उनसे दूर रहना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली :प में व्यक्त करने के लिए और अच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अन्यथा दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

उल्का (शनि){पुर्वफाल्गुनी} दशा (05:12:2046 – 05:12:2052)

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि नौवें भाव में उपस्थित है, अतः आपका आगामी समय समस्याग्रस्त हो सकता है। आप पर कई नए प्रतिबन्ध लगाए जा सकते हैं– बिना किसी औचित्य के। कभी–कभी आप स्वयं को बहुत असहाय महसूस कर सकते हैं– अपने सभी सर्वोत्तम प्रयासों का बावजूद आप वांछित परिणाम प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपकी आय में कमी आ

सकती है और संभवतः आपको कुछ हानियां भी हो सकती हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आपके लिए अपने वादों को पूरा करना निरंतर कठिन हो सकता है तथा अपने ऋणदाताओं के दबाव में रह सकते हैं। आपकी पत्नी या व्यापारिक साझेदार अत्यधिक मांग करने वाले हो सकते हैं, जिससे आपमें मानसिक शांति का अभाव हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के योग–स्फूट नक्षत्र के स्वामी की एक ग्रह के साथ युति है, जो कि पंचमेश है। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको संभवतः एक नए रोजगार अथवा पदोन्नति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप व्यापार में हैं तो आप उल्लेखनीय प्रगति की उम्मीद कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के योग–स्फूट नक्षत्र के स्वामी की एक ग्रह के साथ युति है, जो कि दशमेश है। यदि आप नौकरी में हैं तो आपको संभवतः एक नए रोजगार अथवा पदोन्नति की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप व्यापार में हैं तो आप उल्लेखनीय प्रगति की करेंगे। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में काफी वृद्धि होगी और आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी शनि दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी शनि दशा की अवधि वास्तव में आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। आपको बहुत सावधान व सजग रहना चाहिए एवं सदैव सतर्कता बरतनी चाहिए। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है– कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों के कारण।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शनि दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

सिद्धा (शुक्र){उत्तरफाल्गुनी} दशा (05:12:2052 – 05:12:2059)

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र ग्यारहवें भाव में उपस्थित है। अतः आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपको किसी से प्रेम हो सकता है। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना कर रहे हैं तो आप एक संतान की उम्मीद कर सकते हैं– संभवतः एक सुन्दर कन्या की। आपकी आय में विशेष :प से वृद्धि होगी और आप अपने मित्रों

व परिचितों के मध्य आकर्षण का केन्द्र होंगे। यदि किसी कलात्मक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं या आपके पेशे का कुछ संबंध मनोरंजन के क्षेत्र से है तो इस योगिनी दशा की अवधि के दौरान आप उल्लेखनीय प्रगति करेंगे।

संकटा (राहु){हस्ता} दशा (05:12:2059 – 05:12:2067)

याागेनी दशा चक्र की अन्तिम समयावधि प्रायः प्रतिकूल प्रतिफल उत्पन्न करती है। दशा चक्र के अन्त की पहली, दूसरी व तीसरी तिथि क्रमशः 05:12:2031ए 05:12:2067 और 05:12:2103 हैं। अतः इन तीनों तिथियों से तीन महीने आगे–पीछे तक की अवधि में आपको सावधान रहना चाहिए। इन तिथियों के पूर्वगामी कुछ महीनों के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित राहु की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा एवं इन तिथियों के ठिक बाद के कुछ महीनों के आरम्भ के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित चंद्रमा की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दो नैसर्गिक अशुभ ग्रहों मंगल व शनि के साथ युति अथवा दृष्टि के संयुक्त प्रभाव में है। अतः योगिनी राहु दशा आपके लिए काफी प्रतिकूल हो सकती है। इस दशा की अन्तिम अवधि के दौरान किसी समय आपको अपने व्यवसाय और/या विस्थापन का सामना करना पड़ सकता है। आपको सावधान व सतर्क भी रहना चाहिए, क्योंकि आपके साथ किसी दुर्घटना के घटित होने की भी संभावना है। आपकी आय अत्यंत कम हो सकती है और आपकी आर्थिक स्थिति असामान्य :प से कमजोर हो सकती है।

मंगला (चन्द्रमा){चित्रा} दशा (05:12:2067 – 05:12:2068)

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ स्थित है, किन्तु एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः इस दशा की अवधि के दौरान आपको मिश्रित (शुभ व अशुभ दोनों) परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। योगिनी चंद्र दशा का प्रारम्भिक भाग कुछ अनुकूल फल प्रदान करेगा और आप आनन्द की अनुभूति करेंगे, किन्तु इस दशा का अन्तिम भाग आपके लिए कुछ तनावपूर्ण हो सकता है और अप्रसन्नता महसूस कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान आप अत्यंत उन्नति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

पिंगला (सुर्य){स्वाति} दशा (05:12:2068 – 05:12:2070)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य अष्टमेश है और यह दसवें भाव में स्थित है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि के दौरान कई मामलों में आप अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में दशमेश सुव्यवस्थित नहीं है तो तो इस दशा के दौरान अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए आप कुछ बडी कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता व सम्मान दांव पर लग सकते हैं और आप निंदा व अपमान के शिकार हो सकते है। यदि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की सूर्य के साथ युति है या उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है तो आपके विःद्ध कुछ अधिकारिक कार्यवाही संस्थापित की जा सकती है और आपको अधिकारियों के कोप का भाजन बनना पड़ सकता है। आपको अपमान, निलम्बन या निष्कासन का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

धन्या (बृहस्पति){विशाखा} दशा (05:12:2070 – 05:12:2073)

वतमान में आपकी योगिनी वृहस्पति दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति चौथे भाव में उपस्थित है। इस दशा के दौरान आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि आप अध्ययन कर रहे हैं तो आप अत्यंत उत्तम प्रगति करेंगे। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो समय आपके लिए एक लाभप्रद व प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने के लिए अनुकूल है। किन्तु यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आपकी पदोन्नति किसी प्रतिष्ठित पद पर होगी। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी तथा आपका घरेलु जीवन शान्तिपूर्ण व सुखमय होगा।

वर्तमान में आपकी योगिनी वृहस्पति दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति चौथे भाव में उपस्थित है। अतः आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप बहुत सक्रिय व्यक्ति होंगे। आप अच्छी शिक्षा ग्रहण करेंगे और आपमें अनेक वांछित गुणात्मक विशेषताएं होंगी। आपकी कुण्डली में वृहस्पति दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है, अतः आप निश्चित :प से अपने पेशे के क्षेत्र में एक उच्च पद प्राप्त करेंगे और अकलंकित प्रतिष्ठा का आनन्द लेंगे। यदि आपका लग्न मेष या कन्या या धनु है तो आप सर्वोत्तम संभावित परिणामों की आशा कर सकते हैं। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे और शान्तिपूर्ण, संतुष्ट व सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे। यदि गुरु की शुक्र या बुध या चंद्रमा के साथ युति है तो आप प्रचुरता व समृद्धि से परिपूर्ण होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है।

इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी बृहस्पति दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली :प में व्यक्त करने के लिए और अच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बृहस्पति दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भ्रमरी (मंगल){अनुराधा} दशा (05:12:2073 – 05:12:2077)

आपकी योगिनी मंगल दशा चल रही है और इसके योग–स्फूट नक्षत्र का स्वामी शनि है। जैसाकि मंगल और शनि दोनों घोर नैसर्गिक अशुभ ग्रह हैं और परस्पर एक दूसरे के विरोधी हैं। अतः इस योगिनी दशा के दौरान आप काफी अप्रसन्न हो सकते हैं। इस अवधि के दौरान, परिस्थितिजन्य बाध्यता के कारण आपका तबादला या स्थान परिवर्तन करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है

और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी-कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भद्रिका (बुध){ज्येष्ठा} दशा (05:12:2077 – 05:12:2082)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध ग्यारहवें भाव में उपस्थित है, अतः आप बहुत भाग्यशाली और सक्रिय होंगे। आप अपने पेशे में अच्छा करेंगे और इस दशा की अवधि के दौरान आपकी आय में विशेष :प से वृद्धि होगी। आपका अनेक नए लोगों से सम्पक्र स्थापित होगा और आपके मित्रों व परिचितों का दायरा और विस्तृत होगा। यदि आप शैक्षिक या बौद्धिक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आप निश्चित :प से सराहनीय प्रगति करेंगे। यदि आप विविधता के लिए कुछ संभावित नए क्षेत्र में जाना चाहते हैं तो समय आपके लिए अनुकूल है। आपको एक से अधिक बार अवसर प्राप्त होंगे और आप उनका उपयोग कुशलतापूर्वक अपनी प्रगति के लिए करने में सक्षम होंगे। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है अथवा किसी कारणवश आपको उनसे दूर रहना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग-स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अन्यथा दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी-कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

उल्का (शनि){मूला} दशा (05:12:2082 – 05:12:2088)

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि की योगिनी दशा चल रही है और इसके योग-स्फूट का स्वामी केतु

है। जैसाकि ये दोनों ही घोर अशुभ ग्रह हैं और परस्पर विरोधी हैं। इसलिए आपको इस दशा की अवधि के दौरान कुछ कष्ट हो सकते हैं। लगभग इसकी 1 वर्ष, 6 माह की अन्तिम अवधि में स्थिति और बिगड़ सकती है। जैसाकि ये दोनों ग्रह आय के प्रवाह को दबा सकते हैं, इसलिए इस दशा के दौरान वित्तिय आघात अथवा धन के अवःद्ध होने की प्रबल संभावना है, जबकि इस दशा की अन्तिम अवधि के दौरान आपकी आय के सामान्य स्रोत शोषित हो सकते हैं अथवा अस्थाई :प से उनमें व्यवधान उत्पन्न हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि नौवें भाव में उपस्थित है, अतः आपका आगामी समय समस्याग्रस्त हो सकता है। आप पर कई नए प्रतिबन्ध लगाए जा सकते हैं– बिना किसी औचित्य के। कभी–कभी आप स्वयं को बहुत असहाय महसूस कर सकते हैं– अपने सभी सर्वोत्तम प्रयासों का बावजूद आप वांछित परिणाम प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपकी आय में कमी आ सकती है और संभवतः आपको कुछ हानियां भी हो सकती हैं। यदि आप व्यापार में हैं तो आपके लिए अपने वादों को पूरा करना निरंतर कठिन हो सकता है तथा अपने ऋणदाताओं के दबाव में रह सकते हैं। आपकी पत्नी या व्यापारिक साझेदार अत्यधिक मांग करने वाले हो सकते हैं, जिससे आपमें मानसिक शांति का अभाव हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दशमेश के निकट है एवं इससे काफी आगे है (इससे अलग है)। अतः आपका स्थानान्तरण किसी असुविधाजनक स्थान पर हो सकता है अथवा आप अपना रोजगार तक खो सकते हैं। रोजगार के परिवर्तन की स्थिति में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए और अपनी अपेक्षाओं में उदार भी होना चाहिए, अन्यथा योगिनी शनि दशा के प्रारम्भ में किसी समय आप हाथ आए एक सुनहरे अवसर को खो सकते हैं– जिसके लिए आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट पंचमेश के निकट है एवं इससे काफी आगे है (इससे अलग है)। अतः आपका स्थानान्तरण किसी असुविधाजनक स्थान पर हो सकता है अथवा आप अपना रोजगार तक खो सकते हैं। रोजगार के परिवर्तन की स्थिति में आपको बहुत सावधान रहना चाहिए और अपनी अपेक्षाओं में उदार भी होना चाहिए, अन्यथा योगिनी शनि दशा के प्रारम्भ में किसी समय आप हाथ आए एक सुनहरे अवसर को खो सकते हैं– जिसके लिए आपको बाद में पछतावा हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी शनि दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी शनि दशा की अवधि वास्तव में आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है।

आपको बहुत सावधान व सजग रहना चाहिए एवं सदैव सतर्कता बरतनी चाहिए। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है– कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों के कारण।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शनि दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

सिद्धा (शुक्र){पूर्वाषाढ़} दशा (05:12:2088 – 05:12:2095)

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र ग्यारहवें भाव में उपस्थित है। अतः आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपको किसी से प्रेम हो सकता है। यदि आप विवाहित हैं और संतान की कामना कर रहे हैं तो आप एक संतान की उम्मीद कर सकते हैं– संभवतः एक सुन्दर कन्या की। आपकी आय में विशेष :प से वृद्धि होगी और आप अपने मित्रों व परिचितों के मध्य आकर्षण का केन्द्र होंगे। यदि किसी कलात्मक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं या आपके पेशे का कुछ संबंध मनोरंजन के क्षेत्र से है तो इस योगिनी दशा की अवधि के दौरान आप उल्लेखनीय प्रगति करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी शुक्र दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी शुक्र दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी शुक्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

संकटा (राहु){उत्तराषाढ़} दशा (05:12:2095 – 05:12:2103)

याागेनी दशा चक्र की अन्तिम समयावधि प्रायः प्रतिकूल प्रतिफल उत्पन्न करती है। दशा चक्र के अन्त की पहली, दूसरी व तीसरी तिथि क्रमशः 05:12:2031ए 05:12:2067 और 05:12:2103 हैं। अतः इन तीनों तिथियों से तीन महीने आगे–पीछे तक की अवधि में आपको सावधान रहना चाहिए। इन तिथियों के पूर्वगामी कुछ महीनों के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित राहु की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा एवं इन तिथियों के ठिक बाद के कुछ महीनों के आरम्भ के दौरान मिलने वाले परिणाम आपकी कुण्डली में स्थित चंद्रमा की अवस्था/स्थिति पर निर्भर करेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु दो नैसर्गिक अशुभ ग्रहों मंगल व शनि के साथ युति अथवा दृष्टि के संयुक्त प्रभाव में है। अतः योगिनी राहु दशा आपके लिए काफी प्रतिकूल हो सकती है। इस दशा की अन्तिम अवधि के दौरान किसी समय आपको अपने व्यवसाय और/या विस्थापन का सामना करना पड़ सकता है। आपको सावधान व सतर्क भी रहना चाहिए, क्योंकि आपके साथ किसी दुर्घटना के घटित होने की भी संभावना है। आपकी आय अत्यंत कम हो सकती है और आपकी आर्थिक स्थिति असामान्य :प से कमजोर हो सकती है।

मंगला (चन्द्रमा){श्रवण} दशा (05:12:2103 – 05:12:2104)

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ स्थित है, किन्तु एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः इस दशा की अवधि के दौरान आपको मिश्रित (शुभ व अशुभ दोनों) परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। योगिनी चंद्र दशा का प्रारम्भिक भाग कुछ अनुकूल फल प्रदान करेगा और आप आनन्द की अनुभूति करेंगे, किन्तु इस दशा का अन्तिम भाग आपके लिए कुछ तनावपूर्ण हो सकता है और अप्रसन्नता महसूस कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान आप अत्यंत उन्नति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी चंद्र दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी चंद्र दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और

ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

पिंगला (सुर्य){धनिष्ठा} दशा (05:12:2104 – 05:12:2106)

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य अष्टमेश है और यह दसवें भाव में स्थित है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि के दौरान कई मामलों में आप अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में दशमेश सुव्यवस्थित नहीं है तो तो इस दशा के दौरान अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए आप कुछ बडी कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता व सम्मान दांव पर लग सकते हैं और आप निंदा व अपमान के शिकार हो सकते है। यदि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की सूर्य के साथ युति है या उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है तो आपके विःद्ध कुछ अधिकारिक कार्यवाही संस्थापित की जा सकती है और आपको अधिकारियों के कोप का भाजन बनना पड़ सकता है। आपको अपमान, निलम्बन या निष्कासन का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अपने सभी मामलों में अत्यंत उन्नति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक या एक से अधिक शुभ समारोहों का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी सूर्य दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं व अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी सूर्य दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

धन्या (बृहस्पति){शतभिषा} दशा (05:12:2106 – 05:12:2109)

वतमान में आपकी योगिनी वृहस्पति दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति चौथे भाव में उपस्थित है। इस दशा के दौरान आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। यदि आप अध्ययन कर रहे हैं तो आप अत्यंत उत्तम प्रगति करेंगे। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो समय आपके लिए एक लाभप्रद व प्रतिष्ठित पद प्राप्त करने के लिए अनुकूल है। किन्तु यदि आप पहले से ही रोजगार में हैं तो आपकी पदोन्नति किसी प्रतिष्ठित पद पर होगी। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी तथा आपका घरेलु जीवन शान्तिपूर्ण व सुखमय होगा।

वर्तमान में आपकी योगिनी वृहस्पति दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में वृहस्पति चौथे भाव में उपस्थित है। अतः आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप बहुत सक्रिय व्यक्ति होंगे। आप अच्छी शिक्षा ग्रहण करेंगे और आपमें अनेक वांछित गुणात्मक विशेषताएं होंगी। आपकी कुण्डली में वृहस्पति दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है, अतः आप निश्चित :प से अपने पेशे के क्षेत्र में एक उच्च पद प्राप्त करेंगे और अकलंकित प्रतिष्ठा का आनन्द लेंगे। यदि आपका लग्न मेष या कन्या या धनु है तो आप सर्वोत्तम संभावित परिणामों की आशा कर सकते हैं। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे और शान्तिपूर्ण, संतुष्ट व सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे। यदि गुरु की शुक्र या बुध या चंद्रमा के साथ युति है तो आप प्रचुरता व समृद्धि से परिपूर्ण होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी वृहस्पति दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बृहस्पति दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भ्रमरी (मंगल){पूर्वाभाद्र} दशा (05:12:2109 – 05:12:2113)

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ अवांछित घटनाओं और/या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल 150 डिग्री दृष्टि में शामिल है और यह दृष्टि पास की है। अतः योगिनी मंगल दशा की अवधि आपके लिए अधिक कष्टकारी हो सकती है और इस दशा के दौरान आपको अपने व्यावसायिक जीवन में एक बुरे दौर से गुजरना पड़ सकता है। आपके घर–परिवार में कुछ विचलित करने वाली घटनाएं हो सकती हैं और आप संघर्ष व लड़ाइ–झगड़े कर सकते हैं। आपको सावधान रहना चाहिए और अपने वरिष्ठों/अधिकारियों से मतभेद उत्पन्न करने से बचना चाहिए तथा अन्य लोगों के साथ भी किसी प्रकार के विवाद में उलझने से बचना चाहिए। इस दशा के आठवें माह के आस–पास से चीजें स्वतः ही साफ नजर आने लगेंगी और आपको स्वयं को प्रभावशाली :प में व्यक्त करने के लिए और अच्छे अवसर मिलने प्रारम्भ हो जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी मंगल दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अशुभ दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

भद्रिका (बुध){उत्तरभाद्र} दशा (05:12:2113 – 05:12:2118)

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध ग्यारहवें भाव में उपस्थित है, अतः आप बहुत भाग्यशाली और सक्रिय होंगे। आप अपने पेशे में अच्छा करेंगे और इस दशा की अवधि के दौरान आपकी आय में विशेष :प से वृद्धि होगी। आपका अनेक नए लोगों से सम्पक्र स्थापित होगा और आपके मित्रों व परिचितों का दायरा और विस्तृत होगा। यदि आप शैक्षिक या बौद्धिक व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आप निश्चित :प से सराहनीय प्रगति करेंगे। यदि आप विविधता के लिए कुछ संभावित नए क्षेत्र में जाना चाहते हैं तो समय आपके लिए अनुकूल है। आपको एक से अधिक बार अवसर प्राप्त होंगे और आप उनका उपयोग कुशलतापूर्वक अपनी प्रगति के लिए करने में सक्षम होंगे। हालांकि आपकी माता का स्वास्थ्य और सुख आपको चिन्तित कर सकता है अथवा किसी कारणवश आपको उनसे दूर रहना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक शुभ ग्रहों की अनुकूल दृष्टि में शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि आपके लिए बहुत आनन्ददायक होगी। इस दशा के दौरान सामान्यतः आप अधिक प्रगति करेंगे एवं आपके परिवार मे एक शुभ समारोह का आयोजन हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट दो भिन्न नैसर्गिक अशुभ ग्रहों की प्रतिकूल दृष्टि में शामिल हैं। अतः योगिनी बुध दशा की अवधि संभवतः आपके लिए बहुत समस्याप्रद हो सकती है। इस अवधि के दौरान आपको बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है एवं यहां तक कि कुछ

अवांछित घटनाओं या अशुभ अवसरों का भी सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, योग–स्फूट एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ अनुकूल दृष्टि में शामिल है और एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ प्रतिकूल दृष्टि में भी शामिल है। अतः योगिनी बुध दशा के दौरान आपको मिश्रित परिणामों (शुभ व अन्यथा दोनों) की अनुभूति होगी। यदि आपके व्यवसाय का संबंध आम लोगों के साथ है तो आप कभी–कभी चिड़चिड़े हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह भी अपने सौम्य प्रभावो से इसे प्रभावित कर रहा है, इसलिए चीजें ना तो बहुत बिगड़ेंगी और ना ही बहुत लम्बे समय तक चलेंगी।

जैमिनी चर दशा का भविष्यफल

Jaimini Chara Dasha, as explained by Iranagati Rangacharya, is an esteemed progression system in Vedic astrology that provides a framework for predicting significant life events. It emphasizes the movable karakas and is dependent on the placement of signs rather than planetary positions, making it unique. Rangacharya's interpretation brings out nuanced subtleties, enhancing the system's effectiveness in delivering precise and contextually relevant predictions.

(वि.प्रा. – इस दशा में हम सामान्य किशोरावस्था एवं युवावस्था की घटनाओं पर ध्याान दे रहे हैं, भविष्यफल देखते समय, बाल्यावस्था (16 वर्ष से पहले) और वृद्धावस्था (64 वर्ष के बाद) काल के भविष्यफल पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है।)

मकर दशा (11:11:2011 से 11:11:2020)

वतमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है, इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। यदि आप किसी अन्य बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं, तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर मैत्री–कारक ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है। यह एक बढ़िया योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर चतुर्थेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि चतुर्थेश शिक्षा का मुख्य कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर पंचमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि पंचमेश स्मृति, प्रतिभा आदि का कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर नवमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि नवमेश उच्च शिक्षा का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर एकादशेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि एकादशेश अभिलाषाओं की पूर्ति और महात्वाकांक्षाओं के कार्यान्वयन का कारक है, यह एक

बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है। अतः यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सिहं राशि में दारा–कारक ग्रह स्थित है, मकर राशि दारा–पद राशि है, वृश्चिक राशि में विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह स्थित है तथा सिहं राशि उप–पद राशि है। इनमें से किसी भी राशि की दशा, इनमें से किसी भी राशि की भुक्ति और इनमें से किसी भी राशि के अंतर के दौरान आपका विवाह होने की संभावना है। (स्पष्टतः उपयुक्त आयु के अन्तर्गत होगा। इन दशा–भुक्ति–अंतर संयोजन के समय के लिए जैमिनी चर दशा और त्रिकोण दशा को निर्देशित की जा सकती है– राघव भट्ट और नृसिंह सूरी की विभाजन (भुक्ति) और उपविभाजन (अंतर) के अनुसार। एक अंतर–अवधि केवल एक महीने के लिए होती है। इसलिए मुहूर्त और गोचर आदि के निर्णय लेते समय अन्य पक्षों के कारण कुछ दिनों के अन्तर को भी माना जा सकता है)।

कन्या भुक्ति (11:11:2011 से 11:11:2012)

वर्तमान में, आप मकर दशा में, कन्या भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी कुण्डली में, दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है), और आपकी भुक्ति–राशि से भी गणना करने पर अष्टमेश आपके लग्न से दसवें या पाँचवें भाव में स्थित है (या इन दोनों राशियों में से किसी पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। यह समग्र योग काफी प्रतिकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस अवधि के दौरान (जो कि केवल एक वर्ष तक चलेगा), आपको अपने पेशे के क्षेत्र में गंभीर आघात का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपको भारी हानियां हो सकती हैं। आपको अपना निवास स्थान भी छोड़ना पड़ सकता है अथवा किसी असुविधाजनक स्थान पर जाना पड़ सकता है।

सिहं भुक्ति (11:11:2012 से 11:11:2013)

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की भुक्ति–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

वर्तमान में आप मकर दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में सिहं भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना

का सामना कर सकते हैं।

कर्क भुक्ति (11:11:2013 से 11:11:2014)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मिथुन भुक्ति (11:11:2014 से 11:11:2015)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृष भुक्ति (11:11:2015 से 11:11:2016)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मेष भुक्ति (11:11:2016 से 11:11:2017)

वर्तमान में आप मेष दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप मकर दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

मीन भुक्ति (11:11:2017 से 11:11:2018)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कुम्भ भुक्ति (11:11:2018 से 11:11:2019)

वर्तमान में आप कुम्भ दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

मकर भुक्ति (11:11:2019 से 11:11:2020)

वर्तमान में आप मकर राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

धनु दशा (11:11:2020 से 11:11:2029)

वतमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें राशि से गणना करने पर चौथे भाव का स्वामी स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में बहुत शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह ग्रह ना ही उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है। तब भी यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिससे पाँचवें भाव में अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) स्थित है। अमात्य–कारक ग्रह पेशे का संचालक है और पाँचवां भाव पद का सूचक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार, पदोन्नति या स्थानान्तरण प्राप्त कर सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

शनि सेवा क्षेत्र और औद्योगिक धन्धों का नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उससे दसवें भाव में शनि स्थित है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि वक्री नहीं है। दसवां भाव पेशे का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह उस राशि से छठवें भाव में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि छठवां भाव नौकरी और प्रतियोगिता का सूचक है, अतः यह अनेक मामलों में बहुत अनुकूल योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत प्रगति की आशा कर सकते हैं। संभवतः आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा स्थानान्तरण हो सकता है अथवा पदोन्नति हो सकती है। आपका पद और पारिश्रमिक बहुत बढ़िया हो सकता है। जैसाकि छठवां भाव शत्रु व रोग का भी सूचक है, आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे, किन्तु आपका स्वास्थ्य कुछ हद तक नाजुक हो सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपके लिए नये मार्ग खुल सकते हैं और आप काफी तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

मेष भुक्ति (11:11:2020 से 11:11:2021)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृष भुक्ति (11:11:2021 से 11:11:2022)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मिथुन भुक्ति (11:11:2022 से 11:11:2023)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कर्क भुक्ति (11:11:2023 से 11:11:2024)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

सिंह भुक्ति (11:11:2024 से 11:11:2025)

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की भुक्ति–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

कन्या भुक्ति (11:11:2025 से 11:11:2026)

वर्तमान में आप कन्या दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) धनु भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर षष्ठेश या द्वितीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि छठा भाव सातवें भाव से बारहवां है और दूसरा भाव सातवें भाव से आठवां है। अतः आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। उनको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है और/या किसी शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

तुला भुक्ति (11:11:2026 से 11:11:2027)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2027 से 11:11:2028)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

धनु भुक्ति (11:11:2028 से 11:11:2029)

वर्तमान में आप धनु राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वृश्चिक दशा (11:11:2029 से 11:11:2033)

वतमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें बुध स्थित है, लेकिन यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है। जैसाकि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है, इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। यदि आप किसी अन्य बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं, तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान समय में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें मैत्री–कारक ग्रह स्थित है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है, लेकिन जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है अथवा ना ही अपने भाव में स्थित

है। आपकी कुण्डली में यह मात्र एक सामान्य रूप से अच्छा योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें पंचमेश स्थित है। यद्यपि पंचमेश आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है, जैसाकि पंचमेश स्मृति, प्रतिभा आदि का कारक है, इसलिए यह अब भी एक बहुत लाभदायक योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें नवमेश स्थित है। यद्यपि नवमेश आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है, जैसाकि नवमेश उच्च शिक्षा का कारक है, इसलिए यह अब भी एक बहुत लाभदायक योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर पाँचवें भाव का स्वामी आपके लग्न से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में आप बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसे बृहस्पति और बुध, दोनों ग्रह प्रभावित कर रहे हैं। बुध इसमें स्थित है और बृहस्पति इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें आपका दशमेश स्थित है। दशमेश पेशा, विश्वसनीयता, सम्मान आदि का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें आपका पंचमेश स्थित है। पंचमेश पद, स्थिति आदि का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

बुध बौद्धिक धन्धों और व्यापारिक सौदों का भी नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उसमें बुध स्थित है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति करने की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, दशमेश और पंचमेश दोनों की जिस राशि में युति है, वर्तमान में आप उसी राशि की

चर दशा से गुजर रहे हैं। यह एक अत्यंत शुभ योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत उत्तम उन्नति करने की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी और आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उसका स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, उसी दशा राशि से दसवें भाव का स्वामी आपके लग्न से पाँचवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है। जैसाकि दसवां भाव पेशे का संचालक है, जबकि पाँचवां भाव पद का सूचक है, अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग का निर्माण कर रहा है। इस दशा अवधि के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत उत्तम प्रगति की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आप निरन्तर अत्यधिक लोकप्रिय हो सकते हैं और सामान्य लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी, इसमें बहुत तेजी आयेगी तथा आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

आपकी कुण्डली में सिहं राशि में दारा–कारक ग्रह स्थित है, मकर राशि दारा–पद राशि है, वृश्चिक राशि में विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह स्थित है तथा सिहं राशि उप–पद राशि है। इनमें से किसी भी राशि की दशा, इनमें से किसी भी राशि की भुक्ति और इनमें से किसी भी राशि के अंतर के दौरान आपका विवाह होने की संभावना है। (स्पष्टतः उपयुक्त आयु के अन्तर्गत होगा। इन दशा–भुक्ति–अंतर संयोजन के समय के लिए जैमिनी चर दशा और त्रिकोण दशा को निर्देशित की जा सकती है– राघव भट्ट और नृसिंह सूरी की विभाजन (भुक्ति) और उपविभाजन (अंतर) के अनुसार। एक अंतर–अवधि केवल एक महीने के लिए होती है। इसलिए मुहूर्त और गोचर आदि के निर्णय लेते समय अन्य पक्षों के कारण कुछ दिनों के अन्तर को भी माना जा सकता है)।

सिहं भुक्ति (11:11:2029 से 11:11:2030)

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की भुक्ति–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

कन्या भुक्ति (11:11:2030 से 11:11:2031)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (11:11:2031 से 11:11:2032)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और तुला राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, वृश्चिक और तुला राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि

के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2032 से 11:11:2033)

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की दशा में वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से, दशा–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वर्तमान में आप वृश्चिक राशि की दशा में वृश्चिक राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। भुक्ति–राशि से, दशा–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है), दशा–राशि से भी, भुक्ति–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

तुला दशा (11:11:2033 से 11:11:2035)

वतमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर चतुर्थेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि चतुर्थेश शिक्षा का मुख्य कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर एकादशेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि एकादशेश अभिलाषाओं की पूर्ति और महात्वाकांक्षाओं के कार्यान्वयन का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश दशा–राशि से ग्यारहवें भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से दसवें भाव की राशि के अनुकूल है। दसवां भाव पेशा, विश्वसनीयता, सम्मान आदि का भाव है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में निश्चित रूप से अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक

प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपकी विश्वसनीयता और सम्मान में वृद्धि होगी तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2033 से 11:11:2034)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (11:11:2034 से 11:11:2035)

वर्तमान में आप तुला राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वर्तमान में आप तुला राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसमें तुला राशि की भुक्ति चल रही है, जो कि एक साल तक चलेगी। आपकी कुण्डली में दशा–राशि का स्वामी आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा आपके लग्न से सप्तमेश के साथ इसकी युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। विवाह का अवसर सातवें भाव के अन्तर्गत आता है और सातवें भाव का प्रभाव प्रबल है। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान आपका विवाह होने की प्रबल संभावना है। भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा इसकी दशा–राशि से सप्तमेश के साथ युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, भुक्ति–राशि का सप्तमेश भुक्ति राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। सातवें भाव की प्रबलता और लग्न, दशा–राशि एवं भुक्ति–राशि के मध्य मधुर आंतरिक–संबंध स्थापित होने के कारण, यह संभावना प्रबल प्रतीत होती है कि आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान विवाह कर सकते हैं।

कन्या दशा (11:11:2035 से 11:11:2038)

वतमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें राशि से गणना करने पर चौथे भाव का स्वामी स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में बहुत शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह ग्रह ना ही उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है। तब भी यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी आपके लग्न से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

शनि सेवा क्षेत्र और औद्योगिक धन्धों का नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उसमें शनि स्थित है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति करने की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि

आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी और आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह क्रमशः दूसरी और बारहवीं राशि में स्थित है। यह इस राशि के लिए पाप–कर्तरी योग का निर्माण करता है, जो कि बहुत एक प्रतिकूल योग है। इस दशा के दौरान आप कुछ हानिकारक परिवर्तनों से गुजर सकते हैं। अपने पेशे के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं और आपकी आय में धीरे–धीरे कमी आ सकती है। आपको कुछ हानियां भी हो सकती हैं अथवा धन के अवरोध से बुरी तर प्रभावित हो सकते हैं। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी कुछ हद तक बिगड़ सकता है।

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2035 से 11:11:2036)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (11:11:2036 से 11:11:2037)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कन्या भुक्ति (11:11:2037 से 11:11:2038)

वर्तमान में आप कन्या राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

सिंह दशा (11:11:2038 से 11:11:2049)

वतमान में आप उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें चतुर्थेश स्थित है। यद्यपि चतुर्थेश आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है, जैसाकि यह शिक्षा का मुख्य कारक है, इसलिए यह अब भी एक बहुत लाभदायक योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें एकादशेश स्थित है। यद्यपि एकादशेश आपकी जन्मकुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है, जैसाकि एकादशेश अभिलाषाओं की पूर्ति और महात्वाकांक्षाओं के कार्यान्वयन का कारक है, इसलिए यह अब भी एक बहुत लाभदायक योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर पाँचवें भाव का स्वामी आपके लग्न से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में आप बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर पंचमेश दशा–राशि से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी

जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिसका स्वामी आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है। दसवां भाव पेशे से संबंधित मामलों का शासक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की दशा–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस दशा–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

आपकी कुण्डली में सिहं राशि में दारा–कारक ग्रह स्थित है, मकर राशि दारा–पद राशि है, वृश्चिक राशि में विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह स्थित है तथा सिहं राशि उप–पद राशि है। इनमें से किसी भी राशि की दशा, इनमें से किसी भी राशि की भुक्ति और इनमें से किसी भी राशि के अंतर के दौरान आपका विवाह होने की संभावना है। (स्पष्टतः उपयुक्त आयु के अन्तर्गत होगा। इन दशा–भुक्ति–अंतर संयोजन के समय के लिए जैमिनी चर दशा और त्रिकोण दशा को निर्देशित की जा सकती है– राघव भट्ट और नृसिंह सूरी की विभाजन (भुक्ति) और उपविभाजन (अंतर) के अनुसार। एक अंतर–अवधि केवल एक महीने के लिए होती है। इसलिए मुहूर्त और गोचर आदि के निर्णय लेते समय अन्य पक्षों के कारण कुछ दिनों के अन्तर को भी माना जा सकता है)।

तुला भुक्ति (11:11:2038 से 11:11:2039)

वर्तमान में आप सिहं राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसमें तुला राशि की भुक्ति चल रही है, जो कि एक साल तक चलेगी। आपकी कुण्डली में दशा–राशि का स्वामी आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा आपके लग्न से सप्तमेश के साथ इसकी युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। विवाह का अवसर सातवें भाव के अन्तर्गत आता है और सातवें भाव का प्रभाव प्रबल है। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान आपका विवाह होने की प्रबल संभावना है। भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा इसकी दशा–राशि से सप्तमेश के साथ युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, भुक्ति–राशि का सप्तमेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। सातवें भाव की प्रबलता और लग्न, दशा–राशि एवं भुक्ति–राशि के मध्य मधुर आंतरिक–संबंध स्थापित होने के कारण, यह संभावना प्रबल प्रतीत होती है कि आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान विवाह कर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2039 से 11:11:2040)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

धनु भुक्ति (11:11:2040 से 11:11:2041)

वर्तमान में आप सिहं राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और धनु राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, सिहं और धनु राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

मकर भुक्ति (11:11:2041 से 11:11:2042)

वर्तमान में आप सिहं दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

कुम्भ भुक्ति (11:11:2042 से 11:11:2043)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मीन भुक्ति (11:11:2043 से 11:11:2044)

वर्तमान में आप सिहं राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मीन राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, सिहं और मीन राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

मेष भुक्ति (11:11:2044 से 11:11:2045)

वर्तमान में आप सिहं दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा

साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप सिहं दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। अतः आपका स्वास्थ्य व सुख आपके परिवार के सदस्यों के लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है और/या किसी शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

वृष भुक्ति (11:11:2045 से 11:11:2046)

वर्तमान में आप सिहं राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसमें वृष राशि की भुक्ति चल रही है, जो कि एक साल तक चलेगी। आपकी कुण्डली में दशा–राशि का स्वामी आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा आपके लग्न से सप्तमेश के साथ इसकी युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। विवाह का अवसर सातवें भाव के अन्तर्गत आता है और सातवें भाव का प्रभाव प्रबल है। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान आपका विवाह होने की प्रबल संभावना है। भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा इसकी दशा–राशि से सप्तमेश के साथ युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, भुक्ति–राशि का सप्तमेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। सातवें भाव की प्रबलता और लग्न, दशा–राशि एवं भुक्ति–राशि के मध्य मधुर आंतरिक–संबंध स्थापित होने के कारण, यह संभावना प्रबल प्रतीत होती है कि आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान विवाह कर सकते हैं।

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा में सिहं राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से गणना करने पर सप्तमेश दशा–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि से गणना करने पर सप्तमेश भुक्ति–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आपकी पत्नी किसी दुर्घटना का सामना कर सकती हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकती हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

मिथुन भुक्ति (11:11:2046 से 11:11:2047)

वर्तमान में आप सिहं राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मिथुन राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक

चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, सिहं और मिथुन राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप सिहं राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मिथुन राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, सिहं और मिथुन राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप सिहं राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मिथुन राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। दशा–राशि उप–पद राशि या दारा–पद राशि (पारम्परिक पद्धति के अनुसार) के साथ मिलान कर रहा है – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है अथवा इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा हैं। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, सिहं और मिथुन राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

कर्क भुक्ति (11:11:2047 से 11:11:2048)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

सिहं भुक्ति (11:11:2048 से 11:11:2049)

वर्तमान में आप सिहं राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की भुक्ति–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

वर्तमान में आप सिहं राशि की दशा में सिहं राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से गणना करने पर सप्तमेश दशा–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि से गणना करने पर सप्तमेश भुक्ति–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल

प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आपकी पत्नी किसी दुर्घटना का सामना कर सकती हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकती हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वर्तमान में आप सिहं राशि की दशा में सिहं राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से गणना करने पर सप्तमेश भुक्ति–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि से गणना करने पर सप्तमेश दशा–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आपकी पत्नी किसी दुर्घटना का सामना कर सकती हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकती हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वर्तमान में आप सिहं राशि की दशा में सिहं की भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपके लग्न से आठवां या चौथा भाव दशा–रा चौथा भाव भुक्ति–राशि भी है। आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश दशा–राशि में स्थित है या दशा–राशि पर दृषि है या दशा–राशि से आठवें भाव में स्थित है। यह भुक्ति–राशि में भी स्थित है या भुक्ति–राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अ भुक्ति–राशि से आठवें भाव में स्थित है। आपके लग्न से गणना करने पर अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या दशा–रा डाल रहा है या दशा–राशि से आठवें भाव में स्थित है। यह भुक्ति–राशि में भी स्थित है या भुक्ति–राशि पर दृष्टि (जै भुक्ति–राशि से आठवें भाव में स्थित है। इनसे आगे, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश दशा–राशि में स्थि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है या दशा–राशि से आठवें भाव में स्थित है या चतुर्थेश (आपके लग्न से गणना करने प दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह भुक्ति–राशि में भी स्थित है या भुक्ति–राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार आठवें भाव में स्थित है या चतुर्थेश (आपके लग्न से गणना करने पर) के साथ युति या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुस अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या दशा–राशि पर दृष्टि (जैमिनी के दशा–राशि से आठवें भाव में स्थित है या चतुर्थेश (आपके लग्न से गणना करने पर) के साथ युति है या इस पर दृष्टि है। यह भुक्ति–राशि में भी स्थित है या भुक्ति–राशि पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है या भुक्ति राशि से आठ (आपके लग्न से गणना करने पर) के साथ युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। आठवें व चौथे समग्र जटिल योग अत्यंत प्रतिकूल है। नौवां भाव पिता का कारक है, और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां भाव है, एवं भाव है, इस भुक्ति–अवधि के दौरान (जो कि केवल एक साल के लिए चलेगी), आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके सकता है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान आप अपने पिता से अलग हो सकते हैं या पिता की हानि भी हो सकती है। यह अन्तर–अवधि (जो कि केवल एक माह के लिए चलेगी) के दौरान होने की प्रबल संभावना है। उपयुक्त संभावित समय विभाजन और उप–विभाजन पद्धति (वैकल्पिक पद्धति के अनुसार) देखें।

कर्क दशा (11:11:2049 से 11:11:2053)

वतमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है, इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। यदि आप किसी अन्य बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं, तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर मैत्री–कारक ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है। यह एक बढ़िया योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर पंचमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही

है। जैसाकि पंचमेश स्मृति, प्रतिभा आदि का कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर नवमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि नवमेश उच्च शिक्षा का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है। अतः यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर पंचमेश दशा–राशि से पाँचवें भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उससे पाँचवें भाव में आपके लग्न से दशमेश स्थित है। जहां दशमेश पेशे का शासक है, वहीं पंचमेश पद, प्रतिष्ठा आदि का प्रतीक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उससे पाँचवें भाव में आपके लग्न से पंचमेश स्थित है। पंचमेश पद का प्रतीक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिससे दसवें भाव में अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) स्थित है। अमात्य–कारक ग्रह और दसवां भाव, दोनों ही पेशे के संचालक हैं। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार, पदोन्नति या स्थानान्तरण प्राप्त कर सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

बुध बौद्धिक धन्धों और व्यापारिक सौदों का भी नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उससे पाँचवें भाव में बुध स्थित है। पाँचवां भाव पद का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से केन्द्र भाव में सूर्य स्थित है, जबकि शुक्र एक त्रिकोण भाव में स्थित है। यह एक अत्यंत शुभ योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत उत्तम उन्नति करने की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी और आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

मेष भुक्ति (11:11:2049 से 11:11:2050)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृष भुक्ति (11:11:2050 से 11:11:2051)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मिथुन भुक्ति (11:11:2051 से 11:11:2052)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कर्क भुक्ति (11:11:2052 से 11:11:2053)

वर्तमान में आप कर्क राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

मिथुन दशा (11:11:2053 से 11:11:2059)

वतमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र उस राशि से छठे भाव में स्थित है। उस राशि में कोई भी अशुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि छठवां भाव नौकरी और प्रतियोगिता का सूचक है, अतः यह कुछ मामलों में बहुत अनुकूल योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में कुछ प्रगति की आशा कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा स्थानान्तरण हो सकता है, लेकिन आपका पद और पारिश्रमिक केवल सामान्य हो सकता है। जैसाकि छठवां भाव शत्रु व रोग का भी सूचक है, आपके शत्रु आपके लिए अनेक परेशानियां खड़ी कर सकते हैं, किन्तु आपका स्वास्थ्य काफी उत्तम हो सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आप अनेक समस्याओं का सामना कर सकते हैं और उत्पन्न स्थिति को नियंत्रित करने में कुछ कठिनाई हो सकती है।

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2053 से 11:11:2054)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (11:11:2054 से 11:11:2055)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कन्या भुक्ति (11:11:2055 से 11:11:2056)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

सिहं भुक्ति (11:11:2056 से 11:11:2057)

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की भुक्ति–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

कर्क भुक्ति (11:11:2057 से 11:11:2058)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मिथुन भुक्ति (11:11:2058 से 11:11:2059)

वर्तमान में आप मिथुन राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वृष दशा (11:11:2059 से 11:11:2066)

वतमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी आपके लग्न से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश दशा–राशि से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर एकादशेश दशा–राशि से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान समय में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जो कि आपके लग्न से पाँचवें भाव की राशि के अनुकूल है। अन्य चीजों के साथ, पाँचवां भाव ओहदा, पद आदि का भाव है। इस दशा के दौरान, आपको नयी नौकरी प्राप्त हो सकती है, आपका स्थानान्तरण हो सकता है अथवा आपकी पदोन्नति हो सकती है। जैसाकि एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह इस राशि में स्थित हैं और कोई भी शुभ ग्रह इस राशि में नहीं बैठा है, परिवर्तन आपके लिए बहुत अनुकूल नहीं हो सकते हैं। आपके पारिश्रमिक में कुछ हद तक कमी हो सकती है और/या आप किसी अतिरिक्त सुविधाओं का लाभ भी नहीं उठा सकते हैं। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपकी परिस्थितियां काफी हानिकारक हो सकती हैं और आपकी आय भी कुछ हद तक कम हो सकती है।

शनि सेवा क्षेत्र और औद्योगिक धन्धों का नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से

गुजर रहे हैं, उससे पांचवें भाव में शनि स्थित है। पाँचवां भाव पद का प्रतीक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां अधिक लाभदायक होंगी और आपकी आय में भी काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह उस राशि से छठवें भाव में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि छठवां भाव नौकरी और प्रतियोगिता का सूचक है, अतः यह अनेक मामलों में बहुत अनुकूल योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत प्रगति की आशा कर सकते हैं। संभवतः आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा स्थानान्तरण हो सकता है अथवा पदोन्नति हो सकती है। आपका पद और पारिश्रमिक बहुत बढ़िया हो सकता है। जैसाकि छठवां भाव शत्रु व रोग का भी सूचक है, आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे, किन्तु आपका स्वास्थ्य कुछ हद तक नाजुक हो सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपके लिए नये मार्ग खुल सकते हैं और आप काफी तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2059 से 11:11:2060)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (11:11:2060 से 11:11:2061)

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसमें तुला राशि की भुक्ति चल रही है, जो कि एक साल तक चलेगी। आपकी कुण्डली में दशा–राशि का स्वामी आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा आपके लग्न से सप्तमेश के साथ इसकी युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। विवाह का अवसर सातवें भाव के अन्तर्गत आता है और सातवें भाव का प्रभाव प्रबल है। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान आपका विवाह होने की प्रबल संभावना है। भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा इसकी दशा–राशि से सप्तमेश के साथ युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, भुक्ति–राशि का सप्तमेश भुक्ति राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। सातवें भाव की प्रबलता और लग्न, दशा–राशि एवं भुक्ति–राशि के मध्य मधुर आंतरिक–संबंध स्थापित होने के कारण, यह संभावना प्रबल प्रतीत होती है कि आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान विवाह कर सकते हैं।

कन्या भुक्ति (11:11:2061 से 11:11:2062)

वर्तमान में आप कन्या राशि की जैमिनी चर दशा में वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। केतु दशा–राशि में स्थित है और यह उच्चस्थ नहीं है। शनि भुक्ति–राशि में स्थित है और यह ना तो उच्चस्थ है व ना ही अपनी राशि में स्थित है। समग्र योग बहुत अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस दशा–भुक्ति के प्रारम्भ के आस–पास और/या इस दशा–भुक्ति के समाप्ति के आस–पास किसी अप्रत्याशि स्रोत और/या कुछ अनदेखे कारणों से आकस्मिक रूप से उत्पन्न कुछ गंभीर मुसीबतों का सामना कर सकते हैं। अतः आपको इस निर्देशित समय के आस–पास बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए।

सिहं भुक्ति (11:11:2062 से 11:11:2063)

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की भुक्ति–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसमें सिहं राशि की भुक्ति चल रही है, जो कि एक साल तक चलेगी। आपकी कुण्डली में दशा–राशि का स्वामी आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा आपके लग्न से सप्तमेश के साथ इसकी युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। विवाह का अवसर सातवें भाव के अन्तर्गत आता है और सातवें भाव का प्रभाव प्रबल है। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान आपका विवाह होने की प्रबल संभावना है। भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा इसकी दशा–राशि से सप्तमेश के साथ युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, भुक्ति–राशि का सप्तमेश भुक्ति राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। सातवें भाव की प्रबलता और लग्न, दशा–राशि एवं भुक्ति–राशि के मध्य मधुर आंतरिक–संबंध स्थापित होने के कारण, यह संभावना प्रबल प्रतीत होती है कि आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान विवाह कर सकते हैं।

वर्तमान में आप सिहं राशि की दशा में वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से गणना करने पर सप्तमेश दशा–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि से गणना करने पर सप्तमेश भुक्ति–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आपकी पत्नी किसी दुर्घटना का सामना कर सकती हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकती हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

कर्क भुक्ति (11:11:2063 से 11:11:2064)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मिथुन भुक्ति (11:11:2064 से 11:11:2065)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृष भुक्ति (11:11:2065 से 11:11:2066)

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा में वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से गणना करने पर

सप्तमेश दशा–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि से गणना करने पर सप्तमेश भुक्ति–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आपकी पत्नी किसी दुर्घटना का सामना कर सकती हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकती हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वर्तमान में आप वृष राशि की दशा में वृष राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से गणना करने पर सप्तमेश भुक्ति–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश भुक्ति–राशि से सातवें भाव में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि से गणना करने पर सप्तमेश दशा–राशि से दूसरे भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वितीयेश दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आपकी पत्नी किसी दुर्घटना का सामना कर सकती हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकती हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

मेष दशा (11:11:2066 से 11:11:2075)

वतमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है, इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। यदि आप किसी अन्य बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं, तो आप उत्तम उन्नति की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर मैत्री–कारक ग्रह अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह कारक कुछ हद तक शिक्षा का कारक भी है। यह एक बढ़िया योग है। आप लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर चतुर्थेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि चतुर्थेश शिक्षा का मुख्य कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर पंचमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि पंचमेश स्मृति, प्रतिभा आदि का कारक है, यह एक अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर नवमेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। जैसाकि नवमेश उच्च शिक्षा का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर एकादशेश की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़

रही है। जैसाकि एकादशेश अभिलाषाओं की पूर्ति और महात्वाकांक्षाओं के कार्यान्वयन का कारक है, यह एक बहुत अनुकूल योग है। आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। इस दशा के दौरान शिक्षा ग्रहण करने की आपकी संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक शिक्षा भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिस पर बुध की दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) पड़ रही है। बुध सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा तथा सभी प्रकार के बौद्धिक क्षेत्रों का नैसर्गिक कारक है। अतः यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आप कुछ लाभदायक परिणाम प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें राशि से गणना करने पर चौथे भाव का स्वामी स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में बहुत शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह ग्रह ना ही उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में स्थित है। तब भी यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उसमें लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश दशा–राशि से पाँचवें भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, जिसे बृहस्पति और बुध, दोनों ग्रह प्रभावित कर रहे हैं। बृहस्पति इसमें स्थित है और बुध इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक बहुत अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप उस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, जिसमें आपका अमात्य–कारक ग्रह (सप्त–कारक योजना के अनुसार) स्थित है। अमात्य–कारक ग्रह पेशे के क्षेत्र में प्रगति का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक आकर्षक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह उस राशि से छठवें भाव में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि छठवां भाव नौकरी और प्रतियोगिता का सूचक है, अतः यह अनेक मामलों में बहुत अनुकूल योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत प्रगति की आशा कर सकते हैं। संभवतः आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा स्थानान्तरण हो सकता है अथवा पदोन्नति हो सकती है। आपका पद और पारिश्रमिक बहुत बढ़िया हो सकता है। जैसाकि छठवां भाव शत्रु व रोग का भी सूचक है, आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे, किन्तु आपका स्वास्थ्य कुछ हद तक नाजुक हो सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपके लिए नये मार्ग खुल सकते हैं और आप काफी तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उसके स्वामी की उसी राशि से गणना करने पर आठवें भाव के स्वामी के साथ युति है। ये युति आपके लग्न से दसवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहे हैं। जैसाकि दसवां भाव पेशे का संचालक है और आठवां भाव अत्यधिक कठिनाइयों का सूचक है। अतः यह एक बहुत प्रतिकूल योग है। इस दशा के प्रारम्भ में या इसी दशा के दौरान किसी समय, आपको अपने पेशे में अस्थाई आघात का सामना करना पड़ सकता है। आपको पूर्णतया अप्रत्याशित स्रोतों या अनदेखे कारणों से उत्पन्न गंभीर कठिनाइयों का सामना करने का खतरा हो सकता है। आपका अपने वरिष्ठों या अधिकारियों से कुछ बड़े मतभेद हो सकते हैं। परिस्थितियों से विवश होकर, आपको बिना किसी पर्याप्त तैयारी के नौकरी छोड़नी पड़ सकती है तथा दूसरे नियोक्ता के अधीन कार्य करना पड़ सकता है। आपकी आय में भी कुछ हद तक कमी हो सकती है और आपका पद या रोजगार आपकी योग्यता के अनुरूप नहीं सकता है। आपका निवास भी परिवर्तित हो सकता है तथा आपको किसी असुविधाजनक वातावरण में रहना पड़ सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो यह एक कठिन समय हो सकता है, कुछ हानियां हो सकती हैं, अथवा धन के अभाव या अवरोध के कारण आपको अपने वादों को पूरा करने में कठिनाई हो सकती है।

सिहं भुक्ति (11:11:2066 से 11:11:2067)

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की भुक्ति–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में सिहं भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

वर्तमान में आप मेष दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) सिहं भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर द्वादशेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। अतः आपका स्वास्थ्य व सुख आपके परिवार के सदस्यों के लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। आपको किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है और/या किसी शल्य प्रक्रिया से गुजरना पड़ सकता है।

कन्या भुक्ति (11:11:2067 से 11:11:2068)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (11:11:2068 से 11:11:2069)

वर्तमान में आप मेष राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और तुला राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल

रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, मेष और तुला राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप मेष राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और तुला राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, मेष और तुला राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसमें तुला राशि की भुक्ति चल रही है, जो कि एक साल तक चलेगी। आपकी कुण्डली में दशा–राशि का स्वामी आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा आपके लग्न से सप्तमेश के साथ इसकी युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। विवाह का अवसर सातवें भाव के अन्तर्गत आता है और सातवें भाव का प्रभाव प्रबल है। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान आपका विवाह होने की प्रबल संभावना है। भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा इसकी दशा–राशि से सप्तमेश के साथ युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, भुक्ति–राशि का सप्तमेश भुक्ति राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। सातवें भाव की प्रबलता और लग्न, दशा–राशि एवं भुक्ति–राशि के मध्य मधुर आंतरिक–संबंध स्थापित होने के कारण, यह संभावना प्रबल प्रतीत होती है कि आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान विवाह कर सकते हैं।

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2069 से 11:11:2070)

वर्तमान में आप वृश्चिक दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में वृश्चिक भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

धनु भुक्ति (11:11:2070 से 11:11:2071)

वर्तमान में आप धनु दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

मकर भुक्ति (11:11:2071 से 11:11:2072)

वर्तमान में आप मेष राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं और मकर राशि की भुक्ति (एक वर्ष के लिए) चल रही है। शुक्र या लग्न से सप्तमेश या दारा–कारक ग्रह (सप्तकारक योजना के अनुसार) – जिसमें से प्रत्येक किसी ना किसी प्रकार से विवाह का कारक है– दशा–राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि से सप्तमेश और भुक्ति–राशि से सप्तमेश की युति है। यह युति आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी आयु विवाह योग्य है और अविवाहित हैं तो इस दशा के दौरान आपका विवाह हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप एक साझेदारी या सहभागिता में संलग्न हो सकते हैं– जो कि लम्बे समय तक चलेगा और आपके लिए अनेक प्रकार के लाभों का अग्रदूत होगा। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, मेष और मकर राशि में प्रत्येक की अंतर–अवधि एक महीने के लिए चलेगी– इन दोनों अवधियों में से किसी अवधि के दौरान घटनायें होने की संभावना अत्यधिक है।

वर्तमान में आप मकर दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

वर्तमान में आप मेष दशा (जो कि एक साल तक चलेगा) में मकर भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में आपके लग्न से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर चतुर्थेश या अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि आठवां भाव नौवें भाव से बारहवां है और चौथा भाव नौवें भाव से

आठवां है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं।

कुम्भ भुक्ति (11:11:2072 से 11:11:2073)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मीन भुक्ति (11:11:2073 से 11:11:2074)

वर्तमान में आप मीन दशा में (जो कि एक वर्ष तक चलेगी) मेष भुक्ति से गुजर रहे हैं। आपकी जन्मकुण्डली में, आपके लग्न से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। इसके अतिरिक्त, आपकी दशा–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है, और भुक्ति–राशि से गणना करने पर एकादशेश या तृतीयेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। यह प्रतिकूल आंतरिक संबंध बन रहा है। जैसाकि तीसरा भाव चौथे भाव से बारहवां है और ग्यारहवां भाव चौथे भाव से आठवां है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य व सुख आपके लिए चिन्ता का विषय हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपकी संपत्ति की हानि हो सकती है।

मेष भुक्ति (11:11:2074 से 11:11:2075)

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वर्तमान में आप मेष राशि की दशा से गुजर रहे हैं और इसमें मेष राशि की भुक्ति चल रही है, जो कि एक साल तक चलेगी। आपकी कुण्डली में दशा–राशि का स्वामी आपके लग्न से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा आपके लग्न से सप्तमेश के साथ इसकी युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, दशा–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है। विवाह का अवसर सातवें भाव के अन्तर्गत आता है और सातवें भाव का प्रभाव प्रबल है। यदि आप अविवाहित हैं, तो इस दशा–अवधि के दौरान आपका विवाह होने की प्रबल संभावना है। भुक्ति–राशि का स्वामी दशा–राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा इसकी दशा–राशि से सप्तमेश के साथ युति है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। इसके अतिरिक्त, भुक्ति–राशि का सप्तमेश भुक्ति राशि से सातवें भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है– जबकि भुक्ति–राशि से सप्तमेश दशा–राशि में स्थित है या इस पर दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है (अथवा दशा–राशि से सप्तमेश भुक्ति–राशि में स्थित है या इस पर अपनी दृष्टि (जैमिनी के अनुसार) डाल रहा है)। सातवें भाव की प्रबलता और लग्न, दशा–राशि एवं भुक्ति–राशि के मध्य मधुर आंतरिक–संबंध स्थापित होने के कारण, यह संभावना प्रबल प्रतीत होती है कि आप इस भुक्ति–अवधि के दौरान विवाह कर सकते हैं।

मीन दशा (11:11:2075 से 11:11:2087)

वतमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर पाँचवें भाव का स्वामी आपके लग्न से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में आप बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक अशुभ ग्रह उस राशि से छठवें भाव में स्थित हैं। उस राशि में कोई भी शुभ ग्रह स्थित नहीं है। जैसाकि

छठवां भाव नौकरी और प्रतियोगिता का सूचक है, अतः यह अनेक मामलों में बहुत अनुकूल योग है। इस दशा अवधि के दौरान आप पेशे के क्षेत्र में अत्यंत प्रगति की आशा कर सकते हैं। संभवतः आप किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा स्थानान्तरण हो सकता है अथवा पदोन्नति हो सकती है। आपका पद और पारिश्रमिक बहुत बढ़िया हो सकता है। जैसाकि छठवां भाव शत्रु व रोग का भी सूचक है, आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे, किन्तु आपका स्वास्थ्य कुछ हद तक नाजुक हो सकता है। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपके लिए नये मार्ग खुल सकते हैं और आप काफी तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उसका स्वामी वक्री है। इसके अतिरिक्त, उसी राशि से गिनती करने पर दसवें भाव का स्वामी भी वक्री है। यह एक बहुत अनुकूल योग नहीं है। लेकिन ये दोनों शुभ ग्रह हैं, अतः आप गंभीर कठिनाईयों का सामना नहीं कर सकते हैं। इस दशा अवधि के दौरान, आप अपने पेशे में परिवर्तन कर सकते हैं। आपकी आय काफी सार्थक होगी और पद भी पहले वाले पद से काफी उंचा होगा। इसके अतिरिक्त, आपको किसी दूसरे नियोक्ता के साथ काम करना पड़ सकता है, जो कि आपके प्रति उदार और सहानुभूतिपूर्ण होगा। आप एक बेहतर निवास प्राप्त करने के लिए भी भाग्यशाली होंगे। यदि आप व्यापार में हैं, तो आपकी आय काफी उत्तम होगी, किन्तु आप अपने स्थान या व्यापार से पूर्णतया संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। आप एक नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं अथवा आप अपना कार्यालय/दुकान किसी नए स्थान पर स्थानान्तरित कर सकते हैं।

मेष भुक्ति (11:11:2075 से 11:11:2076)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृष भुक्ति (11:11:2076 से 11:11:2077)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मिथुन भुक्ति (11:11:2077 से 11:11:2078)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कर्क भुक्ति (11:11:2078 से 11:11:2079)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

सिहं भुक्ति (11:11:2079 से 11:11:2080)

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की भुक्ति–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

कन्या भुक्ति (11:11:2080 से 11:11:2081)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

तुला भुक्ति (11:11:2081 से 11:11:2082)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृश्चिक भुक्ति (11:11:2082 से 11:11:2083)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

धनु भुक्ति (11:11:2083 से 11:11:2084)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मकर भुक्ति (11:11:2084 से 11:11:2085)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कुम्भ भुक्ति (11:11:2085 से 11:11:2086)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मीन भुक्ति (11:11:2086 से 11:11:2087)

वर्तमान में आप मीन राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

कुम्भ दशा (11:11:2087 से 11:11:2095)

वतमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उस राशि से गणना करने पर ग्यारहवें भाव का स्वामी आपके लग्न से चौथे भाव में स्थित है। यद्यपि यह ग्रह आपकी कुण्डली में शक्तिशाली रूप से व्यवस्थित नहीं है– जैसाकि यह उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। तब भी यह एक काफी अनुकूल योग है। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति की संभावना काफी उत्तम है। इसके अतिरिक्त, आप अनौपचारिक अध्ययन भी जारी रख सकते हैं। इन सभी मामलों में बहुत उत्तम करने की आशा कर सकते हैं।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उससे दसवें भाव में आपके लग्न से दशमेश स्थित है। दशमेश पेशा, विश्वसनीयता, प्रतिष्ठा आदि का शासक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

वर्तमान में आप जिस राशि की चर–दशा से गुजर रहे हैं, उससे दसवें भाव में आपके लग्न से पंचमेश स्थित है। दशमेश पेशे का शासक है, जबकि पंचमेश पद, प्रतिष्ठा आदि का प्रतीक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

बुध बौद्धिक धन्धों और व्यापारिक सौदों का भी नैसर्गिक कारक है। वर्तमान में आप जिस राशि की चर दशा से गुजर रहे हैं, उससे दसवें भाव में बुध स्थित है। दसवां भाव पेशे का संचालक है। इस दशा के दौरान, आप पेशे के क्षेत्र में अधिक उन्नति करेंगे। आप एक नया रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा एक प्रतिष्ठित

पद तक पहुंच सकते हैं। आपका नाम व यश दूर दूर तक फैलेगा तथा लोग आपके साथ अधिक सम्मान का व्यवहार करेंगे। यदि आप व्यापार के क्षेत्र में हैं, तो आपकी परिस्थितियां निरन्तर लाभदायक होती जायेंगी और आपकी आय में काफी सुधार होगा।

कन्या भुक्ति (11:11:2087 से 11:11:2088)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

सिहं भुक्ति (11:11:2088 से 11:11:2089)

वर्तमान में आप अपने लग्न से आठवें भाव की राशि की भुक्ति–अवधि से गुजर रहे हैं। मंगल– जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है– इस राशि में स्थित है। इस भुक्ति–अवधि के दौरान, आपके स्वास्थ्य एवं कुशलता के लिए यह एक अनुकूल संकेत नहीं हैं। इसलिए आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए और अपने आप को बचाने के लिए हर संभव सावधानी बरतनी चाहिए। आपको प्रभावशाली व्यक्तियों से विवाद में उलझने की किसी भी प्रकार की संभावना से बचने का प्रयास करना चाहिए। किसी दुर्घटना या अशुभ घटना का सामना करने की भी कुछ संभावना है।

कर्क भुक्ति (11:11:2089 से 11:11:2090)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मिथुन भुक्ति (11:11:2090 से 11:11:2091)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

वृष भुक्ति (11:11:2091 से 11:11:2092)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मेष भुक्ति (11:11:2092 से 11:11:2093)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

मीन भुक्ति (11:11:2093 से 11:11:2094)

कुण्डली में प्रभावी योग किसी विशिष्ट निष्कर्ष की गारंटी देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

कुम्भ भुक्ति (11:11:2094 से 11:11:2095)

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा से गुजर रहे हैं, इसी राशि की भुक्ति भी एक साल के लिए चल रही है। इस दशा के दौरान, दशा का फल और सुदृढ़ होगा।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा में कुम्भ राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। दशा–राशि से, दशा–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है), भुक्ति–राशि से भी, भुक्ति–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं या

कोई अशुभ घटना हो सकती है।

वर्तमान में आप कुम्भ राशि की दशा में कुम्भ राशि की भुक्ति से गुजर रहे हैं। भुक्ति–राशि से, दशा–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा दशा–राशि से अष्टमेश दशा–राशि में स्थित है), दशा–राशि से भी, भुक्ति–राशि का स्वामी आठवें भाव में स्थित है (अथवा भुक्ति–राशि से अष्टमेश भुक्ति–राशि में स्थित है) और इनमें से कोई भी स्वामी शक्तिशाली नहीं है अर्थात ना तो उच्चस्थ है या ना ही अपनी राशि में स्थित है। यह समग्र संकेत काफी प्रतिकूल है और आपको बहुत सावधान एवं सतर्क रहना चाहिए। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है कि इस अवधि के दौरान (जो कि एक साल तक चलेगी) आप किसी दुर्घटना का सामना कर सकते हैं अथवा किसी शल्य प्रक्रिया से गुजर सकते हैं या कोई अशुभ घटना हो सकती है।

ज्योतिषीय उपचार

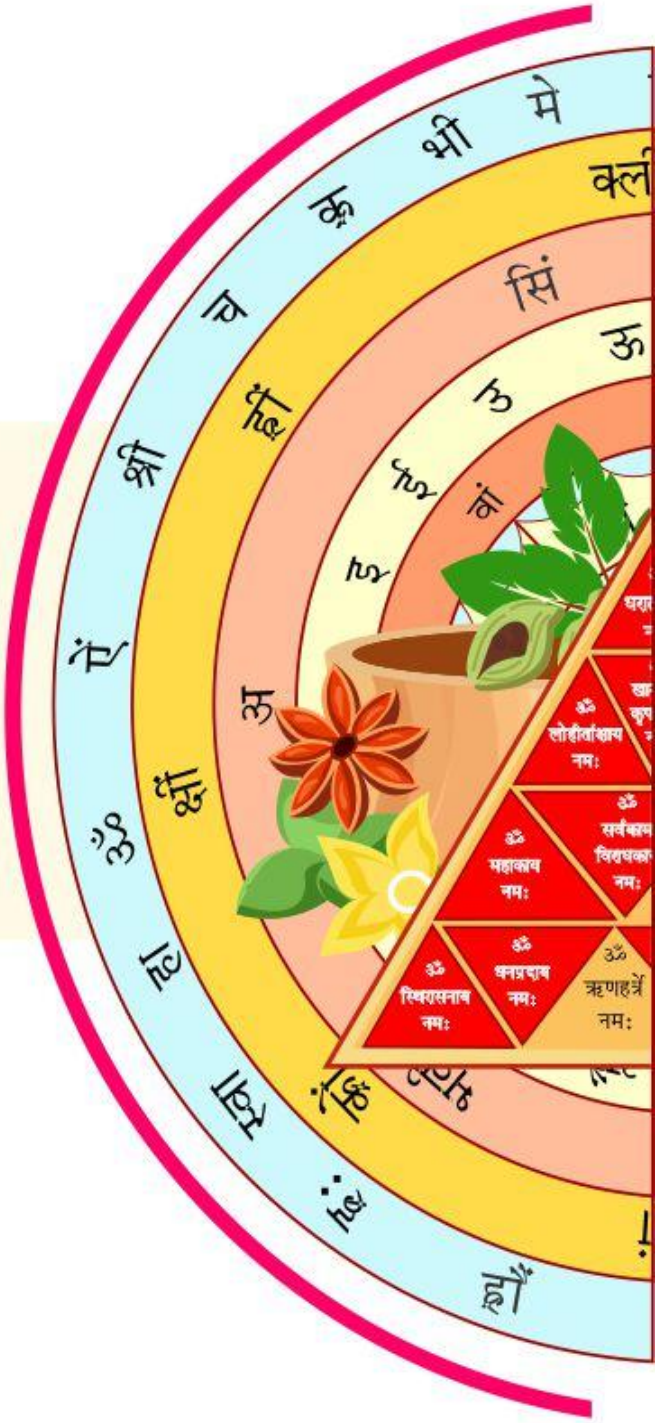

Name - sample

Date - 11/11/2011 Time - 11:11:00

POB - khatu (rajasthan) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Acko Astro

www.ackoastro.com, ackoastro@gmail.com

Contact = +91 8657171000

© Mindsutra's StarLight Premium 11

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल लग्न से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल सिंह राशि में स्थित है, जहां मंगल कोई दोष उत्पन्न नहीं करता है। यह एक अपवाद है, जहां पर कुज दोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। आप मांगलिक दोष से मुक्त हैं– आप मंगली नहीं हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना

करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

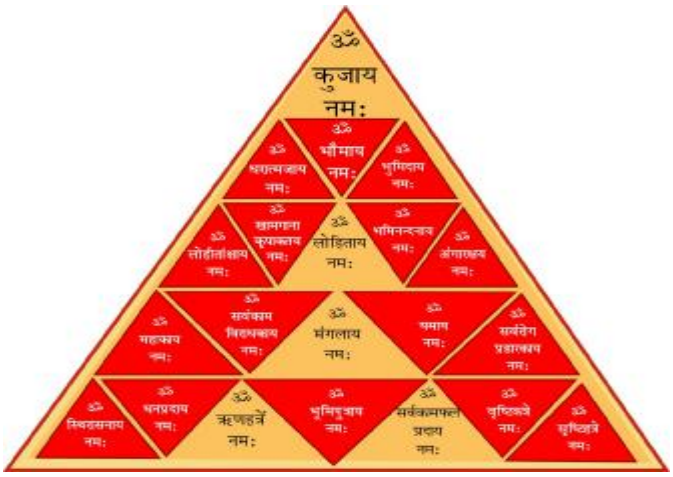

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

केमुद्रुम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

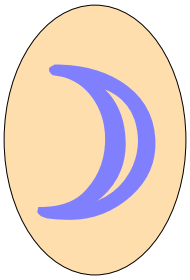

क्या है केमुद्रुम योग ?

आपकी कुण्डली में केमुद्रम योग प्रभावी नहीं है। आपको इस योग से संबंधित कोई उपाय की आवश्यकता नहीं है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।

(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।

(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।

(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।

(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।

(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।

(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।

(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

सूर्य ग्रह का उपाय

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य ग्रह को ग्रहों का राजा माना जाता है। जीवन में मान–सम्मान, नौकरी और समृद्धिशाली जीवन जीने के लिए सूर्य देव की कृपा जरूरी होती है और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सूर्य ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ सूर्याय नमः

Every morning, one should offer water to the Sun and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

Om hraam hreem hroum sah suryaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ घृणिः सूर्याय नमः

Om Ghrinih Suryaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भास्कराय विद्‌महे महातेजाय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात ।।

Om Bhaskaraya Vidmahe Mahatejaya Dhimahi,
Tanno Suryah Prachodayat.

व्रत और उपवास

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी– बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

चन्द्रमा ग्रह का उपाय

कुंडली में चंद्र दोष होने से कलह, मानसिक विकार, माता-पिता की बीमारी, दुर्बलता, धन की कमी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। चंद्रमा मन का कारक ग्रह होता है। कुंडली में चंद्र को मजबूत बनाने के लिए चंद्र ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ सोमाय नमः

This mantra should be chanted every Monday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः

Om shraam shreem shraum sah chandramase namah.

बीज मंत्र 2

ॐ सों सोमाय नमः

Om Som Somaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ क्षीरपुत्राय विद्‌महे मृतात्वाय धीमहि ।
तन्नोः चंद्रः प्रचोदयात ।।

Om Ksheeraputraya Vidmahe Mritatvaya Dhimahi,
Tannam Chandrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी – खिरनी की जड़।

मंगल ग्रह का उपाय

मंगल साहस और पराक्रम का कारक ग्रह है। कुंडली में मंगल के कमजोर होने पर उसके साहस और ऊर्जा में निरंतर कमी रहती है। मंगल को मजबूत करने के लिए मंगल ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ भौमाय नमः

This mantra is chanted for the planet Mars. It should be chanted on Tuesdays.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

Om kraam kreem kraum sah bhaumaaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ अंगारकाय नमः

Om Om Angarakaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ अंगारकाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः भौम प्रचोदयात ।।

Om Angarakaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Bhaumah Prachodayat.

व्रत और उपवास

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता क लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी– सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

बुध ग्रह का उपाय

जीवन में तरक्की और प्रसिद्धि पाने के लिए कुंडली में बुध का मजबूत होना आवश्यक है। बौद्धिक नजरिए से सबसे प्रबल ग्रह होता है। कुंडली में बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए बुध ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बुधाय नमः

This mantra should be chanted every Wednesday. You can chant it in Lord Ganesha's temple.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

Om braam breem braum sah budhaaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ बुं बुधाय नमः

Om Bum Budhaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ सौम्यरुपाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः बुधः प्रचोदयात ।।

Om Saumyarupaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Budhah Prachodayat.

व्रत और उपवास

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी– भारंगी की जड़।

गुरू ग्रह का उपाय

वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से धन लाभ, सुख-सुविधा, सौभाग्य, लंबी आयु आदि मिलता है। कुंडली में देवगुरु बृहस्पति की मजबूती के लिए जातकों को गुरु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बृहस्पतये नमः

This mantra should be chanted while sitting in front of a Shivalinga. It should be chanted every Thursday.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः

Om graam greem graum sah gurave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ ब्रं बृहस्पतये नमः

Om Bram Brihaspataye

गायत्री मंत्र

ॐ गुरुदेवाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः गुरुः प्रचोदयात ।।

Om Gurudevaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Guru Prachodayat.

व्रत और उपवास

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी– केले की जड़।

शुक्र ग्रह का उपाय

कुंडली में शुक्र ग्रह के मजबूत होने पर सभी तरह के ऐशो–आराम की सुविधा मिलती है और इसे मजबूत करने के लिए जातकों को शुक्र बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ शुक्राय नमः

This mantra should be chanted every Friday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः

Om draam dreem draum sah shukraaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ शुं शुक्राय नमः

Om Shum Shukraya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भृगुसुताय विद्‌महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात ।।

Om Bhargusutaya Vidmahe Divyadehaya Dhimahi,
Tanno Shukrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी– अरंडे की जड़।

शनि ग्रह का उपाय

ज्योतिष में शनि देव को कर्म फलदाता के नाम से जाना जाता है। यदि कुंडली में शनि ग्रह भारी होता है तो जिंदगी में परेशानियां बनी रहती हैं। इन परेशानियों को दूर करने के लिए शनि बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ शनैश्चराय नमः

Every Saturday, sit in front of Lord Shani and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः

Om praam preem praum sah shanaishcharaaya

बीज मंत्र 2

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

Om Sham Shanaischaraya

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्‌महे मृत्युरुपाय धीमहि ।
तन्नोः सौरिः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Mrityurupaya Dhimahi,
Tanno Saurih Prachodayat.

व्रत और उपवास

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी– धतुरे की जड़।

राहु ग्रह का उपाय

राहु एक छाया ग्रह है। तनाव को कम करने के लिए राहु मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में यदि राहु अशुभ स्थिति में है, तो व्यक्ति को आसानी से सफलता नहीं मिलती है। राहु को मजबूत करने के लिए राहु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ राहवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

Om bhraam bhreem bhraum sah rahave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ रां राहुवे नमः

Om Ram Rahuve Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्‌महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः राहुः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Rahu Prachodayat.

व्रत और उपवास

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस–पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– चंदन की लकड़ी।
जड़ी– अष्टगन्ध मूल।

केतु ग्रह का उपाय

केतु एक छाया ग्रह ग्रह है, जिसका अपना कोई वास्तविक रूप नहीं है। यदि कुंडली में केतु की स्थिति कमजोर होती है तो यह जिंदगी को बदतर बना देता है। जीवन में कलह बना रहता है। ऐसे में कलह से बचने के लिए इस केतु बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ केतवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

Om sraam sreem sraum sah ketave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ के केतवे नमः

Om Ke Ketave Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ गदाहस्ताय विद्‌महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः केतुः प्रचोदयात ।।

Om Gadahastaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Ketu Prachodayat.

व्रत और उपवास

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग–बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी– वट वृक्ष की जड़।

आपको किस देवता की पूजा करना

लग्न देवता

लग्नेश पर आधारित

शनि देव

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इष्ट देवता

पंचमेश पर आधारित

लक्ष्मी जी

ऊँ लक्ष्मी नमः

यदि आप लग्न देवता और इष्ट देवता के बीज मंत्रों का जाप करते हैं और उनके संबंधित दिन पर व्रत रखते हैं, तो आपके जीवन की हर समस्या का समाधान स्वतः ही आपके समक्ष आ जाएगा और जीवन में सफलता के द्वार खुलते जाएंगे।

आपको किस ग्रह के मंत्र का जाप करना चाहिए?

लग्नाधिपति	पंचमेश	दशाधिपति	भुक्ति अधिपति
शनि	शुक्र	चन्द्रमा	बुध
ऊँ शं शनैश्चराय नमः	ऊँ शुं शुक्राय नमः	ऊँ सों सोमाय नमः	ऊँ बुं बुधाय नमः

यदि आप लग्नेश के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगा क्योंकि लग्नेश को स्वास्थ्य का कारक माना जाता है। 5वें घर के अधिपति को इष्ट ग्रह कहा जाता है, यदि आप इष्ट ग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका बुद्धि और बल बढ़ेगा, अपने बुद्धि और बल के माध्यम से आप अपने सारे कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। जिस ग्रह की महादशा चल रही है, उसके मंत्र से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जिस ग्रह की अंतर्दशा चल रही है, उसके मंत्र से वर्तमान समय की घटनाएं सकारात्मक होंगी।

आपको किस ग्रह का दान करना चाहिए?

ग्रह का दान

मंगल

लग्नेश शनि से शत्रुता और एकादश भाव का स्वामी होने के कारण मंगल एक शक्तिशाली अशुभ ग्रह बन जाता है।

सप्ताह के उस दिन उस ग्रह से संबंधित दान करें, जैसे मंगलवार को मंगल, शनिवार को शनि और गुरुवार को बृहस्पति। दान की सूची से, आप प्रति सप्ताह 50 रुपये तक कोई भी एक वस्तु दान कर सकते हैं। किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति को दान दें।

अशुभ ग्रहों से संबंधित दान करने से हमारे ऊपर पड़ने वाले उनके नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप अशुभ ग्रह अपनी दशा या अन्तर्दशा में हमें बुरा फल नहीं देते, और यदि हम दान करने के साथ-साथ उन ग्रहों के बीज मंत्रों का जाप भी कर रहे हैं तो उस अशुभ ग्रह के परिणाम भी सकारात्मक ही आएंगे।

यदि आप किसी दिन बीज मंत्र का जाप करना भूल जाते हैं तो आप अगले दिन उसकी पूर्ति कर सकते हैं, उदाहरण के लिए अगले दिन 2 माला जाप करें। यदि अंतर अधिक हो तो एक माला अतिरिक्त जप कर बीज मंत्रों को पूरा करें।

आप किसी भी मंत्र में महारत हासिल कर सकते हैं। इसके बाद आपको सप्ताह के उस दिन संबंधित ग्रह के बीज मंत्र का जाप करना चाहिए, उदाहरण के लिए, यदि आपने बुध के बीज मंत्र में महारत हासिल कर ली है, तो आपको इसमें महारत हासिल करने के बाद हर बुधवार को मंत्र की एक माला का जाप करना चाहिए। इससे इसकी ऊर्जा बनी रहेगी।

वैदिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
कृतिका (1)

नक्षत्राधिपति
सूर्य

इन वैदिक उपायों को अपनायें

(1). अपने दिन की शुरुआत सूर्य नमस्कार से करें, जो 12 योग मुद्राओं का एक क्रम है, जिनमें से प्रत्येक के शरीर के लिए विशिष्ट लाभ हैं। अधिकतम लाभ के लिए सूर्योदय के दौरान इसका अभ्यास करें।

(2). सूर्य का रत्न माणिक है। अपने दाहिने हाथ की अनामिका में सोने में प्रमाणित, उच्च गुणवत्ता वाला माणिक पहनें। यह सूर्य के प्रभाव को मजबूत करने और आपकी जीवन शक्ति को बढ़ाने में मदद कर सकता है।

(3). सूर्योदय के समय गायत्री मंत्र का 108 बार जाप करें। यह शक्तिशाली मंत्र सूर्य को समर्पित है और माना जाता है कि यह स्वास्थ्य और दीर्घायु में सुधार करता है।

(4). रविवार का व्रत, सूर्य को समर्पित दिन, सूर्य को प्रसन्न कर सकता है और आपके स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

(5). प्रातःकाल तांबे के बर्तन में जल लेकर सूर्य को अर्पित करना एक प्राचीन प्रथा है जो आपके स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद कर सकती है।

(6). लाल या अन्य चमकीले रंग पहनने से, विशेष रूप से रविवार को, सूर्य का सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकता है।

(7). अपने समग्र स्वास्थ्य और आरोग्यता में सुधार के लिए, सूर्य यंत्र की पूजा करें, जो सूर्य से जुड़ा एक शक्तिशाली रहस्यमय चित्र है। इसको अपने घर या कार्यस्थल पर स्थापित करके लाल फूल और धूप से पूजा की जा सकती है।

(8). प्रत्येक सुबह सूर्य देव को समर्पित स्तोत्र, आदित्य हृदयम स्तोत्र का पाठ करें। ऐसा कहा जाता है कि यह कांतिमय स्वास्थ्य प्रदान करता है और भय को दूर करता है।

लाल किताब के उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
कृतिका (1)

नक्षत्राधिपति
सूर्य

इन लाल किताब के उपायों को अपनायें

(1). लाल किताब में सूर्य को एक शक्तिशाली खगोलीय पिंड माना गया है। अपने दिन की शुरुआत सूर्योदय के समय प्रार्थना करके करें। इससे आपके दिन में सकारात्मकता और ऊर्जा आएगी।

(2). प्रतिदिन सुबह सूर्य को तांबे के लोटे में कुछ लाल फूल डालकर जल चढ़ाएं। यह अभ्यास जीवन में बाधाओं को दूर करने और समृद्धि लाने में मदद करेगा।

(3). रविवार के दिन अपनी जेब में लाल कपड़े का टुकड़ा रखना या लाल रंग के कपड़े पहनना लाभकारी होता है। इससे आप पर सूर्य का सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकता है।

(4). रविवार के दिन गेहूं का दान करना आपके लिए लाभकारी हो सकता है। सुनिश्चित करें कि मात्रा लाल किताब के सुझाव के अनुसार 1.25 किलोग्राम के गुणकों में हो।

(5). सूर्य की स्थिति को मजबूत करने के लिए रविवार के दिन बहते पानी (जैसे नदी) में गुड़ और एक तांबे का सिक्का डालें।

(6). लाल किताब के अनुसार रविवार के दिन नमक से परहेज करना फायदेमंद साबित हो सकता है।

(7). वैदिक ज्योतिष में सूर्य पिता का भी प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए आपको अपने पिता और अन्य बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए।

(8). विशेष रूप से रविवार के दिन गाय को गेहूं की रोटी खिलाएं। यह सूर्य की .पा पाने का अचूक उपाय है।

(9). लाल चंदन की माला पहनने या जेब में लाल चंदन रखने से लाभ होता है। यह सौभाग्य लाता है और बुराई से बचाता है।

कार्मिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
कृतिका (1)

नक्षत्राधिपति
सूर्य

इन कार्मिक के उपायों को अपनायें

(1). अपने दिन की शुरुआत और अंत आभार व्यक्त करके करें। यह उतना ही सरल हो सकता है जितना कि ज़ोर से यह कहना कि आप किसके लिए आभारी हैं, या आप .तज्ञता पत्रिका रखना पसंद कर सकते हैं। अपने भावों में सूर्य की ऊर्जा और मार्गदर्शन के प्रति आभार व्यक्त करना याद रखें।

(2). सबसे सरल और सबसे शक्तिशाली कार्मिक उपचारों में से एक है बदले में कुछ भी अपेक्षा किए बिना खुलकर देना। यह धर्मार्थ दान, स्वयंसेवा, या यहां तक कि किसी जरूरतमंद पड़ोसी की मदद के रूप में भी हो सकता है।

(3). यह एक प्रमुख कर्म अभ्यास है। नाराजगी छोड़ें और उन लोगों को माफ कर दें जिन्होंने आपके साथ अन्याय किया है। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको भूलना होगा या लोगों को आपको नुकसान पहुंचाते रहने देना होगा। इसका अर्थ है पिछली घटनाओं से जुड़ी नकारात्मक ऊर्जा को दूर करना।

(4). प्रत्येक दिन कुछ क्षण प्रार्थना करने या दूसरों के लिए भलाई की कामना करने में बिताएं। इसमें परिवार, दोस्त या यहां तक कि वे लोग भी शामिल हो सकते हैं जिनसे आपकी नहीं बनती।

(5). प्रतिदिन ध्यान करें. दिन में केवल 10 मिनट का समय भी आपके समग्र कल्याण और सकारात्मक कर्म प्रकट करने की आपकी क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

(6). अपने विचारों, शब्दों और कार्यों से कोई नुकसान न पहुँचाने का सचेत प्रयास करें। इसमें न केवल शारीरिक क्षति बल्कि भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक क्षति भी शामिल है।

(7). आप अपने जीवन में जो बदलाव लाने का प्रयास कर रहे हैं, उसे सुदृढ़ करने के लिए प्रतिदिन सकारात्मक स्वीकृति का प्रयोग करें। उदाहरण के लिए, आप स्वीकृति कर सकते हैं 'मैं सकारात्मक ऊर्जा और अच्छे कर्म का स्रोत हूं।

(8). दयालुता के अनियमित .त्यों का अभ्यास करें। उसके लिए कुछ भी भव्य होना जरूरी नहीं है, बस मुस्कुराहट, एक दयालु शब्द, या एक छोटा सा उपकार जैसे छोटे कार्य बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं।

(9). याद रखें कि आपका खुद के साथ रिश्ता दूसरों के साथ आपके रिश्तों की दिशा तय करता है। अपने आप के साथ दयालुता, सम्मान और धैर्य के साथ व्यवहार करें, ठीक वैसे ही जैसे आप दूसरों के साथ करते हैं।

Disclaimer

(1) Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the Horoscope and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, associations, strengths, weaknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

(2) Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgment. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you receive shoul not be used as a substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or financial advisor.

(3) The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per the ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated result

(4) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

(5) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in th horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for referencing purpose if you may need to consult in future.

(6) Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event will MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

(7) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes.